

की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में

सुत्ताणि

३

हाओ • उवासगदसाओ •
। • अणुत्तरोववाइयदसाओ •
गगरणाइं विवागसुयं

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

संपादक
मुनि नथमल

प्रकाशक
नैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)

श्री मान्द अमरचन्द जी गिर
के उरराज सुखानी
अरत दास
र-उम अट।

प्रबंध सम्पादक :

श्रीचन्द रामपुरिया,

निदेशक

आगम और साहित्य प्रकाशन

(जैन विश्व भारती)

आर्थिक सहायक

श्री रामलाल हंसराज गोलछा

विराटनगर (नेपाल)

प्रकाशन तिथि :

विक्रम संवत् २०३१

कार्तिक कृष्ण १३

(२५०० वां निर्वाण दिवस)

पृष्ठांक । ६२५

मूल्य : ५०/

मुद्रक :—

एम. नारायण एण्ड संस (प्रिंटिंग प्रेस)

७११७/१८, पहाड़ी घोरज, दिल्ली-६

ANGA SUTTĀNI

III

NAYĀDHAMMAKAHĀO. UWĀSAGADASĀO.
ANTAGADADASĀO. ANUTTAROWAWĀIYADASAO.
PANHAWAGARANAIN. VIVĀGASUYAM.

(Original text Critically edited)

Vācānā PRAMUKHA
ĀCĀRYA TULASI

EDITOR
MUNI NATHAMAL

Publisher
JAIN VISWA BHĀRATI
LADNUN (Rajasthan)

Managing Editor
Shreechand Rampuria.
Director :
Āgama and Sahitya Publication Dept.
JAIN VISHWA BHARATI, LADNUN

Financial Assistance
Sri Ramlal Hansraj Golchha
Biratnagar (Nepal)

V.S. 2031
Kārtic Kṛishnā 13
2500th Nirvaṇa Day

Pages 925

Rs. 80/-

Printers :
S. Narayan & Sons (Printing Press)
7117/18, Pahari Dhiraj,
Delhi-6

समर्पण

पुट्टो वि पण्णा-पुरित्तो सुदण्णो,
 थाणा-पहाणो जणि जत्त निच्चं ।
 सच्चप्पओगे पवरात्तयत्ता,
 निवणुत्ता तत्ता प्पणिहाणपुत्थं ॥

जिमका प्रज्ञा-गुरुय पुष्ट पट्ट,
 होकर भी आगम-प्रधान था ।
 मत्त्व-योग में प्रवर चित्त था,
 उसी भिक्षु को विमल भाव से ।

वित्तोद्धियं आगमपुद्धमेव,
 तद्धं सुत्तद्धं जवणीयमच्छं ।
 सग्गहाय - सग्गहाण - रयत्ता निच्चं,
 जयत्ता तत्ता प्पणिहाणपुत्थं ॥

जिसने आगम-दीप्त कर कर,
 पाया प्रवर प्रचुर नवनीत ।
 श्रुत-नादधान तीन विर चिन्तन,
 जयाचार्य को विमल भाव से ।

पणाहिया जेण सुयत्ता धारा,
 गणे समत्थे मम भाणसे वि ।
 जो हेउमूओ - रत्ता पवायणत्ता,
 वानुत्ता तत्ता प्पणिहाणपुत्थं ॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
 सकल संघ में मेरे मन में ।
 हेतुमूत श्रुत - सम्पादन में,
 वानुगणों को विमल भाव से ।

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिवार्य होता है उस मानी का जो अपने हाथों में उल्ट और गिरित द्रुम-निर्गुण को पल्लवित, पुष्टित और फलित हुआ देगता है, उस कलाकार का जो अपनी मूर्तिका में निराकार को साकार हुआ देगता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों में प्राणवान् बना देगता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमों का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के दृष्टश्री क्षण उसमें लगे। संतुल्य फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-चिन्तन उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समझाती बनाना चाहता हूँ, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। संक्षेप में यह संविभाग इस प्रकार है—

संपादक :		मुनि नयमल
	सहयोगी :	मुनि तुलहराज
पाठ-संशोधन :	"	मुनि मुदमन
	"	मुनि मधुकर
	"	मुनि हीरासाध

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनके इस मुखार प्रवृत्ति में सम्मुख भाग में अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आभारपूर्ण देता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

आचार्य तुलसी

ग्रन्थानुक्रम

१. प्रकाशकोय
२. सम्पादकोय
३. सूक्तिका (हिन्दी)
४. सूक्तिका (अंग्रेजी)
५. विषयानुक्रम
६. संकेत निर्देशिका
७. नायाधम्मकहाओ
८. उवासगदसाओ
९. अंतगडदसाओ
१०. अणुत्तरोववाइयदसाओ
११. पण्हावागरणाहं
१२. विवागसुधं

परिशिष्ट

१. संक्षिप्त-पाठ, पूर्व-स्यल और पूर्ति आधार-स्यल
२. पूरक पाठ
३. शुद्धिपत्रम्

प्रकाशकीय

सन् १९६७ की बात है। आचार्यश्री बम्बई में विराज रहे थे। मैंने कलकत्ता में पहुँचकर उनके यहाँ कि। उन समय श्री कृष्णभद्राजी रांका, श्रीमती इन्दु जैन, मोहनलालजी कठोतिया आदि आचार्यश्री की सेवा में उपस्थित थे और 'जैन विद्य भारती' की बम्बई के आस-पास किमी स्थान पर स्थापित करने पर चिन्तन चल रहा था। मैंने सुभाव रखा कि सरदारसाहब में 'गांधी विद्या-मन्दिर' जैसा विद्यालय और उत्तम संस्थान है। 'जैन विद्य भारती' उसी के समीप सरदारसाहब में ही क्यों न स्थापित की जाये? दोनों संस्थान एक दूसरे के पूरक होंगे। सुभाव पर विचार हुआ। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ (सरदारसाहब) की बम्बई मुलाकात। गान्धी यहाँ उनके नामने रत्नी गई और निर्णय हुआ कि उनके साथ जाकर एक बार दूरी दृष्टि में 'गांधी विद्या-मन्दिर' संस्थान को देखा जाए। निश्चित तथि पर पहुँचने के लिए कलकत्ता में श्री गोपीचन्द्रजी चौधरी और मैं तथा दिल्ली में श्रीमती इन्दु जैन, लाललालजी आद्या सरदारसाहब के लिए रवाना हुए। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ दिल्ली में हम लोगों के साथ हुए। श्री रांकाजी बम्बई में पहुँचे। सरदारसाहब में भावभीना स्वागत हुआ। श्री दूगड़जी ने 'गांधी विद्या-मन्दिर' की प्रबन्ध समिति के सदस्यों को भी आमन्त्रित किया। 'जैन विद्य भारती' सरदारसाहब में स्थापित करने के विचार का उनकी ओर से भी हार्दिक स्वागत किया गया। सरदारसाहब 'जैन विद्य-भारती' के लिए उपयुक्त स्थान लगा। आगे के कदम इसी ओर बढ़े।

आचार्यश्री गंगधर व साधिनियों के मूल्य महित कर्माटक में नदी पहाड़ी पर आयोजन कर रहे थे। आचार्यश्री ने यहाँ में पैर पामे और मुँह में कहा "जैन विद्यभारती के लिए प्रवृत्ति की ऐसी सुन्दर मोड़ उपयुक्त स्थान है। देखो, कैसा सुन्दर मान्य वातावरण है।"

'जैन विद्य भारती' की योजना की कार्य-क्रम में आगे बढ़ने की दृष्टि में समारोह के द्वारा और दिव्यराणीय स्थिति की नदी पहाड़ी पर आय। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ भी थे। (सरदार-साहब) प्रतिक्रमण के बाद का समय था। पहाड़ों की गलहों में शेषक और जाकास में गारे जल-मय। रहे थे। आचार्यश्री निरि-मिषद पर जीव महल में उपविभुष होकर विमोहित थे। वे उनके सामने बैठे। वचनबद्ध हुआ कि यदि 'जैन विद्य भारती' सरदारसाहब में स्थापित होती है, तो उसके लिए मैं अपना जीवन समर्पित। उस समय 'जैन विद्य भारती' की जैन संस्थापक संस्थाओं महागण के एक विचार के रूप में परिवर्तन की गई थी। महागण ने स्वीकार किया और

में उसका संयोजक चुना गया। सरदारशहर में स्थान के लिए श्री कन्हैयालालजी दूगड़ और मैं प्रयत्नशील हुए। आचार्यश्री ऊटी (उटकमण्ड) पधारे। वहाँ महासभा के सभापति श्री हनुमान-मलजी वैंगाणी तथा अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। जैन विश्व भारती की स्थापना प्राकृतिक दृष्टि से साधना के अनुकूल रम्य और शान्त स्थान में होने की बात ठहरी। इस तरह नंदी गिरि की मेरी प्रतिज्ञा से मैं मुक्त हुआ, पर मन ने मुझे कभी भुल नहीं किया। आचार्य 'जैन विश्व भारती' की मातृ-भूमि बनने का सौभाग्य सरदारशहर से ६६ मील दूर लाटनू (राजस्थान) को प्राप्त हुआ, जो संयोग से आचार्यश्री का जन्म-स्थान भी है।

आचार्यश्री ने आगम-संशोधन का कार्य सं० २०११ की चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हाथ में लिया। कुछ समय बाद उज्जैन में दर्शन किए। सं० २०१३ में लाटनू में आचार्यश्री के दर्शन प्राप्त हुए। कुछ ही दिनों बाद गुजानगढ़ में दशवैकालिक सूत्र के अपने अनुवाद के दो फार्म अपने ढंग से मुद्रित कराकर सामने रखे। आचार्यश्री मुग्व हुए। मुनिश्री नथमलजी ने فرमाया—“ऐसा ही प्रकाशन ईप्सित है।” आचार्यश्री की वाचनता में प्रस्तुत आगम वैशाली से प्रकाशित हो, इस दिशा में कदम आगे बढ़े। पर अन्त में प्रकाशन कार्य महासभा से प्रारम्भ हुआ। आगम-सम्पादन की रूपरेखा इस प्रकार रही—

१. आगम-सुक्त ग्रन्थमाला : मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।
२. आगम-अनुसन्धान ग्रन्थमाला : मूलपाठ, संस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियों सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।
३. आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला : आगमों के समीक्षात्मक अध्ययनों का प्रस्तुतीकरण।
४. आगम-कथा ग्रन्थमाला : आगमों से सम्बन्धित कथाओं का संकलन और अनुवाद।
५. वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला : आगमों का संक्षिप्त वर्गीकृत रूप में प्रस्तुतीकरण।

महासभा की ओर से प्रथम ग्रन्थमाला में—(१) दसवेवालियं तह उत्तरज्झयणाणि, (२) आयारो तह आयारचूला, (३) निस्सीहज्झयणं, (४) उववाइयं और (५) समवाओ प्रकाशित हुए। रायपसेणइयं एवं सुयगडो (प्रथम श्रुतस्कन्ध) का मुद्रण-कार्य तो प्रायः समाप्त हुआ पर वे प्रकाशित नहीं हो पाए।

दूसरी ग्रन्थमाला में—(१) दसवेवालियं एवं (२) उत्तरज्झयणाणि (भाग १ और भाग २) प्रकाशित हुए। समवायांग का मुद्रण-कार्य प्रायः समाप्त हुआ पर प्रकाशित नहीं हो पाया।

तीसरी ग्रन्थमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं : (१) दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन और (२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

चौथी ग्रंथमाला में कोई ग्रंथ प्रकाशित नहीं हुआ ।

पाँचवीं ग्रंथमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं : (१) दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्म-प्रगति स. १) और (२) उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्म-प्रगति स. २) ।

उक्त प्रकाशन-कार्य में सरावगी चेरिटवेल फण्ड, कलकत्ता (इस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविंदलालजी सरावगी एवं कमलनयनजी सरावगी) का बहुत बड़ा अनुदान महासभा को रहा । अनुदान स्वर्गीय महादेवलालजी सरावगी एवं उनके पुत्र पन्नालालजी सरावगी की स्मृति में प्राप्त हुआ था । भाई पन्नालालजी के प्रेरणात्मक शब्द तो आज भी कानों में ज्यों-के-त्यों गूँज रहे हैं—
“धन देने वाले तो मिल सकते हैं, पर जो इस प्रकाशन-कार्य में जीवन लगाने का उत्तरदायित्व लेने की तैयार है, उनकी बराबरी कौन कर सकेगा ?” उन्हीं सभा समाज के अन्य उत्साहपूर्ण सदस्यों के स्नेह-प्रदान से कार्य-शीलक बनता रहा ।

कार्य के द्वितीय चरण में श्री रामलालजी हंसराजजी गोखला (विराटनगर) ने अपना उत्तर हाथ प्रसारित किया ।

आचार्यश्री की वाचना में सम्पादित आगमों के संग्रह और मुद्रण का कार्य अब ‘जैन विश्व भारती’ के अंचल में हो रहा है । प्रथम प्रकाशन के रूप में ११ अंगों की तीन खण्डों में ‘अंगमुत्तापि’ के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है :

प्रथम खण्ड में आधार, गृहकृत, स्थान, समवाय—ये प्रथम चार अंग हैं ।

दूसरे खण्ड में भगवती—पाँचवाँ अंग है ।

तीसरे खण्ड में शाखाधर्मकथा, उपासककथा, अन्तर्हृदयका, अनुत्तरोपपातिककथा, प्रत्यक्षारण और विपाक—ये ६ अंग हैं ।

इस तरह ग्यारह अंगों का तीन खण्डों में प्रकाशन ‘आगम-मुक्त प्रमाणाना’ की योजना की बहुत आगे बढ़ा देता है ।

टापानि अनुवाद संस्करण का मुद्रण-कार्य भी प्रगति में हो रहा है और यह आगम-अनुसन्धान संस्थावा के तीसरे ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत होगा ।

केवल हिन्दी अनुवाद के संस्करण के रूप में ‘दशवैकालिक और उत्तराध्ययन’ का प्रकाशन हुआ है; जो एक बड़ी योजना के रूप में है । इसमें सभी आगमों का केवल हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने का निश्चय है ।

दशवैकालिक एवं उत्तराध्ययन मूल पाठ मात्र की मृत्तकों के रूप में दिया जा रहा है ।

‘जैन विश्व भारती’ भी इस अंग एवं अन्य आगम प्रकाशन योजना की पूर्ण करने में मिल महासभावा के उत्तर अनुदान का हाथ रहा है, उन्हें संग्रहण की ओर से हार्दिक धन्यवाद है ।

मुद्रण-कार्य में एस० नारायण एण्ड संस प्रिंटिंग प्रेस के मालिक श्री नारायणसिंह जी का विनय, श्रद्धा, प्रेम और सौजन्य से भरा जो योग रहा उसके लिए हम कृतज्ञता प्रगट किए बिना नहीं रह सकते। मुद्रण-कार्य को द्रुतगति देने में श्री देवीप्रसाद जायसवाल (कलकत्ता) ने रात-दिन सेवा देकर जो सहयोग दिया, उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। इस सम्बन्ध में श्री मन्नालाल जी जैन (भूतपूर्व मुनि) की समर्पित सेवा भी स्मरणीय है।

इस अवसर पर मैं आदर्श साहित्य संघ के संचालकों तथा कार्यकर्त्ताओं को भी नहीं भूल सकता। उन्होंने प्रारम्भ से ही इस कार्य के लिए सामग्री जुटाने, धारने तथा अन्यान्य व्यवस्थाओं को क्रियान्वित करने में सहयोग दिया है। आदर्श साहित्य संघ के प्रबन्धक श्री कमलेश जी चतुर्वेदी सहयोग में सदा तत्पर रहे हैं, तदर्थ उन्हें धन्यवाद है।

‘जैन विश्व भारती’ के अध्यक्ष श्री खेमचन्दजी सेठिया, मंत्री श्री सम्पत्तरायजी भूतोड़िया तथा कार्य समिति के अन्यान्य समस्त वन्धुओं को भी इस अवसर पर धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिनका सतत सहयोग और प्रेम हर कदम पर मुझे बल देता रहा।

इस खण्ड के प्रकाशन के लिए विराटनगर (नेपाल) निवासी श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा से उदार आर्थिक अनुदान प्राप्त हुआ है, इसके लिए संस्थान उनके प्रति कृतज्ञ है।

सन् १९७३ में मैं जैन विश्व-भारती के आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग का निदेशक चुना गया। तभी से मैं इस कार्य की व्यवस्था में लगा। आचार्यश्री यात्रा में थे। दिल्ली में मुद्रण की व्यवस्था बैठ गई। कार्यारंभ हुआ, पर टाइप आदि की व्यवस्था में विलंब होने से कार्य में द्रुतगति नहीं आई। आचार्यश्री का दिल्ली पधारना हुआ तभी यह कार्य द्रुतगति से आगे बढ़ा। स्वल्प समय में इतना आगमिक साहित्य सामने आ सका उसका सारा श्रेय आगम संपादन के वाचनाप्रमुख आचार्यश्री तुलसी तथा संपादक-विवेक मुनि श्री नयमलजी को है। उनके सहकर्मी मुनि श्री सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी तथा दुलहराजजी भी उस कार्य के श्रेयोभागी हैं।

ब्रह्मचर्य आश्रम में ब्रह्मचारी का एक कर्त्तव्य समिधा एकत्रित करना होता है। मैंने इससे अधिक कुछ और नहीं किया। मेरी आत्मा हर्षित है कि आगम के ऐसे सुन्दर संस्करण ‘जैन विश्व भारती’ के प्रारंभिक उपहार के रूप में उस समय जनता के कर-कमलों में आ रहे हैं, जबकि जगत्वंश श्रमण भगवान् महावीर की २५००वीं निर्वाण तिथि मनाने के लिए सारा विश्व पुलकित है।

४६८४, अंतारी रोड

२९, दरियागंज

दिल्ली-६

श्रीचन्द रामपुरिया

निदेशक

आगम और साहित्य प्रकाशन

जैन विश्व-भारती

सम्पादकीय

ग्रन्थ-बोध—

आगम सूत्रों के मौलिक विभाग दो हैं—अंग-प्रविष्ट और अंग-व्याह। अंग-प्रविष्ट सूत्र महावीर के मुख्य ग्रन्थ गणपर द्वारा रचित होने के कारण सर्वाधिक मौलिक और प्रामाणिक माने जाते हैं। उनकी संख्या बारह है—१. आचारंग २. सूत्रकृतांग ३. रथानांग ४. नमस्कारांग ५. व्याख्याप्रवृत्ति ६. ज्ञाताधर्मकथा ७. उपासकदशा ८. अंतकृतदशा ९. अनुत्तरोत्पातिकदशा १०. प्रत्यव्याकरण ११. विषाक्तभुत १२. दृष्टिवार। बारहवां अंग अभी प्राप्त नहीं है। शेष ग्यारह अंग तीन भागों में प्रकाशित हो रहे हैं। प्रथम भाग में चार अंग हैं—१. आचारंग २. सूत्रकृतांग ३. रथानांग और ४. नमस्कारांग, दूसरे भाग में केवल व्याख्याप्रवृत्ति और तीसरे भाग में शेष छह अंग।

प्रस्तुत भाग अंग साहित्य का तीसरा भाग है। इसमें नायागमकथाओं, उपासकदशाओं, अंतकृतदशाओं, अनुत्तरोत्पातिकदशाओं, पण्डितानरनाई और विषाक्तभुत—इन ६ अंगों का पाठान्तर सहित मूल पाठ है। प्रारम्भ में संक्षिप्त भूमिका है। विस्तृत भूमिका और शब्द-सूची इनके साथ सम्बद्ध नहीं है। उनके लिए दो स्वतन्त्र भागों की परिकल्पना है। उसके अनुसार शेष भाग में ग्यारह अंगों की भूमिका और पाँचवें भाग में उनकी शब्द-सूची होगी।

प्रस्तुत पाठ और सम्पादन-पद्धति

हम पाठ-संशोधन की नवीकृत पद्धति के अनुसार किसी एक ही प्रति को मुख्य मानकर नहीं चलते, किन्तु अर्ध-मीमांसा, पूर्वनिर्णय, पूर्वगामी पाठ और अन्य आगम-सूत्रों के पाठ तथा वृत्तिगत धारणा को ध्यान में रखकर मूलपाठ का निर्धारण करते हैं। विवरणार्थ में कुछ नूटियाँ दूरी हैं। कुछ नूटियाँ मौखिक मिश्रण से सम्बद्ध हैं। वे 'यद् पूर्वम्' पर विवरण-उपेक्ष नहीं बता जा सकता। पाठ के संक्षेप या विस्तार करने में हुई हैं, जो संभावना की जा सकती है। 'नायागमकथाओं' ११५५६ में दोहरा दश और दोन सप्तम्यो का उल्लेख है। ध्यानांग ४।११८, उपासकदशा २३।२६-२८ के अनुसार यह पाठ भुक्त नहीं है। जार्ज नोर्मन्सों के मुँह से प्राप्तार्थक्य प्राप्त होता है, जो महावीर और आत्मार्थक्य रूप में नहीं होता। ऐसा दलील होता है कि स्वतन्त्र-विचार और अनुसन्धान का पाठ अतीतार्थक्य के प्रसारण और अनुसन्धान के प्रसारण पर प्रकाश होता है। दमस्तिर को सर्वोदय रूप में यह प्राप्त हो सकता है। हमारे इस पाठ की वृत्ति मान्यतापरक रूप के आधार

पर की है, देखें—नायाधम्मकहाओ पृष्ठ १२२ का सातवां पाद-टिप्पण। इस प्रकार के आलोच्य पाठ नायाधम्मकहाओ १।१२।३६, १।१६।२१, १।१६।४६ में भी मिलता है। प्रश्नव्याकरण सूत्र १०।४ में 'कायवर' पाठ मिलता है। वृत्तिकार ने इसका अर्थ 'काचवर'—प्रधान काच दिया है, किन्तु यह पाठ शुद्ध नहीं है। लिपि-दोष के कारण मूलपाठ विकृत हो गया। नियोचाग्रयनके ग्यारहवें उद्देशक (सूत्र १) में 'कायपायाणिवा और वइरपायाणिवा' दो स्वतन्त्र पाठ हैं। वहां भी पात्र का प्रकरण है और वहां भी पात्र का प्रकरण है। काँचपात्र और वज्रपात्र—दोनों मुनि के लिए निषिद्ध हैं। इस आधार पर यहां भी 'वर' के स्थान पर 'वइर' पाठ का स्वीकार औचित्यपूर्ण है। लिपिकाल में इस प्रकार का वर्ण-विपर्यय अन्यत्र भी हुआ है। 'जात' के स्थान पर 'जाव' तथा 'पचंकमण' के स्थान पर 'एवंकमण' पाठ मिलता है। पाठ-संशोधन में इस प्रकार के अनेक विचित्र पाठ मिलते हैं। उनका निर्धारण विभिन्न स्रोतों से किया जाता है।

प्रतिपरिचय

१. नायाधम्मकहाओ—

क. ताडपत्रीय (फोटोग्रिड) मूलपाठ—

यह प्रति जेसलमेर भंडार से प्राप्त है। यह अनुमानतः बारहवीं शताब्दी की है।

ख. नायाधम्मकहाओ (पंचपाठी) मूल पाठ वृत्ति सहित—

यह प्रति गद्यैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। पत्र के चारों ओर हासियों (Margin) में वृत्ति लिखी हुई है। इसके पत्र १८६ तथा पृष्ठ ३७२ हैं। प्रत्येक पत्र १० $\frac{३}{४}$ इंच लम्बा तथा ४ $\frac{३}{४}$ इंच चौड़ा है। पत्र में मूलपाठ की १ से १३ तक पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ३२ से ३८ तक अक्षर हैं। प्रति स्पष्ट और कलात्मक है। बीच में तथा इयर-उपर वापिकाएं हैं। यह अनुमानतः १४-१५ शताब्दी की होनी चाहिए। प्रति के अंत में टीकाकार द्वारा उद्धृत प्रशस्ति के ११ श्लोक हैं। उनमें अन्तिम श्लोक यह है—

एकादशसु गतेष्वथ विंशत्यधिकेषु विक्रमसमानां ।

अणहिलपाटकनगरे भाद्रवद्वितीयां पञ्जुसणसिद्धयं ॥१॥

समाप्तेयं ज्ञाताधर्मप्रदेशटीकेति ॥छ॥ ४२५५ ग्रंथाग्रं ॥ वृत्ति । एवं सूत्र

वृत्ति ६७५५ ग्रंथाग्रं ॥१॥छ॥

ग. नायाधम्मकहाओ (मूलपाठ)

यह प्रति गद्यैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ११० तथा पृष्ठ २२० हैं। प्रत्येक पत्र १० $\frac{३}{४}$ इंच लम्बा तथा ४ $\frac{३}{४}$ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां हैं और प्रत्येक पंक्ति में ४८ से ५३ तक अक्षर हैं। प्रति जीर्ण-सी है। बीच में वावड़ी है।

निधि संवत् १५५४ है। अंतिम प्रगति में लिखा है—संवत् १५५४ वर्षे प्रथम भाषण
वदि २ रवी। श्री श्री श्री गोरोही नगरे। राजा राठ श्रीजगन्नाथराज्ये ॥ श्रीन पागण्डे
गच्छतायकथीमुमसिसामुदि। तत्पट्टे श्रीहमयिमलमूरिराज्ये। महोपाध्याय श्रीजनन-
हंगणीनां उपदेशेन ॥ नाम्ना श्री मूरा निर्यापितं ॥ जोसी पोषा निमित्तं ॥ भ्राति उज्ज्वल
संजुक्त पोषा निर्यापितं ॥ राठ ॥ राठ ॥ १ ॥ इसके आगे १२ श्लोक लिखे हुए हैं।

ग. टट्या

यह प्रति १२वें सध्यवन में आगे काम में ली गई है।

२. उवागदनाओ—

क. उवागदनाओ—मूल पाठ (गाढपत्रीय फोटो प्रिंट)—

इसकी पत्र संख्या २० व पृष्ठ ४० है। पत्र क्रमांक संख्या १८२ से २०२ तक
है। फोटो प्रिंट पत्र संख्या ६ है व मूल पत्र में ८ पृष्ठों का फोटो है। इसकी सम्भाई
१४ इंच, चौड़ाई ६ इंच है। प्रत्येक पत्र में ४ से ६ तक पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ४५
के करीब अक्षर हैं।

प्रति के अन्त में 'सन् ८१२' इतना ही लिखा हुआ है। संवत् वर्षगृह नहीं है पर
विषयक मूल पत्र संख्या २८५, में निधि संवत् ११८६ है। अतः इसके आधार पर यह
११८६ में पढ़ने की ही मान्यता पड़ती है।

ग. उवागदनाओ—टटोमुक्त पाठ (हस्तलिखित)—

यह प्रति वर्षेया सुमनराज्य सन्नामगाह की है। इसके पत्र ३६ तथा पृष्ठ ७२
है। प्रत्येक पत्र में पाठ की आठ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में करीब ५२ अक्षर हैं। पाठ के
नीचे उवागदनाओ में ५० वें लिखा हुआ है। प्रत्येक पृष्ठ १० इंच लम्बा व ४६ इंच चौड़ा है।
प्रति के अन्त में केवल की निम्न प्रगति है—

संवत् १७७८ वर्षे निधि माघमासे कृष्णपक्षे पंचमीतिथी सुषमासे मुनिना निवेना-
दिभिः सभासभाय 'दीनकरोदयस्ये श्रीराम्' कल्याणमस्तु विमलगाठकयोः श्रीः।

३. अंतगदनाओ—

क. गाढपत्रीय (फोटो प्रिंट)। पत्र संख्या २०२ से २२२ तक। विषयक मूल के अंत में (पत्र
संख्या २८५ में) निधि संवत् ११८६ अतिवक्त मुदि ३ है। अतः अंतगदनाओ पत्रों से यह
प्रति भी ११८६ में पढ़ने की होती आती है।

ग. हस्तलिखित—वर्षेया सुमनराज्य, सन्नामगाह के प्रायः नीचे मुक्त की मधुका प्रति
(उवागदनाओ, अंतग, अंतगदनाओ) पंक्ति—२ में अंतगदनाओ पत्र प्रति—अंतग
संवत् १४४२ है।

ग. हस्तलिखित—गर्धैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त ।

यह प्रति पंचपाठी है । इसके पत्र २६ तथा पृष्ठ ५२ हैं । प्रत्येक पृष्ठ में १३ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४२ से ४५ तक अक्षर हैं । प्रति की लम्बाई १० $\frac{१}{४}$ इंच तथा चौड़ाई ४ $\frac{१}{४}$ इंच है । अक्षर बड़े तथा स्पष्ट हैं । प्रति 'तकार' प्रधान तथा अपठित होने के कारण कहीं-कहीं अशुद्धियां भी हैं । प्रति के अंत में लेखन संवत् नहीं है । केवल इतना लिखा है—॥छ॥ ग्रंथाग्रं ८६० ॥०॥ ॥०॥ पुण्यत्नमूरीणा ॥

घ. यह प्रति गर्धैया पुस्तकालय सरदारशहर से प्राप्त है । इसके पत्र २० हैं । प्रत्येक पत्र में पाठ की पांच पंक्तियां हैं । प्रत्येक पंक्ति के बीच में टक्का लिखा हुआ है । प्रति सुन्दर लिखी हुई है । पत्र की लम्बाई १० इंच व चौ० ४ $\frac{१}{४}$ इंच है । प्रति के अंत में तीन दोहे लिखे हुए हैं ।

धली हमारी देश है, रिणी हमारो ग्राम ।
गोत्र वंश है माहातमा, गणेश हमारो नाम ॥१॥
गणेश हमारा है पिता, मैं सुत मुन्नीलाल ।
बड़ी गच्छ है खरत्तरो, उजियागर पोसाल ॥२॥
वीकानेर व्रतमान है, राजपुताना नाम ।
जंगलधर वादस्या, गंगासिंहजी नाम ॥३॥
श्रीरस्तु ॥छ॥ कल्याणमस्तु ॥छ॥

४. अणुत्तरोववाइयदसाओ—

क. ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) । पत्र संख्या २२३ से २२८ तक । विपाक सूत्र पत्र संख्या २८५ में लिपि संवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ है । अतः क्रमानुसार यह प्रति ११८६ से पहले की है ।

ख. गर्धैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त तीन सूत्रों की (उपासकदशा, अन्तकृत और अनुत्तरोपपातिक) संयुक्त प्रति है । इसके पत्र १५ तथा पृष्ठ ३० हैं । प्रत्येक पत्र १३ $\frac{१}{४}$ इंच लम्बा तथा ५ $\frac{१}{४}$ इंच करीब चौड़ा है । प्रत्येक पत्र में २३ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में करीब ८२ अक्षर हैं । प्रति पठित तथा स्पष्ट लिखी हुई है । प्रति के अन्त में लेखक की निम्नोक्त प्रशस्ति है । उसके अनुसार यह प्रति १४६५ की लिखी हुई है :—

ऊकेशवंशो जयति प्रशंसापदं सुपर्वा चलिदत्तशोभः ।

डागाभिवा तत्र समस्ति शाखा पात्रावली वारितलोकतापा ॥१॥

मुक्ताफलतुलां विभ्रत् सद्वृत्तः सुगुणास्पदं ।

तस्यां श्रीशालभद्राख्यः सम्यग्श्चिरजायत ॥२॥

तदन्वयस्याभरणं यभूव वांगभिधानः सुविमुद्धुद्धिः ।
 विवेकगतगतिचोचनान्यां दृष्ट्वा गुमार्गं य उगीचकार ॥३॥
 तदंगजन्मादनि यादृष्टान्यः नदमंजमार्जनवदकदाः ।
 बधो यदीयं गुरुरेवमिदंरत्नवगागदजमिवाविगजो ॥४॥
 प्रमेय तद्वंनविशानकेतुः कर्मविगः श्रायकतुंगयोभूत् ।
 विषं कनावानपि यः प्रकामं युपद्रमोदापंनहेतुगुह्यैः ॥५॥
 तदंगभुरभून्नाभु महणो दृष्टिचोचनः ।
 राजदंममतिः शर्यचरगुगनततां दधत् ॥६॥
 तस्याहंहेतिगुमनादजमभुगवन् यामादिभूरिगुह्योचनयकारकम् ।
 जामोदनामजमनः किन माकृणाया देविप्रिया प्रणमिनी निरिजेव मंभोः ॥७॥
 तत्पुष्टिप्रभवाकभुगुभिनीगुह्योचनः कुतः,
 पत्वारमनता नयाशिवपना नाग्यवना भीरवः ।
 आद्यन्त्र गुनारपान इति विन्यातः परो वदंन-
 म्नात्तोविनिप्रभुवानिधम्यप्रपने मेनतादोना भुवि ॥८॥
 पत्वारोपि व्यगुरयमिनां मर्यमाप्रीरुह्यो,
 र्वोदापेणातनुपनभूतो वाधया धर्मकर्म ।
 वन्योत्तं र्वसंयेव प्रतिदिनमनशान्तेय मेलाय भागी,
 मंगा देवीनि मंगाकमनहृदयानीह जैमाहिनीना ॥९॥
 तत्पुष्टिभूः श्रायक उदराय, आयो द्वितीयः किन वृट नामा ।
 श्रायकभूता गुरुरेवमजो मंभोयै नाम गुता तथान्ति ॥१०॥
 उदायवय मंभीनीनि माऊ दूदय न प्रिया ।
 आमापनं मंभमःव ततो पुतो नयाकमम् ॥११॥
 तमुवा पत्वारोप, शर्येय मंभिना पुता ।
 मंगादेवी भुगुवंचादुदमाभूतं पतो ॥१२॥
 आवायकप्रमंजमार्गि नयायमो निरंजः ।
 एवमनामदुवनि मंगायामाव र्मनः ॥१३॥
 विजयिनि पत्वारोपदे विजयदुग्मिनासाले ।
 कुत निधि 'वादीनु' पिने विजयभूयार् पजति वर्य ॥१४॥
 मंगादेवी गुरुरेवा, मेमार्जयवंगुगनक ।
 दतीय मीनार्जयवंगुगनक, मंगोदयः ॥१५॥

॥३॥ ॥ ॥

५. ह्यपि विहित प्रीति मंभोयै गुगनकमन, मंगायामाव मे मंगय । इत्येव य १ तथा य १०
 है । मंगोदय य ११ पतिवयः ॥३॥ मंगोदय पतिवय मे १४ मे ४० य ४० य ४० है । पति

की लम्बाई १० $\frac{३}{४}$ इंच तथा चौड़ाई ४ $\frac{३}{४}$ इंच है। अक्षर बड़े तथा स्पष्ट हैं। प्रति शुद्ध 'तथा' 'त' प्रधान है। अंत में लेखन-संवत् तथा लिपिकर्ता का नाम नहीं है। केवल निम्नोक्त वाक्य है—

॥छा॥ अणुत्तरोववाइयदशांगं नवमं अंगं समत्तं छा॥ श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः
छ छः प्रति का अनुमानित समय १६०० है।

५. पण्हावागरणाई—

क. ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) मूलपाठ—

पत्र संख्या २२८ से २५६

ख. पंचपाठी। हस्तलिखित अनुमानित संवत् १२वीं सदी का उत्तरार्ध।

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ६८ हैं। प्रत्येक पत्र १० × ४ $\frac{३}{४}$ इंच है। मूलपाठ की पंक्तियां १ से १२ तथा पंक्ति में लगभग २३ से ३५ अक्षर हैं। चारों ओर वृत्ति तथा बीच में वावड़ी है। अन्तिम प्रशस्ति की जगह—
ग्रंथाग्र १२५० शुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥ लिखा है। लेखन कर्ता तथा लिपि-संवत् का उल्लेख नहीं है किन्तु अनुमानतः यह प्रति १३वीं शताब्दी की होनी चाहिए।

ग. त्रिपाठी (हस्तलिखित)—

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त। इसके पत्र १११ हैं। प्रत्येक पत्र १० × ४ $\frac{३}{४}$ इंच है। मूल पाठ की पंक्तियां १ से ८ तथा प्रत्येक पंक्ति में ३६ से ४६ तक लगभग अक्षर हैं। ऊपर नीचे दोनों तरफ वृत्ति तथा बीच में कलात्मक वावड़ी है। प्रति के उत्तरार्ध के बीच बीच के कई पन्ने लुप्त हैं। अंत में सिर्फ ग्रंथाग्र १२५०। छा॥ श्री ॥ छा॥०॥ लिखा है। लिपि संवत् अनुमानतः १६वीं शताब्दी होना चाहिए।

घ. मूलपाठ (सचित्र)—

पूतमचंद दुधोड़िया, छापर द्वारा प्राप्त। इसके पत्र २७ हैं। प्रत्येक पत्र १२ × ५ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ५१ से ६० तक अक्षर हैं। बीच में वावड़ी है तथा प्रथम दो पत्रों में सुनहरी कार्य किए हुए भगवान् महावीर और गौतम स्वामी के चित्र हैं। लेखन संवत् नहीं है पर यह प्रति अनुमानतः १५७० के लगभग की होनी चाहिए। अशुद्धि बहुत है।

च. मूलपाठ तथा टट्टा की प्रति—

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त। पत्र संख्या ८३।
यह प्रति वर्तमान में जैन विद्वत् भारती, लाडवू में है। इसके पत्र १०३ तथा पृष्ठ २०६

है। बाबाबोधोप पंचपाटी। पंक्तिवां नीचे में १ ऊपर में ११ तक हैं। अक्षर २८ से ३५ तक हैं। लेखन संवत् १६६७। लेखक मुदरान। प्रति काफी शुद्ध है।

६. विवागसुयं—

क. मदनमन्दजी गोठी सखारमहर द्वारा प्राप्त (तटपथोप फोटो प्रिंट) २६० से २८५ तक। (मूलपाठ) पंक्तियां ५ से ६ तक। शुद्ध पंक्तियां अधूरी तथा कुछ अक्षर हैं। प्रति प्रायः शुद्ध है। लेखन संवत् ११८६ आदित्य मृदि ३ सोमवार। पुष्पिका काफी नमबी है पर अक्षर है। प्रति की लम्बाई १४ इंच तथा चौड़ाई ११ इंच है और तीन कोष्ठों में लिखी हुई है।

ग. मूलपाठ—

यह प्रति गर्गया पुस्तकालय, सरदारमहर की है। इसके पत्र ३२ तथा पृष्ठ ६४ हैं। पत्रों की लम्बाई १० १/२ तथा चौड़ाई ४ १/२ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४५ तक अक्षर हैं। कहीं-कहीं भाषा का अर्थ निरुद्ध हुआ है। प्रति प्रायः शुद्ध है। अभिनव प्रसन्न में लिखा है—

शुभं भवतु मेराकपाटायाः ॥ संवत् १६३३ वर्षे भाग्ये यदि = रवि निर्गितं ॥ १ ॥

ग. मूलपाठ—

यह प्रति हनुमानजी गोपीलालजी सेवारी बीरामर में प्राप्त हुई। इसके पत्र ३५ तथा पृष्ठ ७० हैं। प्रत्येक पत्र ११ १/२ इंच लम्बा तथा ४ १/२ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १२ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४५ से ४६ तक अक्षर हैं। प्रति अशुद्धि बहुत है। अभिनव प्रसन्न में—

एकशतमय अग तमसं ॥ उभाय १२१६ ॥ टीका ६०० पत्रिका ॥ निधि भवतु नहीं है, पर पत्रों की जीर्णता तथा अधरों की निम्नता से यह प्रति काफी ४०० वर्ष पुरानी होनी चाहिए।

क. १५० की मोटी तथा १०० की १०० की १०० द्वारा समस्तित तथा सुत्रैरसंयुक्त भाषात्मक, अक्षरमाला द्वारा प्रकाशित प्रथम संस्करण ११३५, विजयपुर में।

सहयोगानुमति

श्री १५०० में प्रकाशित यह इतिहास बहुत पुरानी है। आज में १५०० वर्ष पूर्व यह भाषा की भाषा भाषात्मक हो चुकी है। इतिहासों के लिए कोई भूमिकाएँ भाषात्मक भाषा नहीं हैं। उनके भाषात्मक भाषा के जो अक्षर लिखे गए हैं, वे इन पत्रों के अक्षरों के अक्षरमाला के अक्षर १५०० के अक्षरमाला के लिखे गए

आचार्यश्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, तटस्थ-दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जायगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन-कर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का अनुसन्धान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्यश्री का हमें सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुह्यतर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर भार-मुक्त होऊँ, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संचलन पा और अधिक भारी बनूँ।

प्रस्तुत पाठ के सम्पादन में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी का पर्याप्त योग रहा है। मुनि बालचन्द्रजी, इस कार्य में वदचित् संलग्न रहे हैं। प्रति-शोधन में मुनि डुलहराजजी का पूर्ण योग मिला है। इसका ग्रंथ-परिमाण मुनि मोहनलाल (आमेट) ने तैयार किया है।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योगका मूल्यांकन करते हुए मैं इन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

आगमविद् और आगम-सम्पादन के कार्य में सहयोगी स्व० श्री मदनचन्द्रजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नहीं किया जा सकता। यदि वे आज होते तो इस कार्य पर उन्हें परम हर्ष होता।

आगम के प्रबन्ध-सम्पादक श्री श्रीचन्द्रजी रामपुरिया प्रारम्भ से ही आगम कार्य में संलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिए वे कृत-संकल्प और प्रयत्नशील हैं। अपने सुव्यवस्थित वकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर अपना अधिकांश समय आगम-सेवा में लगा रहे हैं। 'अंगमुत्ताणि' के इस प्रकाशन में इन्होंने अपनी निष्ठा और तत्परता का परिचय दिया है।

'जैन विश्व-भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्द्र जी सेठिया, 'जैन विश्व-भारती' तथा 'आदर्श साहित्य संघ' के कार्यकर्ताओं ने पाठ-सम्पादन में प्रयुक्त सामग्री के संयोजन में बड़ी तत्परता से कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहारपूर्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सब का पवित्र कर्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

अणुव्रत विहार

नई दिल्ली

२५०० वां निर्वाण दिवस।

मुनि नथमल

भूमिका

नायाधम्मकहाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वाव्वागुत्ती का दृष्ट अंग है। इसके दो श्रुतसंग्रह हैं। प्रथम श्रुतसंग्रह का नाम 'नाया' और दूसरे श्रुतसंग्रह का नाम 'धम्मकहाओ' है। दोनों श्रुतसंग्रहों का एकीकरण करने पर प्रस्तुत आगम का नाम 'नायाधम्मकहाओ' बनता है। 'नाया' (ज्ञान) का अर्थ उदाहरण और 'धम्मकहाओ' का अर्थ धर्म-आख्यायिका है। प्रस्तुत आगम में जग्गि और कमिज—दोनों प्रकार के दुष्प्रान्त और कथामें हैं।¹

अनपयत्ता में प्रस्तुत आगम का नाम 'नायाधम्मकहा' (नायधर्मकथा) मिलता है। नाय का अर्थ है स्वामी। नायधर्मकथा अर्थात् सीपेकर द्वारा प्रतिपादित धर्मकथा। कुछ संस्कृत ग्रन्थों में प्रस्तुत आगम का नाम 'आनृधर्मकथा' उपलब्ध होता है। आचार्य अत्थक ने प्रस्तुत आगम का नाम 'आनृधर्मकथा' बतलाया है।² आचार्य मलयगिरि और अमरदेवगिरि ने उदाहरण-प्रधान धर्मकथा को नायाधर्मकथा कहा है। उनके अनुसार प्रथम अण्वयन में 'आत' और दूसरे अण्वयन में 'धर्म-कथाय' है। दोनों ने ही मात्र पर के सीपेकर का उल्लेख किया है।³

दीक्षावद्ध भगिद्वय में भगवान् महावीर के शिष्य का नाम 'आत' और दिग्गधर साहित्य में 'नाय' बतलाया गया है। इन आधार पर कुछ विद्वानों ने प्रस्तुत आगम के नाम के साथ भगवान् महावीर का सम्बन्ध जोड़ने का प्रयत्न किया है। उनके अनुसार 'आनृधर्मकथा' या 'नायधर्मकथा'

१. धम्मकहाओ, दहसदणमकहाओ, पृष्ठ १५।

२. अमरदेवगिरि, १९३८, पृ. १२ : आनृधर्मकथा।

३. (क) श्रीगिरि, पृष्ठ ११८, ११९ : आचार्य—उदाहरणानि अनपयत्ता धर्मकथा (नायधर्मकथा), अथवा आचार्य—अनपयत्ताधर्मकथा अथवा आनृधर्मकथा, धर्मकथा द्विपिण्डपुस्तकयोः साधु प्रकाशनात् (पृ. ११) आचार्यदेवना श्रीदीक्षावद्ध-विष्णुसंस्कृत्य सीपेकरः।

(ख) अमरदेवगिरि, पृष्ठ १५८ : आचार्य—उदाहरणानि अनपयत्ता धर्मकथा आनृधर्मकथा, दीक्षावद्ध भगवत्तद्वय अथवा अमरदेवगिरि आचार्यदेवना आचार्य, द्विपिण्डपुस्तकयोः साधु प्रकाशनात्।

का अर्थ है—भगवान् महावीर की धर्मकथा^१। वेबर के अनुसार जिस ग्रंथ में जातृवंशी महावीर के लिए कथाएं हों उसका नाम 'नायाधम्मकहा' है^२। किन्तु समवायांग और नंदी में जो अंगों का विवरण प्राप्त है उसके आधार पर 'नायाधम्मकहा' का 'जातृवंशी महावीर की धर्मकथा'—यह अर्थ संगत नहीं लगता। वहां बतलाया गया है कि जाताधर्मकथा में जातों (उदाहरणभूत व्यक्तियों) के नगर, उद्यान आदि का निरूपण किया गया है^३। प्रस्तुत आगम के प्रथम अध्ययन का नाम भी 'उत्तिष्ठणाए' (उत्तिष्ठत ज्ञात) है। इसके आधार पर 'नाय' शब्द का अर्थ 'उदाहरण' ही संगत प्रतीत होता है।

विषय-वस्तु—

प्रस्तुत आगम के दृष्टान्तों और कथाओं के माध्यम से अहिंसा, अस्वाद, श्रद्धा, इन्द्रिय-विजय आदि आध्यात्मिक तत्त्वों का अत्यन्त सरस शैली में निरूपण किया गया है। कथावस्तु के साथ वर्णन की विशेषता भी है। प्रथम अध्ययन को पढ़ते समय कादम्बरी जैसे गद्य काव्यों की स्मृति हो आती है। नवें अध्ययन में समुद्र में डूबती हुई नौका का वर्णन बहुत सर्जक और रोमांचक है। बारहवें अध्ययन में कलुषित जल को निर्मल बनाने की पद्धति वर्तमान जल-शोधन की पद्धति की याद दिलाती है। इस पद्धति के द्वारा पुद्गल द्रव्य की परिवर्तनशीलता का प्रतिपादन किया गया है।

मुख्य उदाहरणों और कथाओं के साथ कुछ अवान्तर कथाएं भी उपलब्ध होती हैं। आठवें अध्ययन में कूप-मंढूक की कथा बहुत ही सरस शैली में उल्लिखित है। परिव्राजिका चोखा जितशत्रु के पास जाती है। जितशत्रु उसे पूछता है—'तुम बहुत धूमती हो, क्या तुमने मेरे जैसा अन्तःपुर कहीं देखा है?' चोखा ने मुस्कान भरते हुए कहा—'तुम कूप-मंढूक जैसे हो।'।

'वह कूप-मंढूक कौन है?' जितशत्रु ने पूछा।

चोखा ने कहा—'कूप में एक मेंढक था। वह वहीं जन्मा, वहीं बड़ा। उसने कोई दूसरा कूप, तालाब और जलाशय नहीं देखा। वह अपने कूप को ही सब कुछ मानता था। एक दिन एक समुद्री मेंढक उस कूप में आ गया। कूप-मंढूक ने कहा—तुम कौन हो? कहां से आए हो? उसने कहा—मैं समुद्र का मेंढक हूँ, वहीं से आया हूँ। कूप-मंढूक ने पूछा—वह समुद्र कितना बड़ा है? समुद्री मेंढक ने कहा—वह बहुत बड़ा है। कूप-मंढूक ने अपने पैर से रेखा खींचकर कहा—क्या समुद्र इतना बड़ा है? समुद्री मेंढक ने कहा—इससे बहुत बड़ा है। कूप-मंढूक ने कूप के पूर्वी तट से पश्चिमी तट तक फुदक कर कहा—क्या समुद्र इतना बड़ा है? समुद्री मेंढक ने कहा—इससे भी बहुत बड़ा है। कूप-मंढूक इस पर विश्वास नहीं कर सका। इसने कूप के सिवाय कुछ देखा ही नहीं था'।

इस प्रकार नाना कथाओं, अवान्तर-कथाओं, वर्णनों, प्रसंगों और शब्द-प्रयोगों की दृष्टि से प्रस्तुत आगम बहुत महत्वपूर्ण है। इसका विश्व के विभिन्न कथा-ग्रन्थों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने पर कुछ नए तथ्य उपलब्ध हो सकते हैं।

१. जैन साहित्य का इतिहास, पूर्व-मीडिका, पृष्ठ ६६०।

२. Stories From the Dharma of NAYA इ० एं० जि० १६, पृष्ठ ६६।

३. (क) समवायो, पञ्चगणसमवायो, सूत्र ६४।

(ख) नंदी, सूत्र ८५।

४. नायाधम्मकहाओ ८।१४४, पृ० १८६, १८७।

उवात्तगदसाओ

नाम-बोध—

प्रभुनु आगम इत्यजाह्नी का नामयाँ अंग है। इसमें दस उवात्तकों का जीवन वर्णित है। इसलिये इसका नाम 'उवात्तगदसाओ' है। श्रमण-परम्परा में श्रमणों की उपासना करने वाले गृहस्थों की श्रमणोपासक या उपासक कहा गया है। भगवान् महावीर के अनेक उपासक थे। उनमें से दस मुख्य उपासकों का वर्णन करने वाले दस अण्वयन इसमें संकलित हैं।

विषय-वस्तु—

भगवान् महावीर ने मुनि-धर्म और उपासक धर्म—इस द्विविध धर्म का उपदेश दिया था। मुनि के लिए पांच महाग्रन्थों का विधान किया और उपासक के लिए बारह ग्रन्थों का। प्रथम अण्वयन में इन बारह ग्रन्थों का विधान वर्णन मिलता है। श्रमणोपासक आनन्द भगवान् महावीर के पास उनकी शिक्षा लेता है। ग्रन्थों की यह सूची धार्मिक या नैतिक जीवन की दृष्टत आचार-मरिना है। इसकी भाव भी उत्तरी ही उपयोगिता है जिसकी दार्ष्टे हजार वर्ष पहले थी। मनुष्य स्वभाव की दुर्बलता जब तक बनी रहती तब तक इसकी उपयोगिता समाप्त नहीं होती।

मुनि का आचार-धर्म अनेक आगमों में मिलता है, किन्तु गृहस्थ का आचार-धर्म मुख्यतः इसी आगम में मिलता है। इसलिये आचार-शास्त्र में इसका मुख्य स्थान है। इसकी रचना का मुख्य प्रयोजन ही गृहस्थ के आचार का वर्णन करना है। प्रसंगपर इसमें नियतिवाद के पतन-वर्णन की कुछ वर्णा हुई है। उपासकों की पारमिक कसौटी की पटमाय भी मिलती है। भगवान् महावीर उपासकों की साधना का किस्सा अजान करती के और उन्हें सम्यग्ज्ञान पर लगे प्रोत्साहित करने के लक्ष्य भी उल्लेख की मिलता है।

उपधयका के अनुसार प्रभुनु आगम उपासकों के व्यापक प्रकार के धर्म का वर्णन करता है। उपधयत-धर्म के समस्त अंग में हैं—दमन, धन, सत्ताधिक, योग्योपमान, मरितविरति, मादि-भोजन विरति, दण्डनय, नगरभिरति, अनुमति विरति और उद्विष्ट विरति। आनन्द आदि श्रावकों ने एक सतत प्रतिमाधी का आचरण किया था। ग्रन्थों की साराफला स्वयम्भू रूप में भी की जाती है और प्रतिमाधी के पावन के समय भी की जाती है। धन और प्रतिमा—ये दो पद्धतियाँ हैं। सम्यग्ज्ञान और सती मुक्त में इन और प्रतिमा दोनों का वर्णन है। उपधयका में केवल प्रतिमाधी का वर्णन है।

अंतगडदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का आठवां अंग है। इसमें जन्म-मरण की परम्परा का अंत करने वाले व्यक्तियों का वर्णन है, तथा इसके दस अध्ययन हैं इसलिए इसका नाम 'अंतगडदसाओ' है। समवायांग में इसके दस अध्ययन और सात वर्ग बतलाए गए हैं। नंदी सूत्र में इनके अध्ययनों का कोई उल्लेख नहीं है, केवल आठ वर्गों का उल्लेख है। अभयदेवमूरि ने दोनों में सामञ्जस्य स्थापित करने का प्रयत्न किया है। उन्होंने लिखा है कि प्रथम वर्ग में दस अध्ययन हैं इस अपेक्षा से समवायांग सूत्र में दस अध्ययन और अन्य वर्गों की अपेक्षा से सात वर्ग बतलाए गए हैं। नन्दी सूत्र में अध्ययनों का उल्लेख किए बिना केवल आठ वर्ग बतलाए गए हैं। किन्तु इस सामञ्जस्य का अंत तक निर्वाह हो नहीं सकता, क्योंकि समवायांग में प्रस्तुत आगम के शिक्षा-काल (उद्देशन-काल) दस बतलाए गए हैं। नंदीसूत्र में उनकी संख्या आठ है। अभयदेवमूरि ने लिखा है कि उद्देशनकालों के अन्तर का आशय हमें ज्ञात नहीं। नंदीसूत्र के चूर्णिकार श्री जिनदास महत्तर और वृत्तिकार श्री हरिभद्रसूरि ने भी यह लिखा है कि प्रथम वर्ग में दस अध्ययन होने के कारण प्रस्तुत आगम का नाम 'अंतगडदसाओ' है। चूर्णिकार ने दसा का अर्थ अवस्था भी किया है।

प्रस्तुत आगम का वर्णन करने वाली तीन परम्पराएं हैं—एक समवायांग की, दूसरी तत्त्वार्थवातिक आदि की और तीसरी नंदी की।

प्रथम परम्परा के अनुसार प्रस्तुत आगम के दस अध्ययन हैं। इसकी पुष्टि स्थानांग सूत्र से होती है। स्थानांग में प्रस्तुत आगम के दस अध्ययन और उनके नाम निदिष्ट हैं, जैसे—नमि, मातंग, सोमिल, रामगुप्त, सुदर्शन, जमाली, भगाली, किकप, चित्तवक और फाल अंबडपुत्र। तत्त्वार्थवातिक में कुछ पाठ-भेद के साथ ये दस नाम मिलते हैं, जैसे—नमि, मातंग, सोमिल, रामगुप्त, सुदर्शन, यमलीक, वलीक, कंबल, पाल और अंबण्डपुत्र। समवायांग में दस अध्ययनों का उल्लेख है, किन्तु उनके नाम निदिष्ट नहीं हैं। तत्त्वार्थवातिक के अनुसार प्रस्तुत आगम में प्रत्येक

१. समवायो, पद्मणसमवायो, सूत्र ६६ :दस अज्जयणा सत्त वग्गा।

२. नंदी, सूत्र ८८ :अठ्ठ वग्गा।

३. समवायांगवृत्ति, पत्र ११२ : दस अज्जयणं त्ति प्रथमवर्गापेक्षयैव घटन्ते, नन्धां तथैव व्याख्यातत्वात्, यच्चेह पठ्यते 'सत्त वग्ग' त्ति तत् प्रथमवर्गादन्यवर्गापेक्षया, यतोऽप्यष्ट वर्गाः, नन्धामपि तथा पठितत्वात्।

४. समवायांगवृत्ति, पत्र ११२ : ततो भणितं—अठ्ठ उद्देशनकाला इत्यादि, इह च दश उद्देशनकाला अधीयन्ते इति नास्याभिप्रायमवगच्छामः।

५. (क) नन्दीसूत्र, चूर्णिसहित पृ० ६८ : पढमवग्गे दस अज्जयणं त्ति तत्सकखतो अंतकडदस त्ति।
(घ) नन्दीसूत्र, वृत्तिसहित पृ० ८३ : प्रथमवर्गे दशाध्ययनानि इति तत्सङ्ख्यया अन्तकडदसा इति।

६. नन्दीसूत्र, चूर्णिसहित पृ० ६८ : दस त्ति—अवस्था।

७. ठाणं, १०।११३।

८. तत्त्वार्थवातिक १।२०, पृ० ७३।

अणुत्तरोववाइयदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का नवां अंग है। इसमें अनुत्तर नामक स्वर्ग-समूह में उत्पन्न होने वाले मुनियों से सम्बन्धित दस अध्ययन हैं, इसलिए इसका नाम 'अणुत्तरोववाइयदसाओ' है। नंदी सूत्र में केवल तीन वर्गों का उल्लेख है^१। स्थानांग में केवल दस अध्ययनों का उल्लेख है^२। राजवार्तिक के अनुसार इसमें प्रत्येक तीर्थंकर के समय में होंगे वाले दस-दस अनुत्तरोपपातिक मुनियों का वर्णन है^३। समवायांग में दस अध्ययन और तीन वर्ग—दीनों का उल्लेख है^४। उसमें दस अध्ययनों के नाम उल्लिखित नहीं हैं। स्थानांग और तत्त्वार्थवातिक के अनुसार उनके नाम इस प्रकार हैं।

(१) स्थानांग के अनुसार—

ऋषिदास, धन्य, सुनक्षत्र, कार्तिक, स्वस्थान, शालिभद्र, आनंद, तंतली, दशार्णभद्र और अतिमुक्त^५।

(२) राजवार्तिक के अनुसार—

ऋषिदास, वान्य, सुनक्षत्र, कार्तिक, नन्द, नन्दन, शालिभद्र, अभय, वार्षिपेण और चिलातपुत्र^६।

उक्त दस मुनि भगवान् महावीर के शासन में हुए थे—यह तत्त्वार्थवातिककार का मत है। धवला में कार्तिक के स्थान पर कार्तिकेय और नंद के स्थान पर आनंद मिलता है^७।

प्रस्तुत आगम का जो स्वरूप उपलब्ध है वह स्थानांग और समवायांग की वाचना से भिन्न है। अभयदेवसूरि ने इसे वाचनान्तर बतलाया है^८। उपलब्ध वाचना के तृतीय वर्ग में धन्य,

१. नंदी, सूत्र ८६ :.....तिष्ठिण वरणा ।

२. ठाणं १०।११४

३. (क) तत्त्वार्थवातिक १।२०, पृ० ७३ ।

.....इत्येते दश वर्धमानतीर्थंकरतीर्थे । एवमुपभादीनां त्रयोविंशतेस्तीर्थेष्वन्येऽन्ये च दश दशानगारा दश दश दारुणानुपसर्गान्निजित्य विजयाद्यनुत्तरोपपत्तन्ना इत्येवमनुत्तरोपपादिकः दशास्यां वर्ण्यन्त इत्यनुत्तरोपपादिकदशा ।

(घ) कसायपाहुड भाग १, पृ० १३० ।

अणुत्तरोववाइयदसा नाम अंगं चउव्विहोवसग्गे दारुणे सहिपूण चउवीसण्हं तित्थयरारणं तित्थेसु अणुत्तर-विमाणं गदे दस दस मुणिवसहे वण्णेदि ।

४. समवाओ, पइण्णसमवाओ ६७ ।

.....दस अज्झमणा तिष्ठिण वरणा..... ।

५. ठाणं १०।११४ ।

६. तत्त्वार्थवातिक १।२० पृ० ७३ ।

७. पट्ठपण्णआगम १।१।२ ।

८. स्थानांगवृत्ति पत्र ४८३ :

उदेवनिहापि वाचनान्तरापेक्षमाध्ययनविभाग उक्तो न पुनरपेक्ष्यमानवाचनापेक्षयेति ।

कोई संगति नहीं हैं। समवायांग में इसके अध्ययनों का उल्लेख नहीं है, किन्तु उसके 'पण्हावागरण-दसामु' इस आलापक (पैराग्राफ) के वर्णन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि समवायांग में प्रस्तुत आगम के दस अध्ययनों की परम्परा स्वीकृत है। उक्त आलापक में बतलाया गया है कि प्रश्नव्याकरणदसा में प्रत्येक बुद्ध भाषित, आचार्य भाषित, वीरमहर्षि भाषित, आदर्श प्रश्न, अंगुष्ठ प्रश्न, बाहु प्रश्न, असि प्रश्न, मणि प्रश्न, क्षीम प्रश्न, आदित्य प्रश्न आदि-आदि प्रश्न वर्णित हैं। इन नामों की स्थानांग में निर्दिष्ट दस अध्ययन के नामों के साथ तुलना की जा सकती है। यद्यपि उद्देशनकाल पेंतालिस बतलाए गए हैं फिर भी अध्ययनों की संख्या का स्पष्ट निर्णय नहीं किया जा सकता। गंभीर विषय वाले अध्ययन की शिक्षा अनेक दिनों तक दी जा सकती है।

तत्त्वार्थवातिक के अनुसार प्रस्तुत आगम में अनेक आक्षेप और विक्षेप के द्वारा हेतु और नय से आश्रित प्रश्नों का उत्तर दिया गया है, लौकिक और वैदिक अर्थों का निर्णय किया गया है।

जयघबला के अनुसार प्रस्तुत आगम आक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेजनी और निर्वेदनी—इन चारों कथाओं तथा प्रश्न के आधार पर नष्ट, मुष्टि, चिन्ता, लाभ, अलाभ, सुख, दुःख, जीवन और मरण वा वर्णन करता है।

उक्त ग्रंथों में प्रस्तुत आगम का जो विषय वर्णित है वह आज उपलब्ध नहीं है। आज जो उपलब्ध है उसमें पांच आश्रवों (हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्मचर्य और परिग्रह) तथा पांच संवरों (अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) का वर्णन है। नंदी में उसका कोई उल्लेख नहीं है। समवायांग में आचार्य भाषित आदि अध्ययनों का उल्लेख है तथा जयघबला में आक्षेपणी आदि चारों कथाओं का उल्लेख है। इससे अनुमान किया जा सकता है कि प्रस्तुत आगम का उपलब्ध विषय भी प्रश्नों के साथ रहा हो, बाद में प्रश्न आदि विद्याओं की विस्मृति हो जाने पर वह भाग प्रस्तुत आगम के रूप में बचा हो। यह अनुमान भी किया जा सकता है कि प्रस्तुत आगम के प्राचीन स्वरूप के विच्छिन्न हो जाने पर किसी आचार्य के द्वारा नए रूप से रचना की गई हो। नंदी में प्रस्तुत आगम की जिस वाचना का विवरण है, उसमें आश्रवों और संवरों का वर्णन नहीं है, किन्तु नंदी चूर्ण में उनका उल्लेख मिलता है। यह संभव है कि चूर्णिकार ने उपलब्ध आकार के आधार पर उनका उल्लेख किया है।

१. तत्त्वार्थवातिक १।२०, पृ० ७३, ७४ :

आक्षेपविक्षेपहेतुनयाश्रितानां प्रश्नानां व्याकरणं प्रश्नव्याकरणम् । तस्मिँल्लौकिकवैदिकानामर्थानां निर्णयः ।

२. कथायपाहुट, भाग १, पृ० १३१, १३२:

पण्हावागरणं नाम अंगं आक्षेपणी-विक्षेपणी-संवेजनी-निर्वेदनीनामाग्रे चतुर्विहं कथाओ पण्हादो णट्ट-मुट्ठि-चिन्ता-साहालाह-मुद्यदुक्ख-जीवियमरणाणि च वर्णेदि ।

३. नंदी मूल, चूर्ण सहित पृ० ६६ ।

विद्यागमुयं

नाम-बोध

प्रस्तुत आगम द्वाव्यंशार्त्ता का व्याख्या अंग है। इसमें मुक्त और बद्ध कर्मों के विपाक का वर्णन किया गया है, इसलिए इसका नाम 'विद्यागमुयं' है। रथानांग में इसका नाम 'कर्म विद्यागदना' है।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के दो विभाग हैं—दुःख विपाक और सुख विपाक। प्रथम विभाग में दुःख कर्म करने वाले व्यक्तियों के जीवन प्रसंगों का वर्णन है। जिन प्रसंगों को पढ़ने पर लगता है कि कुछ व्यक्ति हर युग में होते हैं। ये अपनी कृत्स्न मनोवृत्ति के कारण भयंकर अपराध भी करते हैं। दुःख में रहने की शारीरिक और मानसिक स्थितियों को किम प्रकार प्रभावित करता है, यह भी जानने को मिलता है। दूसरे विभाग में सुख करने वाले व्यक्तियों के जीवन-प्रसंग है। जैसे मूर्ख कर्म करने वाले व्यक्ति हर युग में मिलते हैं, जैसे ही उपशान्त मनोवृत्ति वाले लोग भी हर युग में मिलते हैं। अच्छाई और बुराई का योग आकस्मिक नहीं है।

रथानांग सूत्र में कर्म विपाक के दस अवयव बतलाए गए हैं—मृगानुव, गोबान, संड, पचर, माह्न, नन्दीयेन, धीरिक, उदुम्बर, सहोदह-आमरक और कुमार विजयी। ये नाम किसी दूसरी भाषा के हैं।

उपसंहार

अंग सूत्रों की विवक्षा और उपलब्ध स्वयं में पूर्ण संवादित नहीं है। इस आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि अंग सूत्रों का उपलब्ध स्वयं केवल प्राचीन नहीं है, प्राचीन और अर्वाचीन दोनों संस्करणों का सम्मिश्रण है। इस विषय का अनुमान यह ही मर्यादपूर्ण हो सकता है कि अंग सूत्रों के उपलब्ध स्वयं में मिलता प्राचीन भाग है और मिलता अर्वाचीन तथा किम प्राच्यार्थ में यह समझी रहता था। भाषा, प्रतिपाद, विषय और प्रतिपादन दोनों के आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है। यद्यपि यह कार्य बहुत ही भय, मान्य है, पर सम्भव नहीं है।

१ (४) अंगसूत्र, दशमस्कन्धभाष्ये सूत्र ११।

(५) अंग, सूत्र ११।

(६) भाष्यपरिचयिका सूत्र १।

(७) अंगसूत्र, भाष्य १ सूत्र ११२।

८ अंग १-११५।

९ अंग १-११५।

कार्य-संपूर्ति

प्रस्तुत आगमों के पाठ-संशोधन में अनेक मुनियों का योग रहा है। उन सबका मैं आशीर्वाद देता हूँ कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

इसके सम्पादन का बहुत कुछ श्रेय शिष्य मुनि नयमल को है, क्योंकि इस कार्य में अहर्निश वे जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। अन्यथा यह गुह्यतर कार्य बड़ा दुर्लभ होता। इनकी वृत्ति मूलतः योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्ग्रहस्य पकड़ने में इनकी मेधा काफी पंजी हो गई है। विनय-शीलता, श्रम-परायणता और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव ने इनकी प्रगति में बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी वचन से ही है। जब से मेरे पास आए, मैंने इनकी इस वृत्ति में क्रमशः वर्धमानता ही पाई है। इनकी कार्य-क्षमता और कर्तव्य-परता ने मुझे बहुत संतोष दिया है।

मैंने अपने संघ के ऐसे शिष्य साधु-साध्वियों के बल-वृत्ते पर ही आगम के इस गुह्यतर कार्य को उठाया है। अब मुझे विश्वास हो गया है कि अपने शिष्य साधु-साध्वियों के निस्वार्थ, विनीत एवं समर्पणात्मक सहयोग से इस बृहत् कार्य को असाधारण रूप से सम्पन्न कर सकूंगा।

भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उनकी वाणी को जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव हो रहा है।

अणुव्रत विहार, नई दिल्ली-१

२५.००वां निर्वाण दिवस

आचार्य तुलसी

Preface

NĀYĀ DHAMMAKAHĀO

The title

The present Āgama is the sixth Anga of Dwādaśāṅgī. It has two Śrutaskandhas. The first is called as 'NĀYĀ' and the second as 'DHAMMAKAHĀO'. On combining both the Śrutaskandhas, the present Āgama has the title as 'NĀYĀDHAMMAKAHĀO'. 'NĀYĀ' (Jnāta) means examples and 'DHAMMAKAHĀO' means religious fables. The present Āgama has both of historical illustrations and imaginary fables.¹

In the Jayadhawalā the title of this Āgama is found as 'Nāhadhāmma-kahā' (Nāthadharma-kathā). 'Nātha' means the Lord. 'Nāthadhamma-kahā' i.e. the dharmakathā expounded by the Tīrthānkara. In some Sanskrit works the title of this Āgama is given as 'Jnātīdharmakathā'. Āchārya Akalanka too has given the title of this Āgama as 'Jnātadharma-kathā'. Āchārya Malayagiri and Abhayadeva Sūri give the title of 'Jnātadharma-kathā'. It is a treatise mainly containing illustrative religious stories. According to them, the first Śrutaskandha has illustrations and the second Śrutaskandha has religious stories. Both of them mention the lengthening of the word 'Jnāta'.²

The family name of lord Mahāvīra has been given as 'Jnāta' and 'Nātha' in the Śwetamber and Digamber literature respectively. On this basis, some scholars have tried to relate this Āgama with lord Mahāvīra.³ They hold that 'Jnātadharma-kathā' or 'Nāthadharma-kathā' means the 'Dharmakathā by lord Mahāvīra'. Weber says that the work having fables pertaining to the religion of Jñātevanśī Mahāvīra, is titled as NĀYĀDHAMMAKAHĀ.⁴ But, on the account found in the Samvāyāṅga and the Nandi, the meaning

1. Samantva, pāṇinīyāgamaśāstra, Sūtra 91

2. Yatswortha Varāha, 1879.

3. (a) Nandīśrīrām, paper 210-21.

(b) Samvāyāṅga Vajrā, page 109.

4. Journal of the Asiatic Society, Calcutta, 1874, page 663.

5. Journal of the Asiatic Society of Japan, Vol. 10, page 46.

'Dharmakathā of Jnātṛiwaṇsī Mahāvīra' does not seem to be appropriate. It has been told there that in the 'Jnātadharmakathā', the cities and gardens etc. of the 'Jnātas' (the persons cited) have been described.¹ The title of the first Adhyayana of this Āgama is 'Ukkhittanāye' (Utkshiptajñāta). On this basis also, the word 'Nātha' seems to go with the meaning as an 'illustration' only.

The content

The spiritual elements such as non-violence, palate control, faith, restraint of senses etc. have been expounded in an excellent style through the illustrations and fables in the present Āgama. Besides that of a plot, it has the elegance of description also. While going through the first Adhyayana, we have the reminiscence of the poetical prose-work such as the Kādambari. In the ninth Adhyayana, the description of the boat sinking in the sea, is very lively and horripilating. In the twelfth Adhyayana, the process of purifying water reminds us of the modern method. The changability of the Pudgala substance has been expounded by this illustration.

Along with the main illustrations and fables, some subsidiary fables are also found. In the eighth Adhyayana the fable of a well-frog has been recorded in an excellent style. Parivrājikā Chokha goes to Jitaśatru. Jitaśatru enquires of her—You wander a lot. Have you ever seen a harem like that of mine? With a smile Chokha said—You are like a Kūpa-Mandūka.

Who is that Kūpa Mandūka ?

Chokha said—There was a frog in a well. He was born and brought up there. He considered his well everything. One day an ocean-frog came down in that well. The well-frog said to him—Who are you ? He answered—I am a frog from the ocean. I have come from there. The well-frog asked him—How big is the ocean ? The ocean-frog said—It is very big. The well-frog, drawing a boundry with his foot, asked him—Is the ocean as big as this ? The ocean-frog answered—Far more greater than this. The well-frog had a jump, from the eastern to the western end of the well, and said—Is the ocean so big ? The ocean-frog answered—It is far more bigger than this too. The well-frog could not believe it as it had never seen any thing except the well².

-
1. (a) Samwao, painnagasamawao, Sutra 94.
(b) Nandi, Sutra 85.
 2. Nayadhammakahao, 8/154, pages 186-87.

In this way, from the view point of various fables, insertions, illustrations, descriptions, anecdotes and word-usages, this Āgama has a great value. A comparative study of it with that of the different fable-works found the world over may well give some new facts.

UWĀSAGADASĀO

The title

The present Āgama is the seventh Anga of the Dwādaśāṅgi. It has the biographies of ten Upāsakas (lay devotees), therefore, it is called as 'Upāsagadasāo'. In the Śramanū order the laymen serving the Śramanas are called Śramanopāsakas or Upāsakas. Lord Mahāvira had large number of Upāsakas. It comprises of ten 'Adhyayanas' depicting the life of ten principal Upāsakas.

The Content

Lord Mahāvira has given twofold code of conduct, such as laws of conduct for Munis and laws of conduct for Upāsakas. Five Mahāvratas (great vows) were postulated for a Muni and twelve Vratas (vows) for a Upāsaka. Śramanopāsaka Anand was consecrated and initiated to his cult by him. The list of the Vratas is an excellent code of conduct pertaining to religious or ethical life. Even today, it has the same utility as it had 2500 years ago. As long as the weakness of human nature is there, its utility will always exist.

The code of conduct for Munis is found in many Āgamas but the code of conduct for laymen is found in this Āgama only. It has, therefore, its own place in the codes of conduct. The object of its composition is only to put forth the code of conduct for a layman. Incidentally, Niyatīvāda has also been discussed nicely with its arguments for and against. Incidents, proving the religious touch-stone for the Upāsakas, are also found. It also throws light on the fact as to how lord Mahāvira took care of the accomplishment of the Upāsakas, and encouraged them to higher spiritual life from time to time.

According to the Jayadhawala the present Āgama narrates eleven-fold practices of the Upāsakas. They are—Dāṇam, Vrat, Śīlāṅgika, Pannādhupawā, Saṅgīta-Vratā, Ratādhījan-Vratā, Brahmacārya, Ārambha-Vratā, Paripraka-Vratā, Arambh-Vratā, and Uddhaya Vratā. The Śāśvatat, beginning from

Ananda, had practised above said eleven Pratimās. The Vratas are practised indenpendently, and at the time of fulfilment of Pratimās also. These Vratās and Pratimās are the two religious codes for an Upāsaka. In the Samawāyānga and the Nandi Sūtra, Vratā and Pratimā both are mentioned. The Jayadhawālā gives an account of Pratimās only.

ANTAGADADASÃO

The title

The present Āgama is the eighth of the Dwādaśāṅgī. The illustrious ones who put an end to the cycle of death and birth, have been narrated in it, and it has ten Adhyayanas. Hence the title 'Antagadadasão'. The Samwāyānga tells us that it contained ten Adhyayanas and seven Vargas¹. The Nandi Sūtra says nothing about its Adhyayanas and only eight Vargas have been accounted for and in it². Sri Abhayadeva Sūri has tried to find consistency in these both. He tells us, that the first Varga has ten Adhyayanas, therefore the Samawāyānga Sūtra mentions ten Adhyayanas and seven Vargas only. The Nandi Sūtra gives eight Vargas only with no mention of Adhyayanas³. But this consistency cannot be maintained to the end, because the Samawāyānga gives us ten Śiksha-kālas (Uddeśan kālas) of this Āgama and the Nandi Sūtra gives only eight. Sri Abhayadeva Sūri admits that he does not understand the purpose behind the difference in the number of the Uddeśan-kālas⁴. The Chūrnikār of the Nandīsūtra, Sri Jinadas Mahattar and the Vrittikār, Śri Haribhadra Sūri also write that the present Āgama is given the title 'Antagadadasão' as it has ten Adhyayanas in the first Varga⁵. The Chūrnikār takes the meaning of 'Daśā' as 'Awasthā' (condition) also⁶.

Three traditions are found to narrate the present Āgama : firstly, that of the samawāyānga; secondly, that of the Tatwārtha Vārtika, and thirdly, that of the Nandi Sūtra.

-
1. Samawao, painnagasamawao, Sutra 96.
 2. Nandi Sutra, 88.
 3. Samwayanga Vritti, page 112.
 4. Samawayanga Vritti, page 112.
 5. (a) Nandi with Churni, page 68.
(b) Nandi with Vritti, page 83.
 6. Nandi with the Churnipage 68. Dasatti Awastha.

According to the first tradition, the present Āgama has ten Adhyāyanas. The Sthānāṅga Sūtra supports it. The Sthānāṅga mentions the ten Adhyāyanas and their headings, such as Nami, Mātanga, Somila, Ramagupta, Sudarśana, Jamālī, Bhagālī, Kimkaṣa, Ōlawaṅka, Pāla, and the Ambaśṭhaputtra.¹ These headings are found in the Tatwārthavārtika also with some variance, such as, Nami, Mātang, Somila, Ramaguptā, Sudarśana, Yamalika, Kambala, Pāla and Ambaśṭhaputtra. Samawāyāṅga mentions ten adhyāyanas without giving their names. The present Āgama gives an account of the Antakṛta Kewalis, in groups of ten contemporaries of each Tīrthankara.² The Jayadhawala, too, supports this statement of the Tatwārthavārtika. In the Nandīśūtra mention is found neither of the ten Adhyāyanas nor of their headings. On this basis, it can be inferred that the Samawāyāṅga and the Tatwārthavārtika maintain the old tradition and the Nandīśūtra gives the Āgama in the form found at present. There are ten Adhyāyanas of the first Varga out of the eight Vargās found at present, but their headings altogether differ from the above-said headings, i.e., Gautama, Samudra, Sāgara, Gambhīra, Stanīta, Acāla Kāmpilya, Akṣetra, Prasajit and Viṣṇu. In the 'Sthānāṅgavṛitti' Śrī Abhayadeva Suri acknowledges it as a variant 'Vācā'.³ This shows that the 'Vācā' of the 'Nandī' is different from the 'Vācā' found in the 'Samawāyāṅga'.

The word 'Antapada' has two Sanskrit forms—Antakṛta and Antakṛit. Both have the same sense but 'gṛta' goes more with the Sanskrit version 'Kṛta' so far as morphology is concerned.

The Content

This Āgama gives an excellent account of Vāsudeva Kṛṣṇa and his family. The Dīkṣā (initiation) and accomplishment of Gajasukamāla, the younger brother of Vāsudeva Kṛṣṇa has been horripiliatingly narrated.

In the sixth Varga, is found an account of the incident occurred with Arjuna, the gardener. An accident turned him to be a murderer and the other association made him a saint. It may not be admitted that a man changes with the circumstances and atmosphere, but, even then, it may be accepted that they are the cause of the rise and fall of a man.

1. Tatwārthavārtika 1/27

2. Tatwārthavārtika 1/27

3. Śrī Abhayadeva

By the Adhyayana of Atimuktaka Muni, the value of spiritual accomplishment can be well understood. Fasting alone is seen in this Āgama through out. The narrations of meditations are scanty. Lord Mahavira had laid stress upon both—the fast and the meditation. In the classification of penance, fast is the outer penance and meditation is the inner one. Lord Mahavira in his penance-period, had observed both, fast and meditation. It is worth investigating why this Āgama lays so much stress on fasting only. This Āgama, a remanent in the succession of oblivion and reproduction, is valuable and worthy of research work from many points of view.

ANUTTAROWAWĀIYA-DASĀO

The title

This Āgama is the ninth Anga of the Dwādaśaṅgī. As it contains ten Adhyayanās regarding the Munis born in the Anuttara Swarga class, its title is given as 'Anuttarowawāiya-Dasāo'. The Nandi Sūtra mentions only three Vargas¹. The Sthānāṅga quotes only ten Adhyayanās.² According to the Rajavārttika groups of ten Anuttaropapātika Munis, contemporaries of each Tīrthanker, have been narrated in it.³ The Samawāyāṅga mentions the ten Adhyayanās and the three Vargas too.⁴ But the headings of the ten Adhyayanās have not been given in it. According to the Sthānāṅga and the Tattvārthavārttika they read as, Rīṣidasa, Dhanya, Sunakṣatra, Kārttika, Swastha, Śālibhadra, Ānanda, Tetali, Daśārṇabhadra and Atimukta⁵, and as Rīṣidasa, Dhanya, Sunakṣatra, Kārttika, Nandanandana, Śālibhadra, Abhaya, Wāriṣeṇa, and Cilattaputra respectively. The above said Munis were the contemporaries of Lord Mahāvira, such is the opinion of the author of the Tattvārthavārttika.⁶ In the Dhawālā we find Kārtikeya instead of Kārttika and Ānanda instead of Nanda⁷.

The present form of the Āgama is different from the 'Vaēna' of the Sthānāṅga and the Samawāyāṅga. Abhayadeva Sūri holds that it is a different 'Vaēna'. In the form of the Āgama, that is available, three Adhyayanās, such

1. Nandi, Sūtra, 89.

2. Thanam, 10/114.

3. Tattvārthavārttikas 1/20, Kasayapahuda I, page 130.

4. Samawao, painnagasamawao, Sūtra 97.

5. Thanam 10/114.

6. Tattvārthavārttika 1/20.

7. Satkhundagama 1/1/2.

as Dhanya, Sunakshtra and Rīṣidasa, are found. In the first Varga, only two Adhyayanās, named as Wārisṣeṇa and Abhaya, are seen.

The contents

This Āgama beautifully narrates the luxury and ascetic lives of many princes. The narration of the ascetic life of Dhanya Anagāra and his body emaciated due to the penance is noteworthy both from the literary and spiritual viewpoints.

PANHĀWĀGARANĀIN

The title

The present Āgama is the tenth Anga of the Dwādaśāṅgī. Its title has been mentioned as 'Panhāwāgaranāin' in the Samawāyāṅga Sūtra and the Nandī.¹ Its name is found as 'Panhāwāgaradasāo'² in the Sthānāṅga and the same reads as 'Panhāwāgarapadasāsu' in the Samawāyāṅga. It is, therefore inferred that the title mentioned in the Sthānāṅga is also in concurrence with the Samawāyāṅga. The Jayadhwala and the Tattvārthavarttika note it as Panhāwāgarana or Praśna-Vyākaraṇa.³

The Contents

Opinions differ regarding the contents of the present Āgama. The Sthānāṅga cites its ten Adhyayanās, such as, Upamā, Saṁkhyā, Rīṣibhāṣita, Ācāryabhāṣita, Mahāvīra-bhāṣita, Kyaumaka-Praśna, Komala-Praśna, Ādarśa-Praśna, Anguṣṭha-Praśna and Bāhu-Praśna.⁴ The headings of the Adhyayanās indicate well the contents they have.

According to the Samawāyāṅga and the Nandī, the present Āgama has various types of queries, sciences (vidyās) and the dialogues of the Devas dealt with.⁵

The Nandī notes fortyfive Adhyayanās of it, which do not accord with the Sthānāṅga. The Samawāyāṅga makes no mention of its Adhyayanās.

1. (a) Samawāyāṅga-sūtramāṅga, Sūtra 97.

(b) Nandī, Sūtra 97.

2. Dharm., 10:110.

3. (a) Rāmaparāśara, pt. I, page 131.

(b) Tattvārthavarttika 1:20.

4. The same 10:116.

5. (a) Samawāyāṅga-sūtramāṅga, Sūtra 95.

(b) Nandī, Sūtra, 95.

But, from its 'Pañhāwāgarāṇasāsū' paragraph, it may be inferred that the Samawāyāṅga accepts the traditional ten Adhyāyanas of the present Āgama. The said paragraph tells us that Pratyeka Buddhābhāṣita, Ācārya-bhāṣita, Vīramaharṣi-Bhāṣita, Ādarśa-Praśna, Anguṣṭha-Praśna, Bāhu-Praśna, Asi-Praśna, Maṇi-Praśna, Kṣauma-Praśna, Āditya-Praśna etc. have been dealt with in the 'Praśna-Vyākaraṇa-Dasū'. These headings can well be compared with those of ten Adhyāyanas mentioned in the Sthānāṅga. Though the Uddeśana-Kālas have been mentioned as fortyfive, the exact number of the Adhyāyanas cannot be decided definitely. The teaching of the Adhyāyana on a deep topic could be spread over for many days.

According to the Tattvārthavārttika many queries have been expounded in this Āgama, depending on cause and inference by 'Ākṣepa' and 'Vikṣepa'. Also the Laukika (secular) and Vedic Arthas have been ascertained in it.¹

The Jayadhawālā notes that this Āgama narrates the Naṣṭa, Muṣṭi, Ćintā, Lābha, Alābha, Sukha, Dukkha, Jīvan and Maraṇa with the help of the four kinds of fables, i.e. Ākṣepaṇī, Prakṣepaṇī, Samvejaṇī, and Nirvedanī, as well as purporting a query.²

The contents of the Āgama, as mentioned in the said works, is not found today. What is found covers the five Āśrawas (Hinsā, Asatya, Ćaurya, Ābrahmaĉarya and Parigraha) and the five Samwaras (Ahimsa, Satya, Ācārya, Brhmaĉarya, and Aparigraha) only. The Nandi does not make mention of it at all. The Samawāyāṅga mentions the Adhyāyanas beginning from Ācārya-Bhāṣita, while the Jayadhawālā gives an account of the four kinds of fables beginning from Ākṣepaṇī. It may be inferred that the known contents of the Āgama formerly were in the form of the queries and subsequently, the learning of query etc. being lost, the remanent part formed the present Āgama. It is also likely that the old form of the present Āgama being lost, some Ācārya composed it a fresh. The 'Vacna' of this Āgama given in the Nandi, does not narrate the Āśrawas and the Samwaras, but the Ćūrṇi of the Nandi does it.³ Likely it is that the Ćūrṇikāra did it on the basis of the present form of the Āgama.

1. Tattvārthavārttika 1/20.

2. Kasayapahuda part I, page 131.

3. Nandi Sutra with the Ćūrṇi on page 12.

VIVĀGASUYAM

The title

The present Āgama is the 11th Anga of the Dwādaśāṅgi. The Vipāka (fruit) of the Sukṛita and Duṣkṛita deeds has been dealt with in it, therefore the title 'Vivāgasuyam.' The Sthānāṅga gives its title as 'Kāmma Vivāgadasā.'

The Contents

This Āgama has two divisions, i.e. the Dukha Vipāka and the Sukha Vipāka. The first division contains the topics on the lives of the individuals doing bad deeds. On going through the said contents, it appears that in every age, there are some individuals who commit horrible crimes on account of their cruel mentality. It is also gathered how the criminal deeds affect their physical and mental states. The second division has the life-contents of those individuals who perform good deeds. As the commitant of cruel deeds are found in every age, so are the persons having the tranquil mentality. Conjunction of goodness and badness is not without cause.

Conclusion

The Sthānāṅga Sūtra enumerates ten Adhyāyanas of the Karma-Vipāka such as, Mṛgāputra, Goṛṣa, Andā, Sakata, Māhan, Nandiṣena, Śaurika, Udumbara, Sahasoddāha-Āmaraka, and Kumar Licchavi. These headings have been taken from some other 'Vācna'.

The account of the Anga-Sūtras and the peculiar form they are presently found in are not fully harmonic. On this basis, it may be inferred that the obtained form of the Āgama Sūtras is not ancient only, but it is a mixture of the editions of old and new, both. This will form an important subject of investigation as to how much of the present form of the Anga-Sūtra is ancient and how much modern, as well as who of the Āśvins composed it and when. The language, the subject-matter and the style of expression will surely form the basis of investigation. This is of course, hardly to come, but not impossible.

1. (a) Śāstram, parameśvarawāda, Sūtra 97
 (b) Māhātmya, vi.
 (c) Jāyantiśāstram, 1/29
 (d) Karmasūtra, Pt I, para 112.
2. The same P. 112.

Accomplishment of the work

In the accomplishment of this task, there has been the contribution of many a Muni. I bless them that their devotedness to the performance be ever more developed.

For the editing of this Āgama major amount of credit goes to my learned disciple Muni Shri Nath Mali. Day in and day out he has devoted himself to this arduous task. It is because of his concentrated efforts that the work has got such a nice accomplishment. Otherwise, it would not have been an easy job. On account of his in-born Yogic temperament he was capable of attaining that concentration of mind which was essential for achieving the end. On account of his constant devotion to the work of research in the field of Āgamic literature his intellect has achieved sufficient sharpness in finding out immediately the hidden meaning and mysteries of Āgamic expositions. His keen sense of obedience, perseverance and absolute dedication have contributed much in developing his personality. The above qualities are seen in him since his early age. Right from the time when he joined the Sangha I have been an observer of these qualities of his, which have so developed. His capacity to undertake to a big task has given me ever increasing satisfaction.

I have undertaken this hard and tremendous task of editing the Āgamas relying on the strength of such learned disciples in the Sangha. I am now, quite confident that I shall be able to complete this hazardous work with the help and assistance of my obedient, selfless and devout disciples.

On the holy occasion of this 25th centenary of Lord Mahavira, I have a feeling of great pleasure in presenting to the people the teachings of the Lord.

Anuvrata Vihar

Delhi

Āchārya Tulasi

नायावभूमकहाओ

सद्वर्ग लज्जयज्ञं

12. 8-222

पृ० १-७३

[illegible]

भिक्षुपडिमा-पदं १६६, मेहस्स गुणरयणमवच्छर-पदं १६६, मेहस्स मरीन्दमा-पदं २०२, मेहस्स विपुलपव्वए अणसण-पद २०३, मेहस्स समाहिमरण-पदं २०८, थरेहि मेहस्स आयाणभंडसम्पण-पदं २०९, गोयमपुच्छाए भगवओ उत्तर-पदं २१०, निकोव-पदं २१३ ।

दीयं अज्झयणं

सू० १-७७

पृ० ७४—६२

उक्खेव-पदं १, धणसत्यवाह-पदं ७, विजयनकर-पदं ११, भट्टाए संताणमणोरह-पदं १२, भट्टाए देवदिन्न-पुत्तपसव-पदं १६, देवदिन्नस्स कीडा-पदं २५, देवदिन्नस्स अणहार-पदं २८, देवदिन्नस्स गवेसणा-पदं २९, विजयतकरस्स निग्गह-पदं ३३, देवदिन्नस्स नीहरण-पदं ३४, घणस्स निग्गह-पदं ३५, घणस्स घराओ आहाराणयण-पदं ३७, विजयनकरेण संविभाग-मगण-पदं ३९, घणस्स तन्निसेध-पदं ४०, आवाधितस्स वणस्स विजयतकरावेक्खा-पदं ४३, विजयतकरेण तन्निसेध-पदं ४५, धणेण पुणो कथिते विजएण संविभागमगण-पदं ४७, धणेण विजयस्स संविभागदाण-पदं ५२, पंथगस्स भट्टाए साटोवं तन्निवेदण-पदं ५५, भट्टाए कोव-पदं ५७, घणस्स चारमुत्ति-पदं ५८, घणस्स सम्माण-पदं ५९, भट्टाए कोवोव-समुव्वं सम्माण-पदं ६१, विजय-णायस्स निगमण-पदं ६७, धण-णायस्स निगमण-पदं ६९, निक्खेव-पदं ७७ ।

तच्चं अज्झयणं

सू० १-३५

पृ० ६३—१०२

उक्खेव-पदं १, मयूरीअंड-पदं ५, सत्यवाहदारग-पदं ६, देवदत्ता गणिया-पदं ८, सत्यवाह-दारगाणं उज्जाणकीडा-पदं ९, सत्यवाहदारगेहि मयूरी अंडगाणयण-पदं १७, तागरदत्त-पुत्तस्स संदेहेण अंडयविणास-पदं २१, जिणदत्तपुत्तस्स सट्टाए मयूर-तद्धि-पदं २५, निक्खेव-पदं ३५ ।

चउत्थं अज्झयणं

सू० १-२३

पृ० १०३—१०८

उक्खेव-पदं १, पावसियालग-पदं ६, कुम्भ-पदं ७, पावसियालगाणं आहारगवेसण-पदं ८, कुम्माणं साहरण-पदं १०, अगुत्तकुम्मस्स मच्चु-पदं १३, गुत्तकुम्मस्स सोक्ख-पदं १६, निक्खेव-पदं २३ ।

पंचमं अज्झयणं

सू० १-१३०

पृ० १०९—१३६

उक्खेव-पदं १, थावच्चापुत्त-पदं ७, अरिद्धनेमि-समवसरण-पदं १०, कण्हस्स पज्जुवासणा-पदं १२, थावच्चापुत्तस्स पव्वज्जासंकप्प-पदं १८, कण्हस्स थावच्चापुत्तस्स यपरिसंवाद-पदं २२, कण्हस्स जोगक्खेम-धोसणा-पदं २६, थावच्चापुत्तस्स अभिनिक्खमण-पदं २७, सिस्सभिक्षा-दाण-पदं ३०, थावच्चापुत्तस्स पव्वज्जागहण-पदं ३४, थावच्चापुत्तस्स अणगारचरिया-पदं ३५, थावच्चापुत्तस्स जणक्खविहार-पदं ३९, सेलगराय-पदं ४२, सेलगस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

४५, मेनगरम मनषीपतलवदरिया-परं ४७, मुर्गणमेदि-परं ४१, गुणवरिस्वाय-परं ४२, सोमसूत्रकम्म-परं ४५, मुर्गणमम मोक्षक-परमपरिवर्ति-परं ४६, धावच्चापुत्तस मुर्गसणेन संवाद-परं ४८, मुर्गणम विषयमूल-परमपरिवर्ति-परं ६२, गुणस मुर्गसचरम परिम्वोथ-परत-परं ६५, गुणस धावच्चापुत्तेण संवाद-परं ७०, नरितवयाण भवसानभवा-परं ७३, कुन्दधाण भवसाभवत-परं, ७४, मासाण भवसाभवत-परं ७५, कविप्त-पर-परं ७६, गुरस परिव्याजममहमेण पच्चञ्जा-परं ७७, गुणस जणवयविहार-परं ८१, धावच्चापुत्तस परिनिष्ठाण-परं ८३, मेनगरम अग्निनिष्ठमणाभिप्पाय-परं ८५, मंदुवरम रागाभिनेय-परं ९२, मेनवरस निष्ठमणाभिनेय-परं ९६, सेमगरस पच्चञ्जा-परं ९६, मेन-गरस अनगरपरित्त-परं १००, गुणस परिनिष्ठाण-परं १०२, मेनगरस रोगातंक-परं १०६, मेनगरम निमित्त-परं ११०, मेनगरस पत्तविहार-परं ११७, साहाहि सेलगरस परिन्नाय-परं ११८, पंचगरस भाउम्माभियन्ताभवा-परं ११९, मेनगरस कोव-परं १२२, मेनगरस प्रबुद्धमविहार-परं १२४, निरीदेय-परं १३० ।

छट्ठं अज्जमयणं

पृ० १-५

पृ० १४०-१४३

[illegible]

सत्तमं अङ्गवर्णं

सु० १-४४

पृ० १४३-१५४

[illegible]

बट्टनं भजनगणं

॥० १-२३३३

पृ० १५५-३०३

[illegible][illegible]

7-5-8

१० ५०५-३३०

[Handwritten notes in German, mostly illegible due to extreme blurriness]

वणसंडगमण-पदं २१, रोलगजगण-पदं २६, रणदीगरेवणा-उत्तमगण-पदं ३७, जिणरत्तिग-
यविवत्ति-पदं ४१, जिणपालियस्स चंपागमण-पदं ४५, निगंथ-पदं ५४ ।

दसमं अज्झयणं

सू० १-६

पृ० २२१-२२३

उक्खेव-पदं १, परिहायमाण-पदं २, परिवुद्धमाण-पदं ४, निक्खेव-पदं ६ ।

एककारसमं अज्झयणं

सू० १-१०

पृ० २२४-२२६

उक्खेव-पदं १, देसविराह्य-पदं २, देसाराह्य-पदं ४, सव्वविराह्य-पदं ६, सव्वाराह्य-पदं
निक्खेव-पदं १० ।

वारसमं अज्झयणं

सू० १८६

पृ० २२७-२३६

उक्खेव-पदं १, फरिहोदग-पदं ३, जियसत्तुणा पाणभोयणपसंगा-पदं ४, सुवुद्धिस्स उवेहा-पदं,
६, जियसत्तुणा फरिहोदगस्स गरहा-पदं ११, सुवुद्धिस्स उवेहा-पदं १५, जियसत्तुस्स विरोध-
पदं १८, सुवुद्धिणा जलसोधण-पदं १९, सुवुद्धिणा जलपेसण-पदं २०, जियसत्तुणा उदगर-
यणपसंसा-पदं २१, जियसत्तुणा उदगाणयणपुच्छा-पदं २४, सुवुद्धिस्स उत्तर-पदं २७,
जियसत्तुणा जलसोधण-पदं ३०, जियसत्तुस्स जिण्णासा-पदं ३१, सुवुद्धिस्स उत्तर-पदं ३२,
जियसत्तुस्स समणोवासयत्त-पदं ३४, पव्वज्जा-पदं ३८, निक्खेव-पदं ४६ ।

तेरममं अज्झयणं

सू० १-४५

पृ० २३७-२४७

उक्खेव-पदं १, गोयमस्स पुच्छा-पदं ४, भगवओ उत्तरे ददुदुरदेवस्स नंदभव-पदं ७, नंदस्स
धम्मपडिवत्ति-पदं ९, मिच्छत्तपडिवत्ति-पदं १३, पोक्खरिणी-निम्माण-पदं १५, वणसंड-पदं
१८, चित्तसभा-पदं २०, महाणससाला-पदं २१, तिगिच्छियसाला-पदं २२, अलंकारिय-
सभा-पदं २३, नंदस्स पसंसा-पदं २४, नंदस्स रोगुप्पत्ति-पदं २८, तिगिच्छा-पदं २९,
भगवओ उत्तरे ददुदुरदेवस्स ददुदुरभव-पदं ३२, ददुदुरस्स जाइसरण-पदं ३५, भगवओ
रायगिहे समवसरण-पदं ३७, ददुदुरस्स समवसरणं पइ गमण-पदं ३९, ददुदुरस्स मच्चु-
पदं ४१, निक्खेव-पदं ४५ ।

चोदसमं अज्झयणं

सू० १-८६

पृ० २४८-२६५

उक्खेव-पदं १, पोट्टिलाए कीडा-पदं ८, तेयलिपुत्तस्स आसत्ति-पदं ९, पोट्टिलाए वरण-पदं १२
पोट्टिलाए विवाह-पदं १८, कणगरहस्स रज्जासत्ति-पदं २१, पउमावईए अमच्चेणमंतणा-
पदं २२, अवच्च परिवत्तण-पदं २४, दारियाए मयकिच्च-पदं ३१, अमच्चपुत्तस्स उस्तव-पदं
३३, पोट्टिलाए अप्पियत्त-पदं ३६, पोट्टिलाए दाणसाला-पदं ३८, अज्जा-संधाडगस्स
भिक्खायरियागमण-पदं ४०, पोट्टिलाए अमच्चपसायोवाय-पुच्छा-पदं ४३, अज्जा-संधाड-
गस्स उत्तर-पदं ४४, पोट्टिलाए सावया-पदं ४५, पोट्टिलाए पव्वज्जा-पदं ५०, कणगरहस्स

कण्ठेण पराजय-हेतु-कण्ठेणपुद्गलं जुष्टम-पदं २५४, पञ्चमनाभस्य पलायण-पदं २६०, कण्ठस्य
नरसिहख-पदं २६१ पञ्चमनाभस्य सारण-पदं २६३, सद्योवर्त-पञ्चमनाभस्य वपुःस्य पञ्चमनाभस्य-पदं
२६६, वामुदेव-जुयलस्य संक्षस्येण मिलण-पदं २६८, कथितेण पञ्चमनाभस्य निवृत्तानण-पदं
२७८, अपरिवर्तनीयपरिवर्तना-पदं २८१, कण्ठेण पञ्चमनाभस्य निवृत्तानण-पदं २८६, पञ्चमनाभस्य-
निवृत्तानण-पदं ३०३, पञ्चमनाभस्य जन्म-पदं ३०४, पञ्चमनाभस्य द्योवर्त-पदं ३१०, पञ्चमनाभस्य-
अरिदुर्गमस्य निवृत्तानण-पदं ३१८, पञ्चमनाभस्य निवृत्तानण-पदं ३२३, द्योवर्त-पदं ३२४, द्योवर्त-
निवृत्तानण-पदं ३२७ ।

सत्तरसमं अज्झयणं

सू० १-३७

पृ० ३३६-३४६

उक्खेव-पदं १, कालियदीव-जत्ता-पदं ५, कालियदीवे आग-वेच्छण-पदं १४, मज्झतिपाणं
पुणरागमण-पदं १६, आसाण आणयण-पदं १७, अमुच्छिय-आसाणं मायत्त-विहार-पदं २४,
निगमण-पदं २५, मुच्छिय-आसाणं परायत्त-पदं २६, निगमण-पदं ३६ ।

अट्ठारसमं अज्झयणं

सू० १-६२

पृ० ३४७-३५८

उक्खेव-पदं १, चिलाय-दासवेदस्स विग्गह-पदं ६, चिलायस्स गिहाजो निक्कासण-पदं १०,
चिलायस्स दुव्वसण-पवत्ति-पदं १६, चोरपल्ली-पदं १८, चिलायस्स चोरपल्ली-गमण-पदं
२३, विजयस्स मच्चु-पदं २६, चिलायस्स चोरसेणावइत्त-पदं २८, चिलायस्स धणस्स गिहे
चोरिय-पदं ३३, नगरगुत्तिएहि चोरनिग्गह-पदं ३६, चिलायस्स चोरपल्लीतो पलायण-पदं
४४, निगमण-पदं ४८, धणस्स संसुमाकए कंदण-पदं ४६, धणेणं अडवि-लंघणट्ठं सुया-
मंससोणियाहार-पदं ५१, निगमण-पदं ६० ।

एगुणवीसइमं अज्झयणं

सू० १-४६

पृ० ३५९-३६७

उक्खेव-पदं १, कंडरीयस्स पव्वज्जा-पदं ८, कंडरीयस्स वेयणा-पदं २०, कंडरीयस्स
तिगिच्छा-पदं २२, कंडरीयस्स पमत्त-विहार-पदं २७, पुण्डरीएण पडिवोह-पदं २६, कंडरी-
यस्स पव्वज्जा-परिच्चाय-पदं ३२, पुण्डरीयस्स पव्वज्जा-पदं ३८, कंडरीयस्स मच्चु-पदं ३६,
निगमण-पदं ४२, पुण्डरीयस्स आराहणा-पदं ४३, निगमण-पदं ४७, निक्खेव-पदं ४८,

बीओ सुयक्खंधो

पढमो वग्गो

१-५ अज्झयणाणि

सू० १-६३

पृ० ३६८-३८०

उक्खेव-पदं १, कालीदेवी-पदं १०, कालीए भगवओ वंदण-पदं ११, गोयमस्स पसिण-पदं १३,
भगवओ उत्तरे काली-पदं १५, कालीए पव्वज्जा-पदं १६, कालीए वाउसियत्त-पदं ३४,
कालीए पुढो विहार-पदं ३८, कालीए मच्चु-पदं ३६, निक्खेव-पदं ४५ । २-५ अज्झयणाणि

उवासीगदसाओ

पदमं अजभयणं

सू० १-८६

पृ० ३६५-४२०

उवासीगद-पदं १, आणंदगाहावद-पदं ८, महावीर-समवसरण-पदं १७, आणंदस्य निहिषम्म-परिवर्ति-पदं २३, अविपार-पदं ३१, आणंद-अभिगह-पदं ४५, त्रिवर्णदाणं वंश्चट्ट-सम-पदं ४६, त्रिवर्णदाणं निहिषम्म-परिवर्ति-पदं ५१, गोवर्ण-पुच्छा-पदं ५३, भगवतो जणवद-विहार-पदं ५४, आणंदस्य समलोवाण-परिवा-पदं ५५, त्रिवर्णदाणं समलोवाण-परिवा-पदं ५६, आणंदस्य भम्मजागरिया-पदं ५७, आणंदस्य उवासीगदसाओ-परिवर्ति-पदं ६१, आणंदस्य अणमण-पदं ६५, आणंदस्य ओहिवाण-परिवर्ति-पदं ६६, गोवर्णस्य वागमण-पदं ६७, आणंद-गोवर्ण-परिवा-पदं ७६, भगवतो उवासी-पदं ८१, गोवर्णस्य सामणा-पदं ८३, भगवतो जणवदविहार-पदं ८३, आणंदस्य समोहिमण-पदं ८४, त्रिवर्ण-पदं ८६ ।

वीथं अजभयणं

सू० १-५७

पृ० ४२१-४३६

उवासी-पदं १, कामदेवगाहावद-पदं ३, महावीर-समवसरण-पदं ७, कामदेवस्य निहिषम्म-परिवर्ति-पदं १३, भगवतो जणवदविहार-पदं १४, कामदेवस्य समलोवाण-परिवर्ति-पदं १६, महाणं समलोवाण-परिवर्ति-पदं १७, कामदेवस्य भम्मजागरिया-पदं १८, कामदेवस्य विज्जावद-पदं-उवासी-पदं २०, कामदेवस्य श्रुति-पद-उवासी-पदं २८, कामदेवस्य वागमण-पदं-उवासी-पदं ३४, देवदत्त-विज्जावद-पदं ४०, कामदेवस्य परिवा-पदं-पदं ४१, कामदेवस्य भगवतो वज्जुवागमण-पदं ४२, भगवतो कामदेवस्य उवासी-वागमण-पदं ४५, भगवतो कामदेवस्य परमसा-पदं ४६, कामदेवस्य परिवर्णमण-पदं ४८, भगवतो जणवदविहार-पदं ४८, कामदेवस्य उवासीगदसाओ-परिवर्ति-पदं ५०, कामदेवस्य उवासी-पदं ५४, कामदेवस्य समोहिमण-पदं ५५, त्रिवर्ण-पदं ५७ ।

सदयं अजभयणं

सू० १-५३

पृ० ४४०-४५३

उवासी-पदं १, सुवर्णीयगाहावद-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ७, सुवर्णीयस्य निहिषम्म-परिवर्ति-पदं १३, भगवतो जणवदविहार-पदं १४, सुवर्णीयस्य समलोवाण-परिवर्ति-पदं १६, महाणं समलोवाण-परिवर्ति-पदं १७, सुवर्णीयस्य भम्मजागरिया-पदं १८, सुवर्णीयस्य विज्जावद-पदं-उवासी-पदं २०, सुवर्णीयस्य श्रुति-पद-उवासी-पदं २८, सुवर्णीयस्य वागमण-पदं-उवासी-पदं ३४, सुवर्णीयस्य परिवा-पदं-पदं ४१, सुवर्णीयस्य भगवतो वज्जुवागमण-पदं ४२, सुवर्णीयस्य उवासी-वागमण-पदं ४५, सुवर्णीयस्य परमसा-पदं ४६, सुवर्णीयस्य परिवर्णमण-पदं ४८, सुवर्णीयस्य जणवदविहार-पदं ४८, सुवर्णीयस्य उवासीगदसाओ-परिवर्ति-पदं ५०, सुवर्णीयस्य उवासी-पदं ५४, सुवर्णीयस्य समोहिमण-पदं ५५, त्रिवर्ण-पदं ५७ ।

वाट्ठसं अजभयणं

सू० १-५३

पृ० ४५४-४६६

उवासी-पदं १, सुवर्णीयगाहावद-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ७, सुवर्णीयस्य निहिषम्म-परिवर्ति-पदं १३, भगवतो जणवदविहार-पदं १४, सुवर्णीयस्य समलोवाण-परिवर्ति-पदं १६, महाणं समलोवाण-परिवर्ति-पदं १७, सुवर्णीयस्य भम्मजागरिया-पदं १८, सुवर्णीयस्य विज्जावद-पदं-उवासी-पदं २०, सुवर्णीयस्य श्रुति-पद-उवासी-पदं २८, सुवर्णीयस्य वागमण-पदं-उवासी-पदं ३४, सुवर्णीयस्य परिवा-पदं-पदं ४१, सुवर्णीयस्य भगवतो वज्जुवागमण-पदं ४२, सुवर्णीयस्य उवासी-वागमण-पदं ४५, सुवर्णीयस्य परमसा-पदं ४६, सुवर्णीयस्य परिवर्णमण-पदं ४८, सुवर्णीयस्य जणवदविहार-पदं ४८, सुवर्णीयस्य उवासीगदसाओ-परिवर्ति-पदं ५०, सुवर्णीयस्य उवासी-पदं ५४, सुवर्णीयस्य समोहिमण-पदं ५५, त्रिवर्ण-पदं ५७ ।

धन्नाए समणोवासिव-चरिया-पदं १७, मुरादेवस्स धम्मजागरिया-पदं १८, मुरादेवस्स देव-
कय-उवसग-पदं २०, °जेठुपुत्त २१, °मज्झिमपुत्त २७, °कणीयसपुत्त ३३, °सालस-
रोगायक ३६, मुरादेवस्स कोलाहल-पदं ४२, धन्नाए पसिण-पदं ४३, मुरादेवस्स उत्तर-पदं
४४, पायच्छित्त-पदं ४५, मुरादेवस्स उवागगपटिमा-पदं ४७, मुरादेवस्स अणसण-पदं ५१,
मुरादेवस्स समाहिमरण-पदं ५२, निक्खेव-पदं ५३ ।

पंचमं अज्झयणं

सू० १-५४

पृ० ४६७-४१६

उक्खेव-पदं १, चुल्लसययगाहावइ-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ७, चुल्लसययस्स गिहि-
धम्म-पडिवत्ति-पदं १३, भगवओ जणवयविहार-पदं १५, चुल्लसययस्स समणोवासग-चरिया-
पदं १६, बहुलाए समणोवासिय-चरिया-पद १७, चुल्लसयय-धम्मजागरिया-पदं १८,
चुल्लसययस्स देव-कय-उवसग-पदं २०, °जेठुपुत्त २१, °मज्झिमपुत्त २७, °कणीयसपुत्त
३३, °हिरणकोडीविप्पकिरण ३६, चुल्लसययस्स कोलाहल-पदं ४२, बहुलाए पसिण-पदं
४३, चुल्लसययस्स उत्तर-पदं ४४, पायच्छित्त-पदं ४५, चुल्लसययस्स उवागगपटिमा-पदं ४७,
चुल्लसययस्स अणसण-पदं ५१, चुल्लसययस्स समाहिमरण-पदं ५२, निक्खेव-पदं ५४ ।

छट्ठं अज्झयणं

सू० १-४२

पृ० ४८०-४८६

उक्खेव-पदं १, कुंडकोलियगाहावइ-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ७, कुंडकोलियस्स
गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं १३, भगवओ जणवयविहार-पदं १५, कुंडकोलियस्स समणोवासग-
चरिया-पदं १६, पूसाए समणोवासिय-चरिया-पदं १७, देवेण नियतिवाद-समत्यण-पदं १८,
कुंडकोलिएण नियतिवाद-निरसण-पदं २१, देवेण नियतिवाद-समत्यण-पदं २२, कुंडको-
लिएण नियतिवाद-निरसण-पदं २३, देवस्स पडिगमण-पदं २४, महावीर-समवसरण-पदं
२५, महावीरेण पुव्ववुत्तंत-परुवण-पद २८, महावीरेण कुंडकोलियस्स पसंता-पद २६,
भगवओ जणवयविहार-पदं ३२, कुंडकोलियस्स धम्मजागरिया-पदं ३३, कुंडकोलियस्स
उवागगपटिमा-पदं ३५, कुंडकोलियस्स अणसण-पदं ३६, कुंडकोलियस्स समाहिमरण-पदं
४०, निक्खेव-पदं ४२ ।

सत्तमं अज्झयणं

सू० १-८६

पृ० ४९०-५१३

उक्खेव-पदं १, सद्दालपुत्त-पदं २, सद्दालपुत्तस्स देवसंदेस-पदं ८, सद्दालपुत्तस्स संकप्प-पदं
११, महावीर-समवसरण-पदं १२, महावीरस्स देवसंदेस-विरुवण-पदं १७, सद्दालपुत्तस्स
निवेदण-पदं १८, महावीरेण सद्दालपुत्त-संबोधण-पदं १९, सद्दालपुत्तस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-
पदं २८, अग्गिमित्ताए वंदणट्ठ-गमण-पदं ३३, अग्गिमित्ताए गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं ३७,
भगवओ जणवयविहार-पदं ३६, सद्दालपुत्तस्स समणोवासगचरिया-पदं ४०, अग्गिमित्ताए
समणोवासियचरिया-पदं ४१, गोसालस्स आगमण-पदं ४२, गोसालेण महावीरस्स गुण-
कित्तण-पदं ४४, विवाद-पटुवणा-पसिण-पदं ५०, सद्दालपुत्तस्स धम्मजागरिया-पदं ५४,

दीओ वग्गो

सू० १-३

पृ० ५४५

उक्खेव-पदं १, अक्खोभादि-पदं ३ ।

तइओ वग्गो

सू० १-११८

पृ० ५४६-५६६

उक्खेव-पदं १, अणीयसादि-पदं ४, सारण-पदं १६, उक्खेव-पदं १७, छण्णं अणगाराणं तव-संकप्प-पदं १६, छण्णं पि देवईए गिहे पवेस-पदं २२, देवईए पुणगामणसंका-पदं २६, संकासमाधाण-पदं ३०, पुत्त-वोह-पदं ३१, देवईए हग्गि-पदं ४२, देवईए पुत्ताभिलासा-पदं ४३, कण्हस्स चिताकारणपुच्छो-पदं ४४, देवईए निताकारणनिवेदण-पदं ४६, कण्हस्स देवाराहण-पदं ४७, कण्हेण देवईए आसाण-पदं ५१, गयसुकुमालस्स जम्म-पदं ५२, सोमिलधूयाए कण्णतेउर-पक्खेव-पदं ५५, धम्मदंसाणा-पदं ६२, गयसुकुमालस्स पव्वज्जासंकप्प-पदं ६३, गयसुकुमालस्स अम्मापिऊणं निवेदण-पदं ६४, देवईए सोमाकुलदसा-पदं ६७, देवईए गयसुकुमालस्स य परिंवाद-पदं ६८, गयसुकुमालस्स एकदिवस-रउज-पदं ७७, गयसुकुमालस्स पव्वज्जा-पदं ८४, गयसुकुमालस्स महापटिमा-पदं ८८, सोमिलकय-उवसग-पदं ८९, गयसुकुमालस्स सिद्धि-पदं ९०, कण्हेण बुद्धस साहिज्जकरण-पदं ९४ कण्हस्स गयसुकुमाल-दंसाणाभिलासा-पदं ९८, गयसुकुमालस्स सिद्धि-भूयणा-पदं ९९, सोमिलस्स अकालमच्चू-पदं १०८, निक्खेव-पदं १११, उक्खेव-पदं ११२, सुमुहादि-पदं ११३ ।

चउत्थो वग्गो

सू० १-७

पृ० ५७०, ५७१

उक्खेव-पदं १, जालिपभित्ति-पदं ४, निक्खेव-पदं ७ ।

पंचमो वग्गो

सू० १-४३

पृ० ५७२-५७८

उक्खेव-पदं १, पउमावई-पदं ४, गोरिपभित्ति-पदं ३३, मूलसिरी-मूलदत्ता-पदं ३६ ।

छट्ठो वग्गो

सू० १-१०२

पृ० ५७८-५८३

१, २ अज्झयणाणि

उक्खेव-पदं १, मकाइ-किक्कम-पदं ४, अज्जुण-मालागार-पदं १०, अज्जुणस्स जक्खपज्जु-वासणा-पदं १६, गोठ्ठीए अणाचार-पदं १७, अज्जुणस्स पडिसोव-पदं २५, रायगिहे आतंक-पदं २८, भगवओ समवसरण-पदं ३३, सुदंसाणस्स वंदणठ्ठं गमण-पदं ३५, सुदंसाणस्स अज्जु-णकय-उवसग-पदं ४०, उवसगनिवारण-पदं ४३, सुदंसाणस्स अज्जुणस्स य भगवओ पज्जुवासणा-पदं ४६, अज्जुणस्स पव्वज्जा-पदं ५१, अज्जुणअणगारस्स तित्तिवला-पदं ५३, अज्जुणअणगारस्स सिद्धि-पदं ५६, कासवादि-पदं ६०, अइमुत्त कुमार-पदं ७१, गोयमस्स भिक्खायरिया-पदं ७५, गोयम-अइमुत्तकुमार-संवाद-पदं ७७, अइमुत्तकुमारस्स पव्वज्जा-पदं ८५, अलक्क-पदं ८७, निक्खेव-पदं १०२ ।

तद्वयं अज्भयणं

सू० १-२६

पृ० ६५७-६६७

उक्तेव-पदं १, अदिष्णादाणस्स तीसनाम-पदं २, चोत्थि-चोत्थिगार-पदं ३, चण्णो परमण-
हरण-पदं ४, घणत्थं जुद्ध-पदं ५, लूटाक-पदं ६, सामुत्थिगार-पदं ७, दारुणगार-पदं ८,
अदिष्णादाणस्स फलविवाग-पदं ९, निगमण-पदं २६ ।

चउत्थं अज्भयणं

सू० १-१५

पृ० ६६८-६७७

उक्तेव-पदं १, अवंभस्स तीसनाम-पदं २, मुरगणस्स अवंभ-पदं ३, चक्कवट्टिस्स अवंभ-पदं
४, वलदेव-वासुदेवस्स अवंभ-पदं ५, मंडलिय-नरवरेंदस्स अवंभ-पदं ६, जुगलियाणं
लावण्णनिरुवणपुरस्सरं अवंभ-पदं ७, जुगलिवीणं लावण्णनिरुवणपुरस्सरं अवंभ-पदं ८,
अवंभस्स फलविवाग-पदं ९, निगमण-पदं १५ ।

पंचमं अज्भयणं

सू० १-१०

पृ० ६७८-६८२

उक्तेव-पदं १, परिग्गहस्स तीसनाम-पदं २, देवाणं परिग्गह-पदं ३, मणुस्साणं परिग्गह-पदं
४, परिग्गहत्थं सिक्खा-पदं ५, परिग्गहीणं पवित्ति-पदं ६, परिग्गहस्स फलविवाग-पदं ८,
निगमण-पदं १० ।

छट्ठं अज्भयणं

सू० १-२५

पृ० ६८३-६८८

उक्तेव-पदं १, अहिंसा-पज्जवनाम-पदं ३, अहिंसा-धुइ-पदं ४, अहिंसा-माहप्प-पदं ६,
उच्छगवेसणा-पदं ७, अहिंसाए पंचभावणा-पदं १६, निगमण-पदं २२ ।

सत्तमं अज्भयणं

सू० १-२५

पृ० ६८९-६९३

उक्तेव-पदं १, सच्चस्स माहप्प-पदं २, सच्चस्स धुइ-पदं १०, सावज्जसच्च-पदं १२,
अणवज्जसच्च-पदं १४, सच्चस्स पंचभावणा-पदं १६, निगमण-पदं २२ ।

अट्ठमं अज्भयणं

सू० १-१७

पृ० ६९४-६९७

उक्तेव-पदं १, अदत्तस्स अगगहण-पदं २, अदत्तादाणवेरमणस्स अजोग्गता-पदं ५, अदत्तादा-
णवेरमणस्स जोग्गता-पदं ६, अदत्तादाणवेरमणस्स पंचभावणा-पदं ८, निगमण-पदं १४ ।

नवमं अज्भयणं

सू० १-१५

पृ० ६९८-७०३

उक्तेव-पदं १, वंभचेरमाहप्प-पदं २, वंभचेरथिरीकरण-पदं ४, वंभचेरस्स पंचभावणा-पदं
६, निगमण-पदं १२ ।

दसमं अज्भयणं

सू० १-२३

पृ० १००४-७१३

उक्तेव-पदं १, अकप्पदब्बजाय-पदं ३, असण्णिहि-पदं ६, अकप्पभोयण-पदं ७, कप्पभोयण-

सत्तमं अज्भयणं

सू० १-३६

पृ० ७७४ से ७८२

उक्खेव-पदं १, गोयमेण उंवरदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं ७, उंवरदत्तस्स भण्णमिभव-वण्णग-पदं १३, उंवरदत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं १८, उंवरदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं ३८, निक्खेव-पदं ३६ ।

अट्ठमं अज्भयणं

सू० १-२८

पृष्ठ ७८२-७८७

उक्खेव-पदं १, सोरियदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं ८, सोरियदत्तस्स गिरियभव-वण्णग-पदं ६, सोरियदत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं १४, सोरियदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं २७, निक्खेव-पदं २८ ।

नवमं अज्भयणं

सू० १-६०

पृ० ७८८-७९७

उक्खेव-पदं १, देवदत्ताए पुव्वभवपुच्छा-पदं ९, देवदत्ताए सीहिसेणभव-वण्णग-पदं ७, देवदत्ताए वत्तमाणभव-वण्णग-पदं ३०, देवदत्ताए आगामिभव-वण्णग-पदं ५६, निक्खेव-पदं ६० ।

दसमं अज्भयणं

सू० १-२०

पृ० ७९८-८०१

उक्खेव-पदं १, अंज्जए पुव्वभवपुच्छा-पदं ४, अंज्जए पुढविसिरीभववण्णग-पदं ५, अंज्जए वत्तमाणभव-वण्णग-पदं ६, अंज्जएआगामिभव-वण्णग-पदं १६, निक्खेव-पदं २० ।

वीओ सुयक्खंधो

पढमं अज्भयणं

सू० १-३७

८०२-८०६

उक्खेव-पदं १, सुवाहुकुमार-पदं ४, सुवाहुस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं १५, सुवाहुस्स सुमुहभव-वण्णग-पदं १६, सुवाहुकुमारस्स पव्वज्जा-पदं ३१, सुवाहुकुमारस्स आगामिभव-वण्णग-पदं ३५, निक्खेव-पदं ३७,

२-१० अज्भयणाणि ।

पृ० ८१०-८१३

संकेत निर्देशिका

- ० ने दोनों किन्तु पाठान्त के लोपक है । पाठान्त के प्रारम्भ में भग्न किन्तु [०] और
उसके समान में स्थित किन्तु [०] समा गया है । देखें—पृष्ठ २ सूत्र ६ ।
- [१] गोष्ठादधीं प्रमाणात् [१] अक्षरों में अत्रापि किन्तु आवश्यक पाठ के अभाव वा सूचक
है । देखें—पृष्ठ ३, सूत्र ७ ।
- १ वे दो या इसके अधिक शब्दों के स्थान में पाठान्तर होने वा सूचक है । देखें पृष्ठ २ सूत्र ४ ।
'अथवा' व 'जाय' शब्द के स्थान में उनके प्रति स्थल वा निर्देश है । देखें—पृष्ठ १ टिप्पण
३ और पृष्ठ ३ सूत्र ८ ।
- × भाग [×] पाठ न होने वा लोपक है । देखें—पृष्ठ ३ टिप्पण ४ ।
- ० पाठ के पूर्व वा अन्त में था भी किन्तु [०] अनुक्त पाठ का लोपक है । देखें—पृष्ठ ३ सूत्र ७
टिप्पण ५ ।
- 'आता' 'आवे' आदि पर टिप्पण में दिए गए सूत्रोंक उनकी प्रति के सूचक हैं । देखें—पृष्ठ
२०३ सूत्र ७ तथा पृष्ठ २७० सूत्र ५० ।
- क, ग, घ, ङ, च, छ, ज, ट, ड, ध, न, त, थ, द, देवें—अष्टाध्यायी में 'प्रति-परिवर्त' सीमित ।
- 'अथा' वि' व्याकरण नियमों । देखें—पृष्ठ २६६ टिप्पण १ ।
- 'अब' वर्ग हा अनुवादार्थी ।
- सं० आ० परिभाषा पाठ का सूचक है । देखें—पृष्ठ ५ टिप्पण १ ।
- मुदा प्रतिपाद्यः पाठान्तर । देखें—पृष्ठ १० टिप्पण ३ ।
- ए प्रति का सूचक है । देखें—पृष्ठ ६ टिप्पण १० ।
- ग० प्रतिपाद्यः प्रमाणम् । देखें—पृष्ठ २६६ टिप्पण १ ।
- न० अनुवादार्थी ।
- प० अनुवादार्थः अनुवादार्थी । सुक्० अनुवादः ।
- पक्षा० अनुवादार्थी । पक्ष० अनुवादार्थिनः ।
- सी० औपनिषद् ।
- मी० मनुस्मृत्यनुवर्ती ।
- मी० अथर्व, अथर्व ।
- पाठ० अनुवादार्थः ।
- प्रा० प्राचीनपाठ ।
- वि० विश्वामित्र ।

नायाधम्मकहाव्री

पढमं अज्झवणं

उपिखत्तणाय

उपमेय-पदं

1. मेणं कान्हेणं मेणं नमणं चंवा नामं नयरी होत्वा—वण्णयो' ॥
2. नीमे णं चंवाणं नयरीणं यत्थिवा उत्तरपुरविधमे दिसीभाणं पुण्णभट्टे नामं चेदणं होत्वा—वण्णयो' ॥
3. नत्थ णं चंवाणं नयरीणं योथिणं नामं राया होत्वा—वण्णयो' ॥
4. मेणं कान्हेणं मेणं नमणं नमणन्त भगवयो महावीरत्तं यत्थिवायो अज्झमुत्तमे नामं मेरे जानिणं वण्णं पुत्तमं वण्णं वत्त-रत्त-विण्ण-नाण-दंमण-चरित्त-नायव-मण्णं सोयंमी मेयंमी वत्तंमी जमंमी जियकोहे जियमाणे जियमाणं जियकोहे 'जियविण्णं जियविण्णं' जियपरीमहे जीविवाणं-मरणभयविण्णमुत्तमे नयणकाणे गुणपात्राणे पदे—अरण-अरण-निग्गह-निग्गह-अज्झव-मण्ण-नायव-मणि-मुत्ति-मुत्ति-विज्जा-मत्त-यंमं-येम-मय-मियम-मण्ण-सोय-नाण-दंमण-चरित्त-पत्ताणे सोरान्ते" सोरे सोरपण्णं" सोरपण्णं सोरपण्णं सोरपण्णं उत्तरपुरीरे नंमिन्-विट्ठ-विट्ठ-मी चोत्तमुत्तमे" पट्ठमाणीवण्णं पंचति वण्णमाग्गणति सति नयवि-मुत्तमे पुण्णपुत्तमे वण्णमाणे नामाणुनामं अज्झमाणे" मुत्तमुत्तमे विट्ठमाणे

- | | |
|--|--|
| 1. नीमे पु. १ । | 5. वमेरे (म, प) । पुत्तो 'वत्त' वरमेवत्ता- |
| 2. चेत्थिणं (म, प, प) । | मयारमणि, मया—वत्त—वत्तमं सर्वमेव मया |
| 3. यो- पु. २-११ । | पुण्णपुत्तमं । यमणि-पु. ११ 'वमेरे' |
| 4. यो- पु. १० । | सति मुत्तमाग्गणति सति विट्ठमाणे । |
| 5. यत्थिणं नयरी (मय, पु. १०६) । | 10. वण्णं (म, प) । |
| 6. विट्ठमाणे (म) । | 11. योत्तमुत्तमे (मय, पु. १०६) । |
| 7. जियविण्णं जियविण्णं (मय, पु. १०६) । | 12. योत्तमं (म); अरण्णं (म) |
| 8. जीविवाणं (म, प) । | 13. पुत्तमं (म, प) । |

‘जेणेव चंपा नयरी’, जेणेव पुण्णभदे चेति।’ तेणामेव उवागच्छइ, उवाग-
च्छित्ता अहापडिह्वं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे
विहरति ॥

५. ‘तए णं’ चंपाए नयरीए परिस्ता निग्गया’ । धम्मो कट्ठिग्रो । परिस्ता जामेव
दिस्सि पाउवभूया, तामेव दिस्सि पडिगया ॥
६. तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स जेट्ठे अंतवासी अज्जजंघु
नामं अणगारे कासव’ गोत्तेणं सत्तुस्सेहे’ •समचउरंस-संठाण-संठिण वडरिगिह-
णाराय-संघयणे कणग-पुलग-निघस-पम्ह-गोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे
उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरवंभचेरवासी उच्छूडसारीरे संवित्त-विउल-
तेयलेस्से° अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे भाणकोट्ठो-
वगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
७. तए णं से अज्जजंघुनामे अणगारे जायसड्ढे जायसंसए’ जायकोउहल्ले
‘संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोउहल्ले
उप्पणसड्ढे उप्पणसंसए उप्पणकोउहल्ले’
समुप्पणसड्ढे समुप्पणसंसए समुप्पणकोउहल्ले’ उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणामेव
अज्जसुहम्मे थेरे, तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ‘अज्जसुहम्मे थेरे’” तिव्वुत्तो
‘आयाहिण-पयाहिणं’” करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता अज्ज-

१. नगरी (ग) ।

२. क्वचिद् ‘राजगृहे गुणसिलके’ इति दृश्यते
स चापपाठ इति मन्यते (वृ) ।

३. तेणं कालेणं (ख); तेणं (घ) ।

४. निग्गया । कोणितो निग्गतो (ग); निग्गया ।
कोणिओ निग्गओ (घ) । वृत्तौ—परिपल्-
कूणिकराजादिको लोको निर्गता—निःसृता—
एवं व्याख्यातमस्ति । अनेन ‘परिस्ता
निग्गया’ इत्येव मूलपाठः संभाव्यते ।
‘कोणिओ निग्गओ’ इति व्याख्यांशो मूल-
पाठत्वेन परिवर्तितोभूत् । उपासकदशामु
(१।१६) राजनिर्गमस्य स्वतंत्र सूत्रमपि
दृश्यते ।

५. विभक्तिरहितं पदम् । काश्यपो गोत्रेण इति
वृत्तिः ।

६. सं० पा०—सत्तुस्सेहे जाव अज्जसुहम्मस्स ।

७. °संसते (ख, ग) ।

८. औपपातिक (८३) सूत्रे क्रमभेदोविद्यते,
यथा—जायसड्ढे° उप्पणसड्ढे° संजाय-
सड्ढे° समुप्पणसड्ढे° ।

९. °कोउहल्ले (ख) ।

१०. अज्जसुहम्मं धेरं (वृषा) । औपपातिक
(८३) सूत्रे तथा रायपसेणइय (१०)
सूत्रेपि एतत्सदृशप्रकरणे ‘समणं भगवं
महावीरं’ इति द्वितीयान्तपदं लभ्यते ।

अत्र सप्तम्यन्तपदं लभ्यते । वृत्तिकृता
एतदेव प्रमाणीकृतम्—‘अज्जसुहम्मे थेरे’
इत्यत्र पठ्यर्थे सप्तमी (वृ) ।

११. आताहिणपदाहिणं (ग), आयाहिणं (घ) ।

गुह्यमन्त्रं धेरेण नञ्चासन्ने नातिदूरे मुत्तुसमाणे नमसमाणे अभिमुखे पञ्चमिड्डे
विशेषणं पञ्चुवागमाणे एवं वयासी—जट् पं भते ! समयेणं भगवया
महावीरेणं 'आङ्गरेणं निरुवगरेणं महसंयुद्धेणं' लोपनादेणं लोपपद्विणं
लोपपञ्चोयगरेणं अमवदणं मरणदणं चयवृद्धणं मगदणं धम्मदणं
धम्मदेशणं धम्मनायगेणं' धम्मवरत्ताउरंनववत्तवट्टिणा' अप्पट्टिपवरनाण-
दंनववरेणं जिणेणं जाणणं' मुद्धेणं बोद्धणं मुत्तेणं मोयगेणं निष्णं
तारणं निवगयलमग्यमणंनमसयमववायाहमपुणरावत्तयं' सानयं
दानमुदणणं' [निदिगटनामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं ?] 'पंचमस्य अंगस्य' अयमट्टे
पणत्ते, छट्ठस्य पं भते ! अंगस्य" नायाधम्मपट्ठाणं के अट्टे पणत्ते ?

८. जंतु ति अज्जमुत्तमो धरे अज्जजंतुनामं अणगारं एवं वयासी— एवं जंतुजंतु !
समयेणं भगवया महावीरेणं जाय" संपत्तेणं छट्ठस्य अंगस्य दो मुक्कसंथा
पणत्ता, तं जट्ठा—नायाणि य धम्मपट्ठाणं य ॥
९. जट् पं भते ! समयेणं भगवया महावीरेणं जाय" संपत्तेणं छट्ठस्य अंगस्य दो
मुक्कसंथा पणत्ता, तं जट्ठा—नायाणि य धम्मपट्ठाणं य । पट्ठमस्य पं भते !
मुक्कसंथास्य समयेणं भगवया महावीरेणं जाय" संपत्तेणं नायाणं कट्ठ अज्जभगवया
सत्तावत्ता ?

संगहणी-गाहा

१. उक्खित्तणाए २. संघाडे, ३. अंटे ४. कुम्मे य ५. रोल्गे ।
 ६. तुंवे य ७. रोहिणी ८. मल्ली, ९. मायंदी १०. 'चंदिमा इ' य ॥ १॥
 ११. दावद्दे १२. उदगणाए, १३. मंडुक्के' १४. तैयली वि य ।
 १५. नंदीफले १६. अवरकंका' १७. आइण्णे' १८. सुंमुमा इ य ॥ २॥
 १९. अवरं य पुंडरीए, नाए एगूणवीसमे' ॥

मेहस्स नगरपरिवारादि-वण्णग-पदं

११. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं नायाणं एगूणवीसं
 अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—उक्खित्तणाए जाव' पुंडरीए त्ति य । पढमस्स णं
 भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
 १२. एवं खलु जंवू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंवुदीवे दीवे भारहे वाने
 दाहिणइढभरहे रायगिहे नामं नयरे होत्था—वण्णओ' ॥
 १३. गुणसिए चेतिए—वण्णओ' ॥
 १४. तत्थ णं रायगिहे नयरे सेणिए नामं राया होत्था—महताहिमवंत-महंत-मलय-
 मंदर-महिदसारे वण्णओ' ॥
 १५. तस्स णं सेणियस्स रण्णो नदा नामं देवी होत्था—सूमालपाणिपाया" वण्णओ" ॥
 १६. तस्स णं सेणियस्स पुत्ते नंदाए देवीए अत्तए अभए नामं कुमारे होत्था—अहीण"
 *पडिपुण्ण"—पंचिदियसरीरे लवखण-वज्जण-गुणोववेए माणुम्माण-प्पमाण-
 पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगे ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे° सुखे, साम-
 दंड-भेय-उवप्पयाणनीति-सुप्पउत्त-नय-विहणू", 'ईहा-वूह'" -मग्गण-गवेसण-
 अत्थसत्थ-मइविसारए, उप्पत्तियाए वेणइयाए कम्मयाए" पारिणामियाए—
 चउव्विहाए बुद्धीए उववेए, सेणियस्स रण्णो वहुसु कज्जेसु य" [कारणेसु य ?]

१. चंदमाई (घ) ।
 २. मंडुक्के (ख) ।
 ३. अमर° (घ) ।
 ४. आतिण्णे (ख, ग) ।
 ५. °वीसइमे (ग) ।
 ६. ना० १।१।७ ।
 ७. ना० १।१।१० ।
 ८. ओ० सू० १ ।
 ९. ओ० सू० २-१३ ।
 १०. ओ० सू० १४ ।
 ११. सुकुमाल° (घ) ।
 १२. ओ० सू० १५ ।

१३. सं० पा०—अहीण जाव सुखे ।
 १४. प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ 'पडिपुण्ण' पदं व्याख्यातं
 नास्ति ।
 १५. विहिज्जा (ख) ।
 १६. ईहापूह (ग); ईहापोह (घ) ।
 १७. कम्मइयाए (ख, घ); कम्मियाए (ग) ।
 १८. अतोन्तरं उपासकदशासु (१।१३) राय-
 पसेणइय (६७५) सूत्रे 'कारणेसु य' इति
 पाठो विद्यते । प्रस्तुतसूत्रस्य पंचमाध्याये
 (६०) सूत्रेपि कज्जेसु य कारणेसु य इति
 पाठो लभ्यते । अत्रापि तथैव युज्यते ।

कुटुम्बेषु य मनेषु य गुणेषु य रज्जुषु य निच्छदेषु य आपुच्छनिज्जे
पट्टिच्छनिज्जे, मेढी पमाणं आहारे आलंघनं चक्कू, मेढीभूणं पमाणभूणं
आहारीभूणं आलंघनभूणं चक्कूभूणं, सव्वकज्जेणु सव्वभूमिदानु नद्धपच्चाण
विदण्णविदारं रज्जवृत्तं चित्तं वावि होत्वा, मेणियत्तं रण्णो रज्जं न रत्तुं न
कोमं न कोट्टाणारं न यत्तं न वाट्ठं न पुरं न अत्तेउरं न सयमेव समुपेक्खमाणे-
नमुपेक्खमाणं विहरत्त ॥

१३. नत्तं पं मेणियत्तं रण्णो धारिणो नामं देवो होत्वा—*मुकुमाल-पाणिपाया
अहीण'-पंचेदित्तरीरा लक्खण-पंचण-गुणोवधेया माणुमान-प्यमाण'-मुजाय-
मुत्तं नमुत्तरं नी मन्तितीमाणाद-रंति-पियदंमणा मुत्तया करयन्-'परिमित्त-तिव-
नित्त' नत्तिमगज्जा 'कोमुट्-रत्तणियर-विमल-पट्टिपण-सोमवयणा कुट्टकुल्लि-
त्तिव-मत्तेहा' निगाराणार-चाग्गेसा संनय-गय-हृमिय-भणिय-विट्ठिय-विज्जास-
नत्तल्लिय-संत्ताम-निडण-मुत्तोययारकुयत्ता पासादीया दत्तिनज्जया अमित्ताया
पट्टिपया, मेणियत्तं रण्णो इट्ठा कंठा पिया मणुण्णा नामधेज्जा' देसागिया
सम्मया यत्तमया यत्तमया भट्ठकरंउत्तमाणा तेल्लकेया इय मुत्तं गोधिया
धेत्तं ज्जा इय मुत्तं परिमितीया रत्तणकरंणो विव मुत्तारत्तियया, मा पं सोमं
मा पं उट्ठो मा पं दंसा मा पं मससा मा पं यत्ता मा पं चोरा मा पं वाट्ठ-
पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाट्ठ' विविहा रीनारंका पुम्भु त्त कट्ठ मेणियत्तं रण्णा
मत्ति विज्जाट्ठं भोगभोगाट्ठं पच्चणुभवमाणो * विहरत्त ॥

धारिणीय मुमिणदंरण-पदं

१४. नत्तं पं मा धारिणी देवो अण्णदा कदाह तंति तारिसमंति—छक्कट्टम-रट्टमट्ट-

संठिय-खंभुगय-पवरवर-सालभंजिय-उज्जलमणिकणगरयणभूमिग-विडंकजालद्व-
चंदनिज्जहंत रकणयालिचंदसालियाविभक्तिकलिग, 'सरसच्छवाऊवल-वण्णरइए,"
वाहिरओ दूमिय-घट्ट-मट्टे अट्ठिभत्तरओ परात्त-गुविलिहिय'-चित्तकम्ममे नाणा-
विह-पंचवण्ण-मणिरयण'-कोट्टिमत्तले पउमलया-कुल्लवलि-वरपुक्कजइ-
उल्लोय-चित्तिय-तले वंदण'-वरकणगकलसगुणिम्मिय-पडिपुजिय'-सरसपउम-
सोहंतदारभाए पयरग'-लंवंत-मणिमुत्तदाम-गुविरइयदारगोहं गुगंघ'-वरगुगुम-
मउय-पम्हलसयणोवयार-मणहिययनिव्वुयरे कप्पूर-लवंग-मलय-चंदण-
कालागरु-पवरकुंदुखक-तुखक-धूव-डज्जंत-गुरभि-मधमघंत'-गंधुद्धुयाभिरामे'
सुगंधवर [गंध ?] गंधिए गंधवट्ठिभूए मणिकिरण-पणासियंधयारे किंवहुणा ?
जुइगुणेहिं सुरवरविमाण-विडंघियवरघराए", तसि नारिसंगसि सयणिज्जंति-
सालिगणवट्ठिए उभओ विव्वोयणे दुहओ उण्णाए 'मज्जे णय गंभीरे"
गंगापुलिणवालय-उद्दालसालिए ओयविय-खोम-दुगुल्लपट्ट'-पडिच्छयणे अत्यरय-
मलय-नवतय-कुसत्त-लिव'-सीहकेसरपच्चुत्थिए" सुविरइयरयत्ताणे रत्तंमुयसंदुए
सुरम्मे आइणग-रुय'-वूर"-नवणीय-तुल्लफासे पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि
सुत्तजागरा ओहीरमाणी-ओहीरमाणी 'एगं महं सत्तुस्सेहं रययकूड-सन्तिहं
नहयलंसि सोमं सोमागारं लीलायंतं जंभायमाणं मुहमतिगयं गयं पासित्ता
णं पडिबुद्धा"^{१०} ।

१. सरसच्छवाऊधवल ° (घ); कैदिचत्पुनरेवं संभा- ६. गंध ° (ख घ) ।
वितमिदम्—सरसच्छवाऊवलरत्तरए (वृ) । १०. वेलंववर ° (ग, घ) ।
२. सर्वासु प्रतिपु 'सुवि' इति पठ्यमानमस्ति । ११. मज्जेण य गंभीरे (वृपा) ।
वृत्तो 'सुचि—पवित्र' इति व्याख्यातमस्ति । १२. खोमदुगुल ° (घ) ।
प्राचीनलिप्यां चकारवकारयोः प्रायः १३. लिव्व (ख, ग) ।
सादृश्येनात्र वर्णविपर्ययो जातः । वृत्तिकारेण १४. °पच्चुत्थिए (ख); °पच्चुत्थिए (क्व०) ।
तथैव व्याख्यातः । १५. रुय (ख) ।
३. मणिरतण (ग) । १६. पूर (ख) ।
४. चंदण (ख, घ); अत्र वकारस्थाने चकारो १७. वाचनान्तरे त्वेवं दृश्यते—जाव सीहं सुविणे
जातः । पासित्ता णं पडिबुद्धा । यावत्करणात् इदं
५. पडिपुजिय (ख, ग, घ, वृपा) । द्रष्टव्यम्—एगं च णं महंतं पंडुरं धवलं
६. पयरग (ग, घ); एकस्मिन् वृत्त्यादर्शे
'प्रतरकाणि', अपरस्मिंश्च 'प्रवरकाणि'
इति संस्कृतरूपं लभ्यते । सेयं संखउल-विमलदहि-घसागोखीर-फेण-
७. सुगंधि (वृ) । रयणिकरपगासं [अथवा—हार-रजत-
८. °मघित (ग); °मघंत (घ) । खीरसागर-दगरय- महासेल-पंडुरतरोरु-रम-
णिज्ज-दरिसणिज्जं] थिर-लट्ट-पउट्ट-पीवर-

सेनियसः सुमिषनिवेदन-पदं

१८. नमः पं ता धारिणो देवो देवमेवाह्वं उदात्तं कल्याणं शिवं धर्मं मंगलं सस्मरीयं
महानुमिषं पाशिता पं पटिवुद्धा समाप्तो हृष्टुद्धु-नित्तमाणादिया पीडमणा
परमसोमपत्तिमा' हृष्टावस-विसप्तमाणादिया 'धाराह्व-कल्पवृक्ष' पिय
नमुसन्निव-रोमक्या' नं मुमिषं शोणिष्टुद्ध, शोणिष्टुद्धा समणिज्जायो उद्धेद,
उद्धेदा पायपीडायां परमोद्धेद, पचोर्द्धेत्ता अतुरिमन्नयसमसंभाम् अयिन-
विद्याम् रायह्वमस्तिम् नष्टम् जेनामेव मे सेनिय राया तेनामेव उवागच्छेद,
उवागच्छता सेनियं रायं ताहि उद्धाहि कंवाहि पियाहि मणुत्ताहि मणाताहि
उवागच्छाहि कल्याणाहि निवाहि धण्याहि मंगलताहि सस्मरीयाहि हृष्टयमपि-
ज्जाहि शिवयमपिज्जाहि शिव-महुर-रिभिय-गभीर-मस्मरीयाहि गिराहि
मंगलमायी-मंगलमाणी पटिवोद्धेद, पटिवोद्धेत्ता सेनियं रणा अमभयुक्ताया
समाप्ती नाणा-माणिज्जायमप्यभस्तिचित्तं महानुमिषं निसीयद्ध, निसीयता
प्राग्वथा पीडमणा मुत्तामप्यवमया करमन्परिमहिषं सिरसावर्त्तं मत्थम् मंगलि
नष्टं सेनियं रायं पयं यमासी-पयं ननु अहं देवाणुप्पिया ! मज्जं तंति
साग्मिमासि समणिज्जमि नानिगयद्धिम् जाय' निमगययमप्यवर्त्तं नयं
मुमिषे पाशिता पं पटिवुद्धा—नं ममस्ता पं देवाणुप्पिया ! उदात्तरन'

•कल्लाणस्स सिवस्स धणस्स मंगल्लस्स सस्सिरीयस्स ° सुमिणस्स के मण्णे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

सेणियस्स सुमिणमहिम-निदंसण-पदं

२०. तए णं से सेणिए राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमदुं सोच्चवा निसम्म हट्ठतुट्ठ-^१ 'चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण ° हियए धाराहयनीवसुरभिकुसुम-चुंचुमालइयतणू ऊसवियरोमकूवे तं सुमिणं ओगिण्हइ', ओगिण्हत्ता ईहं पविसइ, पविसित्ता अण्णणो साभाविणं मइपुव्वएणं बुद्धिविण्णाणेणं तस्स सुमिणस्स अत्थोग्गहं करेइ, करेत्ता धारिणिं देवि ताहि जाव' हिययपल्हायणिज्जाहिं मिय-महुर-रिभिय-गंभीर-सस्सिरीयाहि वग्गूहिं' अणुवूहमाणे-अणुवूहमाणे एवं वयासी—उराले णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । कल्लाणे णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । सिवे धण्णे मंगल्ले सस्सिरीए णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउय'-कल्लाण-मंगल्लकारेणं तुमे देवि ! सुमिणे दिट्ठे । अत्थलाभो ते' देवाणुप्पिए ! पुत्तलाभो ते देवाणुप्पिए ! रज्जलाभो ते देवाणुप्पिए ! भोग-सोखलाभो ते देवाणुप्पिए !

एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए ! नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं वीइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं कुलदीव' कुलपव्वयं कुलवडिसय' कुलतिलकं कुलकित्तिकरं कुलवित्तिकरं' कुलनंदिकरं कुलजसकरं कुलाधारं कुलपायवं कुलविवद्धणकरं सुकुमालपाणिपायं जाव" सुरूवं दारयं पयाहिस्सि । से वि य णं दारए उम्मुक्कवालभावे विण्णय'^२ परिणयमेत्ते जोव्वणगमणप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते" वित्थिण्ण-विपुल-वलवाहणे रज्जवई" राया भविस्सइ । तं उराले णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे" । •कल्लाणे णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । सिवे धण्णे मंगल्ले सस्सिरीए णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । °

१. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।

२. चंचु° (ख, घ) ।

३. ओगिण्हत्ति २ (ख) ।

४. ना० १।१।१६ ।

५. १।१।१६ सूत्रे अत्र 'गिराहि' पाठो विद्यते ।

६. दीहाउ (ख) ।

७. X (ग, घ) सर्वत्र ।

८. कुलहेउं (वृषा) ।

९. °वडंसयं (ख) ।

१०. नासोपाठः वृत्तिसम्मतः, यथा—क्वचिद् वृत्तिकरमित्यपि दृश्यते ।

११. ओ० सू० १४३ ।

१२. विण्णाय (क, ख, घ) ।

१३. वित्तिकंते (क); वियक्कतं (ख) ।

१४. रज्जयती (क) ।

१५. सं० पा०—दिट्ठे जाव आरोग्ग ।

आरोह्य-तुष्टि-दीहाडय-कल्लाण-मंगल्लकारणं णं तुमे देवि ! मुमिणे दिट्ठे ति कट्ठं भुज्जो-भुज्जो अण्वूहेइ ।

धारिणीं मुमिणजागरिया-पदं

२१. त्वं णं ना धारिणी देवी मेणिणं रण्णा एवं वुत्ता नमानीं हट्ठुत्तु-चित्तमाणद्विया जाव' हरिणवत्-विमलमाणद्विया करयन्-परिणहिव'•तिरस्तावत्तं मत्तमं• अंजनि कट्ठं एवं वयासी—एवमेवं देवाणुप्पिया ! नहमेवं देवाणुप्पिया ! अनितहमेवं देवाणुप्पिया ! अमंदिहमेवं देवाणुप्पिया ! उच्छिपमेवं देवाणुप्पिया ! पटिच्छिपमेवं देवाणुप्पिया ! उच्छिपपटिच्छिपमेवं देवाणुप्पिया ! तच्चे णं एममट्ठे जं तुमे वयह ति कट्ठं तं मुमिणं नम्मं पटिच्छट्ठ, पटिच्छित्ता मेणिणं रण्णा अवमण्णयावा नमानीं नाथामणिकण्णरत्तण-भत्तिचित्तायां भट्टानणाओ वयमट्ठेइ, अमट्ठेत्ता जेणेव सण् सयणिज्जे जेणेव उवागच्छट्ठ, उवागच्छित्ता सयंमि सयणिज्जमि निमीयट्ठ, निमीयत्ता एवं वयासी— 'मा मे' मे उतमं वट्ठणे मंगल्लं मुमिणे अण्णेहि पावमुमिणेहि पटिहम्मिहि ति कट्ठं देवय-भुज्जणमंवद्धाहि' एमत्ताहि धम्मिवाहि नत्ताहि मुमिणजागरियं पटिजागरमाणी-पटिजागरमाणी विहरइ ॥

मुमिणपाटन-निमंत्तण-पदं

२२. त्वं णं मे' मेणिणं रात्ता पण्णसकालममयंमि कोहुदियपुरिमे' नत्तावेइ, नत्तावेत्ता एवं वयासी—निण्णामेव भो देवाणुप्पिया ! वाहिरियं उयट्ठाणमावं अज्ज 'मदिसंमं पण्णसम्म' मंघोदकमिण-मुत्तं-गम्मज्जिखोवमिणं पंचयण-भरुणमुत्तमं-मुत्त-पुण्डरुहोवमयमिणं कायावमययणकुट्टक-मुत्तम-भूय-उज्जम-मुत्तमं-मपमयं-मंघुत्ताभिणमं मुत्तयण(मंघ ?)मपियं' नंदयट्ठिभूयं करइ, कायंवेइ म, एवमाणियं' पण्णसकालं ॥

२३. तए णं ते कोडुवियपुत्तिरा सेणिएणं रण्णा ण्वं युत्ता समाना हट्टुट्टु-
 •चित्तमाणदिया पीडमणा परमसोमणरियाया नृत्तिवना-विशेषमाणदियाया
 तमाणत्तियं० पच्चप्पिणंति ।।
२४. तए णं से सेणिए राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए कुल्लुण्णल-कमल-कोमलु-
 म्मिलियम्मि अहंपंडुरे' पभाए रत्तासोगणपारा-किंमुय-मुयमुद्ध-मुजद्ध-वंधुजीवग-
 पारावयचलणनयण - परहुयसुरत्तलोयण-जामुमणमुमुम-जलियजलण-तयणिज्ज-
 कलस-हिगुलयनिगर-ह्वाइरेगरेहंत-सस्सिरीए दिवायरे अहंकेमण उट्टिए तस्स
 'दिणकर-करपरंपरोयारपरद्धमि' अंधयारे बालातव'- कुंकुमेण 'सचित्तव्व'
 जीवलोए लोयण-विसयाणयास'-विगसंत-विसददंसियम्मि लोए कमलानर-
 संबोहए उट्टियम्मि मूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सयणिज्जाओ
 उट्टेइ, उट्टेत्ता जेणेव अट्टणसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अट्टणसालं
 अणुपविसइ ।
 अणगवायाम-जोग'-वगण-वामद्वण-मल्लजुद्धकरणेहि संते परिस्संते सयपागसह-
 स्सपागेहि सुगंधवरतेल्लमादिएहि पीणाणज्जेहि दीवणिज्जेहि दप्पणिज्जेहि
 मयणिज्जेहि विहणिज्जेहि सविदियगायपल्हायणिज्जेहि अम्भंगेहि' अम्भंगिए
 समाणे, तेल्लचम्मंसि पडिपुण्ण-पाणिपाय-सुकुमालकोमलतलेहि पुरिसेहि छेएहि
 दक्खेहि पट्टेहि कुसलेहि मेहावीहि निउणेहि निउणसिप्पोवगएहि जियपरिस्स-
 मेहि अम्भंगण-परिमद्वणुव्वलण-करणगुणनिम्माएहि, अट्टिसुहाए मंससुहाए
 तयासुहाए रोमसुहाए--चउव्विहाए संवाहणाए संवाहिए समाणे अवगयपरिस्समे
 न्निरे अट्टणसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमिता जेणेव मज्जणघरे तेणेव
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता समत्तजाला-
 भिरामे' विचित्त-मणि-रयण-कोट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि नाणामणि-
 रयण-भत्तिचित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहन्सिण्णे सुहोदएहि 'गंधोदएहि पुप्फोदएहि'।

१. सं० पा०—हट्टुट्टु जाव पच्चप्पिणंति ।

२. अहंपंडुरे (क, ख); अहा० (ग) ।

३. दिनकरपरंपरोयारपरद्धमि (क, ख, ग, घ, वृपा) ।

४. बालायव (व्यचित्) ।

५. खड्म व्व (ख); खचियंमि (घ) ।

६. ०तास (क, ख); ०वास (घ) ।

७. जोग (क, ख, ग, घ) । प्रयुक्तासु सर्वास्वपि
 प्रतिषु 'जोग' इति पाठो लभ्यते, किन्तु वृत्ती

'योग्या' इति व्याख्यातमस्ति तथा औप-
 पातिक (६३) सूत्रे 'जोग' इति पाठोऽस्ति ।
 असौ च समीचीनः तेन मूले स्वीकृतः ।

८. अम्भंगिएहि (ख) ।

९. समंत (वृ); समत्त, समुत्त (वृपा) ।

१०. पुष्पोदएहि गंधोदएहि (क, ख, ग, घ) ।
 वृत्ती पूर्वं गंधोदकं ततश्च पुष्पोदकं व्याख्यात-
 मस्ति । औपपातिक (६३) सूत्रे पि एष
 एव क्रमो दृश्यते ।

खलु सामी ! धारिणी देवी नवण्हं मासाणं नवण्हिपुण्णानं जाव' धारणं पयाहिइ । से वि य णं दारए उम्मुत्तकवालभावे विण्णय'-परिणयमित्ते जोव्वण्णमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते वित्थिण्ण-विपुल-वल्लवाहणे रज्जवई राया भविससइ, अणगारे वा भाविपप्पा ।

तं उराले णं सामी ! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे जाव' आरोग्ग-तुट्ठि'-दीहा-उय-कल्लाण-मंगल्लकारए णं सामी ! धारिणीए देवीए सुमिणे ° दिट्ठे त्ति कट्ठु भुज्जो-भुज्जो अणुवूहेत्ति ॥

सुमिणपाढग-विसज्जण-पदं

३०. तए णं से सेणिए राया तेसिं सुमिणपाढगणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियए करयल'°परिगहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु ° एवं वयासी—एवमेयं देवाणुप्पिया ! जाव' जं णं तुव्भे वयह त्ति कट्ठु तं सुमिणं सम्मं पडिच्छइ', ते सुमिणपाढए विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विपुलं जीवियारिहं पीत्तिदाणं दलयत्ति', दलइत्ता पडिविसज्जेइ ॥

सेणियस्स सुमिणपसंसा-पदं

३१. तए णं से सेणिए राया सोहासणाओ अवभुट्ठेइ, अवभुट्ठेत्ता जेणेव धारिणी देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता 'धारिणि देवि'° एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! सुमिणसत्थंसि वायालीसं सुमिणा'° तीसं महासुमिणा—वावत्तरिं सव्वसुमिणा दिट्ठा जाव' तं उराले णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । कल्लाणे णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । सिवे घण्णे मंगल्ले सस्सिरीए णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउय-कल्लाण-मंगल्ल-कारए णं तुमे देवि ! सुमिणे दिट्ठे त्ति कट्ठु ° भुज्जो-भुज्जो अणुवूहेइ ॥

प्रतिपु चात्र पाठस्य क्रमविपर्ययो दृश्यते—

अत्यलाभो सामी ! सोक्खलाभो सामा !

भोगलाभो सामी ! पुत्तलाभो रज्जलाभो
(क, ख, ग, घ) ।

१. ना० १।१।२० ।

२. विण्णाय (वृ); विण्णय (वृपा) ।

३. ना० १।१।२० ।

४. सं० पा०—आरोग्ग-तुट्ठि जाव दिट्ठे ।

५. ना० १।१।१६ ।

६. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

७. ना० १।१।२१ ।

८. संपडिच्छइ (ग, घ) ।

९. दलइ (क) ।

१०. धारणी देवी (क); धारणीए देवीए (ख, ग),
धारणीं देवीं (घ) ।

११. सं० पा०—सुमिणा जाव भुज्जो २ अणु-
वूहेत्ति ।

१२. ना० १।१।२६ ।

धारिणीय दोहृत-पदं

३२. तए णं ता धारिणी येयी नेणियत्ता रण्यो श्रंतिए एयमट्टं मोच्या निगम्म
हट्टमुट्ट-विज्जमानंदिवा जाव' ह्रस्ववत्त-विमलमागहियया तं नुमिणं नम्मं
परिच्छन्ति, जेणेव तए यामपरे नेणेय उवागच्छउ, उवागच्छिता प्पाया कयवनि-
कम्मा' *कय-कोउय-मंगल-पावच्छिता विपुलाटं भोगभोगाटं भोजमानो'
विहरइ ॥

३३. तए णं नीमे धारिणीय येयीय योनु मासेनु योउवकणेनु तटए मागे वट्टनाये
तन्ना गवमन्ता योहृतकालसमयति अयमेयारुवे अकालमेहेनु योहृते
पाउउभयित्वा --

धणयाओ णं ताओ अम्मयाओ, नंपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ,
कयवयाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ,
कयववणयाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयविहयाओ णं ताओ अम्मयाओ, नन्दे
णं ताणि माणुग्गए अम्मजीवियफणे, जाओ णं मेहेनु अट्टमग्गए अट्टमज्जए
अट्टमग्गए अट्टमट्टिणए नगज्जिणए मदिज्जए सपुण्णिणए मयणिणए
पणयोव-कयपट्ट-यक-संत-पंद-कंद-माणिपट्टरागिनमागभेनु विपुल-ह्रि-याम-
भेद-नंप-मप-हीरेट-गरिणए' पउमन्तमपभेनु लकसान्ण-सम्म-रत्ताकिमु-
यान्मप-मपयंभीय-जाविहिमुक्क-सम्म-पुक्क-उरदभग्गसहि-दिमोय-
ममपभेनु' वरहिण-नील-मुक्क-मपमागपिण्ड-भिनपत्त-सागण-नीनुपत्तनिगर-
नदमिरीनट्टम् - नदमट्टममागभेनु जज्जजप-भिमभेय-रिट्टम-भमरायनि-
मपमपुक्क-कयज्जमम'भेनु पुक्क-विज्ज-व-मगज्जिणए यामयम-विपुलवण-
वयवपरिसविकरेनु, निम्मन्-पग्गाविमन्-पग्गनिय-वयउमत्त वगमाहय-
समाधरन्-उवागउपरिउरिययानं पग्गानिणु,
पाया-पग्ग-निवय-निवयानियं मेरविज्जे ह्रस्वगणकंनु पग्गानियं' पाय-

गणेषु वल्लिवियाणेषु' पसरिणसु उन्नपसु' सोभगमुवगणसु' वेभारगिरि-
प्पवाय-तड-कडगविमुक्केसु उज्जरेसु, तुरियपहाविय-गल्लोदुक्केणाउत्तं सकलुसं
जलं वहंतीसु गिरिन्दोसु राजज्जुण-नीव-कुडय-कंदल-मिलिध'-कलिणसु
उववणेषु,

मेहरसिय - हट्टतुट्टचिद्धिय - हरिसवरापमुयत्तकण्ठकेकारव्वं मुयंतेसु वरहिणंसु'
उज्जवस'-मयजणिय-तरुणराहयरि-पणञ्चिणसु नवसुरभि-सालिल-कुडय-कंदल-
कलंव-गंधद्वणि मुयंतेसु उववणेषु ।

परहुय-रुय-रिभिय-संकुलेसु उहाउत्त-रत्तद्वंदगोवय-ओवय-कारुणविलविएसु
ओणयतणमंडिएसु ददुरपयंपिणसु संपिडिय-दरिय-भमर-महुयरिपहकर-
परिलित-मत्त-छप्पय-कुसुमासवलोल-महुर-गुंजंतदेसभाणसु उववणेषु ।

परिसामिय'-चंद-सूर-गहगण-पणट्टनक्खत्ततारगपहे' ' उंदाउह-वद्ध-चिधपट्टम्मि'
अंवरतले उड्डीणवल्लगपत्ति'-सोभंतमेहवंदे कारुंडग-चक्कवाय-कलहंस-उस्सुयकरे
संपत्ते पाउसम्मि काले ण्हायाओ' कयवलिकम्माओ कय-कोउय-मंगल-पायच्छि-
त्ताओ 'किं ते?' वरपायपत्तनेउर-मणिमेहल-हार-रडय-ओविय'-कडग-'खुडुय'-
विचित्तवरवल्लयथंभियभुयाओ कुंडलउज्जोवियाणणाओ' ' रयणभूसियंगीओ,
नासा'-नीसासवाय-वोज्झं चक्खुहरं वणणफरिससंजुत्तं हयलालापेलवाइरेयं

१. °सुं (क, ख); अन्यत्रापि यत्र क्वचित्
एतत् दृश्यते ।

२. पाठान्तरे - नगेषु पर्वतेषु नदेषु वा ह्रदेषु १३.
(वृ) ।

३. सोहग° (क) ।

४. सिलिद्ध (ख, ग) ।

५. वरिहणेषु (क) ।

६. उडु° (ख); उडु° (ग, घ) ।

७. परिष्कामिय (क, ग, घ, वृपा) ।

८. °तारागपहे (क); °तारागणपहे (ग) ।

९. °पट्टंसि (ख, घ) ।

१०. °वलागवन्ति (ख) ।

११. किमूला श्रम्मयाओ इत्याह—ण्हायाओ
इत्यादि (वृ) ।

१२. किन्नो (क); किन्ने (ग); किं रो (घ) ।
किं तत् 'यत् करोति' इति शेषः । किं च

[भ० ६।१४४ नूयस्य पादटिप्पणं] असौ

पाठः व्याख्यादृष्ट्या सरलोस्ति ।

उचिय (ग, घ) । वृत्तिकारेणापि 'उचिय'
पदं व्याख्यातमस्ति—उचितानि दोग्धानि
(वृ) । किन्तु अत्र 'ओविय' पदं समीचीन-
मस्ति । संभवतो लिपिदोषेण परिवर्तनं
जातम् । २४ सूत्रे 'ओविय' इति पाठो
लभ्यते । तत्र वृत्तिकारेण 'ओविय' ति
परिकर्मितानि इति व्याख्या कृतास्ति । अत्र
वृत्तिकारेण 'उचिय' पाठो लब्धः तेन तथा
व्याख्यातः ।

१४. खड्डुय (घ); खड्डुय (घ) ।

१५. खड्डुय-एगावलि-कंठमुरज-तिसरय-वरवल्ल-
हेमसुत्त-कुंडलुज्जोवियाणणाओ (वृपा) ।

१६. नास (क) ।

धवलकणय-नचिपंतकम्भं आगासफलिह-सरिसप्पभं संमुखं पवरं' परिह्वयास्रो,
 सुगुणमुकुमानुत्तरिज्जास्रो' 'सव्योच्च-गुरभिमुमुम-पवरमल्लसोभियसिरास्रो'
 गालागण्यवत्तुवियास्रो गिरौ-समापवेसास्रो, मेयणय'-गंधहृत्पिरयणं वृत्तास्रो
 ममाणीस्रो, सगोरेंदमल्लदामेणं छत्तेणं तरिज्जमाणेणं 'पंदप्पभवदरेयनिय-
 विमलदंड-संगकंद-दगरगधमयमहियफेणपुंजसन्निगास-चउत्तामरवानयोजियं-
 सीस्रो' नेणिएणं रण्णा सद्धिद्वियसंधवरगणं पिट्ठस्रो-पिट्ठस्रो समणुगच्छमाणीस्रो
 चाउरंणिणीणं मेणाणं-महया हवाणीणं गवाणीणं रहाणीणं पायत्ताणीणं-
 मध्विष्टीणं' सव्यज्जुष्टीणं' *सव्यवत्तेणं सव्यसमुदणं सव्वादरेणं सव्यविभूष्टीणं
 सव्यविभूणाणं सव्यमंभेणं सव्यपुण्णमंधमल्लानंकारेणं सव्यतुट्ठिय-नाह-सन्नि-
 णाणं महया उट्ठोणं महया जूष्टीणं महया वल्लेणं महया समुदणं महया वस्तु-
 ट्ठिय-जगमगमग-पवाडाणं संग-पणप-पट्टह-भेरि-भल्लरि-तरनुट्ठि-दुट्ठवक-सुरय-
 मुट्ठेण-इट्ठि' -निगंमगाउवरणेणं रायगिहं नवरं निपाटण-तिग-चउत्ता-वत्तर-
 चउत्तमुत्त-महापहाणिं सु आनित्तसित्त-मुट्ठय-सम्मज्जिसोवनिन्नं' *पंचवत्त-सम्म-
 गुरभि-मुवत्त-पुत्ता' जावयासन्नियं गालागण-पवरगद्धुम्वक-मुग्गक-धूद-उज्जत-
 गुरभि-मपमपेण-गंधत्ताभिराणं' मुगंधयर (गंध ?) गंधियं' गंधयट्ठिभूयं
 जवयोण्माणीस्रो गामरज्जेणं अभिनदिज्जमाणीस्रो' मुत्त-सया-सव्य-मुग्ग-
 सन्नि-मुत्त-उत्तास्यं' सुरम्मं वेभारविगिकडणं'-पायमूत्तं सव्यस्रो समंता
 'आतिट्ठमाणीस्रो-आतिट्ठमाणीस्रो शोहत्तं' विनिज्जि' ।

नं जउ पं अट्ठमयि मेहेनु सव्यमुग्गएनु जाव दोहत्तं विनिज्जामि" ॥

धारिणीए चिता-पदं

३४. तए णं सा धारिणी देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणांसि अंगपत्तयोहला असंपुण्णदोहला असम्माणियदोहला सुवत्ता भुवत्ता निम्मंगा ओलुग्गा ओलुग-सरीरा पमइलदुव्वला किलंता ओमथियवयण-नयणकमला पंडुइयमुही करयल-मलिय व्व चंपगमाला नित्तेया दोणविवण्णवयणा जहोनिम-पुण्ण-गंध-मल्लालं-कार-हारं' अणभिलसमाणी किट्टारमणकिरियं' परिहावेमाणी दीणा दुम्मणा निराणंदा भूमिगयद्विद्वीया ओह्यमणसंकप्पा' •करतलपल्लहयमुही अट्टज्जाणोव-गया° भियाइ ॥

पडिचारियाणं चिताकारणपुच्छा-पदं

३५. तए णं तीसे धारिणीए देवीए अंगपडिचारियाओ अट्ठितरियाओ दासचेडियाओ' धारिणिं देवि ओलुग्गं' भियायमाणं' पासंति, पासित्ता एवं वयासी—किण्णं तुमे देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुगसरीरा जाव भियायसि ?
३६. तए णं सा धारिणी देवी ताहिं अंगपडिचारियाहिं अट्ठितरियाहिं दासचेडि-याहिं' य एवं वुत्ता समाणी ताओ दासचेडियाओ' नो आढाइ नो परियाणइ', 'अणाढायमाणी अपरियाणमाणी' तुसिणीया संचिदुइ' ॥
३७. तए णं ताओ अंगपडिचारियाओ अट्ठितरियाओ दासचेडियाओ धारिणिं देवि दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—किण्णं तुमे" देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग-सरीरा जाव" भियायसि ?
३८. तए णं सा धारिणी देवी ताहिं अंगपडिचारियाहिं" अट्ठितरियाहिं दासचेडि-

वाचनान्तरत्वेन उल्लेखः कृतः, तस्य संगतत्वमपि प्रदर्शितम्—आहेंडज्ज त्ति आहिंडंते । अनेन चैव मुक्तव्यतिकरभाजां सामान्येन स्त्रीणां प्रशंसाद्वारेणात्मविषयेऽकालमेघदोहदो धारिण्याः प्रादुरभूत् इत्युक्तम् । वाचनान्तरे तु—ओलोयमाणीओ २ आहिडे-माणीओ २ दोहलं विणिंति । तं जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव दोहलं विणिज्जामि । संगतस्वायं पाठ इति (वृ) ।

१. मल्लालंकाराहारं (क, ख, ग) ।
२. कीडा (क, ख, घ) ।
३. सं० पा०—ओह्यमणसंकप्पा जाव भियाइ ।
४. चेडोमी (क, ग) ।

५. ना० १।१।३४ ।

६. अत्र पाठसंक्षेपकरणे सुवत्तं भुवत्तं निम्मंसं इति विशेषणत्रयी न विवक्षितास्ति । एवमग्रेपि ।

७. किं तं (क); किं णं (ख); किण्हं (ग) ।

८. °चेडोहि (ख, ग) ।

९. चेडियाओ (ख, ग) ।

१०. परियाणाइ (ग); परियाणेति (घ) ।

११. °माणा अपरियाणमाणा (ख, घ) ।

१२. चिट्ठइ (क) ।

१३. तुमं (क, ग) ।

१४. ना० १।१।३४ ।

१५. °परियारियाहिं (क) ।

वाहिं दोक्षं पि तत्त्वं पि एवं युक्ता समाप्ती नो आह्लादो नो परित्यागः, अनाह्लाद-
माप्ती अपरित्यागमाप्ती मुनिजीवा मन्निद्रुः ॥

पट्टिचारियाणं मेणियस निवेदण-पदं

३६. तम् णं ताम्भो अंगपट्टिचारियायो अविनतारियायो दासवेडियायो धारिणीम्
देवीम् अणादावज्जमानायां अपरिज्जापिज्जमानायां तत्तेव संभंवायां नमानायां
धारिणीम् देवीम् संशियायां पट्टिनिवसमंति, पट्टिनिवसमिस्ता जेणव मेणियम्
ताया मेणिये उदागच्छेति, उदागच्छिता करयत्तपरिगच्छियं' *दमणत्तं निरुत्तवत्तं
मत्तम् धंज्जति' कद्दु जण्णं विजण्णं वद्धावेति, वद्धावेत्ता एवं दयामी—एवं
मत्तु मामो ! किं पि अज्ज धारिणी देवी ओनुत्ता ओनुत्तसरीरा जाव' मद्दुत्त-
णावगमा भित्ताय ॥

धारिणीए चिंताकारणनिवेदन-पदं

४५. तए णं सा धारिणी देवी सेणिणं रण्णा सवह-माविद्या ममाणी सेणियं रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! मम तस्स उगलस्स जाव' महानुमिणस्स तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयास्सुवे' अकालमेहेसु दोहले पाउव्वाए—घण्णओ णं ताओ अम्मयाओ कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव' वेभारणि-कडग'-पायमूलं सव्वओ समंता आहिउमाणीओ-आहिउमाणीओ' दोहलं विणिंति । तं जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव' दोहलं विणेज्जामि । 'तए णं अहं' सामी ! अयमेयास्सुवे' अकालदोहलंमि अविणिज्जमाणंसि ओलुग्गा जाव' अट्टज्झाणोवगया भियामि ॥

सेणियस्स आसासण-पद

४६. तए णं से सेणिए राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निम्मम धारिणिं देवि एवं वयासी—मा णं तुमं देवानुप्पिए ! ओलुग्गा जाव' अट्टज्झाणोवगया भियाहि । अहं णं तह' करिस्सामि" जहा णं तुमं अयमेयास्सुवे' अकाल-दोहलस्स मणोरहसंपत्ती भविस्सइ त्ति कट्ठु धारिणिं देवि इट्ठाहि कंताहि पियाहि मणुन्ताहि मणामाहि वग्गूहि समासामेइ, समासारेत्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता सीहासणवरगए पुस्त्याभिमुहे सणिसण्णे धारिणीए देवीए एयं अकालदोहलं वहीहि आएहि य उवाएहि य, उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पारिणामियाहि य—'चउव्विहाहि बुद्धीहि'" अणुचितेमाणे-अणुचितेमाणे तस्स दोहलस्स आयं वा उवायं वा 'ठिइं वा उप्पत्तिं वा'" अविदमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव'" भियायइ ॥

अभयकुमारस्स सेणियं पइ चिंताकारणपुच्छा-पदं

४७. तयाणंतरं च णं अभए" कुमारे 'ण्हाए कयवलिकम्मे" •कयकोउय-संगल-पायच्छित्ते" सव्वालंकारविभूसिए पायवंदए पहारेत्थ गमणाए ॥

१. ना० ११११६ ।

२. अतमेया० (ग) ।

३. ना० १११३३ ।

४. वेभार० (ख, ग) ।

५. द्रष्टव्य : १११३३ सूत्रस्यासी पाठः ।

६. ना० १११३३ ।

७. तए णं हं (क); तते णं हं (ख); तेणा हं (घ) ।

८, ९. ना० १११३४ ।

१०. तहा (घ) ।

११. घत्तीहामि (वृ); करिस्सामि (वृपा) ।

१२. चउव्विहाए बुद्धीए (ग) ।

१३. उप्पत्तिं वा ठिइं वा (क); उप्पत्तिं वा (वृपा) ।

१४. ना० १११३४ ।

१५. अभय (क, ग, घ) ।

१६. सं० पा०—कयवलिकम्मे जाव सव्वालंकार०

४८. ताम् णं मे अमरं कुमारं" मेनेय मेणिम्, राया मेनेय उवागच्छट, उवागच्छिता
मेणियं रायं श्रोह्यमणमंकणं जाय' भियायमाणं पातट, पातित्ता अयमेवागये
अडभटियम्, पित्तम्, पतियम्, मयोणम्, मंकणं नमुणपज्जित्था अणया' ममं
मेणिम्, राया एवजमाणं पातट, पातित्ता आडाह पयियाणह मवकारेह
मम्माणेह [इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुत्ताहिं मणानाहिं श्रोराताहिं वग्गुहिं ?]
आलवट मंनयट अडामणेणं' उवनिमतेह मययनि अग्गाह । इयाणि ममं मेणिम्
राया नो आडाह नो पयियाणह नो मवकारेह नो मम्माणेह नो इट्ठाहिं कंताहिं
पियाहिं मणुत्ताहिं मणानाहिं श्रोराताहिं वग्गुहिं आलवट मंनयट नो अडामणेणं
उवनिमतेह नो मययनि अग्गाह', किं पि श्रोह्यमणमंकणं जाय' भियायट ।
तं भविययं णं एय कटणं । तं मेयं मनु ममं मेणियं रायं एयमट्टं पुच्छिताम्—
एयं मेनेह, मेनेत्ता अणामेय' मेणिम्, राया मेणामेय' उवागच्छट, उवागच्छिता
कययणपरिमोहियं सिरमायनं मयय अंयनि कट्टं जणं विज्जणं वत्तायेह,
वत्तायेत्ता एयं वपानो—नुय्मे णं ताओ ! अणया ममं एवजमाणं पातित्ता
आडाह पयियाणह "मवकारेह मम्माणेह" आलवट मंनयट अडामणेणं
उवनिमतेह मययनि अग्गाह । इयाणि ताओ ! नुय्मे ममं नो आडाह जाय
'नो मययनि अग्गाह' किं पि श्रोह्यमणमंकणं जाय' भियायट । तं
भविययं णं ताओ ! एय कटणं । ताओ नुय्मे मम ताओ ! एयं कटणं
अग्गाहणा' अयंकमाणा मनिच्छमाणा अपच्छामाणा जलभूतमवित्तमनदिह
एयमट्टं आहवता । तम् पितं मम कटणम अंयमणं ममिन्तामि ॥

दोहले पाउडभवित्या—धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ तत्तेव निस्समेमं भाणियव्वं जाव' वेभारगिरिकडग-पायमूलं सव्वयां समंता आहिउमाणीओ-आहिउ-माणीओ दोहलं विणित्ति । तं जइ णं अहमनि मेहेमु अउममएमु जाव दोहलं विणिज्जामि ।

तए णं अहं पुत्ता धारिणीए देवीए तस्स अकालदोहलस्स वडहिं आणहिं य उवाएहिं य जाव' उप्पत्ति अविदमाणे आहयमणसंकप्पे जाव' भियामि, तुमं आगयं पि न याणामि । तं एतेणं कारणेणं अहं पुत्ता ! ओहयमणसंकप्पे जाव भियामि ॥

अभयस्स आसासण-पदं

५०. तए णं से अभए कुमारे सेणियस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियए सेणियं रायं एवं वयासी—मा णं तुव्वे ताओ ! ओहयमणसंकप्पे जाव' भियायह । अहं णं तहा करिस्सामि जहा णं मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयाह्वस्स अकालदोहलस्स मणोरहसंपत्ती भविस्सइ त्ति कइट्ठु सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं *कंताहिं पियाहिं मणुन्ताहिं मणामाहिं वग्गूहिं° समासासेइ ॥

५१. तए णं से सेणिए राया अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियए अभयं कुमारं सक्कारेइ समाणेइ, पडिविसज्जेइ ॥

अभयस्स देवाराहण-पदं

५२. तए णं से 'अभए कुमारे' 'सक्कारिए सम्माणिए' पडिविसज्जिए समाणे सेणियस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणामेव सए भवणे, तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे निसण्णे ॥

५३. तए णं तस्स अभयस्स" कुमारस्स अयमेयाह्वे अज्झत्थिए" *चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—नो खलु सक्का माणुस्सएणं उवाएणं मम

१. ना० ११।३३ ।

२. ना० ११।४६ ।

३. ना० ११।३४ ।

४. ना० ११।१६ ।

५. तोहय° (क) ।

६. ना० ११।३४ ।

७. सं० पा०—इट्ठाहिं जाव समासासेइ ।

८. ना० ११।१६ ।

९. अभयकुमारे (ख, ग, घ) ।

१०. सक्कारिय ° (क); सक्कारिय सम्माणिय (ख, ग) ।

११. अभय (ख, ग, घ) ।

१२. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

समोहणइ', समोहणित्ता संसेज्जाइं जोयणाइं रंउं' भिगिरइ, तं जहा—रयणाणं वडराणं' वेसलियाणं लोहियवखाणं मसारगल्लानं हंसगदभाणं पुनमाणं सोगंवि-याणं जोईरसाणं अंकाणं अंजणाणं रययाणं' जायस्सवाणं अंजणपुलगाणं फलि-हाणं रिद्धाणं अहावायरे पोग्गले परिसाडेइ, परिसाडेत्ता अहागुहमे पोग्गले परिगिण्हइ, परिगिण्हित्ता अभयकुमारमणुकंपमाणे देवे 'पुव्वभवज्जणिय-मेह-पीइ-वहुमाणजायसोमे' तत्रो विमाणवरपुंउरीयाओ रयणुत्तमाओ 'धरणीयल-गमण-तुरिय-संजणिय-गमणपयारो' 'वाधुण्णिय-विमल-कणग-पयरग-वडिसगमउडुक्क-डाडोवदंसणिज्जो अणेगमणि-कणगरयणपहकरपरिमंडिय-भत्तिचित्त-विणि-उत्तग-मणुगुणजणियहरिसो पिखोलमाणवरललियकुंडलुज्जलिय-वयणगुणजणिय-सोम्मरूवो' उदिओ विव कोमुदीनिसाए राणिच्छरंगारगुज्जलियमज्झभागत्तो नयणाणंदो सरयचंदो दिव्वोराहिपज्जलुज्जलियदंशणाभिरामो उदुलच्छिसमत-जायसोहो पड्डुगंधुद्धयाभिरामो मेरू विव नगवरो विगुव्वियविचित्तवेसो दीवसमुदाणं असंखपरिमाणनामवेज्जाणं मज्झकारेणं वीइवयमाणो उज्जोयंतो' पभाए विमलाए जीवलोयं रायगिहं पुरवरं च अभयस्स पासं ओवयइ दिव्व-रूवधारी ।

५७. तए णं से देवे अंतलिकखपडिवण्णे दसद्ववण्णाइं सखिसिणियाइं पवर वत्थाइं परिहिए' अभयं कुमारं एवं वयासी—अहं णं देवाणुप्पिया ! पुव्वसंगइए

१. समोहणति (क, ख, घ) ।

२. दंडं उड्डं (ग) ।

३. वयरारणं (ग, घ) ।

४. रयणाणं (ग, घ) इत्यपपाठः ।

५. वाचनान्तरे—पूर्वभवजनितस्नेहप्रीतिवहुमान-जनितशोभः (वृ) ।

६. वाचनान्तरे—धरणीतलगमनसंजनितमनः प्रचारः (वृ) ।

७. ० सोमरूवो (ख, घ); वाचनान्तरे पुनरेवं विशेषणत्रयं दृश्यते—वाधुन्निय-विमलकणग-पयरग-वडंसगपकंपमाण-चललोल-ललिय-परिलंबमाण-नर-मगर-तुरग-मुहसय-विणिग्ग-ओगिण्ण-पवरमोत्तियविरायमाणमउडुक्क-डावडोवदरिसणिज्जो अणेगमणिकणगरयण-पहकरपरिमंडिय-भाग भत्तिचित्त-विणिउत्तग-मणुगुणजणिय-पेखोलमाणवरललियकुंडलुज्ज-

लियअहियआभरणजणियसोभे गयजलमल-विमलदंसणविरायमाणरूवे (वृ) ।

८. उज्जोयंतो (क, ग) ।

९. 'परिहिए' इतिपाठानन्तरं आदर्शेषु 'एवको ताव एसो गमो । अन्नो वि गमो' इत्युल्लेखोस्ति । तदनन्तरं द्वितीयोः गमः साक्षाल्लिखितोस्ति, तेनादर्शेषु गमद्वयस्य सम्मिश्रणं जातम् । वृत्तावपि अस्म्य सूचना लभ्यते, यथा—एकस्तावदेव गमः पाठोऽन्यो वि द्वितीयो गमो वाचनाविशेषः पुस्तकान्तरेषु दृश्यते । अस्योल्लेखस्यानुसारेण द्वितीयगमस्य पाठः इत्थं भवति—“तएणं से देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए सीहाए उड्डुयाए जयणाए छेयाए दिव्वाए देवगईए जेणामेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे जेणामेव दाहिणइडभरहे

सोऽहम्भकल्पवासी देवे महिद्दोए' जं णं तुमं पोसहत्ताएण सट्टमभनं पणिण्डिता' णं ममं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणं चिट्ठसि, तं एम णं देवाणुणिया ! अहं एहं हव्वमाणं । तंदिताहिं णं देवाणुणिया ! किं करेमि ? किं दव्वामि ? किं पव्वत्तामि ? किं वा ते हियइच्छियं ?

५. नए णं मे अभए तुमारे तं पुव्वमंगइयं देयं संतत्तिमएणडियणं पासित्ता हट्टुत्तं पोणहं पारेइ, पारेत्ता करयल' •परिणहियं तिरसावनं मत्थए' अज्जलि कट्टु एयं वयानी-एयं मनु देवाणुणिया ! मम चुल्लमाडयाए धारिणीए देवीए अयमेत्ताहवे अकालदोहने पाडव्भूए-धन्नायो णं माओ अम्ममाओ तह्वे पुव्वममेणं जाव' येभारनिरिकटण-पायमूलं सव्वयो सगंता आहिउमाणोओ-आहिउमाणोओ दोहलं विणयि । तं जइ णं अहमवि मेहेसु अरुभुणएणु जाव' दोहलं विणयज्जामि-तं णं तुमं देवाणुणिया ! मम चुल्लमाडयाए धारिणीए देवीए अयमेत्ताहवे अकालदोहलं विणयि ॥

अभयं कुमारं एवं वयासी—एवं सलू देवाणुप्पिया ! मण तव पियट्टुयाए
'सगज्जिया सफुसिया सविज्जुया' दिव्वा पाउसासिरी विउव्विया, तं विणेऊ णं
देवाणुप्पिया ! तव चुल्लमाउया धारिणी देवी अगमंगास्सं अकालदोहलं ॥

धारिणीए दोहद-पूरण पदं

६०. तए णं से अभए कुमारे तस्स पुव्वसंगइयस्स 'सोहम्मकप्पवासिस्स देवस्स'
अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठे रायायो भवणाओ पडिनिक्कमड, पडि-
निक्कमित्ता जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल'
•परिगहियं सिरसावत्तं मत्थए° अंजलि कट्ठु एवं वयासी—एवं मनु ताओ !
मम पुव्वसंगइएणं सोहम्मकप्पवासिणा देवेणं खिप्पामेव सगज्जिया सविज्जुया
(सफुसिया ?) पंचवण्णमेहनिणाओवसोभिया दिव्वा पाउसासिरी विउव्विया ।
तं विणेऊ णं मम चुल्लमाउया धारिणी देवी अकालदोहलं ॥
६१. तए णं से सेणिए राया अभयस्स कुमारस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म
हट्ठुट्ठे कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो !
देवाणुप्पिया ! रायगिहं नगरं सिघाडग-तिग-चउवक-चच्चर-चउम्मुह-महापह-
पहेसु आसित्तसित्त-सुइय-संमज्जिओवलित्तं जाव' सुगंधवर [गंध ?] गंधियं
गंधवट्ठिभूयं करेह य, कारवेह य, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥
६२. तए णं ते कोडुवियपुरिसे •सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठुट्ठ-चित्त-
माणदिया पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया तमाण-
त्तियं° पच्चप्पिणंति ॥
६३. तए णं से सेणिए राया दोच्चंपि कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हय-गय-रह-पवरजोह'-कलियं चाउरंगिणि सेणं
सन्ताहेह, सेयणयं च गंधहत्थियं परिकप्पेह । तेवि तहेव करेत्ति जाव पच्च-
प्पिणंति ॥
६४. तए णं से सेणिए राया जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

१. सगज्जिय सफुसिय सविज्जुया (क, ख, ग, घ); पूर्वपंचवी 'सफुसिय' अंतिमं पदमस्ति अत्र च 'सविज्जुया' इत्यंतिमं पदम् । कथ-
मसौविपर्ययो जातः इति न निश्चयपूर्वकं
वक्तुं शक्यते ।
२. देवस्स सोहम्मकप्पवासिस्स (क, ख, ग, घ) ।
३. सं० पा०—करयल अंजलि ।
४. हट्ठुट्ठ (क, ग, घ) ।
५. ता० १।१।३३ ।
६. सं० पा०—कोडुवियपुरिस्सा जाव पच्चप्पि-
णंति ।
७. जोहपवर (क, ख, ग, घ) । अष्टमाध्यय-
नस्य १६१ सूत्रानुसारेण असौ पाठः
परिवर्तितः ।
८. सेन्नं (क, ख, ग, घ) ।

य पेच्छमाणी य मज्जमाणी य गत्ताणि य पुण्णाणि य फल्लानि य फल्लवाणि य
गिण्हमाणी य माणेमाणी य अग्घागमाणी' य परिभुंजमाणी' य परिभाणमाणी
य वेभारगिरिपायमूले 'दोहलं विणेमाणी' गव्वयां समंता आदिउइ ॥

६८. तए णं सा धारिणी देवी सम्माणियदोहला' विणीयदोहला संपुण्णदोहला
संपत्तदोहला' जाया यावि होत्वा ॥

६९. तए णं सा धारिणी देवी सेयणयगंधहृत्तिं दुच्छा' समाणी नेणिणं हृत्तिवंध-
वरगएणं पिट्ठओ-पिट्ठओ समणुगम्ममाण-मग्गा ह्य-गय'-●रह-पवरजोहकलियाए
चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिचुट्ठा महया भउ-चउमर-वंदपरिखत्ता
सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए जाव' दुंदुभिनिघोसनाइय'-रवेणं जेणेव रायगिहे नयरे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता रायगिहं नयरं मज्जमज्जेणं जेणामेव सए
भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छिता विउलाइ माणुस्सगाइं भोगभोगाइं"
●पच्चणुभवमाणी० विहरइ ॥

अभएण देवस्स पडिविसज्जण-पदं

७०. तए णं से अभए कुमारे जेणामेव पोसहसाला तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छिता
पुव्वसंगइयं देवं सवकारेइ सम्माणेइ, सवकारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

७१. तए णं से देवे सगज्जियं [सविज्जुयं सफुसियं ?] गंचवण्णमेहोवसोहियं दिव्वं
पाउससिरि पडिसाहरइ, पडिसाहरिता जामेव दिसिं" पाउवभूए तामेव दिसिं"
पडिगए ॥

धारिणीए गव्वभचरिया-पदं

७२. तए णं सा धारिणी देवी तंसि अकालदोहलंसि विणीयंसि सम्माणियदोहला
तस्स गव्वभस्स अणुकंपणट्ठाए" जयं चिट्ठइ जयं आसयइ" जयं सुवइ, आहारं पि

१. × (क); आग्घाएमाणी (ख) ।

२. परिभुंजमाणी (ख, ग) ।

३. विणेमाणी (क, ख, ग); दोहलं विणेमाणी
(घ); वृत्तिकारेणापि 'दोहलं' इति पाठो
मूलतया नैव व्याख्यातः ।

यथा—विणेमाणी ति—दोहलं विनयंती
(घ) ।

४. १।१।३३ सूत्रानुसारेण 'सम्माणियदोहला'
इति पाठो युज्यते, यद्यपि प्रयुक्तादर्शेषु
नोपलभ्यते । यवचित्प्रयुक्तेषु आदर्शेषु
लभ्यते ।

५. संपन्नदोहला (घ) ।

६. संपन्नदोहला (क, ख) ।

७. दुच्छा (क) ।

८. सं० पा०—हयगय जाव रवेणं ।

९. ना० १।१।३३ ।

१०. सं० पा०—भोगभोगाइं जाव विहरइ ।

११. दिसं (क, घ) ।

१२. दिसं (क, घ) ।

१३. °ट्ठाए (क) ।

१४. आसति (घ) ।

यत् न आहारेमाणी—नाह्नितं नाह्नकटुं नाह्नकसायं नाह्नप्रक्षिप्तं नाह्नमहूरं, जं नमस गन्धमरसं द्रव्यं मित्रं पत्न्यं देवे यं वायं य आहारं आहारेमाणी, नाह्नचित्तं नाह्नमोहं नाह्नमोहं नाह्नमोहं नाह्नपरिणामं' यद्यप्यभिज्ञान-मोह-मोह-भय-परिणामा उद्धृ-भञ्जमानं-मुनेर्हि भोयण-व्यायण-मोह-मन्त्रालोककारिह तं' नमसं मुनेर्मुनेषं परिब्रूत ॥

मोहस्य जन्म-यदायण-परं

७३. तत् न ना आरिणी देवी नमसं मानाणं बहुपटिगुणानां बहुद्रुमानां यं राट्टिदियाणं योश्चकनानां अदरन्नाकादरमयनि' मुकुनालगाणिवायं जायं सत्यंमन्दरं दारणं पयाया ॥

७४. तत् न नाथो योगपटिगारियाथो आरिणि देवि नमसं मानाणं बहुपटिगुणानां जायं सत्यंमन्दरं दारणं पयायं पानति, पानिना मित्रं मुनिं नमसं देव्यं' मेनेन मेनिनं राया मेनेन उवागच्छति, उवागच्छिता मेनिनं रायं जपणं पिङ्ग-मण्य पयायेति, पयायेना कल्पयन्निगदियं निरनायसं मयम् अज्जनि कट्टु मयं पयायी—एवं सत्तु देवाण्णिमा ! आरिणी देवी नमसं मानाणं बहुपटि-गुणानां जायं सत्यंमन्दरं दारणं पयाया । मे नं अग्ने देवाण्णिमायं दिवं निषेपमी, दिवं मे' भवत ॥

७५. तत् न मे मेनिनं राया नाथि योगपटिगारियायं मेनिनं एवमहं मोक्षया निगमनं कट्टु देवाथो योगपटिगारियाया गह्वरेण यमोहं विजयेण य पुण्य-पत्तनमोह-भञ्जनाद्वैकारेण भवतादेह सम्भावेह, मत्तयपयोयसो' कट्टेह, पुनायुगुनियं विनि कट्टेह, मत्तयना पट्टिदिमज्जेह ॥

मोहस्य जन्मस्य धर्मद्वय-परं

७६. तत् न मे मेनिनं राया [पत्तनमकादरमयनि' ?] मोक्षयिममुनिं गह्वरेह, गह्वरेण एव यमोहं—पितृभोय भो देवाण्णिमा ! रायनिनं मयं दानियं'-
•मयमिन्द्रस्यैवदिवं मित्रादग्निम - सत्यंमन्दरमय - सत्यंमन्दरमय - सत्यंमन्दरमय - सत्यंमन्दरमय

ऊसिय-ऊभय-गडागाइपदाग-गंठियं नाउळ्ळांडय-गंठियं गोर्गीग-सरग-रन-
चंदण-ददूर-दिण्णपंचगुलितलं उअनियवंदणकलमं नंदणचय-मुकग-नोरण-
पडिदुवारदेसभायं आसत्तोसत्तविउल-वट्ट-वग्धापर-मल्लदाम-कलावं पंचवण-
सरस-सुरभिमुक्क-पुष्कपंजोवयार-कलियं कालागुग-पवर-कंदुल्लक-तुल्लक-धूव-
डज्जंत-मघमघंत-गंधुद्ध्याभिरामं गुगंधवग्गंभग्गंभयं भंभरुद्धिभूयं नट-णटग-
जल्ल-मल्ल-मुट्टिय-वेलंबग-कहकहग-पवग-नासग-आउळ्ळग-लंल-भंग- नृणल्ल-
तुंववीणिय-अणेततालायर° परिगीयं करेह, कारवेह ग, चारगपरिसोहणं° करेह,
करेत्ता माणुम्माणवद्धणं करेह, करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिण्हं ॥

७७. *तए णं ते कोडुंवियपुरिसा सेणिएणं रण्णा एवं वृत्ता समाणा हट्टुट्ट-चित्त-
माणदिया पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विनाप्पमाणहियया तमाण-
त्तियं° पच्चप्पिणंति ॥

७८. तए णं से सेणिए राया अट्टारससेणि-प्पसेणीओ सद्दवेड, सद्दवेत्ता एवं वयासी-
गच्छह णं तुव्भे देवाणुप्पिया ! रायगिहे नगरे अट्टिभतरवाहिरिए उस्सुंक्क°
उवकरं अभडप्पवेसं अदंडिम-कुदंडिमं अवरिमं अघारणिज्जं अणुद्धयमुड्गं
अमिलायमल्लदामं गणियावरनाडइज्जकलियं अणेततालावराणुच्चरियं पमुड्डय-
पवकीलियाभिरामं जहारिहं 'ठिड्वडियं दसदेवसियं' करेह, कारवेह य,
एयमाणत्तियं पच्चप्पिण्हं ॥

७९. तेवि तहेव° करंति, तहेव पच्चप्पिणंति ॥

८०. तए णं से सेणिए राया वाहिरियाए उवट्टाणसालाए सीहासणवरगए पुत्थाभि-
मुहे सण्णिसण्णे 'सतिएहि य साहस्सिएहि य सयसाहस्सिएहि य दाएहिं दलय-
माणे दलयमाणे'° पडिच्छमाणे-पडिच्छमाणे एवं च णं विहरइ ॥

मेहस्स नामादिसवकार (संस्कार) करण-पदं

८१. तए णं तस्स अम्मापियरो 'पढमे दिवसे ठित्तिपडियं' करंति, त्रितिए दिवसे

१. चारगारसोहणं (क); चारगसोहणं (ख, घ);
चारागारपरिसोहणं (ग) एकस्मिन् हस्त-
लिखितवृत्त्यादर्शे 'चारगपरिशोधनं' इति
व्याख्यातमस्ति अपरस्मिंश्च 'चारागारशोधनं'
इति लभ्यते ।

२. सं० पा०—पच्चप्पिण्ह जाव पच्चप्पिणंति ।

३. उस्सुक्कं (क, ग, घ) ।

४. ठिड्वडियं (वृ); वाचनान्तरे—दसदिवसियं
ठिड्वडियं ।

५. × (ख, ग, घ) ।

६. सएहि साहस्सिएहि य सयसाहस्सिएहि य
दाएहि भागेहि° (क); °जाएहिं दाएहिं
भागेहि° (ख, घ), °दलमाणे २ (ग);
वाचनान्तरे—सत्तिकंश्च इत्यादि यागान्—
देवपूजाः, दायान्—दानानि, भागान्—लब्ध-
द्रव्यविभागान् इति (वृ) ।

७. जायकम्मं (क, ख, ग, घ, वृ.); निरयाव-
लियाओ १।१।६० 'ठित्तिपडियं च जहा
मेहस्स' इति संकेतितमस्ति, तस्याधारेणासौ
पाठः स्वीकृतः ।

अथा तं धर्मं सम्यक् धारयन् समनसस्य प्रवृत्तयेऽपि भवति
पञ्चकूपं तं श्रेष्ठं तं धर्मं धारयन् भवेत्तु नाम्नि । ननु धारयन् प्रवृत्तयेऽपि
अप्येवमेव भवति ननु धारयन् ननु धारयन् भवेत्तु नाम्नि ॥

अथा तं धर्मं सम्यक् धारयन् समनसस्य प्रवृत्तयेऽपि भवति
पञ्चकूपं तं श्रेष्ठं तं धर्मं धारयन् भवेत्तु नाम्नि । ननु धारयन् प्रवृत्तयेऽपि
अप्येवमेव भवति ननु धारयन् ननु धारयन् भवेत्तु नाम्नि ॥

मेहस्स लालणपालण-पद

८२. तए णं से मेहे कुमारे पंचवाइपरिगहिण, [तं जहा—गौरवाइण मज्जणवाइण कोलावणवाइण मंडणवाइण अंकवाइण] 'अण्णाहिं य वड्ढिं—मुज्जाहिं चिला-ईहिं' 'वामणीहिं वडभीहिं वव्वरीहिं वउसीहिं' जोणियाहिं पल्हवियाहिं ईसिणि-याहिं थारुणिगियाहिं लासियाहिं लउसियाहिं दामिलोहिं मिहलोहिं आरवोहिं पुलिदीहिं पवकणीहिं वहलोहिं मुकुंडीहिं' सवरीहिं पारसीहिं'—नानादेसीहिं विदेसपरिमंडियाहिं ईगिय-चित्तिय-पट्ठिय-वियाणियाहिं सदेस-नेवत्थ-गहिय-वेसाहिं निउणकुसलाहिं विणीयाहिं', चेडियानवकवाल-वरिसवर-कंचुउज्ज-महयरग"—वंद-परिक्खत्ते हत्थाओ हत्थं साहरिज्जमाणे" अंकाओ अंकं परि-भुज्जमाणे परिगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे" रम्मसि मणिकोट्टिमत्तलंसि परंगिज्जमाणे" निव्वाय-निव्वाघायंसि गिरिकंदरमल्लीणं व चंपगपायवे मुहंमुहेणं वड्ढइ" ॥

८३. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो अणुपुट्ठेणं" नामकरणं च पजेमणं" 'च पंचकमणं च चोलोवणं च महया-महया इड्ढी-सक्कार-समुदएणं करंसु ॥

मेहस्स कलागहण-पदं

८४. तए णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो साइरेगट्ठवासजायगं चेव" सोहणंसि तिहि-करण-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणंति ॥

१. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते । ११. साहिज्जमाणे (ख, ग, घ) ।
२. चिलाइयाहिं (क, ख, ग, घ, रायपसेणइयं सू० ८०४) । १२. अतोप्रे वृत्ती पाठान्तरस्योल्लेखो विद्यते—उवनच्चिज्जमाणे २ उवगाइज्जमाणे २ उवलालिज्जमाणे २ उवगूहिज्जमाणे २ अवयासिज्जमाणे २ परिवंदिज्जमाणे २ परिचुंविज्जमाणे २ । द्रष्टव्यम्—(श्रोवाइय-सूत्रस्य परिशिष्टं पृ० १५१); रायपसेणइयं सूत्र ८०४ ।
३. पउसियाहिं (ओ० सू० ७०) ।
४. इसिणिगियाहिं (क, ख, ग) ।
५. थारुइगियाहिं (ओ० सू० ७०) ।
६. मुकुंडीहिं (ओ० सू० ७०); मुरंडीहिं (राय० सू० ८०४) ।
७. वामणि [वावणि (ख, ग)] वडभिवव्वरि-वउसिजोणियपल्हविइसिणिगारुणिगिलासिय-लउसियदमिलिसिहलिआरविपुलिदिपवकणि-वहलिमुरंडिसवरिपारसीहिं (क, ख, ग, घ) । १३. परिगिज्जमाणे २ (क, ग) । १४. वद्धति (घ) । १५. अणुपुट्ठं (ख) ।
८. नानादेसी (क, ख, ग) । १६. एवं जेमणं च एवं चंकमणं च (ख, ग) ।
९. युक्त इति गम्यते (वृ) । १७. अतोप्रे 'गवभट्टमे वासे' इति पाठो विद्यते, किन्तु एतत् पाठान्तरं प्रतीयते । 'साइरेगट्ठ-
१०. महत्तरंग (घ) ।

८४. तद् यं मे कथापरिणं भेत् कुमारं मेहादयाशो नपियन्महापाशो मउन्मन्-
पञ्चवसानाशो वायन्नि कथाशो मुत्तशो य अत्यशो य करणशो य मेहादेह निवन्ता-
येह, तं जहा —

१. निहं २. नपियं ३. मयं ४. नहं ५. गोयं ६. वाद्यं ७. मन्मयं ८. पोतवन्-
नयं ९. नमवात् १०. जयं ११. जणवायं १२. पाणयं १३. अट्टायं
१४. पोरेकयं १५. वगमद्वियं १६. यन्निविहि १७. पाणविहि १८.
नत्तविहि १९. विवेकविहि २०. नवणविहि २१. अज्जं २२. पतेनियं
२३. मागियं २४. गाहं २५. गोहयं २६. निलोयं २७. दिग्गन्तुति
२८. मृगणत्तुति २९. नृणत्तुति ३०. आभरणविहि ३१. मग्गीपडिक्कम्
३२. इत्थिक्कम् ३३. पुत्तिमन्मयं ३४. मयन्मयं ३५. मयन्मयं
३६. गोणन्मयं ३७. क्कामुत्तन्मयं ३८. उणन्मयं ३९. वंमन्मयं
४०. यत्तिन्मयं ४१. मण्णन्मयं ४२. कामान्मयं ४३. नत्तविहं
४४. मग्गीयं ४५. मग्गीयं ४६. व्हं ४७. पडिक्क ४८. वारं
४९. पडिक्क ५०. नवन्मयं ५१. मग्गीयं ५२. मग्गीयं ५३. अज्जं ५४.
निकरं ५५. नृणत्तुति ५६. यत्तिन्मयं ५७. मग्गीयं ५८. वाद्यं ५९.
मग्गीयं ६०. इत्थं ६१. उणन्मयं ६२. यत्तिन्मयं ६३. दिग्गन्तुति
६४. मृगणत्तुति ६५. नृणत्तुति ६६. मग्गीयं ६७. पडिक्क ६८. वारं
६९. मग्गीयं ७०. मग्गीयं ७१. मग्गीयं ७२. मउन्मयं नि ॥

८५. तद् यं मे कथापरिणं भेत् कुमारं मेहादयाशो नपियन्महापाशो मउन्मन्मन्म-
नापाशो वायन्नि कथाशो मुत्तशो य अत्यशो य करणशो य मेहादेह निवन्ता-
येह, मेहादेहा निवन्तायेहा मग्गीयं उज्जेह ॥

८६. तद् यं मेहादयं कुमारं मग्गीयं तं कथापरिणं मग्गीयं यत्तिन्मयं 'विउत्तेज
म' मग्गीयं मग्गीयं मग्गीयं मग्गीयं मग्गीयं मग्गीयं मग्गीयं मग्गीयं मग्गीयं
विउत्तेज मग्गीयं मग्गीयं मग्गीयं मग्गीयं मग्गीयं मग्गीयं मग्गीयं मग्गीयं ॥

विहिप्पगारदेसीभासाविसाराए' मीगरुदे मंथव्वमट्टुसुखे जगजोही गयजोही
रहजोही बाहुजोही बाहुप्पमदी अलंभोगममथे साहसिए वियालचारी जाए
यावि होत्था ॥

मेहस्स पाणिग्गहण-पदं

८६. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्माणियरो मेहं कुमारं वावचारि-कलापंघियं
जाव' वियालचारि' जायं पारंति, पाणिक्ता अट्टपासायर्वाडिगए कारंति—
अव्भुग्गयमूसिय' पहसिए विव मणि-कणम-रयण-भत्तिचित्ते वाउड्ढय-विजय-
वेजयंती-पडाग-छत्ताइच्छत्तकलिए तुंगे गणत्तलमभित्तंममाणसिहरे जालंतर-
रयण' पंजरम्मिलिए' व्व मणिकणमथूभियाणं वियसिय-सयवत्त-पुंडरीए
तिलयरयणद्धचंदच्चिए' नाणामणिमयदामालंकिए अंतो वहि च सण्हे
तवणिज्ज-रुइल'-वालुया-पत्थरे सुहफासे सस्सिरीयरुवे पासाईण' •दरिसणिज्जे
अभिरुवे • पडिरुवे ।

एगं च णं महं भवणं कारेति—अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्टियसालभंजियामं
अव्भुग्गयसुकयवइरवेइयातोरण"-वररइयसालभंजिय"-मुसिलिट्ट - विसिट्ट-लट्ट-
संठिय-पसत्थ-वेरुलियखंभ-नाणामणिकणगरयण-खचियउज्जलं बहुगम-मुविभत्त-
निचियरमणिज्जभूमिभागं ईहामिय"-•उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-
किन्नर-रुह-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय • भत्तिचित्तं खंभुग्गयवयरवेइ-
यापरिगयाभिरामं विज्जाहर-जमल-जुयल-जंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीय"-
रुवगसहस्सकलियं भिसमाणं" भिदिभसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं" सुहफासं
सस्सिरीयरुवं कंचणमणिरयणथूभियाणं नाणाविह-पंचवण-घंटापडाग-परिमडि-

१. अट्टारसविह° (ख); अट्टारसदेसीभासा° (वृषा); °चंदचित्ता (राय° सू° १३७) ।
(ओ° सू° १४८); अट्टारसविहदेसिप्पगार-
भासा° (राय° सू° ८०६) । अष्टादश-
विधेः प्रकाराः प्रवृत्तिप्रकाराः अष्टादशभिर्वा
विविभिर्भेदः प्रचारः प्रवृत्तिर्यस्या (वृ) ।
२. ना० १।१।८८ ।
३. वियालचारी (क) ।
४. अत्र च द्वितीयावहुवचनलोपो दृश्यः (वृ) ।
५. द्वितीयावहुवचनलोपो दृश्यः (वृ) ।
६. पंजरम्मिलिय (ख, ग) ।
७. °यंदच्चिए (क, ख, ग); °चंदचित्ते
(वृषा); °चंदचित्ता (राय° सू° १३७) ।
८. रुइर (ग) ।
९. सं० पा०—पासाईए जाव पडिरुवे ।
१०. °वतिरवेतिया° (ग); °वरवइरवेइया
(राय° सू° १७) ।
११. सालभंजिया (क, ख, घ) ।
१२. सं० पा०—ईहामिय जाव भत्तिचित्तं ।
१३. °मीणं (क, ख, ग) ।
१४. °मालिणीयं (ख) ।
१५. °लेस्सं (क, ग) ।

यमसिद्धं यवन-मिनिनिकयं विणिग्मुनं नाउल्लोच्यमहिं जाव' गंधवद्विभूयं
पाशादेयं दरिद्रमिज्जं अभिन्नं पट्टिद्वं ॥

६०. तप णं तरुं मेहसं कुमारसं यममापिपरो मेहं कुमारं नाहंति तिहि-करण-
नवमस-मुहुरंति सरिसिवाणं गरिव्वयाणं सरित्तयाणं सरित्तयावण-स्व-
जावण-मुपावयेयाणं सरिसाहिंनो रामकुनेहिंनो आणित्तियाणं' पमाहपट्टम-
अविहववट्ट-सोवयण-संगलमुज्जिहि अट्टहि रायवराकमाहि सति एगदिवसेणं
पाणि मिह्विमु ॥

पीडयाण-पदं

६१. तप णं तरुं मेहसं यममापिपरो दसं एमारयं पीडयाणं दलमंति—अट्ट हिरण-
कांडीयो अट्ट मुवणकोडीयो गाहाणुमारंण भाणियज्जं जाव' पेसणत्तारिमायो,

मायाई अणुलिपति, अणुलिपित्ता नागा-नीमामनाम-वोञ्भं' *वरणमरपट्टु-
गायं कुरालणरपसितं अस्सलालापेलवं श्रेयाययित्तणमगाचिगंतकम्मं० हंस-
लवखणं पडसाडगं नियंसंति, हारं पिणद्धेति, अस्सहारं पिणद्धेति, एवं—एगावलि
मुत्तावलि कणगावलि रयणावलि पालवं पायपलवं कट्टगाइं तुडिगाइं
केऊराइं अंगयाइं दसमुद्धियाणंतयं कट्टिमुत्तयं कुंडलाइं चूडामणि रयणवकडं
मउडं—पिणद्धेति, पिणद्धेत्ता' गंथिम-वेडिम-पूरिम-संधादमेणं'—चउव्विहेणं
मल्लेणं कप्पस्सखगं पिव अलंकिय-विभूसियं करंति ॥

मेहस्स अभिनिवखमणमहस्सव-पदं

१२९. तए णं से सेणिण राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—
खिप्पामेव भो देवानुष्पिया ! अणेगखंभसय-सण्णिविट्ठं लीलद्विय-सालभंजियायं
ईहामिय-उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-क-सरभ-चमर-कुंजर-
वणलय-पउमलय-भत्तिचित्तं घंटावलि-महुर-मणहरसरं सुभ-कंत-दरिसणिज्जं
निउणोविय-मिसिमिसेत-मणिरयणघंटियाजालपरिविक्खत्तं अट्ठभुग्गय-वइरवेइया-
परिगयाभिरामं विज्जाहरजमल-जंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीयं' स्वग-
सहस्सकलियं भिसमाणं' भिविभसमाणं चक्खुल्लोयणलेस्सं मुहफासं सस्सिरीयरुवं
सिग्घं तुरियं चवलं वेइयं पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं उवट्ठवेह ॥
१३०. तए णं ते कोडुवियपुरिसा हट्ठुट्ठु अणेगखंभसय-सण्णिविट्ठं जाव' सीयं
उवट्ठवेति ॥
१३१. तए णं से मेहे कुमारे सीयं दुरुहइ, दुरुहिता सीहासणवरगाए पुरत्थाभिमुहे
सण्णिसण्णे ॥
१३२. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया ण्हाया कयवलिकम्मा जाव' अप्पमहग्घा-

१. सं० पा०—नासानोसासवायवोञ्भं जाव हंस-
लवखण ।

२. एतत् पदं वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम् ।

३. × (ख, ग) ।

४. पिणद्धेत्ता दिव्वं सुमणदामं पिणद्धति,
दहमलयमुगंधि ए गंधे पिणद्धेति । तए णं
तं मेहं कुमारं (क, ख, ग); 'घ' प्रति विहाय
सर्वाणि प्रतिपु पाठान्तररूपेणोद्धृतः पाठो
लभ्यते । 'घ' प्रती एवं पाठोस्ति—'दिव्वं
सुमणदामं पिणद्धेति । तते णं तं मेहं कुमारं
गंथिम०' । किन्तु भगवत्यां (६।२३)

आचारचूलायां (१५।२८) च असी पाठः
अतीव व्यवस्थितरूपेण प्राप्तोस्ति, अतः
तयोराधारेण अत्रापि पाठः स्वीकृतः । अनेन
प्रस्तुतसूत्रे जातस्य पाठमिश्रणस्य परिहारः
सहजमेव जातः ।

५. संजोडमेणं (ख) ।

६. ० मालिणीयं (क, ख, ग) ।

७. मिसमीणं (ख, ग) ।

८. ना० १।१।२६ ।

९. ना० १।१।२७ ।

१३६. •तए णं ते कोडुंवियपुरिसा गरिसयाणं गरिसयाणं गरिखयाणं एमाभरण-
गहिय-निज्जोयाणं कोडुंवियवरतरुणाणं महस्सं^१ मदायेति ॥
१४०. तए णं ते कोडुंवियवरतरुणपुरिसा मेणियम्म रण्णो कोडुंवियपुरिमोहि सदाविया
समाणा हट्ठा ण्हाया जाव^२ [मव्वालंकारविभूमिया ?] एमाभरण-गहिय-
णिज्जोया जेणामेव मेणिए राया तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छिता मेणियं
रायं एवं वयासी—संदिमह णं देवाणुप्पिया ! जं णं अग्गेहि करणिज्जं ॥
१४१. तए णं से सेणिए राया तं कोडुंवियवरतरुणमहस्सं एवं वयासी—गच्छह णं
तुब्भे देवाणुप्पिया ! मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीयं^३ सीयं परिवहेह ॥
१४२. तए णं तं कोडुंवियवरतरुणसहस्सं मेणिण्ण रण्णा एवं वुत्तं मंतं हट्ठं मेहस्स
कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं परिवहेह ॥
१४३. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं दुक्खस्स समाणस्स इमे
अट्ठदुमंगलया तप्पढमयाए पुरओ अहाणुपुव्वीए^४ संपत्थिया, तं जहा—सांवत्थिय-
सिरिवच्छ-नंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ-दप्पण्या जाव^५

१. ना० १।१।८१ ।

२. अत्र जाव शब्दस्याग्रिमो पाठो नास्ति सूचितः,
किन्तु प्रसंगानुसारेण पूतिकृत एव पाठो
युज्यते ।

३. °वाहिणीं (ग, घ) ।

४. °वाहिणीं (ख); वाहिणी (ग) ।

५. आणुपुव्वीए (घ) ।

६. सोत्थिय (ग) ।

७. (१) तयाणंतरं च णं पुण्णकलसाँभगारं
दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसण-रइय-
आलोयदरिसणिज्जा वाउडुयविजयवेअयंती
य ऊसिया गणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणु-
पुव्वीए संपट्ठिया ।

(२) तयाणंतरं च णं वेरुलियभिसंतविमलदंडं
पलंबकोरेंट मल्लदामोवसोहियं चंदमडलनिभं
विमलं आयवत्तं पवरं सीहासणं च मणिरयण-
पायवीडं सभाउयानुयसमाउत्तं वहुकिकर-
कम्मकार-पुरिस-पायत्त-गरिखित्त पुरओ
अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ।

(३) तयाणंतरं च णं वहवे लट्ठिग्गाहा कुं-
ग्गाहा चावग्गाहा चामरग्गाहा, पोत्वग्गाहा
फलग्गाहा पीडग्गाहा वीणग्गाहा कुवग्गाहा
हडणग्गाहा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।

(४) तयाणंतरं च णं वहवे दंडिणो मुंडिणो
छिहंडिणो पिच्छिणो हासकरा डमरकरा
चाडुकरा कीडंता य वायंता य गायंता य
नच्चंता य हसंता य सोहंता य साविता य
रवसंता य आलोयं च करेमाणा जयसदं च
पउजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।

(५) तयाणंतरं च णं जच्चाणं तरमल्लिहाय-
णाणं थासग-अहिलाण-चामर-गंड-परिमंडिय-
कडीणं किकरवरतरुणपरिग्गहियाणं अट्ठसयं
वरतुरगाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ।

(६) तयाणंतरं च णं ईसीदंताणं ईसीमत्ताणं
ईसीतुंगाणं ईसीउच्छंगविसाल-धवलदंताणं
कंचणकोसी-पविट्ठदंताणं कंचण-मणिरयण-
भूसियाण वरपुरिसारोहगसंपउत्ताणं अट्ठसयं

वह्ने अत्यन्तिया' •कामतिया भोगतिया नागतिया किञ्चित्तिया कानेतिया
कारवाहिया संगिया चतिया संगतिया मुहसंगतिया वरुमाना पूरमापया
संजियमणा ताहि इट्टाहि कंवाहि पित्ताहि मयपणाहि मयामाहि मयाभिरामाहि
हिययममणिज्जाहि वग्गुहि जयविजयसंगलमगुहि • अणवरयं जसिन्धवा य
अभियुण्णता य एवं वयागी — जय-जय नंदा ! जय-जय भट्टा !

जय-जय नंदा ! भट्टं ते । अजियं जिप्पाहि उदियाउं, जियं च पात्तेहि मयल-
पम्मं, जियविग्गो यि य वयाहि नं देव ! निदिमग्गे, निट्ठाहि रामदीनमग्गे
नयेण पित्त-पणिय-वदकण्ठो. महाहि य अट्टकम्मसत्तु भाणियं उरमेणं नुययेणं
अणमनो, पायय विविमिरमणुत्तरं वेदणं ताणं, मज्ज य मोक्खं पम्मं पयं

सासयं च अयलं, 'हंता परीसहचमूणं', अभीष्टो परीसहोवसम्पाणं, धम्मे ते अविग्घं भवउ त्ति कट्ठु पुणो-पुणो मंगल-अयसइ पउजंति ॥

१४४. तए णं से मेहे कुमारे रायगिहस नगरस मज्झमज्जेणं निगच्छइ, निगच्छिता जेणव गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छिता पुरिससहस्रवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ ॥

सिस्सभिवख दाण-पदं

१४५. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं पुरओ कट्ठु जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छिता समणं भगवं महावीरं तिक्वुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! मेहे कुमारे अम्हं एगे पुत्ते इहे कंते' ० पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्माणं बहुमाए अणुमाए भंडकरंङ्ग-समाणे रयणे रयणभूए ० जीवियऊसासए हिययणंदिजणए उंवरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण दरिसणयाए ?

से जहान्तामए उप्पले ति वा पउमे ति वा कुमुदे ति वा पंके जाए जले संबड्ढिए नोवलिप्पइ पंकरएणं नोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव मेहे कुमारे कामेसु जाए भोगेसु संबड्ढिए नोवलिप्पइ कामरएणं नोवलिप्पइ भोगरएणं । एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउच्चिग्गे भीए जम्मण'-जर-मरणाणं, इच्छइ देवाणु-प्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अम्हे णं देवाणु-प्पियाणं सिस्सभिवखं' दलयामो । पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सभिवखं ॥

१४६. तए णं समणे भगवं महावीरे मेहस्स कुमारस्स अम्मापिऊहि एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेइ ॥

१४७. तए णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ' उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, सयमेव आभरण-मल्लालंकारं ओमुयइ ॥

१४८. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया हंसलवखणेणं पडसाडएणं आभरण-मल्लालंकारं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हार-वारिधार-सिंदुवार-छिन्तमुत्तावलि-प्पगासाइं अंसूणि विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी रोयमाणी-रोयमाणी कंद-माणी-कंदमाणी विलवमाणी-विलवमाणी एवं वयासी—जइयव्वं जाया !

१. हत्वा परीसह-चमू—परीपहसैन्यम् ।
णमित्यलंकारे अथवा कथंभूतः त्वम्, हंता—
विनाशकः परीपह-चमूनाम् (वृ) ।
२. पच्चोरुभइ (ख, ग) ।
३. सं० पा०—कंते जाव जीवियऊसासए ।

४. संबुड्ढे (ख, ग) ।
५. जम्म (ख, ग) ।
६. सीसभिवख (क) ।
७. × (क, ग, घ) ।
८. पडग० (ख) ।

पठितव्यं जाया ! पराक्रमितव्यं जाया ! अस्मि न यं यद्वै नो यमायव्यं ।
अम्हंति यं एमेव ममे भवतु त्वि गच्छ मेहस्य कुमारस्य अम्वापिरो समनं
भगवं महावीरं वंदन्ति नमनंति, यंयिता नमंयिता जामेय दितं पाउवभूया
तामेव दितं पठितव्यं ॥

मेहस्य पयवज्जागहण-पर्व

१४८. तए णं मे मेहे कुमारं मयमेव पंनमुद्धियं नोयं करेण, करेणा वेणामेव सचने
भगवं महावीरं वेणामेव उवागच्छेण, उवागच्छिता समनं भगवं महावीरं
विकवृताः सायाह्मिण-पयाह्मिणं करेण, करेणा वंयं नमंयत, यंयिता नमंयिता
एवं वयातो - यानित्तं यं भवे ! नोए, पयित्तं यं भवे ! नोए, यानित्तं पयित्तं
यं भवे ! नोए अनाए भयणेण य ।

मे जद्वान्तमए किं गाहापरं सत्तावेति भित्तायमायानि जे सत्तं भंते भवतु
अप्यभारे' मौल्यवराणं त सत्ताय जायाए एवमेव भवपक्रम - एव मे निष्पत्तिरिति
समार्थं 'पच्छा पुन य' नोए विपणं मुहाए समारं निरमेणाए आणमासिद्वय
भविमत् । ययामेव मम वि एवे जायवर्गे इहे कते विए भगवणे सत्तायः ।
मे निष्पत्तिरिति समार्थं संसारयोक्तेकते भविमत् । नं इच्छामि यं विद्यापुच्छि
सयमेव पय्यादिय मयमेव मंदादियं मयमेव वेदादियं मयमेव विद्यापुच्छि
मयमेव आयाज-नोकर-विपण-वेणय-वरण-तरण-जयामायादीभवे' ॥१४८॥

मेहस्स मणो-संकिलेस-पदं

१५२. जह्विसं' च णं मेहे कुमारे' मुडे भवित्ता अगाराया अणगारियं पव्वइए, तस्स णं दिवसस्स पच्चावरण्हकालसमयसि' समणाणं निग्गंथाणं अहाराणिआए' सेज्जा-संधाराणु विभज्जमाणेणु भंढकुमाररगं दारमूले' सेज्जा-संधाराण जाए यावि होत्था ॥

१५३. तए णं समणा निग्गंथा पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि वायणाए पुच्छणाए परियट्ठणाए धम्माणुजोगचिंताए य उच्चारस्स वा' पासवणरग वा' अट्ठगच्छमाणा य निग्गच्छमाणा य अप्पेगइया मेहं कुमारं हत्थेहिं संघट्ठेति °अप्पेगइया पाएहिं संघट्ठेति अप्पेगइया सीमे संघट्ठेति अप्पेगइया पोट्ठे संघट्ठेति अप्पेगइया कायंसि संघट्ठेति° अप्पेगइया ओलंडेति अप्पेगइया पोल्डेति अप्पेगइया पाय-रय-रेणु-गुडियं करंति । एमहालियं° च रयणिं° मेहे कुमारे नो संचाएइ खणमवि अच्छिं° निमीलित्ताए ॥

१५४. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अयमेयाह्वे अज्झत्थिआए° °चिंतिए पत्थिए मणो-गए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं सेणियस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए देवीए अत्तए मेहे° °इट्ठे कंते पिण मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिण सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीविय-उस्साएण हियय-णंदि-जणणे उंवर-पुप्फं व दुल्लहे° सवणयाए° । तं जया णं अहं अगारमज्झवसामि° तया णं मम समणा निग्गंथा आढायंति परियाणंति° सक्कारंति सम्माणंति, अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं° आइक्खंति, इट्ठाहिं कंताहिं वग्गूहिं आल-वेति संलवेति । जप्पभिइं च णं अहं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, तप्पभिइं च णं मम समणा निग्गंथा नो आढायंति° °नो परियाणंति नो सक्का-रंति नो सम्माणंति नो अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं आइक्खंति,

१. जं दिवसं (घ) ।

२. अणगारे (क) ।

३. पुव्वा° (क, ग, घ) ।

४. आहारातिणियाए (ख, ग) ।

५. मेहस्स अणगारस्स (क) सर्वत्र ।

६. दारमूले (क, ख) ।

७, ८. य (क, ख, ग, घ) । १८६ सूत्रस्य आधारेण अत्र 'वा' इति पाठो गृहीतः ।

९. सं० पा०—एवं पाएहिं सीसे पोट्ठे कायंसि ।

१०. एवमहा° (क, घ); एयमहा° (ग) ।

११. रयणी (क, घ) ।

१२. अच्छी (ख) ।

१३. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

१४. सं० पा०—मेहे जाव सवणयाए ।

१५. समणयाए (क, ख, ग) ।

१६. °मज्झवसामि (क); °मज्झेवसामि (ग); अगारमज्झे आवसामि (वृषा) ।

१७. परिजाणंति (ग) ।

१८. वाकरणाइं (क, ख, ग) ।

१९. सं० पा०—आढायंति जाव संलवेति ।

नो दृष्टाहि कंताहि वरगृहि आलयेति ० मंलयेति । अदुनरं च णं ममं समया
 निगम्या रागो पुद्गलतावरत्नकालसमयं वावणां पुच्छणां ० परिचट्टणां
 धम्ममाणुजोर्गचितां य उच्चारस्स वा पासवणस्स वा अज्जगच्छमाणा य निग-
 च्छमाणा य अण्णगइया हत्थेहि संघट्टेति अण्णगइया पाण्हि मघट्टेति अण्णगइया
 सीने संघट्टेति अण्णगइया पोद्धे संघट्टेति अण्णगइया कायसि मघट्टेति अण्णगइया
 ओलंठेति अण्णगइया पोन्नंठेति अण्णगइया पाव-रय-रेण-मुत्थियं करेति ० । एम-
 हासियं न णं रत्ति अहं नो संचाणमि अन्ति निमित्तत्वायेत्तां [निमीनितां ?] ।
 तं तेयं गत्तु मज्झं कल्लं पाउण्णभायाण् रयणीण् जाव' उट्ठियमि सूरं महत्ता-
 रम्मिम्मि दिणयरे तेयत्ता जलंते समणं भगवं महावीरं आयुन्तिता पुणर्यि
 अगारमज्जावगिस्सण् ति कद्दु एवं संवेहेत्तं संवेहेत्ता घट्ट-पुट्ट-वग्ग-माणमण्
 निरयणत्तिवियं न णं तं रयणि मवेहेत्तं, मवेत्ता कल्लं पाउण्णभायाण्
 गुत्थिमत्ताण् रयणीण् जाव' उट्ठियमि सूरं महत्तरम्मिम्मि दिणयरे तेयत्ता जलंते
 जेणव समणं भगवं महावीरं तेणेध' उवागच्छत्तं, उवागच्छिता समणं भगवं
 महावीरं निक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेत्तं, करेत्ता यंत्तं समणं जाव'
 पज्जयात्तत्तं ॥

समणा निगंथा आढायंति' •परिगणंति सवत्तरेणि मग्गमाणेनि अट्ठादं हेज्जं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं आडवगंति, उट्ठाहिं कंठाहिं वग्गुहिं आलवेति संलवेति ° । जप्पभिइं च णं मत्ते भविता अगारायो अणमारियं पव्ववामि तप्पभिइं च णं ममं समणा निगंथा नो आढायंति जाव' संलवेति । अट्ठतरं च णं ममं समणा निगंथा रायो पुटवरत्तायरत्ताकालममयंगि अणंगइया जाव' पाय-रय-रेणु-गुडियं करेति । तं मेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणाए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि द्विणयरे तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि अगारमज्जे आवसित्तए ति कट्ठु एवं संपहेसि, संपहेत्ता अट्ठ-दुहट्ठ-वसट्ठ-माणसगाए' •निरयपडिक्खियं च णं तं ° रयणि खवेसि, खवेत्ता जेणामेव अहं तेणामेव हव्वमागाए ।

से नूणं मेहा ! एस 'अत्थे समत्थे ।

हंता अत्थे समत्थे" ॥

भगवया सुमेरूपभ-भवनिरुचण-पदं

१५६. एवं खलु मेहा ! तुमं इओ तच्चे अईए भवग्गहणे वेयइट्ठगिरिपायमूले वणयरेहि निव्वत्तियनामधेज्जे सेए संख-उज्जल-विमल-निम्मल-दहिघण-नोखीर-फेण-रयणियरप्पयासे सत्तुस्सेहे नवायए दसपरिणाहे सत्तंगपइट्ठिए 'सोम-सम्मिए' सुरुवे' पुरओ उदग्गे समूसियसिरे सुहासणे पिट्ठओ वराहे अइयाकुच्छी' अच्छिइ-कुच्छी अलंवकुच्छी पलंवलंवोदराहरकरे" धणुपट्ठागिति-विसिट्ठपुट्ठे अल्लीण-पमाणजुत्त-वट्ठिय-पीवर-मत्तावरे" अल्लीण-पमाणजुत्तपुच्छे पडिपुण्ण-सुचारु-कुम्मचलणे पंडुर" सुविसुद्ध-निद्ध-निरुवहय-विसत्तिनहे छट्ठे सुमेरूपभे नाम हत्थिराया होत्था ॥

१५७. तत्थ णं तुमं मेहा ! वहीहि हत्थीहि य हत्थिणियाहि य लोट्टएहि य लोट्टियाहि

१. सं० पा०—आढायंति ° ।

२. ना० ११११५४ ।

३. ना० ११११५३ ।

४. ना० १११२४ ।

५. सं पा०—अट्ठदुहट्ठवसट्ठमाणसगाए जाव रयणाए ।

६. अट्ठे समट्ठे हंता अट्ठे समट्ठे [वचित्] ।

७. सभे सुसंठिए (वृ); सोम-सम्मिए (वृषा) ।

८. वृत्तो नास्ति व्याख्यातः ।

९. अतिया ° (ग, घ) ।

१०. अलंव ° (वृ); पलंव ° (वृषा) ।

११. अतोमे वृत्तो वाचनान्तरस्य निर्देशोस्ति—अभ्युदगत-मुकुल-मल्लिका-धवलदंतः, आना-मित-चाप-ललित-संवेल्लिताग्रशुंडः । उपाशक-दशाया—(२।२८) भिदं विक्षेपणद्वयं मूलपाठे विद्यते—अवभुग्गय - मउल-मल्लिया- विमल-धवलदंतं ° आणामिय-चाव-ललिय-संवेल्लि-यग्गसोडं ।

१२. पंडर (क, च) ।

यं कलभमहि यं कलभियाहि यं नहि संपरिवृटे हृत्विमहृत्सनायाम् वेनाम् पाण्डुरी
पट्टवम् जूह्वरे वंदयस्त्रिवृहम्, अणोति च बह्वं एकल्लापं हृत्विक्लभापं
आहेयच्च' • पारेयच्चं नामितं भदितं महत्तरगत आणा-ईमर-मेषावच्चं कले-
माणे पानेमाणे • विहरति ॥

११८. नमः णं नुमं मेहा ! निचवपमने सटं पल्लितम् कदम्बरं मोहणमोने 'मयितके
कामभोगनिसिपं' बह्वहि हर्षाहि यं • हृत्विणिवाहि यं लोहृमहि यं लोहृमहि
यं कलभमहि यं कलभियाहि यं नहि • संपरिवृटे वेमवृहिनिरिपायमुने निरीनु
यं दरीनु यं कुहरेनु यं कंदरागु यं उज्जारेनु यं निजारेनु यं विमरामु' यं
गडामु यं पल्लवेनु यं चिल्लवेनु यं कडवेनु यं कडयपल्लवेनु यं नरीनु यं विम-
रीनु यं टंकेनु यं कूटेनु यं सिहरेनु यं पल्लवेनु यं मनेनु यं माणेनु यं काणणेनु
यं वणेनु यं वणमंटेनु यं वणरांटेनु यं नरीनु यं नदीकल्लामु यं जरेनु यं समनेनु
यं नावीनु यं पोतगरणीनु' यं दीहिमासु यं गुजांतिमासु यं नरेनु यं नरांतिमासु
यं नरतरपंतिमासु यं वणमरेहि दिन्नधियारे बह्वहि हर्षाहि यं जाय' नहि
संपरिवृटे बह्विहृत्तरपल्लवे-पडरपाणियवणे' निचवम् निचवमने नुमंमुने
विहरति ॥

११९. नमः णं नुमं मेहा-अणवया' कयाट पाडम-वर्षिकारम-मरुट' • वेमव-वमनेनु
कमेण पंचनु उडनु यमवकनेनु विमृत्तकममयनि वेष्टामुने मागे पायव-
धंसममुद्रिपुनं मुवकवण-पन-जयवट-मायम-मंजोगरीपुण मलाभयकंसे'
हृमकोण यणदक-जाय' • मयितकेनु वणनेनु यमाउमामु विमामु नावाका-वेमेक
नपट्टिपुमु विमृत्तकामेनु ज्ञावममापेनु पोतदरामेनु खयो-वयो विमाममापेनु
मम-कुटिप-विमृट्ट-कामिपे' • कडम-मंजियममभिय-पलीपेनु यमनेनु विमाम-
वीणकंदिय-रपेनु पाण्डुरम-मंजपट्ट-मंज-पाणिप-विमृट्टमामेनु' • दमेनु यमाम-
मुवकवण-पाणीजय-विमामामुने' • यममुद्रिपुन-पंतिमामेनु यमनेनु विमृट्ट-
मामेनु

उण्हाय-खरफरसचंडभास्य-गुणकनणपत्तकयवरवाउलि-भर्मनदित्तसंभंतसावया-
उल-मिगतण्हावद्धचिधपट्टेमु गिरिवरेमु संवट्टइणमु' तत्थ-मिय-समय'-सरोसि-
वेसु' अवदालियवयणविवर-निल्लालियग्गजीहे महंनतुंवट्ठ-पुण्णकण्णे संकुचिय-
थोर-पीवर-करे ऊसिय-नंगूले पीणाइय'-विरसरडिय-सट्ठेणं फोडयंतव अंवरत्तलं,
पायदहरणं कंयंतव मेइणित्तलं, विणिम्भुयमाणं य सीयरं', तच्चओ समंता
वल्लिवियाणाइं छिदमाणे, खखसहस्साइं तत्थ सुवह्णि नोल्लयंत', विणट्ठरट्ठेव
नरवरिदे, वायाइत्तेव पोए, मंडलवाएव परिभमंते, अभिक्खणं-अभिक्खणं
लिडनियरं पमुंचमाणे-पमुंचमाणे वट्ठहिं हत्थीहिं य जाव' सट्ठि दिसोदिसि
विप्पलाइत्था ॥

१६०. तत्थ णं तुमं मेहा ! जुण्णे जरा-जज्जरिय-दंहे आउरे भंभिणं पिवासिणं दुव्वले
किलंते नट्टसुइए मूढदिसाए सयाओ जूहाओ विप्पट्ठणे' वणदवजालापरद्धे"
उण्हेण य तण्हाए य छुहाए य परवभाहए समाणे भीए तत्थे तसिणं उव्विग्गे
संजायभए सव्वओ समंता आधावमाणे परिधावमाणे एमं च णं महं सरं
अप्पोदगं' पंकवहुलं अतित्थेणं' पाणियपाए ओइण्णे ।

तत्थ णं तुमं मेहा ! तीरमइगए पाणियं असंपत्ते अंतरा चैव सेयंसि विसण्णे ।
तत्थं णं तुमं मेहा ! पाणियं पाइस्सामि त्ति कट्ठु हत्थं पसारेसि । से वि य ते
हत्थे उदगं न पावइ । तए णं तुमं मेहा ! पुणरवि कायं पच्चुद्धरिस्सामि त्ति
कट्ठु वलियतरायं पंकंसि खुत्ते ॥

१६१. तए णं तुमं मेहा ! अण्णया कयाइ एगे चिरनिज्जूढए गयवरजुवाणए सगाओ
जूहाओ कर-चरण-दंत-मुसलपहारेहिं विप्परद्धे समाणे तं चैव महद्धं पाणी-
यपाए समोयरइ । तए णं से कलभए तुमं पासइ, पासित्ता तं पुव्ववेरं सुमरइ,
सुमरित्ता आसुरत्ते' रुद्धे कुविए चंडिकिए मिसिमिसेमाणे जेणेव तुमं तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुमं तिवखेहिं दंतमुसलेहिं तिवखुत्तो पिट्ठओ 'उट्ठु-

१. संवट्टइणमु (ग) ।

२. पसय (ख, ग, घ, वृ); अनुयोगद्वारवृत्तौ
पाठांतररूपेण 'पसय' शब्दः प्राप्यते—
पसयस्तु—आटविको द्विखुरः चतुष्पदविशेषः ।
प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तावपि इत्थमेव व्याख्यात-
मस्ति—प्रसयाश्चाटव्यचतुष्पदविशेषाः ।

३. सिरोसवेसु (ख, ग) ।

४. पिणाइय (ख); पेणाइय (ग) ।

५. सीइरं (क); सीयारं (क्व०) ।

६. नोल्लवते (ग) ।

७. ना० १।१।१५७ ।

८. ज्भुसिए (क, घ); जुंजिए (ग); 'भुसियं'
बुभुक्षितमित्यर्थः (अंतगडवृत्ति ३।८) ।

९. विप्पहीणे (क) ।

१०. ०वरद्धे (क); ०परद्धे (ख) ।

११. अप्पोययं (ख) ।

१२. अतित्थेणं (ख, ग) ।

१३. आसुरत्ते (क, ख) ।

भङ्ग, उद्धृभित्ता" पुर्वं येन निज्जाण्ड, निज्जाण्डा हृत्तुष्टे पाणीयं 'पिचट,
पिचिन्ता" जामेय दिशि पाउडभूण नामेय दिशि पडिणण ॥

१६०. तण् णं त्वं मेहा ! सरीरगंसि धेयणा पाउडभयित्था—उज्ज्वला विज्जना'
कवकत्था' •पमाया चंडा दुक्ता' •दुर्हियात्ता । पित्तज्जरपरिणवसरीरे दाह-
वकत्तौण यावि विहरित्था ।

भगवया मेरुपभ-भयतिहयण-पदं

१६३. तण् णं त्वं मेहा ! तं 'उज्ज्वलं' •विज्जलं कवकत्तं पमायं चंडं दुक्ता' •दुर्हियात्ता
सत्तरादिं धेयणं वेदमि, सवीमं सानसवं परमाडयं पालडना घट्ट-•दुद्धु-यसट्ट'
कालमासं कालं विज्जना उज्ज्व जंबुद्वीपे दीपे भारहे यामे दाहिणद्वारहे गणा
महानदं दाहिणे कूले विभागरियायभूले एमेणं मन्ववरमंधरिभया पमाण
मयवरकरेणं कुट्टिंसि मयकलभण जणिण ॥

१६४. तण् णं सा मयकलभिया मयणं भाग्याणं वसंतमारंसि' त्वं पयाया ॥

१६५. तण् णं त्वं मेहा ! मज्जयानायां विपमुक्ते समाने मयकलभण यावि होत्था—
रत्तुणन-रत्तुमात्रणं जामुमयाजरात्तानियत्तमं-तवरात्त-तवरात्तुम-
मन्ववरमयवणे', उद्धृ निपगत्तं उद्धृवत्तं', सपिमार'-कत्तं'-सोत्त-द्वयो
अणवत्तद्विपमयमंविपत्तं त्वमेतु निरिकाणत्तं तुत्तुत्तं विहरति ॥

१६६. तण् णं त्वं मेहा ! उज्ज्वलवाचभावे जोत्तवममपुण्यो उद्धृवत्ता कालममुत्ता
मंजुत्तं तं तुत्तं सयमं पडिपज्जसि ॥

१६७. तण् णं त्वं मेहा ! मयमेति निवर्तयित्तामयेज्ज' •मन्वरो मयाम् वसपनि-
यात्तं मन्वगपडिप मोग-ममिणं मुग्गे पुग्गे त्वमे मन्वनिमित्तं मुत्तामत्तं
मिद्धो वगो पड्यावत्तं अविट्टकत्तं अविट्टकत्तं त्वमेतद्विपमयत्तं
मन्वुत्तानित्त-विमिद्धुत्तं मन्वोप-ममाम्मुत्त-पडिप-मोवर-मत्ताये मन्वोप-

पमाणजुत्तपुच्छे पडिपुण्ण-मुचार-कम्मनलणं पंदुर-मुविमुद्ध-निद्ध-निव्वह्य-
विसत्तिनहे० चउदंते मेरुपभे हत्थिरयणे होत्था' । तत्थ णं तुमं मेहा !
सत्तसइयस्स जूहस्स आहेवच्चं' *पारेवच्चं' सागित्तं भट्ठित्तं महत्तरगतं आणा-
ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे० अभिरमेत्था ॥

१६८. तए णं तुमं मेहा ! अण्णया कयाइ गिम्हकानसमयसि नेट्टामू [मासे पायव-
घंससमुट्ठिएणं सुक्कतण-पत्त-कयवर-माण्य-संजायवीएणं महाभयंकरेणं
हुयवहेणं ?]' वणदव-जाला-पलित्तं गु वणंते गु धूमाउलानु दिसासु जाव'
मंडलवाएव्व परिभमंते भोग तत्थे' *तसिए उच्चिग्गे० संजायभए वहुहि
हत्थीहि य' *हत्थिणियाहि य लोट्टिएहि य लांट्टियाहि य कलभणहि य कलभि-
याहि य सद्धि संपरिवुडे सव्वओ समंता दिसोदिसि विप्पलाइत्था ॥
१६९. तए णं तव मेहा ! तं वणदवं पासित्ता अयमेयाह्वे अज्झत्थिए' *चित्तिए
पत्थिए मणोगए संकप्पे० समुप्पज्जित्था—कहि णं मन्ने मए अयमेयाह्वे
अग्गिसंभमे' अणूभूयपुव्वे ?
१७०. तए णं तव मेहा ! लेस्साहि विसुज्झमाणीहि अज्झवसाणेणं सोट्ठणेणं सुभेणं
परिणामेणं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहा-पूह-मग्गण-गवेसणं
करेमाणस्स सन्निपुव्वे जाईसरणे समुप्पज्जित्था ॥
१७१. तए णं तुमं मेहा ! एयमट्ठं सम्मं' अभिसमेसि—एवं खलु मया" अईए दोच्चे
भवग्गहणे इहेव जंबुदीवे दोवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले जाव" मुमेरुपभे
नाम हत्थिराया होत्था । तत्थ णं मया" अयमेवाह्वे अग्गिसंभमे" समणुभूए ॥
१७२. तए णं तुमं मेहा ! तस्सेव दिवसस्स पच्चावरण्हकालसमयंसि नियएणं जूहेणं
सद्धिं समण्णागए यावि होत्था ॥
१७३. तए णं तुमं मेहा ! सत्तुस्सेहे जाव" सन्निजाईसरणे चउदंते मेरुपभे नामं हीत्थ
होत्था ॥

१. होत्था । सत्तंगपडिट्ठिए तहेव जाव पडिरूवे
(क, घ) । यत् पुनरिह दृश्यते—सत्तंगेत्यादि
तद् वाचनान्तरवर्णकापेक्षं कुलिखितमिति
(वृ) ।
२. सं० पा०—आहेवच्चं जाव अभिरमेत्था ।
३. १५९ सूत्रस्य वर्णनपद्धत्यासी पाठोऽत्र युज्यते ।
४. ना० ११११५६ ।
५. सं० पा०—तत्थे जाव संजायभए ।
६. सं० पा०—हत्थीहि य जाव कलभियाहि ।
७. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
८. °संभवे (ख, ग) ।
९. × (ग) ।
१०. मत्ता (ख) ।
११. ना० ११११५६ ।
१२. महया (क, ख, ग); एतत् पदं अशुद्धं
दृश्यते ।
१३. °संभवे (घ) ।
१४. ना० ११११६७ ।

मैरुपमेण मंडलनिम्माणपदं

१७४. नम् णं तुम् मेहा ! अयमेवामये अम्भारिणं जाय' नमुपज्जिज्जा — मेयं गन्तु मम दयसि गंगाणं महान्तेण दाहिणिल्लंनि कूलेनि विभगिरियायमुने 'वयसि-गंगाणकारणत्वा' ताणं नृतेणं महम्महालयं मंडलं पाप्पणं' नि कट्टं एवं संपेहेसि, संपेहेत्ता मुहंमुहेणं विहरसि ॥
१७५. नम् णं तुम् मेहा ! अयमेव कयाट पडमवाउमंनि' महावुट्टिकायंनि सन्निवयसि गंगाणं महान्तेणं अदूरवामंते वट्टहि हत्ताहि न जाय' कलभियादि य सन्ति य हदियसमहि संवत्सुते एमं महं जोयणपरिमंडलं महम्महालयं मंडलं पाप्पणि — जं गन्ध गणं वा पत्तं वा कट्टं वा कट्टं वा लया वा वल्लो वा गालं वा सये वा गये वा, नं सव्यं तिसात्तो' आहणिय-आहणिय पाप्पणं उट्टेसि, हत्तेय निपट्टि, एवते एहेसि ॥
१७६. नम् णं तुम् मेहा ! नरमेव मंडलस्य अदूरवामंते गंगाणं महान्तेणं दाहिणिल्लं कूले निभगिरियायमुने गिमेनु य जाय' मुहंमुहेणं विहरसि ॥
१७७. नम् णं तुम् मेहा ! अयमेव कयाट मज्झिमम् वरिसारत्तंनि महावुट्टिकायंनि सन्निवयसि जेणेव मे मंडले मेणेव उदामच्छदि, उदामच्छिता दोलप पि 'मंडलपामं करेमि' ।
- पदं—सन्निवयसिारत्तंनि' महावुट्टिकायंनि सन्निवयसामंनि जेणेव मे मंडले मेणेव उदामच्छदि, उदामच्छिता सव्यं पि मंडलपामं करेमि' जाय' मुहंमुहेणं विहरसि ॥

गिम्हकालसमयंसि जेट्टामूने मासे पायव-वंससमुद्रिणं' जाव' संयदुद्रणमु
मियपसुपंखिसरीसिवेसु' दिसोदिसि विण्णलायमाणेगु तेहि वहाँहि हत्थोहि य'
सद्धि जेणेव से मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

यत् पुनः 'तए णं तुमं मेहा अण्णया कयाद्
कमेणं पंचसु' इत्यादि दृश्यते, तद् गमान्तरं
मन्यामहे (वृ)

आदर्शेषु गमद्वयं लिखितमस्ति । द्वितीयो
गमः पूर्ववति १५६ सूयस्य वर्णनेन सादृश्यं
गच्छति, तेन तस्यैव मूले सन्निवेशः कृतः ।
प्रथमो गमः इत्यमस्ति—

अह मेहा ! तुमं गइंदभावम्मि वट्टमाणो
कमेणं नलिणिवणविहवणकरे हेमंते कुंद-
लोद्ध-उद्धत-तुसारपउरम्मि अइवकंते,
अहिणवगिम्हसमयंसि पत्ते वियट्टमाणो वणेसु
'वणकरेणु - विविह - दिन्नकयपसव - घाओ'
उउयकुसुम^१-चामरा^२-कण्णपूर-परिमंडियाभि-
रामो मयवस-विगसंत-कडतड-किलिन्त-
गंधमदवारिणा सुरभिजणियगंधो करेणुपरि-
वारिओ उउसमत^३-जणियसोहो काले
दिणपरकरपयंडे परिसोसिय-तरुवरसिहर^४-
भीमतरदंसणिज्जे भिगार-रवंत-भेरवरवे
नाणाविहपत्त-कट्ट-तण-कयवरुद्धत-पइमारुया-
इद्ध-नहयल-पदुममाणे^५ वाउलि-दारुणतरे
तण्हावस - दोस - दूसिय^६-भमंत-विविहसावय-

गमाउने भीमदरिसणिज्जे^७ वट्टते दारुणम्मि-
गिम्हे मारुयवस - पसर - पसरिय - विमभिणं
अरुभत्तिग-भीमभेत्त-रवणमारुणं गट्टाया-
पडिय-सित्त-उद्धायमाण-सगधमंत - संदुद्रणं^८
दित्ततर-सकुल्लिगेणं धूममानाउलेण
सायवगसंतकरणेण वणदवेणं जालानोविय^९-
निगद्धधूमंतकारभीओ आयवालोय^{१०}-
महंततुवट्टय-पुण्ण-कण्णो 'आकुंचिय-धोर-
पीवरकरो भयवस-भयंत-दित्तनयणो'^{११} वेणेण
महामेहो ध्व नाय-णोल्लिय-महल्लरुवो
जेण कओ तेण^{१२} पुरा दवगिग-भयभीयहियएणं
अवगयतणप्पएससत्तो रुसोदेसो दवमि-
संतानकारणट्टा^{१३} 'तेहि वहाँहि हत्थोहि य
सद्धि'^{१४} जेणेव मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।
एवको ताव एस गमो ।

१. संघंस ० (क, ख, घ) ।

२. ना० ११११५६ ।

३. १५६ सूत्रे इत्थं पाठरचनास्ति—तत्तय-मिय-
ससय-सरीसिवेसु ।

४. पू०—ना० ११११५७ ।

१. वणरेणुविविहदिन्नकयपंसुघाओ (वृषा) ।

२. तुमं कुसुम (घ), कुसुम (वृ), उउयकुसुम (वृषा) ।

३. चामर (वव०) ।

४. ०समय (क) ।

५. ०सिहरिह (घ, वृ) ।

६. दुमगणे (वृषा) ।

७. दोसिय (वृ) ।

८. ०दंसणिज्जे (घ) ।

९. सद्धुद्रणं (वृषा) ।

१०. जालालेविय (वृ) ।

११. आयवालोय (वृ), आयवालोय (वृषा) ।

१२. आकुंचियधोरपीवरकराभयसव्वदिसिभयंतदित्तनयणो
(वृषा) ।

१३. ते (क, ख, घ) ।

१४. कारुणत्था (क, ग, घ) ।

१५. एतावान् पाठः छ, ग, घ, प्रतिषु नास्ति, केवलं 'क'
प्रतावेव विद्यते, वृत्त्यनुमोदितोस्ति तेनास्माभिः
स्वीकृतः ।

नत्थ णं अण्णे बह्वे सीहा य वग्धा य विगा य दोविया य अन्ना य नरन्ना य
परानरा' य निधाना य विराला य सुण्हा य कोला य मसा य कोकनिया य
चित्ता य' चित्तला' य पुत्तवविट्ठा अग्निभयविट्ठुया' एगययो चित्तममेणं
निट्ठति ॥

१७६. तए णं तुमं मेहा ! जेणेव ने मंउने तेणेव उवागच्छति, उवागच्छता मेहि
बह्वि रोहेहि य जाव' चित्तनेहि य एगययो चित्तममेणं निट्ठति ॥

मेरुपभस्त पादुपमेव-पदं

१७७. तए णं तुमं मेहा ! पाएणं गलं कंठुदरमासी' ति कट्ठ पाए उविरत्ते' । मंति न
णं अंतरंमि अण्णेहि वनवनेहि मरोहि पणोनिज्जमानो-पणोनिज्जमानो मसए
अण्णविट्ठे ॥

१७८. तए णं तुमं मेहा ! मायं कंठुदरा' पुणरपि पायं पदिनिगोविग्गामि' ति कट्ठ
मं मसयं अण्णविट्ठे पानासि, पानित्ता पाणाण्णकंपयाए' भूयाणकंपयाए जीवाण्-
कंपयाए मत्ताण्णकंपयाए ने पाए अंतरा' नेव मंथासि, ना येव णं
निगित्ते ॥

१७९. तए णं तुमं मेहा ! माए पाणाण्णकंपयाए' •भूयाणकंपयाए जीवाण्णकंपयाए'
मत्ताण्णकंपयाए मंथादे पणिगिकाए, मायस्साउए निवट्ठे ॥

१८०. तए णं ने यणदने अट्ठहाउज्जाहं मट्ठदियाहं मं यण भवमेह, भवमेहा निट्ठि
उवमए उवमने विज्जताए यावि होत्था ॥

१८४. तए णं ते वहवे सीहा य जाव' चिल्लला य तं वणदवं निट्टियं' •उवरयं उवरांतं°
विज्झायं पासंति, पासित्ता अग्गिभयविप्पमुक्का तण्हाए य छुहाए य परब्भाह्या
समाणा तथो मंडलाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता सव्वओ समंता
विप्पसरित्था ।
१८५. तए णं ते वहवे हत्थी' •य हत्थिणीओ य लोद्वया य लोद्विया य कलभा य
कलभिया य तं वणदवं निट्टियं उवरयं उवरांतं विज्झायं पासंति, पासित्ता
अग्गिभयविप्पमुक्का तण्हाए य° छुहाए य परब्भाह्या समाणा तथो मंडलाओ
पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता दिरोदिसि विप्पसरित्था ।
१८६. तए णं तुमं मेहा ! जुणं जरा-जज्जरिय-देहे सिद्धिलवलितय'-पिण्डगते
दुव्वले किलंते जुंजिए पिवासिए अत्थामे अवले अपरक्कमे ठाणुकडे' वेगेण
विप्पसरिस्सामि त्ति कट्टु पाए पसारमाणे विज्जुहाए विव रययगिरि'-पव्वारे
घरणितलंसि सव्वंगेहि सण्णिवड़ा ॥
१८७. तए णं तव मेहा ! सरीरगंसि वेयणा पाउव्भूया —उज्जला' •विउला कक्खडा
पगाढा चंडा दुक्खा दुरहियासा । पित्तज्जरपरिगयसरीरे° दाहवक्कंतीए यावि
विहरसि ॥

तीय संबन्धे वट्टमाण-तित्तिक्खोवदेस-पदं

१८८. तए णं तुमं मेहा ! तं उज्जलं जाव' दुरहियासं तिण्णि राइंदियाइं वेयणं
वेएमाणे विहरित्ता एगं वाससयं परमाजं पालइत्ता इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे
वासे रायगिहे नयरे सेणियस्स रण्णो धारिणीए देवीए कुच्छिसि कुमारत्ताए
पच्चायाए ॥
१८९. तए णं तुमं मेहा ! आणुपुव्वेणं गव्वभासाओ निक्खंते' समाणे उम्मुक्कवालभावे
जोव्वणगमणुप्पत्ते मम अतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ।
तं जइ ताव तुमे मेहा ! तिरिक्खजोणियभावमुवगएणं अपडिलद्ध-सम्मत्तरयण-
लंभेणं से पाए पाणाणुकंपयाए' •भूयाणुकंपयाए जीवाणुकंपयाए सत्ताणुकंपयाए°

१. ना० १।१।१७८ ।

२. सं० पा०—निट्टियं जाव विज्झायं ।

३. सं० पा०—हत्थी जाव छुहाए ।

४. °तया (घ) ।

५. ठाणुकडे (क); ठाणुखंभे (घ) ।

६. रेवयं (कव०); एकस्यां हस्तलिखितवृत्ता-
वपि 'रेवयगिरि' इति पाठो लभ्यते । वृत्तौ
'रययगिरि' पाठस्य पर्यालोचनमपि कृतमस्ति-

इह प्राग्भारः ईपदवनतखंडं उपमानेनास्य
महत्तर्यैव न वर्णतो रक्तत्वात् तस्य । वाच-
नान्तरे तु सित एवासाविति (वृ) ।

७. सं० पा०—उज्जला जाव दाहवक्कंतीए ।

८. ना० १।१।१८७ ।

९. निक्कंते (ख) ।

१०. सं० पा०—पाणाणुकंपयाए जाव अंतरा ।

अंतरा नैव संधारिण, नो चैव णं निविलसते । किमंग पुण तुमं' मेहा ! ज्यानि
'विपुलकुलसमुद्भवे णं' निरुवह्वसरीर-दंतलक्षपंचिदिण्' णं एवं उट्ठाण-वन-
वीरिय-पुरिसगार-परलकमसंज्जने णं मम अंतिण् मुंटे भविन्ना अगाराओ
अणगारियं पव्वइण् समणे समणाणं निग्गंवाणं राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसम-
यंसि वायणाण्' •पुच्छणाण् परिघट्टणाण्' धग्गाण्ओगन्तिताण् य उच्चारत्तन
वा पानवणत्तस वा अट्ठमच्छमाणाण य निग्गच्छमाणाण य हत्थसंघट्टणाणि य
पायसंघट्टणाणि य' •सीससंघट्टणाणि य पोदुसंघट्टणाणि य कायसंघट्टणाणि य
ओलंउणाणि य पोलंउणाणि य पाय' -रत्त-रेणु-मुंउणाणि य नो सम्मं सहसि
समसि नित्तिकसि अहिंससि ?

मेहत्त जाइसरण-पदं

१६०. ताण् णं तत्ता मेहत्त अणगारत्तस समणत्तस भगवओ महावीरत्तस अंतिण् एयमट्ठं
सोच्चा निरम्म मुभेहि परिणामेहि पगत्थेहि अजभवत्ताणेहि वेत्ताहि विमुग्ग-
माणीहि तयावरणिज्जाणं कग्गाणं सओचसमेणं ईहापूह-मग्गण-नयंनणं
त्तरेमाणत्तस सण्णिपुत्थे जाईसरणे समुणणे, एयमट्ठं सम्मं अभिसमेह ॥

मेहत्त समप्पणपुत्वं पुणो पव्वज्जा-पदं

१६१. ताण् णं ने मेहे कुयारे समणेणं भगवया महावीरेणं संभारियपुव्वभवे' दग्गुणाओ-
यसंवेणे' आणंयसुमुपुण्णमुहे' हस्सित्तमं' •विमप्पमाणं हिण्ण' •पारात्तमकसंयकं
पियं समुनसियवेमकूवे' समणं भगवं महावीरं वेदहं समंगहं, वेदिन्ना समंसित्ता
एवं ययासी—

अज्जणभित्ती णं भवे ! मम सो य-ज्जीणि सोत्तणं अयमेवे कता, समणां
निग्गंवाणं निमट्ठे ति कट्ठं पुणरपि समणं भगवं महावीरं वेदहं समंगहं,
वेदिन्ना समंसित्ता एवं ययासी—

इच्छामि णं भंते ! इयाणि दोच्चं पि सयमेव पच्चावियं सयमेव मुंडावियं' •सयमेव सेहावियं सयमेव सिक्खावियं° सयमेव आयार-गोयरं जायामाया-वत्तियं' धम्ममाइक्खियं' ॥

१६२. तए णं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पच्चावेइ' •सयमेव मुंडावेइ सयमेव सेहावेइ सयमेव सिक्खावेइ सयमेव आयार-गोयर-विणय-वेणइय-चरण-करण°-जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खइ—एवं देवानुप्पिया ! गंतव्वं, एवं चिट्ठियव्वं, एवं निसीयव्वं, एवं तुयट्ठियव्वं, एवं भुजियव्वं एवं भासियव्वं एवं उट्ठाए' उट्ठाए पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं संजमेणं संजमियव्वं ॥

१६३. तए णं से मेहे समणस्स भगवओ महावीरस्स अयमेयाह्वं धम्मियं उवएसं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छिता तह गच्छइ तह चिट्ठइ' •तह निसीयइ तह तुयट्ठइ तह भुंजइ तह भासइ तह उट्ठाए उट्ठाए पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहि° संजमेणं संजमइ ॥

मेहस्स निगंठचरिया-पदं

१६४. तए णं से मेहे अणगारे जाए-इरियासमिए' •भासासमिए एसणासमिए आयाण-भंड-मत्त-णिकखेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण-जल्ल-पारिट्ठावणिआ-समिए मणसमिए वइसमिए कायसमिए मणगुत्ते वइगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तवंभयारी चाई लज्जू धन्ने खंतिखमे जिइदिए सोहिए अणियाणे अप्पुस्सुए अवहिल्लेसे सुसामण्णरए दंते इणमेव निगंथं पावयण पुरओकाउं विहरंति° ॥

१६५. तए णं से मेहे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स 'तहारूवाणं थेराणं अंतिए' सामाइयमाइयाइ' 'एक्कारस अंगाइ'° अहिज्जइ, अहिज्जिता वहुंहि छट्ठमदसमदुवालासेहि मासद्धमासखमणेहि' अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

मेहस्स भिक्खुपडिमा-पदं

१६६. तए णं समणे भगवं महावीरे रायगिहाओ नयराओ गुणसिलयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

१. सं० पा०—मुंडावियं जाव सयमेव ।

२. °उत्तियं (क, ख, ग, घ) ।

३. °माइक्खिउं (क, ग, घ) ।

४. सं० पा०—पच्चावेइ जाव जायामाया-वत्तियं ।

५. उट्ठाए (क, ग, घ) ।

६. सं० पा०—चिट्ठइ जाव संजमेणं ।

७. सं० पा०—अणगार-वण्णओ भाणियव्वो ।

वृत्तावयं पाठः उल्लिखितोस्ति, तत्र 'दंते'

इति विशेषणं नास्ति ।

८. अंतिए तहारूवाणं थेराणं (क, ख, ग, घ) ।

अत्र लेखने 'अंतिए' पदस्य विपर्ययो जातः

इति संभाव्यते । (१।१।२०८) सूत्रे पि

स्वीकृतपाठवत् पाठो लभ्यते—

९. °माइयाणि (क, ग); सामातियमाइयाणि (ख) ।

१०. °अंगाति (ख); एक्कारसंगाइ (घ) ।

११. °खवणेहि (ख) । पू०—ना० १।१।२०१ ।

११७. तम् णं मे मेहे अणगारे अण्णया कयाइ समण भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ.
वंदिता नमसिता एवं वयासी—उच्छामि णं भंते ! तुम्हेहि अन्नपुण्या
समाणे मासियं भिक्खुपटिमं उवसंपज्जिता णं विहरितम् ।

अहानुहं देवाणुप्पिया ! मा पटिवंधं करेहि ॥

११८. तम् णं मे मेहे अणगारे भगवणं भगवया महावीरेण अन्नपुण्या नमाणे
मासियं भिक्खुपटिमं उवसंपज्जिता णं विहरइ ।

मासियं भिक्खुपटिमं 'अहानुत्तं अहानुत्तं अहानुत्तं' नम्मं काण्णं फालेइ
पालेइ नोभेइ तीरेइ विट्ठेइ, नम्मं काण्णं फालेत्ता पालेत्ता नोभेत्ता तीरेत्ता
विट्ठेत्ता पुणरपि नमणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदिता नमसिता एवं
वयासी—उच्छामि णं भंते ! तुम्हेहि अन्नपुण्या समाणे दोमानिय भिक्खु-
पटिमं उवसंपज्जिता णं विहरितम् ।

अहानुहं देवाणुप्पिया ! मा पटिवंधं करेहि ।

जहा पइमाणं अभिन्नावो नहा दोच्चाणं तच्चाणं चउत्ताणं पंचमाणं सम्मानियाणं
सत्तमासियाणं पटमसत्तरादियाणं दोच्चसत्तरादियाणं तच्च नगरादियाणं
सहोरादियाणं एगरादियाणं वि ॥

मेहस गुणरयणसंयत्तर-पदं

११९. तम् णं मे मेहे अणगारे वारुण भिक्खुपटिमाओ नम्मं काण्णं फालेत्ता पालेत्ता
नोभेत्ता तीरेत्ता विट्ठेत्ता पुणरपि वंदइ नमंसइ, वंदिता नमसिता एवं वयासी—
उच्छामि णं भंते ! तुम्हेहि अन्नपुण्या समाणे गुणरयणसंयत्तरं तयोक्कम
उवसंपज्जिता णं विहरितम् ।

अहानुहं देवाणुप्पिया ! मा पटिवंधं करेहि ॥

१२०. तम् णं मे मेहे अणगारे पटमं मामं वट्ठमं-वट्ठेण अणविससंणं तयोक्कमं,
दिमा ठाणवट्ठुणं मूराभिमुं पायादणुमीणं धायावेमाणं, रत्तिं पौरासमेणं
अवाउण्णं । दोच्चं मामं वट्ठमं-वट्ठेण अणविससंणं तयोक्कमं दिमा ठाण-
वट्ठुणं मूराभिमुं पायादणुमीणं धायावेमाणं, रत्तिं पौरासमेणं अवाउण्णं ।
नम्मं मामं वट्ठमं-वट्ठेण अणविससंणं तयोक्कमं, दिमा ठाणवट्ठुणं मूराभि-
मुं पायादणुमीणं धायावेमाणं, रत्तिं पौरासमेणं अवाउण्णं ।

चउत्थं मासं दसमं-दसमेणं अणिविक्खत्तेणं तवोकम्ममेणं, दिया ठाणुक्कुडुए
सूराभिमुहे आयावणभूमाए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेणं अवाउडएणं ।
पंचमं मासं दुवालसमं-दुवालसमेणं अणिविक्खत्तेणं तवोकम्ममेणं, दिया ठाणुक्कुडुए
सूराभिमुहे आयावणभूमाए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेणं अवाउडएणं ।
एवं एएणं अभिलावेणं छट्ठे चोदसमं-चोदसमेणं, सत्तमे सोलसमं-सोलसमेणं,
अट्ठमे अट्ठारसमं - अट्ठारसमेणं, नवमे वीरासमं-वीरासमेणं, दसमे वावीसइमं-
वावीसइमेणं, एक्कारसमे चउव्वीगइमं-चउव्वीगइमेणं, वारसमे छव्वीसइमं-
छव्वीसइमेणं, तेरसमे अट्ठावीरासइमं-अट्ठावीरासइमेणं, चोदसमे तीसइमं-तीरासइमेणं,
पंचदसमे वत्तीसइमं-वत्तीसइमेणं, सोलसमे चउत्तीसइमं-चउत्तीसइमेणं—अणि-
विक्खत्तेणं तवोकम्ममेणं, दिया ठाणुक्कुडुए, मुराभिमुहे आयावणभूमाए आयावेमाणे,
वीरासणेणं अवाउडएणं य ॥

२०१. तएणं से मेहे अणगारे गुणरयणमवच्छरं तवोकम्मं अहामुत्तं •अहाकप्पं अहा-
मग्गं° सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ किट्ठेइ अहामुत्तं अहाकप्पं°
°अहामग्गं सम्मं काएणं फामेत्ता पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता° किट्ठेत्ता समणं
भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता वट्ठहिं छट्ठमदसमदुवालसेहिं
मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्ममेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

मेहस्स सरीरदसा-पदं

२०२. तएणं से मेहे अणगारे तेणं 'ओरालेणं' त्रिपुलेणं सस्सिरिएणं पयत्तेणं पग्गहिएणं°
कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं उदग्गेणं उदारेणं उत्तमेणं महाणुभावेणं
तवोकम्ममेणं सुक्के लुक्खे° निम्ममे किडिकिडियाभूए अट्ठिचम्मावणद्धे किसे
धमणिसंतए जाएयावि होत्था—जीवंजीवेणं गच्छइ, जीवंजीवेणं चिट्ठइ, भासं
भासित्ता गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ, भासं भासिस्सामि त्ति गिलाइ ।
से जहानामए इंगालसगडिया इ वा कट्टसगडिया इ वा पत्तसगडिया इ वा
तिलंडासगडिया° इ वा एरंडसगडिया° इ वा° उण्हे दिन्ना सुक्का° समाणी

१. वीरासणेणं य (क, ख, ग) ।

२. सं० पा०—अहामुत्तं जाव सम्मं ।

३. सं० पा०—अहाकप्पं जाव किट्ठेत्ता ।

४. उरालेणं (ख, ग, घ) ।

५. परिगहिएणं (क, ख) ।

६. भुक्खे (क, ग, घ) :

७. तिलसगडिया (ग) ।

८. एरंडकट्टसगडिया (ख) ।

९. भगवती (२।१) सूत्रे स्कन्दकवणंके कानिचित् १०. सुक्का (ख, ग) ।

पदानि अधिकानि विपर्ययं प्राप्तानि च
वर्तन्ते, यथा—ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं
पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं
सस्सिरिएणं उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं उदा-
रेणं महाणुभावेणं० ।

से जहा नामए कट्टसगडिया इ वा पत्तसग-
डिया इ वा पत्ततिलमंडसगडिया इ वा
एरंडकट्टसगडिया इ वा इंगालसगडिया इ वा ।

महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता समणं भगवं महावीरं निक्खुत्तो
आयाहिण-पायाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता नच्चासण्णे
नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहं विणणं पंजलियडे' पज्जुवासइ ॥

२०५. 'मेहा इ !' समणे भगवं महावीरं मेहं अणगारं एवं वयासी—से नूणं तव
मेहा ! राओ पुव्वरत्तावरत्तकालममयंगि अम्मजागरियं जागरमाणस्स अय-
मेयारूवे अज्झत्थिए' ० चित्तिए पत्थिए मणांगए संकामे ० समुप्पज्जित्था—एवं
खलु अहं इमेणं ओरालेणं' तवाकम्मेणं गुत्तं जाव' जेणेव' इहं तेणेव हव्व-
माणए ।

से नूणं मेहा ! अट्ठे समट्ठे ?

हंता अत्थि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेहि ॥

२०६. तए णं से मेहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठभणुण्णाए समणे
हट्ठुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियए, उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता
समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पायाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ,
वंदित्ता नमंसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेइ', आरुहेत्ता गोयमादीए'
समणे निग्गंथे निग्गंथोओ य खामेइ, खामेत्ता तहारूवेहि कडादोहि थेरेहि
सद्धि विपुलं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहइ, दुरुहित्ता सयमेव मेहवणसण्णिगासं"
पुढविसिलापट्ठयं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता उच्चारपासवणभूमि पडिलेहेइ, पडि-
लेहेत्ता दव्वसंधारगं संथरइ, संथरित्ता दव्वसंधारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभि-
मुहे संपलियं कनिसण्णे करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु
एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव" सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं ।
नमोत्थु णं समणस्स जाव सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपाविउकामस्स मम
धम्मायरियस्स । वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासउ मे भगवं तत्थगए
इहगयं ति कट्ठु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पुंवि पि य
णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चवक्खाए,
मुसावाए अदिण्णादाणे मेहुणे परिग्गहे कोहे माणे माया लोहे पेज्जे दोसे कलहे

१. पंजलियडे (ख); अंजलियडे (घ) ।

२. मेह ति (ख); मेघाइ (घ) ।

३. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

४. ना०—१११२०४ ।

५. पू० ना० १११२०४ ।

६. अत्र १११२०४ सूत्रस्य 'जेणेव समणे भगवं महावीरे' अतः पूर्ववर्ती पाठः समपितोस्ति ।

७. ना० ११११९६ ।

८. आरुहेइ (ख); आरुहति (घ) ।

९. गोयमादि (क, ख, ग, घ) ।

१०. अतोत्रे ११५१८३ सूत्रे 'देवसण्णिवायं' इति पदं विद्यते ।

११. ओ० सू० २१ ।

अथनक्तानि पेमुण्णे परपरिवाए अरुअरु मायामोणे मिच्छादंसणसत्ते-
पच्चक्खामि ।

एयाणि पि णं अहं तस्मेव अंनिए सव्वं पाणाएवायं पच्चक्खामि जाव मिच्छा-
दंसणसत्ते पच्चक्खामि, सव्वं अरण-पाण-साएम-नाएमं चउच्चिहपि खाहारं
पच्चक्खामि जावज्जीवाए ।

जं पि य उमं सरीरं इट्ठं कंठं पियं' •मणुण्णं मणामं भेज्जं वेम्मानियं गम्भयं
बहुमयं अणूमयं भंडकरंउगसमाणं मा णं नीयं मा णं उण्हं मा णं गुहा मा णं
पिवासा मा णं चौरा मा णं वाजा मा णं दंवा मा णं मनया मा णं वाटय-पिनिय-
नेभिय-सण्णिवाडय' • विविहा सोमयंका पनीमहोदयगा 'पुनमीति कद्धं'
एयं' पि य णं चरमेहि' उत्ताम-नीनामेहि बोनिरामि नि कद्धं सनेहणा-
भुजणा-भुजिए' भत्तपाण - पटियाएवियए पाय्ठावणए कालं अणयवणमालं
विहए ॥

२०७. तए णं ते येरा भगवतो मेहस्स अणमारस्स अणित्ताए वेयावयियं करेति ॥

मेहस्स समाहिमरण-पटं

२०८. तए णं ते मेहे अणमारं नमणस्स भगवयो महावीरस्स तहाएवाणं येराए खंनिए
मामाएयसाएयाए' एवकारस्सयेगाए' अहिजिज्जा, बह्वहियुण्णाए' दुयावण-
वत्तिगाए' मामणपत्तिगं पाउणिज्जा, मामियाए सविहणाए अण्णाण भोगेसा,
सट्ठि भत्ताए अणसणाए छिएत्ता, प्रासाउय-पटिकले उदियनएवे मनाहिताए
अणुपुत्थेणं कालगए ॥

येरेहि मेहस्स आचारभंडसमप्पण-पटं

२०९. तए णं ते येरा भगवतो मेहं अणमारं अणुपुत्थेणं पायसए पायसि, दासिया
परिनेयाणपयियं' साउमसणं करेति, करेत्ता मेहस्स आचारभरणं मेहस्सि,
विउत्ताएवे एववायो सज्जिये-सज्जियं 'पत्तयेगाए, पत्तयेगाए' उण्णमेव
गुणसित्तए चिटए, वेयामेव समणं भगवं महावीरं वेदंति समेवति, वेयामेव उणसण्णाए,
उत्ताम-नीना मेमणं भगवं महावीरं वेदंति समेवति, वेदंता समसिमा एयं

वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे नामं अणगारे पगइभट्टणं
 •पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमइवसंपण्णे अल्लोणे°
 विणीए, से णं देवाणुप्पियाणं अट्ठभणुणाणं समाणे गोयमाइए समणे निगंथे
 निगंथीओ य खामेत्ता अम्हेहि मड्ढि विपुलं पव्वयं सणियं-सणियं दुक्खइ,
 सयमेवमेघघणराणिणगासं पुट्टविमिजं पडिनेहेइ', भत्तपाण-पडियाइक्खिए
 अणुपुव्वेणं कालगए ।

एस णं देवाणुप्पिया ! मेहस्स अणगारस्स आयारभंडण ॥

गोयमपुच्छाए भगवओ उत्तर-पदं

२१०. भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता
 एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे नामं अणगारे से णं भंते !
 मेहे अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहि गए ? कहि उववण्णे ?

२११. गोयमा ! इ° समणे भगवं महावीरे गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा !
 मम अंतेवासी मेहे नामं अणगारे पगइभट्टणं जाव' विणीए, से णं तहाह्वाणं
 थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइ' एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, वारस भिक्खु-
 पडिमाओ गुणरयण-संवच्छरं तवोकम्मं काणं फासित्ता जाव' किट्ठित्ता, मए
 अट्ठभणुणाए समाणे गोयमाइ थेरे खामेत्ता, तहाह्वेहि° •कडादीहि थेरेहि
 सद्धि° विपुलं पव्वयं [सणियं-सणियं ?] दुक्खित्ता', दट्ठभसंधारणं, संथरित्ता
 दट्ठभसंधारोवगए सयमेव पंचमहव्वए उच्चारित्ता, वारस वासाइं सामणपरि-
 यागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अण्णाणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए
 छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते उद्धियसल्ले समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा
 उड्ढं चंदिम-सूर-गहगण-नक्खत्त-ताराह्वाणं वहुइं जोयणाइं वहुइं जोयणसयाइं
 वहुइं जोयणसहस्साइं वहुइं जोयणसयसहस्साइं वहुओ जोयणकोडीओ वहुओ
 जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाण-सणकुमार-माहिद-वंभ-°
 लंतग-महासुक्क-सहस्साराणय-पाणयारणच्चुए तिण्णि य अट्ठारसुत्तरे गेवेज्ज-
 विमाणवाससए वीईवइत्ता विजए महाविमाणे देवत्ताए उववण्णे ।

१. सं० पा०—पगइभट्टणं जाव विणीए ।

६. सामाइयाइं (त्व) ।

२. प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ 'अल्लोणे' इत्यस्य अनन्तरं
 'भट्टणं' इति पाठोस्ति ।

७. ना० १।१।२०१ ।

३. अत्र पुनर्लेखने अपूर्णो पाठोस्ति । अस्य
 पूर्तये द्रष्टव्यं १।१।२०६ सूत्रम् ।

८. सं० पा०—तहाह्वेहि जाव विपुलं ।

४. दि (क, ख, ग, घ) ।

९. अत्र पुनर्लेखने अपूर्णो पाठोस्ति । अस्य
 पूर्तये द्रष्टव्यं १।१।२०६ सूत्रम् ।

५. न० १।१।२०६ ।

१०. वंभलोके (घ) ।

तस्य णं अत्येगद्वयाणं देवाणं तेजोगं मागरोवमाहं ठिहं पण्यन्ता । तस्य णं मेहृत्ता वि देवस्य तेजोगं मागरोवमाहं ठिहं ॥

२१२. गन् णं भने ! मेहे देवे नाओ देवलोयाओ आउवसणं ठिहवसणं भववसणं धणंतरं तसं चउत्ता कहिं गच्छिह्ति ? कहिं उववज्जिह्ति ? गायमा ! महाविदेहे वाने सिज्जिह्ति वुज्जिह्ति मुच्चिह्ति परिनिव्वाहिह्ति सव्वदुवसाणमतं कहिह्ति ॥

निश्चय-पदं

२१३. गयं गन्तु जंघु ! समणेणं भगवता महावीरेणं आइगरेणं निभगरेणं जयं मिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं गंत्तेणं अण्णानंभ'-निमित्तं पदमत्ता नायउभयपग्ग अयमट्ठे पण्यत्ते ।

—नि वेमि

वृत्तिकृता समुद्रता निगमनगाथा—

महरेहिं निउणंहि, यमणेहिं नोययनि आयरिया ।

गाने कहिंचि सानिण, जह मेहमुणि महावीरो ॥१॥

कुटुंबेसु' जेट्ठुत्ते कुटुंबमज्जे' ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ' सीयाओ दुक्खा
समाणा मम अतियं पाउवभवह । ते वि तहेव पाउवभवन्ति ॥

मंडुयस्स रायाभिसेय-पदं

६२. तए णं से सेलए राया पंच मंतिसयाइं पाउवभवमाणाइं पासइ, पासित्ता हट्ठुत्ते
कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !
मंडुयस्स कुमारस्स महत्थं^१ •महग्घं महरिहं विउलं^२ रायाभिसेयं उवट्ठवेह ॥
६३. "तए णं ते कोडुंवियपुरिसा मंडुयस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं
रायाभिसेयं उवट्ठवन्ति ॥
६४. तए णं से सेलए राया बहूहि गणनायगेहि य जाव' संधिवालेहि य सद्धि संपरि-
वुडे मंडुयं कुमारं जाव' रायाभिसेएणं अभिसिचइ ॥
६५. तए णं से मंडुए राया जाए—महयाहिमवन्त-महन्त-मलय-मंदर-महिदसारे जाव'
रज्जं पसासेमाणे^३ विहरइ ॥

सेलयस्स निक्खमणाभिसेय-पदं

६६. तए णं से सेलए मंडुयं रायं आपुच्छइ ॥
६७. तए णं मंडुए राया कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव
भो देवाणुप्पिया ! सेलगपुरं नयरं आसिय'-•सित्त-सुइय-सम्मज्जिओवलितं
जाव'^४ सुगंधवरगंधियं^५ गंधवट्ठिभूयं करेह य कारवेह य, एयमाणत्तियं पच्च-
प्पिणह ॥
६८. तए णं से मंडुए दोच्चं पि कोडुंवियपुरिसे एवं^६ वयासी—खिप्पामेव भो देवाणु-
प्पिया ! सेलगस्स रण्णो महत्थं^७ •महग्घं महरिहं विउलं^८ निक्खमणाभिसेयं
[करेह ?] जहेव मेहस्स तहेव^९ नवरं—पउमावती देवी अगकेसे पडिच्छइ,
सच्चेव पडिग्गाहं गहाय सीयं दुरुहइ । अवसेसं तहेव जाव'^{१०} ॥

१. कोडुंबेसु (ख) ।

२. कोडुंबं (घ) ।

३. वाहिणीयाओ (घ) ।

४. सं० पा०—महत्थं जाव रायाभिसेयं ।

५. सं० पा०—अभिसिचइ जाव राया जाए
विहरइ ।

६. ना० १११२४ ।

७. ना० १११११८ ।

८. ओ० सू० १४ ।

९. सं० पा०—आसिय जाव गंधवट्ठिभूयं ।

१०. ना० १११३३ ।

११. सद्दावेइ २ एवं (क) ।

१२. सं० पा०—महत्थं जाव निक्खमणाभिसेयं ।

१३. ना० १११२२-१३२ ।

१४. ना० १११३४-१४३; ११५२६-३३ ।

सैलमस्त पय्यज्जा-पदं

६६. 'तत् न सं गेनयं [पंचहि संतिगृहि सदि ?] गयमेव पंचगृह्यं लोपं करेत्, करेत्ता तेषामेव मुप तेषामेव उवाचनच्छ, उवाचच्छिता मुपं अवाचार विनयुयो आवाहिण-पवाहिणं करेत्, करेत्ता पंदद नमनद आयं पवदत् ॥

मेलगस्त अणगादचरिया-पदं

१००. तपः पं मे भेत्ता, श्रमगारं जाय जाय' कर्म्मनिष्ठापनद्वारा पुनः न पं विहस्य ॥

१०६. नागं च मे भक्त्यै मुमुक्षुस्तत्प्राप्तवान् भेदाय अस्मिन् । मामाद्यमात्रसादं भवतात्म
अंगार्थं सतिष्ठजटः, अतिविज्ञता मूर्खः । पञ्चमे-^{*}छट्टुम् - दनम् - दुचातमेहि
नागदत्तमात्रमनेहि क्षणायान् भावेमाणे । विहृतः ॥

सप्तमं परिनिष्ठाण-पदं

६०८. तए णं मे सुए, नेलमस अणमासस तादे पेमपामोकरादे पव अणमाससतादे
भीमनाण भियरुद ॥

१०३. तदप्येव नृपः प्रपन्नस्य कथं न भवति । तदप्येव नृपः प्रपन्नस्य कथं न भवति । तदप्येव नृपः प्रपन्नस्य कथं न भवति ॥

[illegible]

१०२ नमः त्रैलोक्ये सर्वत्र विद्यमानं ब्रह्मविद्यायां श्रीगणेशाय नमः ।
ब्रह्मविद्यायां श्रीगणेशाय नमः । ब्रह्मविद्यायां श्रीगणेशाय नमः ।
ब्रह्मविद्यायां श्रीगणेशाय नमः । ब्रह्मविद्यायां श्रीगणेशाय नमः ।
ब्रह्मविद्यायां श्रीगणेशाय नमः । ब्रह्मविद्यायां श्रीगणेशाय नमः ।
ब्रह्मविद्यायां श्रीगणेशाय नमः । ब्रह्मविद्यायां श्रीगणेशाय नमः ।

य अरसेहि य विरसेहि य सीएहि य उण्हेहि य कालाद्वकंतेहि य पमाणाइवकं-
तेहि य निच्चं पाणभोगेहि य पयइ-सुकुमालस्स सुहोचियस्स सरीरगंसि
'वेयणा पाउव्भूया'—उज्जला' •विउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा'°
दुरहियासा । कंडु-दाह-पित्तज्जर-परिगयसरीरे यावि विहरइ ॥

१०७. तए णं से सेलए तेणं रोयायंकेणं सुक्के भुक्खे जाए यावि होत्था ॥

१०८. तए णं से सेलए अणया कयाइ पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे' •गामाणुगामं दूइज्जभाणे
सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव सेलगपुरे नयरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छिता अहापडिख्वं ओगहं ओगिण्हिता संजमेणं तवसा
अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ॥

१०९. परिसा निग्गया । मंडुओ वि निग्गओ सेलगं अणगारं 'वंदइ नमंसइ पज्जु-
वासइ' ॥

सेलगस्स तिगिच्छा-पदं

११०. तए णं से मंडुए राया सेलगस्स अणगारस्स सरीरगं सुक्कं भुक्खं सव्वावाहं
सरोगं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—अहण्णं भंते ! तुव्वं अहापवत्तेहि'
तेगिच्छएहिं' अहापवत्तेणं' ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेणं तेगिच्छं आउट्ठावेमि" ।
तुव्वे णं भंते ! मम जाणसालासु समोसरह, फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-
संथारगं ओगिण्हित्ताणं विहरइ ॥

१११. तए णं से सेलए अणगारे मंडुयस्स रण्णो एयमट्ठं तह 'त्ति' पडिसुणेइ ॥

११२. तए णं से मंडुए सेलगं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसि" पाउव्भूए
तामेव दिसि पडिगए ॥

११३. तए णं से सेलए कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव" उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-
रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते स-भंड-मत्तोवगरणमायाए पंथगपामोक्खेहि पंचहि

१. निच्च य (क, ख, ग, घ) ।

२. सुहोइयस्स (ग) ।

३. रोगायंके पाउव्भूए (वृषा) ।

४. सं० पा०—उज्जला जाव दुरहियासा ।

५. सं० पा०—चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे
जाव विहरइ ।

६. अणग 'वंदइ' ता पज्जु-

पूतिस्थलमद्यापि क्वापि नोपलब्धम् ।

८. अहापउत्तेहि (ख); अहापवत्तिहेहि (घ) ।

९. तिगिच्छएहि (क) ।

१०. अहापवित्तेणं (ख) ।

११. आउंटावेमि (क, ग, घ); आउंटावेमि
(ख); आदशेषु प्रायेण 'आउंटावेमि' इति

पाठो लभ्यते, वृत्तावत्र नास्त्यनुस्वारः ।

१२. दिसं (क) ।

१३. ना० १।१।२४ ।

अस्य

अणगादगणहि नदि' सेलमपुरमणुषविमल, अणुषविमिता सेनेय 'मंडुयम रण्यो
जाणसाता' सेनेय उवागच्छट, उवागच्छिता फानु-गुमणिज्जेण' *पीड-पल्लव-
सेज्जा-संधारणं ओगिणित्ताणं' चिह्नरट ॥

११४. तण् णं मे मंडुय तेनिच्छिण्ण' सद्धायेद, सद्धायेता एवं रण्यो-मुने णं
देवाणुपिणया ! सेलमरस फानु-गुमणिज्जेण' *ओसद्ध-भेसज्ज-भत्तपाणेहि' तेनिच्छं
आउट्टेहि' ॥

११५. तण् णं ते तेनिच्छिता मंडुयणं रण्यो एवं धुत्ता समाणा णट्टुमुट्टा सेलमरस रण्य-
पवनेहि ओसद्ध-भेसज्ज-भत्तपाणेहि' तेनिच्छं आउट्टेहि, 'मज्झमाणन न मे
उपदिसेति' ॥

११६. तण् णं तदन सेलमरस' अट्टापवनेहि' *ओसद्ध-भेसज्ज-भत्तपाणेहि' मज्झमाण-
णय से सेनायके उवनेते मायि होत्वा—हट्टे मल्लमरीरे' आण् पवमय-
सेनायके ॥

सेलमरस पमत्तविहार-पदं

११७. तण् णं मे सेलम सेनि सेनायकेति उवमनेनि नमार्णमि नंसि विपुले अणन-पण-
वाटम-सारमे मज्झपाणण म भुत्तिण् मदिण् मिद्धे पवभोवयमे ओमने ओमन-
विहारी, पामने' *पामन्यविहारी कुमने कुमनेविहारी पमने पमन्यविहारी'
मंगने मंगत्तविहारी उउवद'-पीड'-*फल्लव-भेसज्जा-संधारणं' पमने मायि
विहारा, नो मंजाण् फानु-गुमणिज्जेण पीड-पल्लव-भेसज्जा-संधारणं पवमपिणित्ता
मंडुयं मे रायं आपुणित्ता रणिता' *जवययविहारे' विहारीण ॥

साहहि सेलमरस परिच्छाव-पदं

११८. तण् णं मेनि पंभमयज्जाणं पंभने पणगादगमण सध्वता रण्यो एवमया
सहियाणं' *समुदागमणं सपिणमणायं मपिणविहारी' पुणरुमादरसवाप-

समयसि धम्मजागरियं जागरमाणं अयमेयारुवे अज्झत्थिए' •चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु सेलए रायरिसी चइत्ता रज्जं जाव' पव्वइए विउले' असण-पाण-खाइम-साइम मज्जपाणए य मुच्छिए नो संचाएइ'°कासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संधारयं पच्चप्पिणित्ता मंडुयं च रायं आपुच्छित्ता वहिया जणवयविहारं° विहरित्तए । नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणाणं° निग्गंथाणं° ओसन्नाणं पासत्थाणं कुसोलाणं पमत्ताणं संसत्ताणं उउ-वद्ध-पीढ-फलग-सेज्जा-संधारए° पमत्ताणं विहरित्तए । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं कल्लं सेलगं रायरिसि आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संधारयं पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठावेत्ता वहिया अव्वभुज्जएणं° •जणवयविहारेणं° विहरित्तए—एवं संपेहेत्ति, संपेहेत्ता कल्लं जेणेव सेलए रायरिसी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सेलयं रायरिसि आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संधारयं पच्चप्पिणित्ति, पच्चप्पिणित्ता पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठावेत्ति, ठावेत्ता वहिया° •जणवयविहारं° विहरंति ॥

पंथगस्स चाउम्मासिय-खामणा-पदं

११६. तए णं से पंथए सेलगस्स सेज्जा-संधारय-उच्चार-पासवण-खेल्ल-सिघाणमत्त-ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणएणं अगिलाए विणएणं वेयावडियं करेइ ॥
१२०. तए णं से सेलए अणया कयाइ कत्तियं-चाउम्मासियंसि विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं आहारमाहारिए सुवहुं च मज्जपाणयं° पीए पच्चावरण्हकाल-समयंसि" सुहप्पसुत्ते ॥
१२१. तए णं से पंथए कत्तिय-चाउम्मासियंसि कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं

१. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था । १०. मज्जणपाययं (ख) ।

२. ओ० सू० २३ ।

३. विपुलेणं (क) ।

४. सं० पा०—संचाएइ जाव विहरित्तए ।

५. सं० पा०—समणाणं जाव पमत्ताणं । अस्य पूतिः १।५।११० सूत्रे प्रदत्तसंकेतानुसारेण कृतास्ति ।

६. एतत् पदं १।५।१२४ सूत्राधारेण स्वीकृतम् ।

७. सं० पा०—अव्वभुज्जएणं जाव विहरित्तए ।

८. सं० पा०—वहिया जाव विहरंति ।

९. कत्तिया (ख) ।

११. पुच्चावरण्हकालसमयंसि (क, ख, ग, घ) ।

सर्वेषु आदर्शेषु 'पुच्चावरण्ह०' इति पाठो लभ्यते, किन्तु अर्थ-मीमांसया नासावत्र संगतोस्ति । अत्र सायंकालीनसमयस्य प्रसंगोस्ति, अतः 'पच्चावरण्ह०' इति पाठोऽस्माभिः गृहीतः । आदर्शेषु लिपिदोषेण 'पच्चा०' स्थाने 'पुच्चा०' जातमिति संभाव्यते । उपासकदशासूत्रेपि (६।१७) इत्थं जातमस्ति ।

छट्ठं अज्झयणं

तुंवे

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं पंचमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, छट्ठस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंत्तु ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं । परिस्ता निग्गया ॥
३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अट्ठरसामंते जाव' सुक्कज्झाणोव-गए विहरइ ॥

गरुयत्त-लहुयत्त-पदं

४. तए णं से इंदभूई नामं अणगारे जायसइहे जाव' एवं वयासी—कहण्णं' भंते ! जीवा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं सुक्कतुंव' निच्छिदं निरुवहयं दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढेत्ता मट्ठियालेवेणं लिपइ, लिपित्ता उण्हे दलयइ, दलयित्ता सुक्कं समाणं दोच्चंपि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढेत्ता मट्ठियालेवेणं लिपइ, लिपित्ता उण्हे दलयइ, दलयित्ता सुक्कं समाणं तच्चंपि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, मट्ठियालेवेणं लिपइ, उण्हे दलयइ । एवं खलु एएणुवाएणं अंतरा वेढेमाणे

१. ओ० सू० ८२ ।

२. ओ० सू० ८३ ।

३. कह णं (क, ग) ।

४. सुक्कं (क, घ) ।

संवत्सरा निवर्तमाने' संवत्सरा सुवर्तयेमाने' जाय अष्टमि मष्टिप्रायेयेति चिह्नं ।
अथवात्सनात्मनोऽस्तिपति उदयमिति परिगणयेत् । मे नृप मेवमा ! मे नृपे
मेनि अष्टमि मष्टिप्रायेयेन गणयन्ताम् भागिन्यन्ताम् गणय-भागिन्यन्ताम् उति
गणितमव्ययत्वा' अष्टे भवतिपत्य-वद्वृत्ताने भवति ।

एवमेव नोयमा ! जीवा वि पापादव्ययम्' •मुक्ताव्ययम्' अविद्याभयनेन
मेष्टमेन परिगणयेन जाय' •मिच्छाद्वयमव्ययम्' अष्टमिप्रायेयेन अष्टमिप्रायेयेन
नमश्चिह्नित्वा यानि गणयन्ताम् भागिन्यन्ताम् गणय-भागिन्यन्ताम् गणयमानि जाय
चित्त्वा भवतिपत्यमव्ययत्वा' अष्टे नमश्चिह्नित्वा भवति । एवं नृप नोयमा !

जीवा गणयनेन इत्येवमाव्ययम् । 'अष्ट प' नोयमा ! मे नृपे मेनि पतिगणयन्ताम्
मष्टिप्रायेयेनि विह्वलि कुट्टिमि पतिगणयन्ताम् ईमि भवतिपत्यमव्ययत्वा उति
य चिह्नं । यथापत्यं योच्यं नि मष्टिप्रायेये' •विने कुट्टिमि पतिगणयन्ताम् ईमि
भवतिपत्यमव्ययत्वा' उतिगणयन्ताम् चिह्नं । एवं नृप एवमेव इत्येवमेव मेन अष्टमि
मष्टिप्रायेयेन विह्वलि •कुट्टिमि पतिगणयन्ताम् [मे नृपे ?] विह्वल्यमाने
अष्टे भवतिपत्यमव्ययत्वा उति गणितमव्ययत्वा भवति ।

एवमेव नोयमा ! जीवा पापादव्ययमव्ययमेव जाय मिच्छाद्वयमव्ययमेव
अष्टमिप्रायेयेन अष्टमिप्रायेयेन गणयन्ताम् गणयन्ताम् गणयन्ताम् उति
भवति । एवं नृप नोयमा ! जीवा अष्टमि' इत्येवमाव्ययम् ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह मिंउलेवालित्तं, गुरुयं तुवं अहो वयइ ।

एवं कय-कम्मगुरु, जीवा वच्चंति अहरगइं ॥१॥

तं चेव तन्विमुक्कं, जलोर्वारि ठाइ जाय-लहुभावं ।

जह तह कम्म-विमुक्का, लोयग-पइट्टिया होति ॥२॥

सत्तमं अञ्जयणं

रोहिणी

उपस्य-पदं

१. जह वं भीति ! समस्येण भगवणं मज्झिमेणं पटुस्य नायकभयवत्तस्य वसमट्टे
वण्णसो, मयमस्य वं भीति ! नायकभयवत्तस्य के वट्टे वण्णसो ?
२. मयं पत्तु जेह ! वेणं कालेणं वेणं समस्येणं नायकट्टे नासं नमरे होत्थस्य ।
मुमुग्धिभागे उज्जयणे ॥

पञ्चमायवाह-पदं

१. मयं वं नायकट्टे मयं मयं नासं मय्यवसो पणिमस्य—वट्टे ज्ञापं वसमिभूत ।
भयं भागिण्य—वट्टेणवविधिपसोसो वसवं मुमस्य ॥
२. मयं वं वसवस्य मय्यवस्यस्य वसवं भयं भागिण्य वसवस्य वसवस्य मय्यवस्य-
वसवस्य होत्थस्य, वं ज्ञापं—वसवस्ये वसवस्ये वसवस्ये वसवस्ये ॥
३. मयं वं वसवस्य मय्यवस्यस्य वसवस्य वसवस्य भागिण्यस्य वसवस्य मुमुग्धिभागे होत्थस्य
व ज्ञापं—वसवस्य भागिण्यस्य वसवस्य वसवस्य ॥

य कोडुंवेसु य मंतेसु य गुज्जभेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपु-
च्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, मेढी पमाणं आहारे आलंवणे चक्खू, मेढीभूते
पमाणभूते आहारभूते आलंवणभूते चक्खूभूए सव्वकज्जवद्वावए ।

तं 'न नज्जइ' णं मए' गयंसि वा चुयंसि वा मयंसि वा भग्गंसि वा लुग्गंसि वा
सडियंसि वा पडियंसि वा विदेसत्थंसि वा धिप्पवसियंसि वा इमस्स कुडुंवस्स
के मन्ते आहारे वा आलंवे वा पडिवंधे वा भविस्सइ ?

तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्टियम्मि सूरे सहस्स-
रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता
मित्त-नाइ'-•नियग-सयण-संवंधि-परियणं° चउण्ह य सुण्हाणं' कुलघरवग्गं
आमंतेत्ता तं मित्त-नाइ'-नियग'-•सयण-संवंधि-परियणं° चउण्ह य सुण्हाणं'
कुलघरवग्गं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं धूव-पुप्फ-वत्थ-गंध'-•मल्ला-
लंकारेण य° सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ'-•नियग-सयण-संवंधि-
परियणस्स° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ चउण्हं सुण्हाणं परिक्खण-
ट्टयाए पंच-पंच सालिअक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का किह वा सारक्खेइ
वा ? संगोवेइ वा ? संवड्ढेइ वा ? एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए
रयणीए जाव' उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते 'विपुलं
असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, मित्त-नाइ'-•नियग-सयण-संवंधि-
परियणं° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेइ'°, तओ पच्छा ण्हाए भोयणमंड-
वंसि सुहासणवरगए तेणं मित्त-नाइ'-•नियग-सयण-संवंधि-परियणेणं° चउण्ह
य सुण्हाणं कुलघरवग्गेणं सद्धिं तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसादेमाणे
जाव'सक्कारेइ, सक्कारेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ'-•नियग-सयण-संवंधि-परियणस्स°
चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हत्ता
जेहं सुण्हं उज्झियं' सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं पुत्ता ! मम

१. × (ख, ग) ।

२. मए त्ति मयि (वृ) ।

३. ना० १।१।२४ ।

४. सं० पा०—नाइ° ।

५. ण्हुसाणं (ख) ।

६. सं० पा०—नियग° ।

७. ण्हुसाणं (ख, ग) ।

८. सं० पा०—गंध जाव सक्कारेत्ता ।

९. सं० पा०—नाइ° ।

१०. ना० १।१।२४ ।

११. सं० पा०—नाइ° ।

१२. मित्त-नाइ° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं
आमंतेइ, विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ
(क, ख, ग) ।

१३. सं० पा—नाइ° ।

१४. ना० १।१।८१ ।

१५. सं० पा०—नाइ° ।

१६. उज्झितं (ख); उज्झितं (ग);
उज्झितं (घ) ।

चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता °
 चउत्थं रोहिणीयं सुण्हं सद्दवेइ, °सद्दवेत्ता एवं वयासी—तुमं णं पुत्ता ! मम
 हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, जाव' गेण्हइ, गेण्हित्ता एगंतमवक्कमइ,
 एगंतमवक्कमियाए इमेयारुवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे
 समुप्पज्जित्था—एवं खलु ममं ताओ इमस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-
 परियणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ सद्दवेत्ता एवं वयासी—तुमं णं
 पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी
 संगोवेमाणी विहराहि । जया णं अहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच सालिअक्खए
 जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि त्ति कट्ठु
 मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयइ ° । तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं' । तं सेयं
 खलु मम एए पंच सालिअक्खए सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए संवड्ढेमाणीए
 त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कुलघर-पुरिसे सद्दवेइ, सद्दवेत्ता एवं वयासी—
 तुव्वे णं देवाणुप्पिया ! एए पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता पढमपाउसंसि
 महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुड्ढागं केयारं सुपरिकम्मियं करेह, करेत्ता
 इमे पंच सालिअक्खए वावेह, वावेत्ता दोच्चं पि 'तच्चं पि' उक्खय-निहए'
 करेह, करेत्ता वाडिपक्खेवं' करेह, करेत्ता सारक्खमाणा संगोवेमाणा
 आणुपुव्वेणं संवड्ढेह ॥

११. तए णं ते कोडुंविया रोहिणीए एयमट्ठं पडिसुणेंति, ते पंच सालिअक्खए गेण्हंति,
 अणुपुव्वेणं सारक्खंति, संगोवित्ति' ॥
१२. तए णं कोडुंविया पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुड्ढागं
 केयारं सुपरिकम्मियं करेंति, ते पंच सालिअक्खए ववंति, दोच्चं पि तच्चं पि
 उक्खय-निहए करेंति, वाडिपरिक्खेवं करेंति, अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणा
 संगोवेमाणा संवड्ढेमाणा विहरंति ॥
१३. तए णं ते साली अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा
 साली जाया—किण्हा किण्होभासा' °नीला नीलोभासा हरिया हरिओभासा
 सीया सीओभासा णिद्धा णिद्धोभासा तिक्वा तिक्वोभासा किण्हा किण्हच्छाया
 नीला नीलच्छाया हरिया हरियच्छाया सीया सीयच्छाया णिद्धा णिद्धच्छाया
 तिक्वा तिक्वच्छाया घण-कडियकडिच्छाया रम्मा महामेह ° निउरंवभूया
 पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

१. सं० पा०—सद्दवेइ जाव तं ।

२. ना० १।७।६, ७ ।

३. कारणेणं त्ति कट्ठु (क, घ) ।

४. ×(क, ग) ।

५. निक्खए (क, ख, ग, घ) ।

६. ×(क, ख, ग) ।

७. संगोवित्ति विहरंति (क, ख, ग, घ) ।

८. सं० पा०—किण्होभासा जाव निउरंवभूया ।

२०. तए णं ते कोडुविया ते साली कोट्टागारंसि पल्लंसि' •पक्खिवन्ति, पक्खिवित्ता
ओलिपन्ति, ओलिपित्ता लंछिय-गुट्ठिए करन्ति, करेत्ता सारक्खमाणा संगोवे माणा^०
विहरन्ति ॥
२१. चउत्थे वासारत्ते वहवे कुंभसया जाया ॥

परिक्खा-परिणाम-पदं

२२. तए णं तस्स धणस्स पंचमयंसि संवच्छरंसि परिणममाणंसि पुट्ठवरत्तावरत्तकाल-
समयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्या—
एवं खलु मए इओ अतीते' पंचमे संवच्छरे चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणद्वयाए ते
पंच-पंच सालिअक्खया हत्थे दिन्ना । तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए
रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते पंच
सालिअक्खए परिजाइत्तए' जाव' जाणामि ताव काए किहू सारक्खिया वा
संगोविया वा संवड्डिया वत्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए
रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं
असणं' •पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-
परियणं चउण्ह य सुण्हाणं कुलधरवग्गं जाव' • सम्माणित्ता तस्सेव मित्त-नाइ-
•नियग-सयण-संवंधि-परियणस्स • चउण्ह य सुण्हाणं कुलधरवग्गस्स पुरओ
जेठ्ठं उज्झियं सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं पुत्ता ! इओ
अतीते पंचमम्मि संवच्छरे' इमस्स मित्त-'' •नाइ-नियग-सयण-संवंधि-परिय-
णस्स • चउण्ह य सुण्हाणं कुलधरवग्गस्स य पुरओ तव हत्थंसि पंच सालिअक्खए
दलयामि । जया णं अहं पुत्ता ! एए पंच सालिअक्खए जाएज्जा तया णं तुमं
मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएसि'^{१२} । से नूणं पुत्ता ! अट्ठे समट्ठे ?

१. सं० पा०—पल्लन्ति जाव विहरन्ति; घल्लन्ति
(क) पल्लन्ति (ख, ग, घ); यद्यपि बहुषु
आदर्शेषु 'पल्लन्ति' इति पदं विद्यते, किन्तु
नैतत् समीचीनं प्रतिभाति । यद्येतत् स्वीकृतं
स्यात् तर्हि जाव शब्दस्य पूर्वोदाधारस्थलं
नोपलभ्यते 'पल्लन्ति' इति पदस्यार्थोपि
नैव संगच्छते । अतएव अस्माभिः पल्लंसि'
इति पदं स्वीकृतम् । अस्याधारः (४३) सूत्रे
'पल्ले उन्निदइ' इति पाठे उपलभ्यते ।

२. अईए (क) ।

३. ना० १।१।२४ ।

४. परिजातित्तए (ख, ग, घ) ।

५. एवं (घ) ।

६. ना० १।१।२४ ।

७. सं० पा०—असणं मित्त-नाइ चउण्ह य
सुण्हाणं कुलधर जाव सम्माणित्ता ।

८. ना० १।७।६ ।

९. सं० पा०—नाइ • ।

१०. संवत्सरे (ग) ।

११. सं० पा०—मित्त ।

१२. •निज्जाएसि त्ति कट्ठु (क) ।



च ण्हाणोवदाइयं च बाहिर^१-पेसणकारियं^२ च ठवेइ^३ ॥

२७. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा^४ •आयरिय-उवज्झा-याणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं^५ पव्वइए, पंच य से महव्वयाइं उज्झियाइं भवंति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य हीलणिज्जे जाव^६ चाउरंत-संसार-कंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ—जहा सा उज्झिया^७ ॥

२८. एवं भोगवइया वि, नवरं^८—•छोल्लेमि, छोल्लित्ता अणुगिलेमि, अणुगिलित्ता सकम्मसंजुत्ता यावि भवामि । तं नो खलु ताओ ! ते चेव पंच सालिअक्खए, एए णं अण्णे ।

२९. तए णं से धणे सत्थवाहे भोगवइयाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्मा आसुरुत्ते जाव^९ मिसिमिसेमाणे भोगवइं तस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-परियणस्स चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ^{१०} तस्स कुलघरस्स कंडितियं^{११} च कोट्टितियं^{१२} च पोसंतियं च एवं—खंडितियं खंडितियं परिवेसंतियं^{१३} परिभायंतियं^{१४} अविभतरियं^{१५} पेसणकारि महाणसिणि ठवेइ ॥

३०. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झा-याणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, पंच य से महव्वयाइं फालियाइं^{१६} भवंति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य हीलणिज्जे जाव^{१७} चाउरंत-संसार-कंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ—जहा व सा भोगवइया ॥

३१. एवं रक्खियावि^{१८}, नवरं—जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मंजूसं विहाडेइ, विहाडेत्ता रयणकरंडगाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंच सालिअक्खए धणस्स हत्थे दलयइ ॥

३२. तए णं से धणे सत्थवाहे रक्खियं एवं वयासी—किं णं पुत्ता ! ते चेव एए पंच सालिअक्खए उदाहु अण्णे ?

१. बाहर (ख) ।

२. पेसणकारि (क, ख) ।

३. ठवेइ (क) ।

४. सं० पा०—निग्गंथी वा जाव पव्वइए ।

५. ना० १।३।२४ ।

६. उज्झिया (ग, घ) ।

७. सं० पा०—नवरं तस्स ।

८. ना० १।१।१६१ ।

९. कुंडेतियं (ख); कंडेतियं (ग); खंडेतियं (घ) ।

१०. ०तियं च (ग) ।

११. ०तियं च (ग) ।

१२. ०तरियं च (ग) ।

१३. फाडियाति (घ) फोडियाइं (वव) ।

१४. ना० १।३।२४ ।

१५. रक्खितियावि (ख, ग) ।

सालिअक्खए सगडि-सागडेणं निज्जाइस्ससि ? ॥

३८. तए णं सा रोहिणी धणं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु ताओ ! तुम्हे इओ अतीते पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त'-नाइ-नियग-सयण-संवधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हह, गेण्हित्ता ममं सदावेह, सदावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं पुत्ता मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हहि, अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी विहराहि । जया णं अहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा, तथा णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि ति कट्ठु मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयह । तं भवियव्वं एत्थ कारणेण । तं सेयं खलु मम एए पंच सालिअक्खए सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए संवड्ढेमाणीए जाव' °वह्वे कुंभसयाजाया तेणं व कमेण । एवं खलु ताओ ! तुम्हे ते पंच सालिअक्खए सगडि-सागडेणं निज्जाएमि ॥

३९. तए णं से धणे सत्थवाहे रोहिणीयाए सुवहुयं सगडि-सागडं दत्ताति' ॥

४०. तए णं से रोहिणी सुवहुं सगडि-सागडं गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोट्टागारे विहाडेइ, विहाडित्ता पल्ले उट्ठिभदइ, उट्ठिभदित्ता सगडि-सागडं भरेइ, भरेत्ता रायगिहं नगरं मज्झमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव घणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ ॥

४१. तए णं रायगिहे नयरे सिंघाडग'-°तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु° बहुजणो अण्णमण्णं एवमाइक्खइ—घण्णे णं देवाणुप्पिया ! घणे सत्थवाहे, जस्स णं रोहिणीया सुण्हा पंच सालिअक्खए 'सगडि-सागडेणं' निज्जाएइ ॥

४२. तए णं से घणे सत्थवाहे ते पंच सालिअक्खए सगडि-सागडेणं निज्जाइए पासइ, पासित्ता हट्ठुदे' पडिच्छइ, पडिच्छित्ता तस्सेव मित्त-नाइ'-°नियग-सयण-संवधि-परियणस्स° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ रोहिणीयं सुण्हं तस्स कुलघरस्स वहूमु कज्जेसु य' °कारणेसु य कुडुंवेसु य मंतेसु य गुवभेसु य °रहस्सेसु य आपुच्छणिज्जं' °पडिपुच्छणिज्जं मेढि पमाणं आहारं आलवणं चक्खुं, मेढीभूयं पमाणभूयं आहारभूयं आलवणभूयं चक्खुभूयं सव्वकज्ज °वड्ढावियं पमाणभूयं ठवेइ ।

४३. एवामेव समणाउसो' ! °जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झा-याणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए°, पंच से महव्वया

१. सं० पा०—मित्त जाव वह्वे ।

२. ना० १।७।१०-२१ ।

३. दलयइ (ख) ।

४. सं० पा०—सिंघाडग जाव बहुजणो ।

५. सगडि-सागडेणं(क); सगडि-सागडेणं(ख) । १०. सं० पा०—समणाउसो ! जाव पंच ।

६. हट्ठ जाव (क, घ) ।

७. सं० पा०—नाइ ।

८. सं० पा०—कज्जेसु जाव रहस्सेसु ।

९. सं० पा०—आपुच्छणिज्जं जाव वड्ढावियं ।

संवदित्वा भवति, मे न मां नये नये चतुर्न समानान् चतुर्न समानान् चतुर्न
मात्रमात्रं चतुर्न माविष्यामि न भवति नये नये नये नये नये नये नये नये
नये—मात्र न मा रोहिणीया ॥

निवृत्तिवचनं

४४. एवं सत्यं नये ! सत्यं नये सत्यं नये सत्यं नये सत्यं नये सत्यं नये
निवृत्तिवचनं नये नये नये नये नये नये नये नये नये नये नये नये नये
निवृत्ति ॥

सो अप्पहि एवकरई, इहलोयम्मवि विऊहि पणयपओ ।
एगंतसुही जायइ, परम्म मोक्खं पि पावेइ ॥१०॥

रोहिणी—

जह रोहिणी उ सुण्हा, रोवियसाली जहत्थमभिहाणा ।
वड्डित्ता सालिकणे, पत्ता सब्बस्स सामित्तं ॥११॥
तह जो भव्वो पाविय, वयाइ पालेइ अप्पणा सम्मं ।
अण्णेसि वि भव्वाणं, देइ अण्णेगेसि हियहेउं ॥१२॥
सो इह संघप्पहाणो, जुगप्पहाणोत्ति लहइ संसदं ।
अप्पपरेंसि कल्लाण-कारओ गोयमपहुव्व ॥१३॥
तित्थस्स वुड्ढिकारी, अक्खेवणओ कुत्तित्थियाईणं ।
विउस-नरसेविय-कमो, कमेण सिद्धि पि पावेइ ॥१४॥

महव्वलस्स तवविसय-माया-पद

१८. तए णं से महव्वले अणगारे इमेणं कारणेणं इत्थिनामगोयं कम्मं निव्वत्तिमु—
जइ णं ते महव्वलवज्जा छ अणगारा चउत्थं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति, तओ
से महव्वले अणगारे छट्ठं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ । जइ' णं ते महव्वलवज्जा छ
अणगारा छट्ठं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति, तओ से महव्वले अणगारे अट्ठमं
उवसंपज्जित्ता णं विहरइ । एवं—अह अट्ठमं तो दसमं, अह दसमं तो
दुवालसमं । 'इमेहि य' णं वीसाए णं कारणेहि आसेविय-वहुलीकएहि तित्थयर-
नामगोयं कम्मं निव्वत्तिमु, तं जहा—

संगहणी-गाहा

अरहंत-सिद्ध-पवयण-गुरु-थेर-बहुस्सुय'-तवस्सीमु ।
वच्छल्लया य तेसिं, अभिक्ख' नाणोवओगे य ॥१॥
दंसण-विणए आवस्सए य सीलव्वए निरइयारो ।
खणलवत्तवच्चियाए, वेयावच्चे समाहीए' ॥२॥
अपुव्वत्ताणगहणे, सुयभत्ती पवयण'-पहावणया ।
एएहि कारणेहि, तित्थयरत्तं लहइ 'सो उ' ॥३॥

महव्वलादीणं विविहतवचरण-पदं

१९. तए णं ते महव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता
णं विहरंति जाव' एगराइयं ॥
२०. तए णं ते महव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डाणं 'सीहनिक्कोलियं तवोकम्मं'
उवसंपज्जित्ता णं विहरंति, तं जहा—

चउत्थं करेति, सब्बकामगुणियं पारेति ।
छट्ठं करेति, चउत्थं करेति ।
अट्ठमं करेति, छट्ठं करेति ।
दसमं करेति, अट्ठमं करेति ।
दुवालसमं करेति, दसमं करेति ।
चोइसमं करेति, दुवालसमं करेति ।

१. अत्र वर्णविपर्ययेण 'यकार' स्थाने इकारो
जातः । मूढूच्चारणार्थं वर्णविपर्ययो लभ्यते
आर्पणाक्येषु ।

२. इमेहि च (क) ।

३. बहुस्सुए (क, ख, ग, घ) ।

४. अत्र अनुस्वारलोपः ।

५. समाहो य (क, ख, ग, घ) ।

६. पवयणे (क, ख, ग, घ) ।

७. जीवो (वृ); एसो (वृपा) ।

८. ना० १।१।१६८ ।

९. ° लियत्तवोकम्मं (ख) ।

मोक्षममं करोति, मोक्षममं करोति ।
 सद्गुरुममं करोति, मोक्षममं करोति ।
 मोक्षममं करोति, मोक्षममं करोति ।
 सद्गुरुममं करोति, मोक्षममं करोति ।
 मोक्षममं करोति, सद्गुरुममं करोति ।
 मोक्षममं करोति, सद्गुरुममं करोति ।
 सद्गुरुममं करोति, सद्गुरुममं करोति ।
 सद्गुरुममं करोति, सद्गुरुममं करोति ।
 सद्गुरुममं करोति, सद्गुरुममं करोति ।

समाहिमरण-पदं

२६. तए णं ते महव्वलयामोक्खा सत्त अणगारा तेणं उरालेणं' तवोकम्मणं मुक्का भुक्खा निम्मंसा किडिकिडियाभूया अट्टिचम्मावणद्धा किंसा धमणिंसंतया जाया या वि होत्था । जहा खंदओ' नवरं—थेरे आपुच्छिता चासपव्वयं सणियं-सणियं दुरुहंति जाय' दोमासियाए सलेहणाए अप्पाणं भोसेत्ता, सवीसं भत्तसयं अणसणाए छेत्ता, चतुरासीइं वाससयसहस्साइं नामण्णपरियागं पाउणित्ता, चुलसीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता जयंते विमाणे देवत्ताए उववण्णा । तत्थ णं अत्येगइयाणं देवाणं वत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । तत्थ णं महव्वलवज्जाणं छण्हं देवाणं देसूणाइं वत्तीसं सागरोवमाइं ठिई । महव्वलस्स देवस्स य पडिपुण्णाइं वत्तीसं सागरोवमाइं ठिई' ॥

पच्चायाति-पदं

२७. तए णं ते महव्वलवज्जा छप्पि देवा जयंताओ देवलोगाओ आउक्खएणं 'भवक्खएणं ठितिकखएणं' अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे विसुद्धपिइमाइवंसेसु' रायकुलेसु पत्तेयं-पत्तेयं कुमारत्ताए पच्चायाया, तं जहा—पडिबुद्धी इक्खागराया,

चंदच्छाए अंगराया,

संखे कासिराया,

रूपी कुणालाहिवई,

अदीणसत्त कुरराया,

जियसत्त पंचालाहिवई ॥

२८. तए णं से महव्वले देवे तिहिं नाणेहिं समगे 'उच्चट्ठाणगएसुं गहेसुं', सोमासु दिसासु वितिमिरासु विसुद्धासु, जइएसुं सउणेसु, पयाहिणाणुकूलंसि भूमि-सप्पिसि मारुयंसि पवारयंसि, निप्फण्ण-सस्स-मेइणीयंसि कालंसि पमुइय-पक्कीलिएसुं जणवएसु अद्धरत्तकालसमयंसि अस्सिणीनक्खत्तेणं जोगमुवागएणं जे से 'हेमंताणं चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे, तस्स णं फग्गुणसुद्धस्स' चउत्थीपक्खेणं जयंताओ विमाणाओ वत्तीसं सागरोवमठिइयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव

१. पू०—ना० १।१।२०२ ।

२. भग० २।१६४-६८; इहेव यथा मेघकुमारो वणिंतः (१।१।२०३-२०६) ।

३. ना० १।१।२०६-२०८ ।

४. ठिई पण्णत्ता (क, ख, घ) ।

५. ठितिकखएणं भवक्खएणं (ख, ग, घ) ।

६. पितिमाति० (ख, ग, घ) ।

७. ०गएसु गहेसु (घ) ।

८. जइतेसु गहेसु (क, ख, ग, घ) ।

९. पक्कीलिएसु (ख) ।

१०. वाचनान्तरपु—ग्रिह्माणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेतसुद्धे तस्स णं चेतसुद्धस्स (वृ) ।

३४. तए णं सा पभावई देवी नवण्हं मासाणं [वहुपडिपुण्णाणं ?] अद्धट्टमाण य राइंदियाणं [वीइक्कंताणं ?] जे से हेमंताणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे मग्गसिर-सुद्धे, तस्स णं एवकारसीए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अस्सिणीनक्खत्तेणं [जोगमुवागएणं ?] उच्चट्टाणगएसुं गहेसुं जाव' पमुइय-पक्कीलिएसु जणवएसु आरोयारोयं' एगूणवीसइमं तित्थयरं पयाया ॥
३५. तेणं कालेणं तेणं समएणं अहेलोगवत्थव्वाओ अट्ट दिसाकुमारीमहयरियाओ जहा जंबुद्वीवपणत्तीए' जम्मणुस्सवं', नवरं—मिहिलाए कुंभस्स पभावईए अभिलाओ संजोएयव्वो जाव नंदीसरवरदीवे महिमा ॥
३६. तया णं कुंभए राया वहाँहि भवणवइ'-वाणमंतर-जोइस-वैमाणिएहि देवेहि तित्थयर-जम्मणाभिसेयमहिमाए कयाए समाणीए पच्चूसकालसमयंसि नगर-गुत्तिए सद्देवेइ° जायकम्मं जाव' नामकरणं—जम्हा' णं अम्हं इमीसे' दारियाए माऊए मल्लसयणिज्जंसि डोहले विणीए, तं होउ णं [अम्हं दारिया ?] नामेणं मल्ली' ॥
३७. १०•तए णं सा मल्ली पंचघाईपरिक्खत्ता जाव" सुंहंसुहेणं परिवड्ढई° ॥

१. ना०—१।८।२८ ।

२. आरोग्गारोगं (ग) ।

३. वक्ष° ५ ।

४. जम्मणं सव्वं (क, ख, ग, घ) । अत्र 'जम्मणं सव्वं' अस्य पाठस्यार्थो नैव संगति गच्छति । वृत्तिकृता—'जन्मवक्तव्यता सर्वा वाच्या' इति विवृतम्, किन्तु नात्र विवरणानु-सारी पाठोस्ति । अत्र 'जम्मणुस्सवं' इति पाठः स्वाभाविकः स्यात् । जंबुद्वीपप्रज्ञप्त्यामपि 'जम्मणमहिमं करेति' इति पाठो लभ्यते । असौ 'जम्मणुस्सवं' इति पाठस्य पुष्टि करोति । लिपिदोषेण पाठविपर्ययो जातः इति कल्पना नात्रास्वाभाविकी ।

५. सं० पा०—भवणवइ° तित्थयर° ।

६. कप्पो° महावीर जन्म प्रतरण ।

७. जहा (ख, घ) ।

८. इमीए (क, ख, ग, घ); अत्र पण्यन्तं

सा वड्ढई भगवई, दियलोयचुया अणोवमसिरीया ।

दासीदासपरिवुडा,

परिकिण्णा पीढमहेहि ॥१॥

पदमस्ति तेन 'इमांसे' इति पदं युज्यते ।

६. मल्ली २ (क) ।

१०. सं० पा०—जहा महव्वले जाव परिवड्ढिया ।

अत्र पूर्णपाठावलोकनार्थं महावलस्य संकेतः कृतोस्ति । तस्य वर्णनं भगवत्यां (११।११) विद्यते । तत्राप्यादर्शेषु 'जहा दढपइण्णे' इति समर्पणमस्ति, तेनास्माभिरसौ पाठः दृढप्रतिज्ञप्रकरणादेव पूरितः ।

अतोऽग्रे आदर्शेषु निम्नलिखितं गाथाद्वयं प्राप्यते, किन्तु एतत् प्रक्षिप्तमस्ति । वृत्तिकारेणापि सूचितमिदं, यथा—'सा वड्ढई भगवई' इत्यादि गाथाद्वयं आवश्यक-नियुक्तिसंवंधिऋपभमहावीरवर्णकरूपं बहु-विशेषणसाधर्म्यादिहाधीतम्, न पुनर्गाथा-द्वयोक्तानि विशेषणानि सर्वाणि मल्लि-जिनस्य घटन्ते । तेनास्माभिः नैतत् मूलपाठे स्वीकृतम् । तच्च गाथाद्वयमिदम्—

४१. तए णं सा मल्ली मणिपेढियाए उवरि अप्पणो सरिसियं सरित्तयं सरिव्वयं सरिस-
लावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोव्वेयं कणगामइं' मत्थयच्छिड्डं पउमुप्पल'-पिहाणं
पडिमं करेइ, करेत्ता जं विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं आहारिइ, तओ
मणुण्णाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ कल्लाकल्लि एगमेगं पिडं गहाय
तीसे कणगामईए मत्थयच्छिड्डाए' •पउमुप्पल-पिहाणाए° पडिमाए मत्थयंसि
पक्खवमाणी-पक्खवमाणी विहरइ ॥
४२. तए णं तीसे कणगामईए मत्थयच्छिड्डाए' •पउमुप्पल-पिहाणाए° पडिमाए
एगमेगंसि पिडे पक्खप्पमाणे-पक्खप्पमाणे तओ गंवे' पाउभवेइ, से जहाणामए
—अहिमडे इ वा' •गोमडे इ वा सुणहमडे इ वा मज्जारमडे इ वा मणुस्समडे इ
वा महिसमडे इ वा मूसगमडे इ वा आसमडे इ वा हत्थिमडे इ वा सीहमडे इ वा
वग्घमडे इ वा विगमडे इ वा दीविगमडे इ वा । मय-कुहिय-विणट्ठ-दुरभिवा-
वण्ण-दुव्विभगंधे किमिजालाउलसंसत्ते असुइ-विलीण-विगय-वीभत्सदरिसणिज्जे
भवेयारूवे सिया ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एत्तो अणिट्ठतराए चेव अकंततराए चेव अप्पियतराए चेव
अमणुण्णतराए चेव° अमणामतराए चेव ॥

पडिबुद्धिराय-पदं

४३. तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसला नामं जणवए । तत्थ णं सागेए नामं नयरे ।
४४. तस्स णं उत्तरपुरत्थिमे' दिसोभाए, एत्थ णं महेगे नागघरए होत्था—दिब्बे
सच्चे सच्चोवाए सणिहिय-पाडिहेरे ॥
४५. तत्थ णं सागेए नयरे पडिबुद्धी नामं इक्खागराया परिवसइ । पउमावई देवी ।
सुबुद्धी अमच्चे साम-दंड'-•भेय-उवप्पयाण-नीति-मुपउत्त-नय-विहण्ण'
विहरई °॥
४६. तए णं पउमावईए देवीए अण्णया कयाइ नागजण्णए यावि होत्था ॥
४७. तए णं सा पउमावई देवी नागजण्णमुवट्ठियं जाणित्ता जेणेव पडिबुद्धी' •राया
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिगहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए

१. कणगामयं (ग) ।

२. पउमप्पल्ल (ख, ग, घ) ।

३. सं० पा०—मत्थयच्छिड्डाए जाव पडिमाए ।

४. सं० पा०—कणगामईए जाव मत्थयच्छिड्डाए ।

अथ जाव शब्दस्य प्रयोगोऽशुद्धोस्ति । असौ
उपगित्तनसूत्रवत् 'मत्थयच्छिड्डाए जाव
पडिमाए' एवं युज्यते ।

५. गंधि (क); गंधि (ग, घ) ।

६. सं० पा०—अहिमडे इ वा जाव अणिट्ठतराए
अमणामतराए ।

७. उत्तरपुरत्थिमे णं (ख, ग) ।

८. सं० पा०—साम दंड° । असौ अपूर्णः पाठः
'जाव' आदिपुत्तिसकेतरहितोस्ति ।

९. पू०—ता० १।१।१६ ।

१०. सं० पा०—पडिबुद्धी° करयल° ।

५३. तए णं सा पउमावई देवी अंतो अंतोउरंसि ण्हाया जाव' धम्मियं जाणं दुक्खं ॥
५४. तए णं सा पउमावई देवी नियग-परियाल-संपरिवुड्ढा सागेयं नयरं मज्झमज्झेणं निज्जाइ', जेणेव पोक्खरणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोक्खरणि ओगाहति, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेइ जाव' परमसुइभूया उल्लपडसाडया जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव' ताइ' गेण्हइ, जेणेव नागघरए तेणेव प्हारेत्य गमणाए ॥
५५. तए णं पउमावई देवीए दासचेडीओ व्हूओ पुप्फपडलग-हत्थगयाओ धूवकड-च्छुय-हत्थगयाओ पिटुओ समणुगच्छंति ॥
५६. तए णं पउमावई देवी सव्विद्धीए जेणेव नागघरए तेणेव उवागच्छइ, उवाग-च्छित्ता नागघरं अणुप्पविसइ, लोमहत्थगं परामुसइ जाव' धूवं डहइ, पडिवुद्धि पडिवालेमाणी-पडिवालेमाणी चिट्ठइ ॥
५७. तए णं से पडिवुद्धी ण्हाए' हत्थिखंधवरगए सकोरेंट' मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं वीइज्जमाणे हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे महया भड-चडगर-रह-पहकर-विदपरि-क्खित्ते सागेयं नगरं मज्झमज्झेणं निगगच्छइ, निगगच्छित्ता जेणेव नागघरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता आलोए पणामं करेइ, करेत्ता पुप्फमंडवं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता पासइ तं एगं महं सिरिदामगंडं ॥
५८. तए णं पडिवुद्धी तं सिरिदामगंडं सुचिरं कालं निरिक्खइ । तंसि सिरिदाम-गंडंसि जायविम्हए सुवुद्धि अमच्चं एवं वयासी—तुमं देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेणं व्हूणि गामागर जाव' सण्णिवेसाइं आहिंसि, व्हूण य राईसर जाव' सत्यवाहपभिईणं गिहाइं अणुप्पविससि, तं अत्थि णं तुमे कहिंचि एरिसए सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे, जारिसए णं इमे पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे ?
५९. तए णं सुवुद्धी पडिवुद्धि रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! अहं अण्णया कयाइ' तुव्भं दोच्चेणं मिहिलं रायहाणि गए । तत्थ णं मए कुंभयस्स रण्णो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए संवच्छर-पडिलेहणंसि दिव्वे

१. ना० १।१।६५ ।

२. निघाइ (क, ख); निगगच्छइ (घ) ।

३. ४. ना० १।२।१४ ।

५. तत्थ (क, ख, ग, घ) एतत् अशुद्धं प्रति-भाति ।

६. ना० १।२।१४ ।

७. पू०—ना० १।१।६६ ।

८. सं० पा०—सकोरेंट जाव सेयवर० ।

९. सुइरं (क, ख, ग) ।

१०. ना० १।१।११८ ।

११. ना० १।५।६ ।

१२. कयाइं (ग) ।

अम्हं गणिमं च धरिमं च भेज्जं च पारिच्छेज्जं च भंडगं गहाय खवणसमुदं
 पोयवहणेण ओगाहित्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिमुणंति, पडिमुणेत्ता
 गणिमं च धरिमं च भेज्जं च पारिच्छेज्जं च भंडगं गेण्हंति, गेण्हित्ता सगडी-
 सागडयं सज्जेति, सज्जेत्ता गणिमस्स धरिमस्स भेज्जस्स पारिच्छेज्जस्स य
 भंडगस्स सगडी-सागडियं भरेति, भरेत्ता सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-
 मुहुत्तंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता
 मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-परिजणं भोयणवेलाए भुंजावेति, *भुंजावेत्ता
 मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-परिजणं ° आपुच्छंति, आपुच्छित्ता सगडी-
 सागडियं जोयंति, जोइत्ता चंपाए नयरीए मज्झमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्ग-
 च्छित्ता जेणेव गंभीरए° पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगडी-
 सागडियं मोयंति, पोयवहणं सज्जेति, सज्जेत्ता गणिमस्स *धरिमस्स भेज्जस्स
 पारिच्छेज्जस्स य ° भंडगस्स [पोयवहणं ?] भरेति, तंदुलाण य समियस्स
 य तेल्लस्स य घयस्स य गुलस्स य गोरसस्स य उदगस्स य भायणाणं य
 ओसहाण य भेसज्जाण य तणस्स य कट्ठस्स य आवरणाण य पहरणाण
 य अण्णेसि च वहूणं पोयवहणपाउग्गाणं दव्वाणं पोयवहूणं भरेति । सोहणंसि
 तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति,
 उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-परियणं भोयणवेलाए भुंजावेति,
 भुंजावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-परियणं आपुच्छंति, जेणेव पोयट्ठाणे
 तेणेव उवागच्छंति ॥

६७. तए णं तेसि अरहण्णग°*पामोक्खाणं वहूणं संजत्ता-नावा°वाणियगाणं°
 *मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि°-परियणा ताहि इट्ठाहि° *कंताहिं पियाहिं
 मणुणाहिं मणामाहिं ओरालाहि° वग्गूहिं अभिनंदंता य अभिसंयुणमाणा
 य एवं वयासी—अज्ज ! ताय ! भाय ! माउल ! भाइणेज्ज ! भगवया
 समुद्देणं अभिरविखज्जमाणा-अभिरविखज्जमाणा चिरं जीवह, भदं च भे,
 पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे नियगं घरं हव्वमागए पासामो त्ति कट्ठु
 ताहि सोमाहिं निद्धाहिं दीहाहिं सप्पिवासाहिं पप्पुयाहिं दिट्ठीहिं निरिक्खमाणा
 मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठंति । तओ समाणिएसु पुप्फवलिकम्मेसु, दिनेसु सरस-रत्त-
 चंदण-दहर-पंचंगुलितलेसु, अणुक्खित्तंसि धूवंसि, पूइएसु° समुद्वाएसु,

१. सं० पा०—भुंजावेति जाव आपुच्छंति ।

२. गंभीर (ख, घ) ।

३. सं० पा०—गणिमस्स जाव चउव्विहभंडगस्स ।

४. भायणस्स (घ) ।

५. सं० पा०—अरहण्णग जाव वाणियगाणं ।

६. सं० पा०—वाणियगाणं जाव परियणा ।

७. सं० पा०—इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं ।

८. पूतिएसु (ख); पूइतिसे (ग, घ) ।

निव्वोलेमि', जेणं' तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चैव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

७५. तए णं से अरहण्णगे समणोवासए तं देवं मणसा चैव एवं वयासी—अहं णं देवानुप्पिया ! अरहण्णए नामं समणोवासए अहिगयजीवाजीवे । नो खलु अहं सक्के केणइ देवेण वा^१ •दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किपुरिसेण वा महोरणेण वा गंधवेण वा^२ निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, तुमं णं जा^३ सद्धा तं करेहि त्ति कट्टु अभीए जाव^४ अभिन्नमुहराग-नयणवण्णे अदीण-विमण-माणसे निच्चले निप्फंदे^५ तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥
७६. तए णं से दिव्वे पिसायरूवे अरहण्णगं समणोवासगं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—हंभो अरहण्णगा ! जाव^६ धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥
७७. तए णं से दिव्वे पिसायरूवे अरहण्णगं धम्मज्झाणोवगयं पासइ, पासित्ता वलियतरागं आसुरत्ते तं पोयवहणं दोहि अंगुलियाहि गेण्हइ, गेण्हित्ता सत्तट्ठतलं^७ •प्पमाणमेत्ताइं उड्डं वेहासं उव्विहइ, उव्विहिता^८ अरहण्णगं एवं वयासी—हंभो अरहण्णगा ! अपत्थियपत्थया^९ ! नो खलु कप्पइ तव सील-व्वय^{१०} •गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा । तं जइ णं तुमं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं न चालेसि न खोभेसि न खंडेसि न भंजेसि न उज्झेसि न परिच्चयसि, तो ते अहं एयं पोयवहणं अंतो जलंसि निव्वोलेमि, जेणं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चैव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
७८. तए णं से अरहण्णगे समणोवासए तं देवं मणसा चैव एवं वयासी—अहं णं देवानुप्पिया ! अरहण्णए नामं समणोवासए—अहिगयजीवाजीवे नो खलु अहं सक्के केणइ देवेण वा दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किपुरिसेण वा महोरणेण वा गंधवेण वा निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, तुमं णं जा सद्धा तं करेहि त्ति कट्टु अभीए जाव^{११} अभिन्नमुहराग-नयणवण्णे अदीण-विमण-माणसे निच्चले निप्फंदे

१. निच्छोलेमि (क) ।

२. जाणं (क, ग, घ) ।

३. × (ग) ।

४. सं० पा०—देवेण वा जाव निग्गंथाओ ।

५. जाव (ख, ग, घ) अशुद्धं प्रतिभाति ।

६. ना० १।८।७३ ।

७. निप्फंदे (ख) ।

८. ना० १।८।७४, ७५ ।

९. सं० पा०—सत्तट्ठतलाइं जाव अरहण्णगं ।

१०. पू०—ना० १।८।७४ ।

११. सं० पा०—सीलव्वय तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए ।

१२. ना० १।८।७३ ।

अवक्कमामि' उत्तरवेउव्वियं रुवं विउव्वामि, विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए' देवगईए' जेणेव लवणसमुद्वे जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता देवाणुप्पियस्स उवसगं करेमि, नो चेव णं देवाणुप्पिए भीए' *तत्थे च्चनिए संभंते आउले उव्विग्गे भिण्णमुहराग-नयणवण्णे दीणविमणमाणसे जाए' । तं जं णं सक्के देविदे देवराया एवं वयइ, राच्चे णं ए'समुद्वे । तं दिट्ठे णं देवाणुप्पियस्स इड्डी' *जुई जसो वलं वीरियं पुरिसकार' -परलकमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए । तं खामेमि णं देवाणुप्पिया । खमेसु णं देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहसि णं देवाणुप्पिया ! नाइ भुज्जो एवंकरणवाए त्ति कट्ठु पंजलिउत्ते पायवडिए एयमट्ठं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेइ, अरहण्णगस्स य दुवे कुंडलजुयले दलयइ, दलइत्ता जामेव दिंसि पाउव्भूए तामेव दिंसि पडिगए ॥

८०. तए णं से अरहण्णए निरुवसगमिति कट्ठु पडिमं पारेइ ॥

८१. तए णं ते अरहण्णगपामोक्खा' *संजत्ता-नावा' वाणियगा दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयं लवेति, लवेत्ता सगडि'-सागडं सज्जेति, तं गणिमं धरिमं मेज्जं परिच्छेज्जं च सगडि-सागडं संकामेति, संकामेत्ता सगडि-सागडं जोविति' जोवित्ता जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मिहिलाए रायहाणीए वहिया अग्गुज्जाणंसि सगडि-सागडं मोएति, मोएत्ता महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं दिव्वं कुंडलजुयलं च गेण्हंति, गेण्हित्ता [मिहिलाए रायहाणीए' ?] अणुप्प-विसंति, अणुप्पविसित्ता जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल' *परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु' महत्थं' *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं' दिव्वं कुंडलजुयलं च उवणेति ॥

८२. तए णं कुंभए राया तेसि संजत्ता' *नावावाणियगाणं तं महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं दिव्वं कुंडलजुयलं च' पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्लि विदेहवररायकन्नं सदावेइ, सदावेत्ता तं दिव्वं कुंडलजुयलं मल्लीए विदेह-रायकन्नगाए पिणद्धेइ, पिणद्धेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

१. २, ३. पू०—राय सू० १० ।

४. सं० पा०—भीया वा'...

५. सं० पा०—इड्डी जाव परकम्मे ।

६. सं० पा०—पामोक्खा जाव वाणियगा ।

७. सगड (ग, घ) ।

८. जोएति (क) ।

९. 'क' प्रती अतो पाठः 'महत्थं' अतः प्राग्

लिखितो लभ्यते, किन्तु वस्तुतः कोष्ठक-स्थाने युज्यते । अन्यादर्शेषु नासौ लब्धोस्ति ।

१०. सं० पा०—करयल' ।

११. सं० पा०—महत्थं' ।

१२. सं० पा०—संजत्तगाणं जाव पडिच्छइ ।

मल्ली विदेहरायवरकन्ता अच्चेराण दिट्ठे । तं नो मनु अण्णा कावि तारिसिया देवकन्ता वा' *अमुरकन्ता वा नागकन्ता वा जवकन्ता वा गंधव्वकन्ता वा रायकन्ता वा ° जारिसिया णं मल्ली विदेहरायवरकन्ता ॥

८७. तए णं चंदच्छाए अरहण्णगपामोक्खे' सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ ॥

८८. तए णं चंदच्छाए वाणियग-जणियहासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—जाव' मल्लि विदेहरायवरकन्तं गम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका' ॥

८९. तए णं से दूए चंदच्छाएणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठुट्ठे जाव' पहारेत्थ गमणाए ॥

रुप्पि-राय-पदं

९०. तेणं कालेणं तेणं समएणं कुणाला नाम जणवए होत्था । तत्थ णं सावत्थी नाम नयरी होत्था । तत्थ णं रूपी कुणालाहिबई नाम राया होत्था । तस्स णं रुप्पिस्स धूया धारिणीए देवीए अत्तया सुवाहू नाम दारिया होत्था—सुकुमाल-पाणिपाया' रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ॥

९१. तीसे णं सुवाहूए दारियाए अण्णया चाउम्मासिय-मज्जणए जाए यावि होत्था ॥

९२. तए णं से रूपी कुणालाहिबई सुवाहूए दारियाए चाउम्मासिय-मज्जणयं उवट्ठियं जाणइ, जाणित्ता कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सुवाहूए दारियाए कल्लं चाउम्मासिय-मज्जणए भविस्सइ, तं तुव्वे णं रायमग्गमोगाढंसि चउक्कंसि' जल-थलय-दसद्धवण्णं मल्लं साहरह' *जाव' एणं महं सिरिदामगंडं' गंधद्धाणिं मुयंतं उल्लोयंसि ओलएह । ते वि तहेव° ओलयंति" ॥

९३. तए णं से रूपी कुणालाहिबई सुवण्णगार-सेणि सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायमग्गमोगाढंसि पुप्फमंडवंसि नाणाविहपंच-वण्णेहि तंदुलेहि नगरं आलिहह । तस्स बहुमज्जभदेसभाए पट्ठयं रएह, एयमाण-त्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ॥

१. सं० पा०—देवकन्ता वा जाव जारिसिया ।

देवकन्ता (क, ख, ग, घ) ।

२. पामोक्खा (क, ख, घ) ।

३. ना० १।८।६२ ।

४. *सुक्का (घ) ।

५. ना० १।८।६३ ।

६. पू०—ना० १।१।१७ ।

७. मंडवंसि (क, ख, ग, घ) ।

८. सं० पा०—साहरह जाव ओलयंति ।

९. ना० १।८।४८ ।

१०. पू०—ना० १।८।३० ।

११. ओलेंति (क) ।

१००. तए णं से दूए रुप्पिणा एवं वुत्ते समाने हट्ठुत्ते जाव'० जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

संख-राय-पदं

१०१. तेणं कालेणं तेणं समएणं कासी नामं जणवए होत्था । तत्थ णं वाणारसी नामं नयरी होत्था । तत्थ णं संखे नामं कासीराया होत्था ॥

१०२. तए णं तीसे मल्लीए विदेहवररायकन्नाए' अण्णया कयाइं तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधी विसंघट्टिए यावि होत्था ॥

१०३. तए णं से कुंभए राया सुवण्णगारसेणि सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुम्हे णं देवाणुप्पिया । इमस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधि' संघाडेह, [संघाडेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह' ?] ॥

१०४. तए णं सा सुवण्णगारसेणी एयमट्ठं तहत्ति पडिमुणेइ, पडिमुणेत्ता तं दिव्वं कुंडलजुयलं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव सुवण्णगार-भिसियाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवण्णगार-भिसियासु निवेसेइ, निवेसेत्ता वट्ठहिं आएहि य' •उवाएहि य उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मयाहि य पारिणामियाहि य वुद्धीहि' परिणामेमाणा इच्छंति तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधि घडित्तए, नो चेव णं संचाएइ घडित्तए ॥

१०५. तए णं सा सुवण्णगारसेणी जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल'•परिगगहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु जएणं विजएणं वद्धावेइ', वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु सामी ! अज्ज तुम्हे' अम्हे सद्दावेह, जाव' संधि संघाडेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तए णं अम्हे तं दिव्वं कुंडलजुयलं गेण्हामो, गेण्हित्ता जेणेव सुवण्णगार-भिसियाओ तेणेव उवगच्छामो जाव' नो संचाएमो संधि' संघाडेत्तए । तए णं अम्हे सामी ! एयस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स अण्णं सरिसयं कुंडलजुयलं घडेमो ॥

१०६. तए णं से कुंभए राया तीसे सुवण्णगारसेणीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिकिए मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडि निडाले साहट्ठु एवं वयासी—केस णं तुम्हे कलाया णं भवह, जे णं तुम्हे इमस्स

१. ना० १।८।६३ ।

२. °कन्नायाए (ख) ।

३. संधी (क, ख, ग, घ) ।

४. स्वर्णकारश्चेण्या राशे निवेदने कोष्ठकवर्ती पाठो विद्यते । द्रष्टव्यम्—सू० १०५ । तेन अत्रासी युज्यते ।

५. सं० पा०—आएहि य जाव परिणामेमाणा ।

६. सं० पा०—करयलवद्धावेत्ता ।

७. तुम्हे (ग) ।

८. ना० १।८।१०३ ।

९. ना० १।८।१०४ ।

१०. × (ख, घ) ।

वयासी—जाव' मल्लि विदेहरायवरकन्नं मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका ॥

११३. तए णं से दूए संखेणं एवं वुत्ते समाने हट्टुत्तुं जाव' जेणेव मिहिला नयरी तेणेव ० पहारेत्थ गमणाए ॥

अदीणसत्तु-राय-पदं

११४. तेणं कालेणं तेणं समएणं कुरु नामं जणवए होत्था । तत्थ णं हत्थिणाउरे नामं नयरे होत्था । तत्थ णं अदीणसत्तु नामं राया होत्था जाव' रज्जं परासेमाणे विहरइ ॥

११५. तत्थ णं मिहिलाए तस्स णं कुंभगस्स रण्णो पुत्ते पभावईए देवीए अत्तए मल्लीए अणुमग्गजायए मल्लदिन्ने' नामं कुमारे सुकुमालपाणिपाए जाव' जुवराया यावि होत्था ॥

११६. तए णं मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइ कोडुंवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—गच्छह णं तुब्भे मम पमदवणंसि एगं महं चित्तसभं करेह—अणेग-खंभसयसण्णिविट्ठं' एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तेवि तहेव पच्चप्पिणंति ॥

११७. तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगर-सेणि सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं' देवाणुप्पिया ! चित्तसभं हाव-भाव-विलास-विट्ठोयकलिएहि रुवेहि चित्तेह', •चित्तेत्ता एयमाणत्तियं ० पच्चप्पिणह ॥

११८. तए णं सा चित्तगर-सेणी एयमट्ठं' तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव सयाइ गिहाई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तूलियाओ वण्णए य गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव चित्तसभा तेणेव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता भूमिभागे विरचति, विरचित्ता भूमि सज्जेइ, सज्जेत्ता चित्तसभं हाव-भाव'-विलास-विट्ठोय-कलिएहि रुवेहि ० चित्तेजं पयत्ता यावि होत्था ॥

११९. तए णं एगस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगर-लद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णा-गया—जस्स णं दुपयस्स वा चउप्पयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्स णं देसाणुसारेणं तयाणुरूवं निव्वत्तेइ ॥

१२०. तए णं से चित्तगरे' मल्लीए जवणियंतरियाए'^{१३} जालंतरेण पायंगुट्ठं पासइ । तए

१. ना० १।८।६२।

२. ना० १।८।६३ ।

३. ओ० सू० १४ ।

४. ०दिन्ने (क, ख, ग, घ) ।

५. ओ० सू० १४३ ।

६. पू०—ना० १।१।८६ ।

७. गच्छह णं तुब्भे (ख, घ) ।

८. सं० पा०—चित्तेह जाव पच्चप्पिणह ।

९. दण्डव्यम्—अस्यैवाध्ययनस्य १०४ सूत्रम् ।

१०. सं० पा०—भाव जाव चित्तेजं ।

११. चित्तगरदारए (क, ख, ग, घ) ।

१२. जवणियंतरिए (ख); जवणितरियाए (ग) ।

जियसत्तु-राय-पदं

१३८. तेणं कालेणं तेणं समएणं पंचाले जणधाए । कपिल्लपुदे नयरे । जियसत्तु नामं राया पंचालाहिबई । तस्स णं जियसत्तुस्स धारिणोपामोक्खं देवोसहस्सं आरोहे होत्था ॥
१३९. तत्थ णं मिहिलाए चोक्खा नामं परिव्वाइया—रिउव्वेय*—मज्जुव्वेद-सामवेद-अहव्वणवेद-इतिहासपंचमाणं निघंटुसुट्ठाणं संगोवंगानं सरहस्साणं चउण्हं वेदाणं सारगा जाव* वंभण्णएसु य सत्थंसु० गुपरिणिट्टिया यावि होत्था ॥
१४०. तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया मिहिलाए बह्णं राईसर जाव* सत्थवाहपभिईणं पुरओ दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिगेयं च आघवेमाणी पण्णवेमाणी पख्वेमाणी उवदंसेमाणी विहरइ ॥
१४१. तए णं सा चोक्खा अण्णया कयाइं तिदंडं च कुडियं च जाव* धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हत्ता परिव्वाइयावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पविरल-परिव्वाइया-सद्धि संपरिवुडा मिहिलं रायहाणि मज्झमज्झेणं जेणेव कुंभगस्त रण्णो भवणे जेणेव कन्नंतेउरे जेणेव मल्ली विदेहरायवरकन्ना तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उदयपरिफोसियाए* 'दवभोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए'* निसीयइ, निसीइत्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पुरओ दाणधम्मं च* सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पण्णवेमाणी पख्वेमाणी उवदंसेमाणी० विहरइ ॥
१४२. तए णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी—तुवभण्ण* चोक्खे ! किमूलए धम्मे पण्णत्ते ?
१४३. तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लि विदेहरायवरकन्नं एवं वयासी—अम्हं णं देवाणुप्पिए ! सोयमूलए धम्मे पण्णत्ते । जं णं अम्हं किंचि असुई भवइ तं णं उदएण य मट्टियाए* *य सुई भवइ । एवं खलु अम्हे जलाभिसेय-पूयप्पाणो* अविगघेणं सगं गच्छामो ॥
१४४. तए णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी—चोक्खे* ! से जहानामए केइ पुरिसे सहिरकयं वत्थं सहिरेणं चेव धोवेज्जा, अत्थि णं

१. ओरोहो (क); उवरोहे (ख) ।

२. चोक्खी (ख) ।

३. सं० पा०—रिउव्वेय जाव परिणिट्टिया ।

४. ओ० सू० ९७ ।

५. ना० १।५।६ ।

६. ओ० सू० ११७ ।

७. *फासियाए (क, ग) ।

८. *पच्चत्थुयाते भिसियाते (ख, घ) ।

९. सं० पा०—दाणधम्मं च जाव विहरइ ।

१०. तुवभेणं (ख, घ) अशुद्धं प्रतिभाति ।

११. सं० पा०—मट्टियाए जाव अविगघेणं ।

१।५।६० सूत्रे एतत् वर्णनं किञ्चित् परिवर्तनेन लभ्यते ।

१२. चोक्खा (ख, घ) ।

अवभृष्टेऽ, अवभृष्टेऽत्ता चोक्त्वा सक्तारेऽ सम्मानेऽ, सक्तारेऽत्ता सम्मानेऽत्ता आस-
णेऽ उवनिमतेऽ ॥

१५१. तए णं सा चोक्त्वा उदगपरिफोसियाए' •द्वभोवरि पञ्चसुगाए • भिसियाए
निविसइ', निविसित्ता जियसत्तुं रायं रज्जे य' •रुद्धे य कोमे य कोट्टागारे य
वले य वाहणे य पुरे य • अतेउरे य कुसलोदं पच्छइ ॥
१५२. तए णं सा चोक्त्वा जियसत्तुं रण्णो दाणधम्मं च' •तोयधम्मं च तित्थाभि-
सेयं च आघवेमाणी पणवेमाणी पणवेमाणी उवदोमाणी • विहरइ ॥
१५३. तए णं से जियसत्तुं अण्णो ओरोहंमि जायविम्हए चोक्त्वा एवं वयासी—तुमं
णं देवाणुप्पिया ! ब्रह्मणि गामागर जाव' सण्णिवेसंमि आहिइसि, ब्रह्मण य
राईसर' सत्थवाहप्पभिईणं गिहाइ अणुप्पविससि, तं अत्थियायं ते कस्सइ रण्णो
वा' •ईसरस्स वा कहिचि • एरिसए ओरोहे दिट्ठपुब्बे, जारिसए णं इमे मम
ओरोहे ?
१५४. तए णं सा चोक्त्वा परिव्वाइया 'जियसत्तुणा एवं वुत्ता समाणी ईसि विहसियं'
करेइ, करेत्ता एवं वयासी—सरिसए णं तुमं देवाणुप्पिया ! तस्स अगडददुस्स।
के णं देवाणुप्पिए ! से अगडददुरे ?
जियसत्तु ! से जहानामए अगडददुरे सिया । सेणं तत्थ जाए तत्थेव वुड्ढे अण्णं
अगडं वा तलागं वा दहं वा सरं वा सागरं वा अपासमाणे मण्णइ—अयं चेव
अगडे वा' •तलागे वा दहे वा सरे वा • सागरे वा ।
तए णं तं कूवं अण्णे सामुदए ददुरे हव्वमागए ।
तए णं से कूवददुरे तं सामुदयं' ददुरं एवं वयासी—से के' तुमं देवाणुप्पिया !
कत्तो वा इह हव्वमागए ?
तए णं से सामुदए ददुरे तं कूवददुरं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया !
अहं सामुदए ददुरे ।

१. सं० पा०—उदगपरिफोसियाए जाव भिसि-
याए ।

२. निविसइ (क, ख, ग, घ) ।

३. सं० पा०—रज्जे य जाव अतेउरे ।

४. सं० पा०—दाणधम्मं च जाव विहरइ ।

५. ना० १११११८ ।

६. पु०—ना० ११५१६ ।

७. सं० पा०—रण्णो वा जाव एरिसए ।

८. ओरोवे (ख) ।

९. जियसत्तु एवं व ईसि अवहसियं (क, ख,

ग); जियसत्तु एवं वयासी इति अवहसियं
(घ); आदर्शेषु 'एवं व' इति संक्षिप्तं रूपं
लिखितं लभ्यते स्तवकादर्शे तत्र 'एवं
वयासी' इति जातम् । स्तवकारेण 'इमं
कहइ' इत्यर्थोऽपि कृतः । अस्य मौलिकं रूपं
अस्माभिः प्रस्तुतसूत्रस्य षोडशाध्यायने
लब्धम् ।

१०. सं० पा०—अगडे वा जाव सागरे ।

११. समुदयं (घ) ।

१२. केसणं (घ) ।

१५८. तए णं छप्पि दूया जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता मिहिलाए अग्गुज्जाणांसि पत्तयं-पत्तयं संधावारनिवेगं करेति, करेता मिहिलं रायहाणि अणुप्पविसंति, अणुप्पविसत्ता जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता पत्तयं करयल*परिगहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु* साणं-साणं राईणं वयणाइं निवेदेति ॥

कुंभएण दूयाणं असक्कार-पदं

१५९. तए णं से कुंभए तेसि दूयाणं 'अंतियं एयमट्ठं' सोच्चा आसुत्ते* ••• कुविए चंडिकिए मिसिमिसेमाणे* तिवलियं भिउटि निउल्ले साहट्ठु एवं वयासी—न देमि णं अहं तुब्भं मल्लि विदेहरायवरकन्नं ति कट्ठु ते छप्पि दूए असक्कारिय असम्माणिय अवदारेणं* निच्छुभावेइ ॥

१६०. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया कुंभएणं रण्णा 'असक्कारिय असम्माणिय' अवदारेणं* निच्छुभाविया समाणा जेणेव सगा-सगा जणवया जेणेव 'सयाइ-सयाइ नगराइं' जेणेव सया-सया रायाणो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता करयल*परिगहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु* एवं वयासी—एवं खलु सामी! अम्हे जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जेणेव मिहिला तेणेव उवागया जाव" अवदारेणं निच्छुभावेइ । "तं न देइ णं सामी ! कुंभए मल्लि विदेहरायवरकन्नं" साणं-साणं राईणं एयमट्ठं निवेदेति ॥

जियसत्तुपामोक्खाणं कुंभएणं जुज्झ-पदं

१६१. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो तेसि दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुत्ता रुट्ठा कुविया चंडिकिया मिसिमिसेमाणा अण्णमण्णस्स दूय-संपेसणं करेति, करेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव मिहिला तेणेव उवागया जाव" अवदारेणं निच्छूढा । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! कुंभगस्स जत्तं* गेहित्तए ति कट्ठु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं

१. सं० पा०—करयल... ।

२. निवेसंति (क, ग, घ) ।

३. × (ख, ग) ।

४. सं० पा०—आसुरत्ते जाव तिवलियं ।

५. अवदारेणं (क, ख, घ) ।

६. असक्कारिय-असम्माणिया (ख, ग) ।

७. अवदारेणं (क) ।

८. सयाति-सयाति नगराति (ख) ।

९. सं० पा०—करयल* ।

१०. ना० १।८।१५८, १५९ ।

११. ना० १।८।१५८, १५९ ।

१२. जुत्तं (ख, ग) ।

१६६. तए णं से कुंभए जियसत्तुपामोक्कहं छहि राईहि हय-महिं-^१ *पवखोर-
घाइय-विबडियचिध-धय-पडागे किच्छोवगयमाणे दिगोदिसि^२ पडिसेहिए समणे
अत्थामे अवले अवीरिए^३ *अणुरिसवकारपवकमे^४ अधारणिज्जमिति कट्ठ
सिग्घं तुरिय^५ *चवलं चंडं जट्ठं^६ वेइयं जेणव मिहिला तेणव उवागच्छइ,
उवागच्छिता मिहिलं अणुपविसइ,^७ अणुपविसिता मिहिलाए दुवाराइ पिहेइ,
पिहेत्ता रोहसज्जे चिट्ठइ ॥
१६७. तए णं ते जियसत्तुपामोक्कहा छणि रायाणो जेणव मिहिला तेणव उवागच्छंति,
उवागच्छिता मिहिलं रायहाणि निस्संचारं निरुच्चारं सच्चयो समता
ओरंभित्ता णं चिट्ठंति ॥
१६८. तए णं से कुंभए राया मिहिलं रायहाणि आंरुद्धं जाणित्ता अरिभतरियाए
उवट्ठाणसालाए सोहासणवरगए तेसिं जियसत्तुपामोक्कहाणं छहं राईणं
अंतराणि य छिदाणि य 'विवराणि य'^८ सम्माणि^९ य अलभमाणे बहूहि आएहि
य उवाएहि य, उण्णत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मयाहि य पारिणमियाहि
य—बुद्धोहि परिणामेमाणे-परिणामेमाणे किंचि आयं वा उवायं वा अलभमाणे
ओहयमणसंकप्पे^{१०} *करतलपल्हत्थमुहे अट्ठज्झाणोवगए^{११} भियायइ ॥

मल्लीए चित्ताहेउ-पुच्छा-पदं

१६९. इमं च णं मल्ली विदेहरायवरकन्ता ण्हाया^{१२} *कयवलिकम्मा कयकोउय-
मंगलपायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया^{१३} बहूहि खुज्जाहिं^{१४} संपरिवुडा जेणव
कुंभए तेणव उवागच्छइ, उवागच्छिता कुंभगस्स पायग्गहणं करेइ ॥
१७०. तए णं कुंभए मल्लि विदेहरायवरकन्तं नो आढाइ नो परियाणाइ^{१५} तुसिणीए
संचिट्ठइ ॥
१७१. तए णं मल्ली विदेहरायवरकन्ता कुंभगं एवं वयासी—तुव्वे णं ताओ !
अण्णया ममं एज्जमाणि^{१६} *पासित्ता आढाइ परियाणाह अंके निवेसेह^{१७} इयाणि
ताओ ! तुव्वे ममं नो आढाइ नो परियाणाह नो अंके^{१८} निवेसेह^{१९} । किण्णं तुव्वं
अज्ज ओहय^{२०} *मणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुहा अट्ठज्झाणोवगया^{२१} भियायइ ?

१. सं० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहिए ।

२. सं० पा०—अवीरिए जाव अधारणिज्ज^२ ।

३. सं० पा०—तुरियं जाव वेइयं ।

४. *पवेसेइ (ख, ग, घ) ।

५. विरहाणि य (ग); विरहाणि य विवराणि (घ) ।

६. सम्माणि (क, ख, ग) अशुद्धं प्रतिभाति ।

७. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पे जाव भियायइ ।

८. सं० पा०—ण्हाया जाव बहूहि ।

९. पू०—ओ० सू० ७० ।

१०. द्रष्टव्यम्—१।१।३६ सूत्रम् ।

११. एज्जमाणं (ख, ग, घ) । सं० पा०—
एज्जमाणि जाव निवेसेह ।

१२. सं० पा०—ओहय जाव भियायइ ।

१७६. तए णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया' *तयवन्निकम्मा कयकोउय-मंगल°-
पायच्छित्ता सव्वालंकारविभूयिगा वट्ठहिं गुज्जाहिं जाव' परिमिस्सत्ता जेणेव
जालघरण जेणेव कणगमई मत्थयच्छिड्डा पउमुप्पल-पिहाणा पडिमा तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तीमे कणगमईए मत्थयच्छिड्डाए पउमुप्पल-पिहाणाए
पडिमाए मत्थयाओ तं पउमुप्पल-पिहाणं' अक्कोइ । तओ' णं गंधे निद्धावेइ', से
जहाणामए—अहिमडे इ वा जाव' एत्तो अमुभतराए' नेव ॥
१७७. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छणि रायाणो तेणं अमुभेणं गंधेणं अभिभूया
समाणा सएहिं-सएहिं उत्तरिज्जेहिं आसाइं' पिहेत्ति, 'पिहेत्ता परम्मुहा चिट्ठंति ॥
१७८. तए णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियसत्तुपामोक्खा एवं वयासी—किण्णं
तुव्वे देवाणुप्पिया ! सएहिं-सएहिं उत्तरिज्जेहिं' *आसाइं पिहेत्ता° परम्मुहा
चिट्ठह ?
१७९. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा मल्लि विदेहरायवरकन्ना एवं वयंति—एवं खलु
देवाणुप्पिए ! अम्हे इमेणं अमुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं-सएहिं
उत्तरिज्जेहिं' *आसाइं पिहेत्ता° चिट्ठामो ॥
१८०. तए णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियसत्तुपामोक्खे एवं वयासी—जइ ताव
देवाणुप्पिया ! इमीसे कणग' *मईए मत्थयच्छिड्डाए पउमुप्पल-पिहाणाए°
पडिमाए कल्लाकल्लि ताओ मणुण्णाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ एगमेगे
पिडे पक्खिप्पमाणे-पक्खिप्पमाणे इमेयारूवे अमुभे पोगगल'-परिणामे, इमस्स"
पुण ओरालियसरीरस्स खेलासवस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स
सोणियपूयासवस्स दुरुय'-ऊसास-नीसासस्स 'दुरुय-मुत्त-पूइय-पुरीस-पुण्णस्स'"

१. सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता ।

२. ओ० सू० ७० ।

३. पउमं (क, ख, ग, घ) ।

४. ततेणं (ख, घ) ।

५. णिद्धाइ (क); णिद्धवेइ (ख) ।

६. ना० १।८।४२ ।

७. प्रस्तुताध्ययनस्य ४२ सूत्रे 'एत्तो अणिट्ठतराए
चेव अकंततराए चेव' इत्यादि पदानि
दृश्यन्ते । तत्र 'अमुभतराए चेव' इति पदं
नास्ति । अत्र संभवतः 'अणिट्ठतराए'
इत्यादिपदानां सारसंग्रहरूपेण 'अमुभतराए'
इति पदं प्रयुक्तमस्ति ।

८. आसाति (ख, ग, घ) ।

९. पिहिति (क, ग) ।

१०. सं० पा०—उत्तरिज्जेहिं जाव परम्मुहा ।

११. सं० पा०—उत्तरिज्जेहिं जाव चिट्ठामो ।

१२. सं० पा०—कणग जाव पडिमाए ।

१३. पोगगले (क, ख, घ) ।

१४. अतः पूर्वं वाचनान्तरे 'किमंग पुण' इति
लभ्यते । (वृ) ।

१५. दुरुय (घ) । मुखमुखोच्चारणार्थं 'दुरुय'
शब्दस्य 'दुरुय' मितिरूपं कृतं संभाव्यते
अथवा दुरुपार्थवाची देशी शब्दः स्यात् ?
वृत्तौ 'दुरुय' शब्दस्य 'दुरुय' इत्यर्थोस्ति
कृतः ।

१६. दुरुय-मुत्त-पुरिस-पूय-वहुपडिपुण्ण(१।१।१०६)।

१८३. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति ॥
१८४. तए णं महव्वलपामोक्खा रात्तवि य' वालवयंसा एगयओ अभिसमण्णागया वि होत्था ॥
१८५. तए णं मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा जाव' पव्वयामि । तं तुव्वे णं किं करेह ? किं ववसह ? 'किं वा भे हियइच्छिणं गामत्थे' ?
१८६. तए णं जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो मल्लि अरहं एवं वयासी—जइ णं तुव्वे देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा जाव' पव्वयह, अम्हं णं देवाणुप्पिया ! के अण्णे आलंवणे वा आहारे वा पडिबंवे वा ? जह चैव णं देवाणुप्पिया ! तुव्वे अम्हं इओ तच्चे भवग्गहणे वहसु कज्जेसु' य मेढी पमाणं जाव' धम्मधुरा होत्था, तह' चैव णं देवाणुप्पिया ! इण्हि पि जाव' धम्मधुरा भविस्सह । अम्हे वि णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा' भीया जम्मणमरणाणं देवाणुप्पिया'—सद्धि मुंडा भवित्ता" • णं अगाराओ अणगारियं • पव्वयामो ॥
१८७. तए णं मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो एवं वयासी—जइ णं तुव्वे संसारभउव्विग्गा जाव'" मए सद्धि पव्वयह, तं गच्छह णं तुव्वे देवाणुप्पिया ! सएहि-सएहि रज्जेहि जेट्ठपुत्ते" ठावेह, ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ" दुरुहह", मम अंतियं पाउव्वभवह ॥
१८८. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो मल्लिस्स अरहओ एयमद्धं पडिसुणेंति ॥
१८९. तए णं मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो गहाय जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पाएसु पाडेइ ॥
१९०. तए णं कुंभए ते जियसत्तुपामोक्खे विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुष्फ-

१. पिय (ख) ।

२. ना० १।५।८६ ।

३. के भे हियसामत्थे (क, ख, ग); १।५।८६ सूयात् किञ्चित् पाठः स्वीकृतः ।

४. ना० १।५।८६ ।

५. पू०—ना० १।५।९० ।

६. ना० १।५।९० ।

७. तहा (ख, ग, घ) ।

८. ना० १।५।९० ।

९. भउव्विग्गा जाव (क, ख, ग, घ) । अशुद्धं प्रतिभाति ।

१०. देवाणुप्पियाणं (क्व०) ।

११. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वयामो ।

१२. ना० १।५।८६ ।

१३. ०पुत्ते रज्जे (ख, ग, घ) ।

१४. सीविया (क) ।

१५. दुरुडा समाणा (क); अस्याध्ययनस्य १४ सूत्रेपि 'दुरुडा समाणा' इति पाठोस्ति ।

रायहाणि कुंभगरस रण्णो भवणंसि तिणिण कोडिसया अट्टाशोई च कोडीश्रो
असीई रायसहस्साई—इमेयाह्वं अत्थ-संपयाणं साहरत्तु, साहरित्ता मम
एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

१६६. तए णं ते जंभगा देवा वेसमणेणं देवेणं एवं वत्ता समाना जाव' पडिमुनेता
उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति अवक्कमिच्चा वेउच्चियसमुत्वाएणं
समोहणंति, समोहणित्ता संगेज्जाइं जोगणाइं दंडं निगिरंति, जाव' उत्तरवेउ-
च्चियाइं रुवाइं विउच्चंति, विउच्चित्ता ताए उतिकट्टाए जाव' देवगई वीईव-
माणा-वीईवमाणा जेणेव जंवुदीवे दीवे भारदे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी
जेणेव कुंभगरस रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुंभगरस रण्णो
भवणंसि तिणिण कोडिसया जाव' साहरंति, साहरित्ता जेणेव वेसमणे देवे
तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल'•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं
मत्थए अंजलि कट्टु तमाणत्तियं० पच्चप्पिणंति ॥
१६७. तए णं से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविदे देवराया तेणेव उवागच्छइ, उवाग-
च्छित्ता करयलपरिग्गहियं जाव' तमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ॥
१६८. तए णं मल्ली अरहा कल्लाकल्लि जाव मागहयो पायरासो त्ति बहूणं सणाहाण
य अणाहाण य पंथियाण य पहियाण य करोडियाण' य कप्पडियाण य 'एगमेगं
हिरणकोडिं अट्ट य अणूणाइं सयसहस्साई—इमेयाह्वं अत्थ-संपयाणं'
दलयइ ॥
१६९. तए णं कुंभए राया मिहिलाए रायहाणीए तत्थ-तत्थ तहि-तहि देसे-देसे बहूयो
महाणससालाओ करेइ । तत्थ णं वहवे मणुया दिण्णभइ-भत्त-वेयणा विउलं
असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडंति । जे जहा आगच्छंति, तं जहा—पंथिया
वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासंडत्या वा गिहत्या वा, तस्स
य तहा आसत्थस्स वीसत्थस्स सुहासणवरगयस्स तं विउलं असण-पाण-खाइम-
साइमं परिभाएमाणा परिवेसेमाणा' विहरंति ॥
२००. तए णं मिहिलाए नयरीए सिघाडग'••तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-
पहेसु० बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कुंभगरस
रण्णो भवणंसि सव्वकामगुणियं किमिच्छियं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं

१. ना० १।८।१६५ ।

२, ३. राय० सू० १० ।

४. ना० १।८।१६५ ।

५. सं० पा०—करयल जाव पच्चप्पिणंति ।

६. ना० १।८।१६६ ।

७. काउडियाणं (वृषा) ।

८. एगमेगं हत्थामासं ति वाचनान्तरे दृश्यते (वृ) ।

९. परिवेसमाणा (क, ख) ।

१०. सं० पा०—सिघाडग जाव बहुजणो ।

पडिचण्णा ससिखिणियाइं' •दसदधण्णाटं° वत्थाइं पवरं परिहिया करयलं-
 •परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थाए अंजलि कट्ठु° ताहिं इट्ठाहिं' •कत्ताहिं
 पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं वग्गूहिं° एवं वयासी—वुज्झाहिं भगवं लोगणाहा!
 पवत्तेहि धम्मतित्थं जीवाणं हियमुहुनिस्सेयसकरं भविरसउ त्ति कट्ठु दोच्चं पि
 तच्चं पि एवं वयंति, मल्लि अरहं वंदंति नमंरंति, वंदित्ता नमसित्ता जामेव
 दिसि पाउअभूया तामेव दिसि पडिगया ॥

२०४. तए णं मल्ली अरहा तेहि लोगंतिएहि देवेहि संबोद्धिण समाणे जेणेव अम्मा-
 पियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलं •परिग्गहियं दसणहं सिरसा-
 वत्तं मत्थाए अंजलि कट्ठु° एवं वयासी—इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुव्भेहि
 अट्ठमणुण्णाए समाणे मुंडे भवित्ता' •णं अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ।
 अहामुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवं वं करह ॥

२०५. तए णं कुंभए राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव
 भो देवाणुप्पिया ! अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव' अट्ठसहस्सेणं
 भोभेज्जाणं कलसाणं अण्णं च महत्थं° •महग्घं महरिहं विउलं° तित्थयराभि-
 सेयं उवट्ठवेह । तेवि जाव उवट्ठवेत्ति ॥

२०६. तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिदे जाव' अच्चुयपज्जवसाणा आगया ॥

२०७. तए णं सक्के देविदे देवराया आभियोगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—
 खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव'
 अण्णं च" •महत्थं महग्घं महरिहं° विउलं तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेह । तेवि
 जाव उवट्ठवेत्ति । तेवि कलसा 'तेसु चेव कलसेसु'° अणुपविट्ठा ॥

२०८. तए णं से सक्के देविदे देवराया कुंभए य राया मल्लि अरहं सीहासणंसि
 पुरत्थाभिमुहं निवेसेंति", अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव" तित्थयरा-
 भिसेयं अभिसिचंति ॥

२०९. तए णं मल्लिस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया देवा मिहिलं च

१. सं० पा०—सखिखिणियाइं जाव वत्थाइं ।

अत्र वस्तुतः 'जाव परिहिए' इति संक्षेपो
 युज्यते । पूर्वसूत्रेष्वपि इत्यमेव लब्धत्वात् ॥

२. विभक्तिरहितं पदम् ।

३. सं० पा०—करयलं ।

४. सं० पा०—इट्ठाहिं जाव एवं ।

५. सं० पा०—करयलं ।

६. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइत्तए ।

७. राय० सू० २८० ।

८. सं० पा०—महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं ।

९. जंबु° वक्खारो ५ ।

१०. ना० १।८।२०५ ।

११. सं० पा०—अण्णं च तं विउलं ।

१२. ते चेव कलसे (ख, ग) ।

१३. निवेसेइ (क, ख, ग, घ) ।

१४. ना० १।८।२०५ ।

सुबुद्धिस्स उवेहा-पदं

१५. तए णं से सुबुद्धी अमच्चे' •जियसत्तुस्स रण्णो एयमहुं नो आडाइ नो परिया-
णाइ ° तुसिणीए संचिट्ठइ ॥
१६. तए णं से जियसत्तू राया सुबुद्धि अमच्चं दोच्चंणि तच्चंणि एवं वयासी—अहो
णं' •सुबुद्धी ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं अमणुण्णे गंधेणं अमणुण्णे रसेणं
अमणुण्णे फासेणं, से जहानामए—अहिमडे इ वा जाव' अमणामतराए चेव
गंधेणं पणत्ते ° ॥
१७. तए णं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुणा रण्णा दोच्चंणि तच्चंणि एवं वुत्ते समाणे
एवं वयासी—नो खलु सामी ! अम्हं एयंसि फरिहोदगंसि केइ विम्हए । एवं
खलु सामी ! सुब्भिसद्दा वि पोग्गला दुब्भिसद्दात्ताए परिणमंति', •दुब्भिसद्दा
वि पोग्गला सुब्भिसद्दात्ताए परिणमंति । सुब्बा वि पोग्गला दुब्बत्ताए परिण-
मंति, दुब्बा वि पोग्गला सुब्बत्ताए परिणमंति । सुब्भिमंथा वि पोग्गला
दुब्भिमंथात्ताए परिणमंति, दुब्भिमंथा वि पोग्गला सुब्भिमंथात्ताए परिणमंति ।
सुरसा वि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमंति, दुरसा वि पोग्गला सुरसत्ताए
परिणमंति । सुहफासा वि पोग्गला दुहफासत्ताए परिणमंति, दुहफासा वि पोग्गला
सुहफासत्ताए परिणमंति ° । पओग-वीससा-परिणया वि य णं सामी ! पोग्गला
पणत्ता ॥

जियसत्तुस्स विरोध-पदं

१८. तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धि अमच्चं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिया !
अप्पाणं च परं च तदुभयं च वहुणि य असवभावुवभावणाहि मिच्छताभिनिवेसेण
य वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहराहि ॥

सुबुद्धिणा जलसोधन-पदं

१९. तए णं सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्प-
ज्जित्था—अहो णं जियसत्तू राया संते' तच्चे तहिए अवितहे सबूए जिण-
पणत्ते भावे नो' उवलभइ । तं सेयं खलु मम जियसत्तुस्स रण्णो संताणं तच्चाणं
तहियाणं अवितहाणं सबूयाणं जिणपणत्ताणं भावाणं अभिगमणद्वयाए एयमहुं
उवाइणावेत्ताए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता पच्चइएहिं पुरिसेहिं सद्धि अंतरावणाओ'

१. सं० पा०—अमच्चे जाव तुसिणीए ।

२. सं० पा०—अहो णं तं चेव ।

३. ना० १।१२।३ ।

४. सं० पा०—परिणमंति तं चेव ।

५. सच्चे (ख) ।

६. नो सदहइ (क) ।

७. अम्भितरावणाओ (क) ।

उदगरांभारणिज्जेहिं दव्वेहिं संभारेइ, संभारेत्ता जियसत्तुस्स रण्णो पाणिय-
घरियं सद्दवेइ, सद्दवेत्ता एवं वयासी—तुमं णं देवाणुप्पिया ! इमं उदगरयणं
गेण्हाहि, गेण्हत्ता जियसत्तुस्स रण्णो भोगणवेलाए उवट्टवेइ ॥

जियसत्तुणा उदगरयणपसंसा-पदं

२१. तए णं से पाणिय-घरिए सुबुद्धिस्स एयमट्ठं पडिगुणेइ, पडिगुणेत्ता तं उदगरयण
गेण्हइ, गेण्हत्ता जियसत्तुस्स रण्णो भोगणवेलाए उवट्टवेइ ॥
२२. तए णं से जियसत्तु राया तं विपुलं असण-पाण-त्ताइम-साइमं आसाएमाणे
•विसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे एवं च णं० विहरइ । जिमियभुत्तु-
त्तराणए वि य णं० समाणे आयते चोक्खे० परमसुइभूए तंसि उदगरयणंसि
जायविम्हए ते वहवे राईसर जाव' सत्थवाहपभिइओ एवं वयासी—अहो णं
देवाणुप्पिया ! इमे उदगरयणे अच्छे जाव' सत्विदियगाय-पल्हायणिज्जे ॥
२३. तए णं ते वहवे राईसर जाव' सत्थवाहपभिइओ एवं वयासी—तहेव णं सामी !
जण्णं तुव्वे वयह'—इमे उदगरयणे अच्छे जाव' सत्विदियगाय०-
पल्हायणिज्जे ॥

जियसत्तुणा उदगाणयणपुच्छा-पदं

२४. तए णं जियसत्तु राया पाणिय-घरियं सद्दवेइ, सद्दवेत्ता एवं वयासी—एसं भू
तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ आसादिते ?
२५. तए णं से पाणिय-घरिए जियसत्तु एवं वयासी—एसं णं सामी ! मए
उदगरयणे सुबुद्धिस्स अंतियाओ आसादिते ॥
२६. तए णं जियसत्तु सुबुद्धिअमच्चं० सद्दवेइ, सद्दवेत्ता एवं वयासी—अहो णं
सुबुद्धी ! केणं कारणेण अहं तव अणिट्ठे अकूते अप्पिए अमणुण्णे अमणामे जेणं
तुमं मम कल्लाकल्लिं भोगणवेलाए इमं उदगरयणं न उवट्टवेसि ? तं एसं णं
तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ उव्वलद्धे ?

सुबुद्धिस्स उत्तर-पदं

२७. तए णं सुबुद्धी जियसत्तु एवं वयासी—एसं णं सामी ! से फरिहोदए ॥

१. पडिगुणाति (ख) ।

२. सं० पा०—आसाएमाणे जाव विहरइ ।

३. सं० पा०—य णं जाव परमसुइभूए ।

४. ना० १।७।६ ।

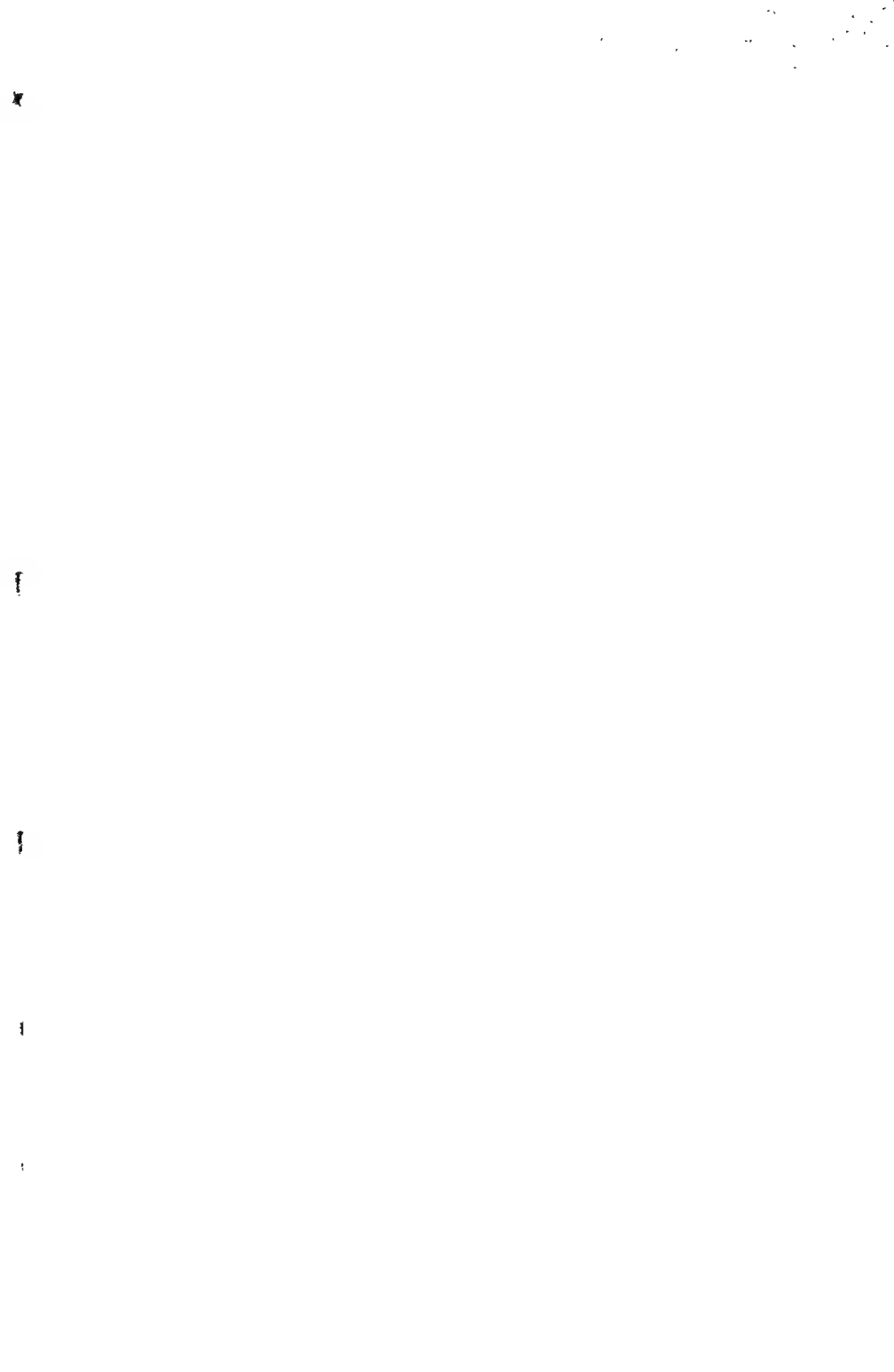
५. ना० १।१२।१६ ।

६. ना० १।७।६ ।

७. सं० पा०—जाव एवं चैव पल्हायणिज्जे ।

८. ना० १।१२।१६ ।

९. कत्तो (ख); कत्तो (ग) ।



वि यत्थ' बहुजणो 'किं ते' जलरमण-विनिहमज्जण-कयलिलयाहरय'-कुमुम-सत्थरय-अण्णमण्ण-कयरिभिगसंकुलेगु सुहंसुहेणं अभिरममाणो-अभिरम-माणो' विहरइ ॥

२५. तए णं नंदाए पोक्खरिणीए' बहुजणो पहागमाणो य पियमाणो य पाणियं च' संवहमाणो य अण्णमण्णं एवं वयायो—धण्णे' णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियार-सेट्ठी, कयत्थे' •णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयल्लवत्थे णं देवाणु-प्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कया णं लोया ! सुलद्धे माणुस्साए' जम्मजीवियफले [नंदस्स मणियारस्स ?] ? जस्स णं इमेयारुवा नंदा पोक्खरिणी चाउवकोणा जाव' पडिह्वा" जाव" रायगिहविणिग्गओ जत्थ बहुजणो आराणेसु य रायणेसु य सण्णिसण्णो य संतुयट्ठी य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहंसुहेणं विहरइ । तं धन्ने णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयत्थे णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयल्लवत्थे णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कया णं लोया ! सुलद्धे माणुस्साए जम्मजीवियफले नंदस्स मणियारस्स ?
२६. तए णं रायगिहे सिघाडग'-•तिग-चउवक-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु' बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं पल्लवेइ -धन्ने णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी सो चेव गमओ जाव सुहंसुहेणं विहरइ ॥
२७. तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठे 'धाराहत - कलंवगं विव'" समूसवियरोमकूवे परं सायासोक्खमणुभवमाणे विहरइ ॥

नंदस्स रोगुप्पत्ति-पदं

२८. तए णं तस्स नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स अण्णया कयाइ सरीरगंसि सोलस रोगा-यंका" पाउब्भूया । [तं जहा—

१. जत्थ (क, ख); तत्थ (घ) ।

२. किं तत् 'यत् करोति' इति शेषः ।

३. °धरय (क) ।

४. अभिरममाणे (क) ।

५. पुक्खरणीए (क); पोक्खरणीए (ख) ।

६. वा (क) ।

७. धण्णेसि (क, घ) ।

८. सं० पा०—कयत्थे जाव जम्म° ।

९. ना० १।१३।१७ ।

१०. पडिह्वा जस्स णं पुरत्थिमिल्ले तं चेव चउसु वि वणसंडेसु (क, ख, ग, घ) ।

११. ना० १।१३।१८-२४ ।

१२. सं० पा०—सिघाडग जाव बहुजणो ।

१३. धाराहयकलंवकं पिव (ख, ग); °कयंबकं पिव (घ) ।

१४. रोगात्तंका (क); रोगायंका (ख) ।

सिरावत्वीहि' य तण्णाहि य पुट्ठाणहि य 'छल्लीहि य वल्लीहि य' मूलेहि य
कंदेहि य पत्तेहि य पुष्पेहि य फलेहि य धीणहि य मित्तिआहि य मुत्तिआहि य
ओरहेहि य भेगज्जेहि य' इच्छंति भेगि मोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंके
उवसामित्तण, नो चेव णं संचाणंति उवसामित्तण ॥

३१. तए णं ते ब्रह्मे वेज्जा' य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुमला य
कुसलपुत्ता य जाहे नो संचाणंति तेसि सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंके
उवसामित्तण, ताहे संता तंता परितंता' •निव्विण्णा समाना जामेव दिसं
पाउव्भूया तामेव दिसं° पडिगया ॥

भगवओ उत्तरे ददुुरदेवस्स ददुुरभव-पवं

३२. तए णं नंदे मणियारेदुो तेहि सोलसेहि रोगायंकेहि अभिभूए समाने नंदाए
पुक्खरिणीए मुच्छिण गट्ठाए गिद्धे अज्झाववण्णे तिरिक्खजोणिएहि निवद्धाउए
वद्धपएसिण अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे कालमाणे कालं किच्चा नंदाए पोक्खरिणीए
ददुुरीए कुच्छिसि ददुुरत्ताए उववण्णे ॥

३३. तए णं नंदे' ददुुरे' गट्ठाओ विणिमुक्के समाने उम्मुक्कवालभावे' विण्णय-
परिणयमित्ते' जोव्वणगमणुप्पत्ते नंदाए पोक्खरिणीए अभिरममाणे-अभिरममाणे
विहरइ ॥

३४. तए णं नंदाए पोक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणियं च
संवहमाणो य अण्णमण्ण" एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं पखुवेइ—
धन्ने णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारे, जस्स णं इमेयारुवा नंदा पुक्खरिणी—
चाउक्कोणा जाव" पडिक्खा" ॥

ददुुरस्स जाइसरण-पवं

३५. तए णं तस्स ददुुरस्स तं अभिक्खणं-अभिक्खणं बहुजणस्स अंतिए एयमड्डं

१. सिरावेहेहि (क); अवरहसिरावत्वीहि
(ख); सिरावेहेहि य (ग) ।

२. छल्लीहि य (ख); वल्लीहि य छल्लीहि य
(घ) ।

३. य आसज्जेहि य (क, ग); आइज्जेहि य
(घ) ।

४. रोगातंके (क, ग) ।

५. विज्जा (क, ख, ग) ।

६. सं० पा०—परितंता जाव पडिगया ।

७. नंदे जीवे (घ) ।

८. ददुुरीए (घ) ।

९. उमुक्क० (ख, घ) ।

१०. विण्णाय० (घ) ।

११. अण्णमण्णस्स (क, ग, घ) ।

१२. ना० १।१३।१७ ।

१३. पडिक्खा जस्स णं पुरत्थिमिल्ले वणत्तं

चित्तसभा अणेगखंभ(क, ख, ग, घ); पृ०—

ना० १।१३।१८-२४ ।

३८. तए णं नंदाए पोक्खरिणीए बहुजणो 'ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणियं च संवहमाणो य' अण्णमण्णो *एवमाइवसाइ—एवं मनु० समणे भगवं महावीरे इहेव गुणसिलए चेइए समोसहे । तं गच्छामो णं देवाणुणिया । समणं भगवं महावीरं वंदामो *णमंसामो सत्कारेमो सम्माणेमो कल्लानं मंगलं देवयं चेइयं० पज्जुवासामो । एयं णे द्दुभवे परभवे य हियाए *सुहाए खमाण निस्सोयसाए० आणुगामियत्ताए भविरसाइ ॥

दद्दुरस्स समवसरणं पइ गमण-पदं

३९. तए णं तस्स दद्दुरस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा नितम्म अयमेवाह्वे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे भगवं महावीरे समोसहे । तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि—एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता नंदाओ पोक्खरिणीओ सणियं-सणियं पच्चुत्तरेइ, जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए दद्दुरगईए वीईव-यमाणे-वीईवयमाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

४०. इमं च ण सेणिए राया भंभसारं 'ण्हाए जाव' सच्चालंकारविभूसिए हत्थिखं-वरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामरेहि य उद्दुब्ब-माणेहिं महयाहय-गय-रह-भड-चडगर-[कलियाए?] चाडरणिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे मम पायवंदए हव्वमागच्छइ ॥

दद्दुरस्स मच्चु-पदं

४१. तए णं से दद्दुरे सेणियस्स रण्णो एगेणं आसकिसोरएणं वामपाएणं अवकते समाणे अंतनिग्घाइए कए यावि होत्था ॥

४२. तए णं से दद्दुरे अथामे अवले अवीरिए अपुरिसवकारपरवकमे अधारणिज्जमिति कट्ठु एगंतमववकमइ, करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव" सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव" सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं

१. ण्हाइ ३ (क, ख, ग); ण्हाणे य ३ (घ) ।

असौ पाठः ३४ सूत्रेण पूरितः ।

२. सं० पा०—अण्णमण्णं जाव समणे ।

३. सं० पा०—वंदामो जाव पज्जुवासामो ।

४. हियाए (क, ख, ग) सं० पा०—हियाए जाव आणुगामियत्ताए ।

५. पू०—ना० १।१।३।७ ।

६. उत्तरेइ, २ (ख) ।

७. उक्किट्ठाए ५ (क, ख) ।

८. भिभसारि (क); भिभसारि(ख); भिभासारे (घ) ।

९. ना० १।१।५१ ।

१०, ११. ओ० सू० २१ ।

चौदसमं अउभयणं

तेयली

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं तेरसमस्स नायज्ज-
यणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चौदसमस्स णं भंते ! नायज्जयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंवू ! तेणं कालेणं तेणं समाएणं तेयलिपुरं नाम नयरं । पमयवणे
उज्जाणे । कणगरहे राया ॥
३. तस्स णं कणगरहस्स पउमावई देवी ॥
४. तस्स णं कणगरहस्स तेयलिपुत्ते नामं अमच्चे—'साम-दंड'^१—●भेय-उवप्पयाण-
नीति-सुपउत्त-नयविहण्णू' विहरइ ॥
५. तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नामं मूसियारदारए होत्था—अड्ढे जाव' अपरिभूए ॥
६. तस्स णं भद्दा नामं भारिया ॥
७. तस्स णं कलायस्स मूसियारदारगस्स धूया भद्दाए अत्तया' पोट्टिला नामं
दारिया होत्था—रूवेण य जोव्वणेण' य लावणेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ-
सरीरा ॥

पोट्टिलाए कीडा-पदं

८. तए णं सा पोट्टिला दारिया अण्णया कयाइ ण्हाया सव्वालंकारविभूसिया
चेडिया-चक्कवाल-संपरिवुडा उप्पि पासायवरगया आगासतलगंसि कणग'-
तिट्ठसएणं कीलमाणी-कीलमाणी विहरइ ॥

१. ना० १११७ ।

४. ना० ११५७ ।

२. सं० पा०—साम-दंड० । असो अपूर्णः

५. अत्तिया (क, ख, ग) ।

पाठः 'जाव' आदिपूर्तिसंकेत-रहितोस्ति ।

६. × (ग) ।

३. पू०—ना० ११११६ ।

७. कणगमयेण (घ) ।

सलाहणिज्जं वा सरिसो वा मंजीमो वा पिज्जडं णं पोट्टिला दारिया तेयलिपुत्तरस । तो' भण देवाणुप्पिया ! किं ययामो सु' ॥

१६. तए णं कलाए मूसियारदारए ते अविभतरटाणिज्जे पुरिमं एवं वयासो—एव चेव णं देवाणुप्पिया ! मम मुक्के जण्णं तेयलिपुत्ते मम दारियानिमित्तेणं अणुरगहं करेइ । ते अविभतरटाणिज्जे पुरिमं निपुत्तेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ-गंध'-मल्लालंकारेणं सवकारेइ सम्माणेइ, सवकारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

१७. [तए णं ते अविभतरटाणिज्जा पुरिमा' ?] कलायस्स मूसियारदारयस्स गिहाओ पडिनियत्तंति', जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छति, उवा-गच्छित्ता तेयलिपुत्तं अमच्चं पयमदुं निवेइति' ॥

पोट्टिलाए विवाह-पदं

१८. तए णं कलाए मूसियारदारए अण्णया कयाइं सोहणंसि तिहि-करण-नवखत्त-मुहुत्तंसि पोट्टिलं दारियं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं सीयं दुरुहत्ता मित्त-नाइ'-
•नियग-सयण-संवंधि-परियणेणं सद्धि° संपरिवुडे साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सव्विड्ढीए' तेयलिपुरं नयरं मज्झमज्जेणं जेणेव तेयलिस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियात्ताए दलयइ ॥

१९. तए णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं दारियं भारियात्ताए उवणीयं पासइ, पासित्ता हड्डुडे पोट्टिलाए सद्धि पट्ठयं दुरुहइ, दुरुहित्ता सेयापीएहि' कलसेहि अप्पाणं मज्जावेइ, मज्जावेत्ता अगिहोमं कारेइ, कारेत्ता पाणिग्गहणं करेइ, करेत्ता पोट्टिलाए भारियाए' मित्त-नाइ'-•नियग-सयण-संवंधि°-परियणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ'-•गंध-मल्लालंकारेणं सवकारेइ सम्माणेइ, सवकारेत्ता सम्माणेत्ता° पडिविसज्जेइ ॥

२०. तए णं से तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइ" •माणु-स्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे° विहरइ ॥

१. ता (क, घ) ।

२. सुवकं (घ) ।

३. जाव (ख, घ) ।

४. कोण्डकान्तर्गतः पाठः प्रतिपु नोपलभ्यते ।

५. नियत्तंति २ (क, ख, ग); पडिनिक्खमइ (घ) ।

६. निवेयंति (ख); निवेत्तेति (ग) ।

७. सं० पा०—नाइ० ।

८. पू०—ना० १।१।३३ ।

९. सेयपीएहि (ग) ।

१०. भारियाए सद्धि (घ) ।

११. सं० पा०—नाइ जाव परियणं ।

१२. सं० पा०—वत्थ जाव पडिविसज्जेइ ।

१३. सं० पा०—उरालाइं जाव विहरइ ।

अमणुणा अमणामा जाया मानि होह्या—नेच्छद् णं तेयलिपुत्ते पोद्विलाए
नामगोयमवि सवणयाए, किं पुण दंसणं वा परिभोगं वा ?

३७. तए णं तीसे पोद्विलाए अणुणा कयाए पुचरस्ताथस्ताकालसमयासि इमेवाल्वे
अज्झत्थिए, चित्तिए पत्थिए, मणोगए, संकप्पे सुमुणज्जितथा—एवं वलु अहं
तेयलिस्स पुंवि इट्ठा कंता पिया मणुणा मणामा आसि, इयाणि अणिट्ठा अकंता
अप्पिया अमणुणा अमणामा जाया । नेच्छद् णं तेयलिपुत्ते मम नाम'
•गोयमवि सवणयाए, किं पुण दंसणं वा परिभोगं वा ? [ति कट्ठु ?]
ओह्यमणसंकप्पा' •करतलपल्हत्थमुही अट्ठज्झाणोवगया ° भियावइ ॥

पोद्विलाए दाणसाला-पदं

३८. तए णं तेयलिपुत्ते पोद्विलं ओह्यमणसंकप्पं' •करतलपल्हत्थमुहि अट्ठज्झाणो-
वगयं ° भियायमाणि पासइ, पासित्ता एवं वयासी—मा णं तुमं देवानुप्पिए !
ओह्यमणसंकप्पा' •करतलपल्हत्थमुही अट्ठज्झाणोवगया ° भियाहि । तुमं णं
मम महाणसंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेहि, उवक्खडावेत्ता
वहूणं समण-माहण'-•अतिहि-किवण-°-वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी'
य विहराहि ॥
३९. तए णं सा पोद्विला तेयलिपुत्तेणं अमच्चेणं एवं वुत्ता समाणी' हट्ठा तेयलि-
पुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता कल्लाकल्लि महाणसंसि विपुलं असण-
•पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता वहूणं समण-माहण-अतिहि
किवण-वणीमगाणं देयमाणी य ° दवावेमाणी य विहरइ ॥

अज्जा-संघाडगस्स भिक्खायरियागमण-पदं

४०. तेणं कालेणं तेणं समएणं सुव्वयाओ नामं अज्जाओ इरियासमियाओ'
•भासासमियाओ एसणासमियाओ आयाण-भंड-मत्त-णिकखेवणासमियाओ
उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमियाओ मणसमियाओ
वइसमियाओ कायसमियाओ मणगुत्ताओ वइगुत्ताओ कायगुत्ताओ गुत्ताओ
गुत्तिदियाओ ° गुत्तवंभचारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुंवि

१. सं० पा०—ताम जाव परिभोगं ।

२. सं० पा०—ओह्यमणसंकप्पा जाव भियायइ ।

३. सं० पा०—ओह्यमणसंकप्पं जाव भियाय-
माणि ।

४. सं० पा०—ओह्यमणसंकप्पा ° ।

५. सं० पा०—माहण जाव वणीमगाणं ।

६. देवावेमाणी (क) ।

७. समाणा (ख, ग) ।

८. सं० पा०—असणं जाव दवावेमाणी ।

९. सं० पा०—इरियासमियाओ जाव गुत्तवंभ-
चारिणीओ ।

पोट्टि लदेवेण तेयलिपुत्तस्स संबोह-पदं

६२. तए णं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अभिक्खणं-अभिक्खणं केवलपण्णत्ते धम्मे संबोहेइ, नो चेव णं से तेयलिपुत्तं संवुज्झइ ॥
६३. तए णं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारुवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु कणगज्झए राया तेयलिपुत्तं आढाइ जाव' भाग च ने प्रगुवइइ, तए णं से तेप्रलिपुत्ते अभिक्खणं-अभिक्खणं संत्रोहिज्जमाणे वि धम्मे नो संवुज्झइ । त सेयं खनु ममं कणगज्झयं तेयलिपुत्तायां विप्परिणा-मित्तए त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कणगज्झयं तेयलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ ॥
६४. तए णं तेयलिपुत्तं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिगगरे तेयसा जलजे प्हाए' •कयवलिकम्ममे कयकाउय-मंगल-पाय-च्छित्त आसत्तववरगए वहुहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥
६५. तए णं तेयलिपुत्तं अमच्चं जे जहा बहवे राईसर-तलवर' •माडंविज-कोडुंविज-इव्व-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह' •पभियओ' पासंति ते तहेव आढायंति परियाणंति अण्वभुट्ठेति, अंजलिपग्गहं' करेति, इट्ठाहिं कंताहिं जाव' वग्गहिं 'आलवमाणा य संलवमाणा' य पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य' समणुगच्छंति ॥
६६. तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए तेणेव उवागच्छइ ॥
६७. तए णं से कणगज्झए तेयलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाइ' नो परि-याणाइ नो अण्वभुट्ठेइ, अणाढायमाणे' अपरियाणमाणे अण्वभुट्ठेमाणे परम्मुहे संचिट्ठइ ॥
६८. तए णं से तेयलिपुत्ते अमच्चे कणगज्झयस्स रण्णो अंजलिं करेइ । 'तओ य णं' से कणगज्झए राया अणाढायमाणे' अपरियाणमाणे अण्वभुट्ठेमाणे तुसिणीए परम्मुहे संचिट्ठइ ॥

१. ना० १।१।६० ।

२. वड्ढेइ (क, ख, ग, घ) ।

३. ना० १।१।२४ ।

४. सं० पा०—प्हाए जाव पायच्छित्ते ।

५. सं० पा०—तलवर जाव पभियओ ।

६. पभितयो (क); पभिइओ (ग, घ) ।

७. •परिग्गहिं (क); •परिग्गहिय (घ);
•परिग्गहं (ख, ग) ।

८. ना० १।१।४८ ।

९. आलवमाणे य संलवमाणे (ग) ।

१०. य मग्गओ (क, ख, ग, घ) । अत्र 'मग्गओ य'

इति पाठोऽतिरिक्तः सम्भाव्यते । 'पिट्ठओ

य मग्गओ य' एते द्वे अपि पदे समानार्थके

स्तः । अस्याध्ययनस्यैव ७० सूत्रे 'मग्गओ य'

इति पाठो नोपलभ्यते ।

११. आयाणति (क) ।

१२. अणायायमाणे ३(क); अणाढामीणे ३(ग) ।

१३. तए णं (क, ख, घ) ।

१४. अणाढाइज्जमाणे ३(क); अणाढामीणे

(ख, ग); अणादिज्जमाणे (घ) ।

पोट्टि लदेवेण तेयलिपुत्तस्स संबोहे-पवं

६२. तए णं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अभिक्खणं-अभिकव्वणं केवलपण्णत्ते धम्मं संबोहेइ, नो चेव णं से तेयलिपुत्तं संबुज्झइ ॥
६३. तए णं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु कणगज्झए राया तेयलिपुत्तं आढाइ जाव' भाग च ने अणुवड्डइ, तए णं से तेयलिपुत्तं अभिक्खणं-अभिकव्वणं संबोहिज्जमाणे वि धम्मं नो संबुज्झइ । त सेयं खलु ममं कणगज्झयं तेयलिपुत्ताओ विपरिणा-मित्तए त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कणगज्झयं तेयलिपुत्ताओ विपरिणामेइ ॥
६४. तए णं तेयलिपुत्ते कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते ण्हाए' •कयवलिकम्मं कयकांडय-मंगल'-पाय-च्छित्त आसव्ववरणए वड्डहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे साओ गिहाओ निगच्छइ, निगच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥
६५. तए णं तेयलिपुत्तं अमच्चं जे जहा वहेवे राईसर-तलवर' •माडं विय-कोडुं विय-इव्वभ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह' •पभियओ' पासंति ते तेहेव आढायंति परियाणंति अव्वभुट्ठेति, अंजलिपग्गहं' करंति, इट्ठाहिं कंताहिं जाव' वग्गूहिं 'आलवमाणा य संलवमाणा' य पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य' समणुगच्छंति ॥
६६. तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए तेणेव उवागच्छइ ॥
६७. तए णं से कणगज्झए तेयलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाइ' नो परि-याणाइ नो अव्वभुट्ठेइ, अणाढायमाणे' अपरियाणमाणे अणव्वभुट्ठेमाणे परम्महे संचिट्ठइ ॥
६८. तए णं से तेयलिपुत्ते अमच्चे कणगज्झयस्स रण्णो अंजलिं करेइ । 'तओ य णं' से कणगज्झए राया अणाढायमाणे' अपरियाणमाणे अणव्वभुट्ठेमाणे तुसिणीए परम्महे संचिट्ठइ ॥

१. ना० १।१।६० ।

२. वड्डेइ (क, ख, ग, घ) ।

३. ना० १।१।२४ ।

४. सं० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते ।

५. सं० पा०—तलवर जाव पभियओ ।

६. पभितथो (क); पभिइओ (ग, घ) ।

७. •परिगहिए (क); •परिगहिय (घ);
•परिगहं (ख, ग) ।

८. ना० १।१।४८ ।

९. आलवमाणे य संलवमाणे (ग) ।

१०. य मग्गओ (क, ख, ग, घ) । अथ 'मग्गओ य'
इति पाठोऽतिरिक्तः सम्भाव्यते । 'पिट्ठओ
य मग्गओ य' एते द्वे अपि पदे समानार्थके
स्तः । अस्याध्ययनस्यैव ७० सूत्रे 'मग्गओ य'
इति पाठो नोपलभ्यते ।

११. आयाणति (क) ।

१२. अणाययणमाणे ३(क); अणाढामीणे ३ (ग) ।

१३. तए णं (क, ख, घ) ।

१४. अणाढाइज्जमाणे ३ (क); अणाढामीणे
(ख, ग); अणादिज्जमाणे (घ) ।

७५. तए णं से तेयलिपुत्ते महइमहालियं सिलं गीवाए बंधइ, बंधित्ता अत्थाहंमतारम-
पोरिसीयंसि उदगंसि अप्पाणं मुयइ । तत्थ वि से थाहे जाए ॥
७६. तए णं से तेयलिपुत्ते सुवकांसि तणकूडंसि अगणिकायं पविखवइ, पविखवित्ता
अप्पाणं मुयइ । तत्थ वि य से अगणिकाए विज्झाए ।

१. आवश्यकचूर्णो (पृष्ठ ४६६, ५००) समुद्रते
प्रस्तुताध्ययने अरण्यगमनस्य निर्देशोऽस्ति ।
तथा अन्योपि क्रमभेदो वर्तते । स च अतीव
मननीयोऽस्ति, यथा—

ताहे तणकूडे अंगि दातुं पविट्ठो, तत्थवि न
डङ्गति, ताहे अडवि पविसति, तत्थ पुरतो
छिण्णगिरिसिहरकंदरप्पवाते पिट्ठतो कपेमा-
णेव मेदिणितलं आकड्ढंतव्व पादवगणे
विफोडेमाणेव अंवरतलं सव्वतमोरासिब्व
पिडिते पच्चकखमिव सतं कतंते भीमे भीमा-
रवं करंते महावारणे समुद्रिते, दोसु चक्खु-
निवातेसु पयंडघणुजुत्तविपमुक्को पुंखमेत्तव-
सेसा धरणितलपवेसाणि सराणि पतंति
हुतवहजालासहस्ससंकुलं समंततो पलित्तं
घगघगेति सव्वारणं, अइरुगतवालसूरगुंजद-
पुंजनिगरप्पगासं भियाति इंगालभूतं गिहं,
ताहे चित्तेति—पोट्टिला जदि मे नित्थारेज्जति,
एवं वयासी—आउसो पोट्टिला ! आहता
आयाणाहि ।

ततेणं सा पोट्टिला पंचवण्णाइं सखिखणीयाइं
जाव एवं वयासी—आउसो तेतलिपुत्ता !
एहि ता आदाणाहि, पुरतो छिण्णगिरिसिहर-
कंदरप्पवाते तं चेव जाव इंगालभूतं गिहं तं
आउसो तेतलिपुत्ता ! कहि वयामो ?

ततेणं से तेतली एवं वयासी—सद्धेतं खलु
भो समणा वयंति, सद्धेयं खलु भो माहणा
वयंति, अहमेगो असद्धेयं वदिससामि,
एवं खलु अहं सह पुत्तेहि अपुत्तो को मे तं
सद्दहिस्सति ? एवं सह मित्तेहि० सह

दारंहि० सह वित्तेण०, सह परिग्गहेण०
सह दासंहि जाव दाणमाणसक्कारोवयारसंग-
हिते तेतलिपुत्तस्सा रायणपरियणेवि तगं गते
को मे तं सद्दहिस्सति ?

एवं खलु तेतलिपुत्ते कणगज्जत्तेणं अवज्झा-
तके को मे तं सद्दहिस्सति ?

कालक्कमणीतिसत्थविसारदे तेतलिपुत्ते
विसादं गतेति को मे तं सद्दहिस्सति ?

ततेणं तेतलिपुत्तेणं तालपुडे विसे खइते सेविय
पडिहेत्तेति को मे तं सद्दहिस्सति ?

एवं असी वेहासे जले अग्गी जाव रण्णेवि
पुरतो पवाते एमादि को मे तं सद्दहिस्सति ?
जातिकुलरूढविणओवयारसालिणी पोट्टिला
मुसिकारधूता मिच्छं विपडिवण्णा को मे तं
सद्दहिस्सति ?

ताहे पोट्टिला भणति—एहि ता आदाणाहि,
भीतस्स खलु भो पवज्जा ताणं, आतुरस्स
भेसज्जं किच्चं अभिउत्तस्स पच्चयकरणं
संतस्स वाहणकिच्चं महाजले वाहणकिच्चं
माइस्स रहस्सकिच्चं उक्कंठितस्स देसगमण-
किच्चं छुहितस्स भोयणकिच्चं पिवासितस्स
पाणकिच्चं सोहातुरस्स जुवत्तिकिच्चं परं
अभियुंजितुकामस्स सहायकिच्चं खंतस्स
दंतस्स गुत्तस्स जितेंदियस्स एत्तो एगमवि न
भवति । सुट्ठु-सुट्ठु तण्णं तुमं तेतलिपुत्ता ।
एयमट्ठं आदाणाहिस्सि कट्ठु दोच्चंपि तच्चंपि
एवं वयति, वइत्ता जामेव दिस्सि पाउब्भूया
तामेव दिस्सि पडिगता ।

पण्णरसमं अज्झयण

नंदीफले

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं चोहसमस्स नायज्झयणस्स अयमद्वे पण्णत्ते, पण्णरसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अद्वे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम नयरी होत्था । पुण्णभद्वे चेइए । जियसत्तू राया ॥
३. तत्थ णं चंपाए नयरीए धणे नामं सत्थवाहे होत्था—अड्ढे जाव' अपरिभूए ॥
४. तीसे णं चंपाए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नाम' नयरी होत्था—रिद्धत्थिमिय-समिद्धा वण्णओ' ॥
५. तत्थ णं अहिच्छत्ताए नयरीए कणगकेऊ नामं राया होत्था—महया वण्णओ' ॥

धणस्स घोसणा-पदं

६. तए णं तस्स धणस्स सत्थवाहस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—सेयं खलु मम विपुलं पणियभंडमायाए अहिच्छत्तं नयरि वाणिज्जाए गमित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च - चउव्विहं भंडं गेण्हइ, गेण्हित्ता सगडी-सागडं सज्जेइ, सज्जेत्ता सगडी-सागडं भरेइ, भरेत्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुव्वे देवाणुप्पिया ! चंपाए नयरीए सिघाडग जाव' महापहपहेसु [उगघोसेमाणा-उगघोसेमाणा ?]

१. ना० १।५।७ ।
२. नामं (ख, घ) ।
३. ओ० सू० १ ।

४. ओ० सू० १४ ।

५. ना० १।१।६५ ।

आहारंति, छायासु वीरमंति । तेषां णं आवाए भद्दए, भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा-परिणममाणा' •अकाले चैव जीवियाओ • ववरोवेति ॥

१६. एवामेव समणाउसो ! जो अहं निर्गमंथो वा निर्गमंथो वा आयरिय-उवज्जायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पंचसु कामगुणेषु सज्जइ' •रज्जइ गिज्भइ मुज्भइ अज्भोववज्जइ, सेणं इहभवे जाव' अणादियं च णं अणवयगं दीहमद्धं संसारकंतारं भुज्जो-भुज्जो • अणुपरियट्टिस्सइ—जहा व ते पुरिसा ॥

धणस्स अहिच्छत्ताऽगमण-पदं

१७. तए णं से धणे सत्थवाहे सगडी-सागडं जोयावेइ, जोयावेत्ता जेणेव अहिच्छत्ता नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता अहिच्छत्ताए नयरीए वहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेशं करेइ, करेत्ता सगडी-सागडं मोयावेइ ॥
१८. तए णं से धणे सत्थवाहे महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुपुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे अहिच्छत्तं नयरि मज्झमज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल' •परिगहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं • वद्धावेइ, वद्धावेत्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं उवणेइ ॥
१९. तए णं से कणगकेऊ राया हट्टुट्टे धणस्स सत्थवाहस्स तं महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता धणं सत्थवाहं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता उस्सुककं वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ, भंडविणिमयं करेइ, करेत्ता पडिभंडं गेण्हइ, गेण्हित्ता सुहंसुहेणं जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मित्त-नाइ' •नियग-सयण-संवंधि-परियणेणं सद्धि' • अभिसमण्णागए विपुलाइं माणुस्सगाइ' • भोगभोगाइं पच्चणुभवमाणे' विहरइ ॥

धणस्स पव्वज्जा-पदं

२०. तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं ॥
२१. धणे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा जेट्ठपुत्तं कुडुंवे ठावेत्ता पव्वइए सामाइयमाइयाइं एक्कारेस अंगाइं अहिज्जित्ता, वहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसेत्ता, अणयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णे ।

१. सं० पा०—परिणममाणा जाव ववरोवेति । ४. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेइ ।

२. सं० पा०—सज्जइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ । ५. सं० पा०—नाइ ।

३. ना० १।३।२४ ।

६. सं० पा०—माणुस्सगाइं जाव विहरइ ।

सोलसमं अज्भयणं

अवरकंका

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं पण्णरसमस्स नायज्भयणस्स अयमद्वे पण्णत्ते, सोलसमस्स णं भंते ! नायज्भयणस्स के अद्वे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था ॥
३. तीसे णं चंपाए नयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सुभूमिभागे नामं उज्जाणे होत्था ॥

नागसिरी-कहाणम-पदं

४. तत्थ णं चंपाए नयरीए तओ माहणा भायरो परिवसंति, तं जहा —सोमे सोमदत्ते सोमभूई—अड्ढा जाव' अपरिभूया रिउव्वेय-जउव्वेय-सामवेय-अथव्वणवेय जाव' वंभणएसु य सत्थेसु सुपरिनिट्ठिया ॥
५. तेसि णं माहणाणं तओ भारियाओ होत्था, तं जहा—नागसिरी भूयसिरी जक्खसिरी—सुकुमालपाणिपायाओ जाव' तेसि णं माहणाणं इट्ठाओ, तेहि माहणेहिं सद्धि विउले माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणीओ विहरंति ॥

नागसिरीए तित्तालाउय-उव्वखडण-पदं

६. तए णं तेसि माहणाणं अण्णया कयाइ एगयओ समुवागयाणं जाव' इमेयारूवे मिहोकहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमे विउले

१. ना० १११७ ।

२. ना० ११५७ ।

३. ना० ११५१३६ ।

४. ना० ११११७ ।

५. पू०—ना० ११११७ ।

६. ना० ११३१७ ।

खाइम-साइमं आहारेंति, जेणेव सायाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता सकम्मसंपउत्ताओ जायाओ ॥

धम्मरुइस्स तित्तालाउय-दाण-पदं

११. तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नामं थेरा जाव' बहुपरिवारा जेणेव चंपा नयरी जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता अहापडि-रूवं' •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा° विहरंति । परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ । परिसा पडिग्गया ॥
१२. तए णं तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुइ' नामं अणगारे ओराले' •घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरवंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउल°-तेयलेस्से मासंमासेणं खममाणे विहरइ ॥
१३. तए णं से धम्मरुइ अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए' सज्झायं करेइ, वीयाए पोरिसीए भाणं भियाइ, एवं जहा गोयमसामी तहेव' भायणाइं ओगाहेइ, तहेव धम्मघोसं थेरं आपुच्छइ जाव' चंपाए नयरीए उच्च-नीअ-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे ॥
१४. तए णं सा नागसिरी माहणी धम्मरुइं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता तस्स सालइ-यस्स तित्तालाउयस्स' बहुसंभारसंभियस्स नेहावगाढस्स एडणट्टयाए हट्टुट्टा उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता तं सालइयं 'तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढ' धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि' सव्वमेव निसिरइ' ॥
१५. तए णं से धम्मरुइ अणगारे अहापज्जत्तमिति कट्ठु नागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता चंपाए नयरीए मज्झमंजभेणं पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव

१. ना० १।१४।४० ।

२. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरंति ।

३. धम्मरुत्ती (ग) ।

४. सं० पा०—उराले जाव तेयलेस्से ।

५. पोरिसीए (क); पोरिसीए (ख); पोरिसी-याए (ग) ।

६. पू०—भग० २।१०७ ।

७. भग० २।१०७-१०६ ।

८. तित्तकड्यस्स (क, ख, ग, घ); पूर्ववत्तिसूत्रेषु 'तित्तालाउयं' इति पाठोऽस्ति । अस्मिन् सूत्रे तस्य परिवर्तनं जातम् । अत्रापि 'अला-उयं' पदमपेक्षितमस्ति, तेनात्र पूर्ववत्तिपाठ एव स्वीकृतः ।

९. तित्तकड्यं च बहुनेहावगाढं (क, ख, ग, घ) ।

१०. पडिग्गहणे (ख, ग); पडिग्गहए (घ) ।

११. निसिरइ (घ) ।

ववरोविज्जन्ति, तं जइ णं अहं एयं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं थंडिलंसि सव्वं निसिरामि तो' णं बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं वहकरणं भविस्सइ । तं सेयं खलु ममेयं सालइयं' •तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं० नेहावगाढं सयमेव आहारिस्सए, ममं चेव एएणं सरीरणं निज्जाउ त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ संपेहेत्ता मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, ससीसोवरियं कायं पमज्जेइ, तं सालइयं 'तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं' विलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं सव्वं सरीरकोट्टुगंसि पक्खवइ ॥

धम्मरुइस्स समाहिमरण-पदं

२०. तए णं तस्स धम्मरुइस्स तं सालइयं' •तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं० नेहावगाढं आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तंतरेणं परिणममाणंसि सरीरगंसि वेयणा पाउवभूया—उज्जला' •विउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा० दुरहियासा ॥

२१. तए णं से धम्मरुइ अणगारे अथामे अवले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे' अधारणिज्जमिति कट्ठु आयाारभंडगं एगंते ठवेइ, थंडिलं पडिलेहेइ, दव्वसंथारगं संथरेइ", दव्वसंथारगं दुरुहइ, पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयल-परिग्हियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव' सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं । पुंवि पि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए' सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव" वहिद्धादाणे" [पच्चक्खाए जावज्जीवाए ?], इयाणि पि णं अहं तेसिं चेव भगवंताणं अंतियं सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव वहिद्धादाणं पच्चक्खामि जावज्जीवाए जहा खंदओ जाव" चरिमेहि उस्सासेहि वोसिरामि त्ति कट्ठु आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए ॥

साहूहि धम्मरुइस्स गवेसणा-पदं

२२. तए णं ते धम्मघोसा थेरा धम्मरुइ अणगारं चिरगयं जाणित्ता समणे निग्गये सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! 'धम्मरुइ अणगारे'"

१. ता (क, ग); तए (ख) ।

६. अंतियं (क) ।

२. सं० पा०—सालइयं जाव नेहावगाढं ।

१०. ना० ११।५६ ।

३. तित्तकडुयं बहुनेहावगाढं (क, ख, ग, घ) ।

११. परिगहे (क, ख, ग, घ) अत्रापि ११।५६ वत् पाठरचना समालोचनीयास्ति । द्रष्टव्यम्—११।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

४. सं० पा०—सालइय जाव नेहावगाढं ।

५. सं० पा०—उज्जला जाव दुरहियासा ।

६. अपुरिसक्कारं (ग) ।

१२. भग० २।६८, ६९ ।

७. संथारेइ (ग) ।

१३. धम्मरुइस्स अणगारस्स (ख) ।

८. ओ० सू० २१ ।

से णं धम्मरुई अणगारे वहुणि वाराणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता आलोइय-
पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उद्धं जाव' राव्वट्टसिद्धे
महाविमाणे देवत्ताए उववण्णे । तत्थ णं अजहन्मणुक्कोरोणं तेत्तीसं सागरो-
वमाइं ठिई पण्णत्ता । तत्थ णं धम्मरुइस्स वि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई
पण्णत्ता । से णं धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ' *आउक्खएणं ठिइक्खएणं
भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता ° महाविदेहे वारे सिज्झिहइ ॥

नागसिरीए गरिहा-पदं

२५. तं धिरत्थु णं अज्जो ! नागसिरीए माहणीए अघन्नाए अपुण्णाए' *दूभगाए
दूभगसत्ताए दूभग° निवोलियाए, जाए णं तहारूवे साहू साहूरूवे धम्मरुई
अणगारे मासक्खमणपारणगंसि सालइएणं' *तित्तालाउएणं बहुसंभारसंभिएणं °
नेहावगाढेणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए ॥

२६. तए णं ते समणा निगंथा धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म°
चंपाए सिंघाडग-तिग'-*चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपेसु ° बहुजणस्स
एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पण्णवेति एवं परूवेति—धिरत्थु णं
देवाणुप्पिया ! नागसिरीए जाव' दूभगनिवोलियाए, जाए णं तहारूवे साहू
साहूरूवे धम्मरुई अणगारे सालइएणं' *तित्तालाउएणं बहुसंभारसंभिएणं °
नेहावगाढेणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए ॥

२७. तए णं तेसि समणाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म बहुजणो अणमण्णस्स
एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—धिरत्थु णं नागसिरीए
माहणीए जाव' जीवियाओ ववरोविए ॥

नागसिरीए गिहनिच्चासण-पदं

२८. तए णं ते माहणा चंपाए नयरीए बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म
आसुरुत्ता'° *रुद्धा कुविया चंडिक्किया ° मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी
माहणी तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता नागसिरिं माहणि एवं वयासी—
“हंभो नागसिरी ! अपत्थियपत्थिए ! दुरंतपंतलक्खणे ! हीणपुण्णचाउइसे !
[सिरि-हिरि-धिइ-कित्तिपरिवज्जिए ?] धिरत्थु णं तव अघन्नाए अपुण्णाए

१. ना० १।१।२११ ।

२. सं० पा०—देवलोगाओ जाव महाविदेहे ।

३. सं० पा०—अपुण्णाए जाव निवोलियाए ।

४. सं० पा०—सालइएणं जाव नेहावगाढेणं ।

५. निसम्मा (क, ख, ग) ।

६. सं० पा०—तिग जाव बहुजणस्स ।

७. ना० १।१६।२५ ।

८. सं० पा०—सालइएणं जाव नेहावगाढेणं ।

९. ना० १।१६।२६ ।

१०. सं० पा०—आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा ।

सा णं तओणंतरं उव्वट्ठित्ता दोच्चंपि मच्छेसु उव्वज्जइ' । तत्थ वि य णं सत्थवज्जभा दाहववकंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चंपि अहेसत्तमाए पुढवीए उवकोसं तेत्तीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उव्वज्जइ । सा णं तओहिंती' उव्वट्ठित्ता तच्चंपि मच्छेसु उव्ववण्णा । तत्थ वि य णं सत्थवज्जभा' *दाहववकंतीए' कालमासे कालं किच्चा दोच्चंपि छट्ठाए पुढवीए उवकोसं वावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उव्ववण्णा । तओणंतरं उव्वट्ठित्ता उरगेसु, एवं जह्वा गोसाले' तहा नेयच्चं जाव रयणप्पभाओ पुढवीओ उव्वट्ठित्ता 'सण्णीसु उव्ववण्णा । तओ उव्वट्ठित्ता असण्णीसु उव्ववण्णा । तत्थ वि य णं सत्थवज्जभा दाहववकंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चं पि रयणप्पभाए पुढवीए पलिओवमस्स असंखेज्जभागट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उव्ववण्णा । तओ उव्वट्ठित्ता जाइं इमाइं खह्यरविहाणाइं' जाव' अदुत्तरं च खरवायर-पुढविकाइयत्ताए, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो ॥

सुमालिया-कहाणग-पदं

३२. सा णं तओणंतरं उव्वट्ठित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए सागर-दत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि दारियंत्ताए पच्चायाया ॥
३३. तए णं सा भद्दा सत्थवाही नवहं मासाणं बहुपडिपुण्णार्णं दारियं पयाया—सुकुमालकोमलियं गयतालुयसमाणां ॥
३४. तए णं तीसे णं दारियाए निव्वत्तवारसाहियाए अम्मापियरो इमं एयारुवं गोण्णं गुणनिप्फण्णं नामधेज्जं करेति—जम्हा णं अम्हं एसा दारिया सुकुमाल-कोमलिया गयतालुयसमाणा, तं होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जं सुकुमालिया-सुकुमालिया ॥

१. अत्रापि पूर्वोक्तक्रमानुसारेण भूतकालक्रिया-प्रयोगो युज्यते, किन्तु आदर्शेषु तथा नोप-लभ्यते ।

२. तओहिंती जाव (क, ख, ग, घ) । एतत् पदमनावश्यकं प्रतिभाति ।

३. सं० पा०—सत्थवज्जभा जाव कालमासे ।

४. उवकोसेणं (क, ख, ग, घ) ।

५. भग० १५।१८६ ।

६. सण्णीसु उव्ववण्णा तओ उव्वट्ठित्ता जाइं

इमाइं खह्यरविहाणाइं (क, ख, ग, घ) एपं संक्षिप्तपाठोऽस्ति । भगवत्यनुसारेण अस्य स्थाने पाठः पूरितोऽस्ति । समर्पणसूत्रे प्रायः पाठस्य संक्षेपः कृतो लभ्यते । अत्रापि स एव क्रमः अनुसृतोऽस्ति, किन्तु संक्षिप्तान-तरं खेचरयोनी जन्म नाभूत् । स्वीकृतपाठा-वलोकनेन एतत् स्पष्टं भवति ।

७. भग० १५।१८६ ।

८. पू०—ना० १।१६।१२४ ।

सूमालिया नामं दारिया—सुकुमालपाणिवाया जाव' स्व' य जोव्वणेण य लावण्णेण य उविकट्ठा ॥

४४. तए णं जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कीडुवियाणं अंतिए, एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए मित्त-नाइ-परिवुडे चंपाए नयरीए मज्झमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागए ॥

४५. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता आसणेणं उवनिमंतेइ, उवनिमंतेत्ता आसत्थं वीसत्थं सुहासणवरगयं एवं वयासी—भण देवाणुप्पिया ! किमागमण-पओयणं ?

४६. तए णं से जिणदत्ते सागरदत्तं एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तव धूयं भदाए अत्तियं सूमालियं सागरस्स^१ भारियत्ताए वरेमि । जइ णं जाणह देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो, ता दिज्जउ णं सूमालिया सागरदारगस्स । तए णं देवाणुप्पिया ! भण किं दलयामो^२ सुकं^३ सूमालियाए ?

४७. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया एगा^४ एगजाया^५ इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा जाव^६ उंवरपुप्फं व दुल्लहा सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? तं नो खलु अहं इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं । तं जइ णं देवाणुप्पिया ! सागरए दारए मम घरजामाउए भवइ, तो णं अहं सागरस्स सूमालियं दलयामि ॥

४८. तए णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरगं^७ दारगं सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे ममं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया—इट्ठा^८ कंता पिया मणुण्णा मणामा जाव^९ उंवरपुप्फं व दुल्लहा सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? तं नो खलु अहं इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं^{१०} । तं जइ णं सागरए दारए मम घरजामाउए भवइ, 'तो णं'^{११} दलयामि ॥

१. ना० १।८।६० ।

२. सागरदत्तस्स दारगस्स (ख, ग) ।

३. दलामो (क) ।

४. सुकं (ख); सुक्कं (घ) ।

५. मम एगा धूया (क)

६. एगा जाया (ख, घ) ।

७. ना० १।१।१०६ ।

८. सागरं (ग, घ) ।

९. सं० पा०—इट्ठा तं चेव ।

१०. ना० १।१।१०६ ।

११. जाव (ख, घ) ।

सागरस्स पुणोगमण-व्वुदास-पवं

६८. तए णं जिणदत्ते सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवं वयासी—दुट्ठु णं पुत्ता ! तुमे कयं सागरदत्तस्स गिहाओ इहं हव्वमागच्छतेणं । तं गच्छह णं तुमं पुत्ता ! 'एवमवि' गए' सागरदत्तस्स गिहे ॥

६९. तए णं से सागरए दारए जिणदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—अविवाइं अहं ताओ ! गिरिपडणं वा तरुपडणं वा मरुप्पवायं वा जलप्पवेसं वा जलणप्पवेसं वा विसभवखणं वा सत्थोवाडणं वा वेहाणसं वा गिद्धपट्ठं वा पव्वज्जं वा विदेसगमणं वा अव्वभुवगच्छेज्जा, नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छेज्जा ॥

सूमालियाए दमणेण सद्धि पुणव्विवाह-पवं

७०. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे कुडुंतरियाए सागरस्स एयमट्ठं निसामेइ, निसामेत्ता लज्जिए विलीए विट्ठे जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडि-निक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालियं दारियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता अंके निवेसेइ, निवेसेत्ता एवं वयासी—किण्णं तव पुत्ता ! सागरएणं दारएणं ? अहं णं तुमं तस्स दाहामि, जस्स णं तुमं इट्ठा' कंता पिया मणुण्णा' मणामा भविस्ससि त्ति सूमालियं दारियं ताहि इट्ठाहि कंताहि पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि वग्गूहि' समासासेइ, समासासेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

७१. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे अण्णया उप्पि आगासतलगंसि सुहनिसण्णे राय-मगं ओलोएमाणे-ओलोएमाणे चिट्ठइ ॥

७२. तए णं से सागरदत्ते एगं महं दमगपुरिसं पासइ—दंडिखंड-निवसणं' खंडमल्लग-खंडघडग-हत्थगयं 'फुट्ट-हडाहड-सीसं मच्छियासहस्सेहि' अग्निज्जमाणमगं ॥

७३. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुम्हे णं देवाणुप्पिया ! एयं दमगपुरिसं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं

१. हव्वमागए (ख, घ) ।

२. एयमवि (क) ।

३. इत्थमपिगते—अस्मिन् कार्ये (११६/२६६ सूत्रस्य वृत्तिः) ।

४. मरुप्पवेसं (क)

५. विहणसं (ख) ।

६. गेद्धपट्ठं (ख, ग) ।

७. अणुगच्छेज्जा (क) ।

८. दारएणं मुक्का (घ) ।

९. सं० पा०—इट्ठा जाव मणामा ।

१०. वहूहि वग्गूहि (घ) ।

११. वसणं (ख, ग) ।

१२. मच्छियासहस्सेहि जाव (क, ख, ग, घ) ।

आदर्शेषु पाठान्तररूपेण निर्दिशतः पाठः

उपलभ्यते, किन्तु अस्मिन् 'जाव' पदस्य

विपर्ययो जातः । 'हत्थगयं जाव' इति पाठ-

रचना युक्तास्ति । प्रस्तुताध्ययनस्य २६

सूत्रावलोकनेन एतत् स्पष्टं जायते ।

७६. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे सुमालियं दारियं प्ढायं जाव' सत्थालंकारविभू-
सियं करेत्ता तं दमगपुरिसं एवं दयासी—एस णं देवानुप्पिया ! मम धूया इट्ठा
कंता पिया मणुणा मणामा । एयं णं अहं तव भारियत्ताए दवयामि', भट्ठियाए
भट्ठो भवेज्जासि' ॥

दमगस्स पलायण-पदं

८०. तए णं से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठं पडिमुणेड, पडिमुणेत्ता सुमालियाए
दारियाए सद्धि वासघरं अणुपविसड, सुमालियाए दारियाए सद्धि तलिमसि
निवज्जइ ॥
८१. तए णं से दमगपुरिसे सुमालियाए इमेयारुवं अंगफासं पडिसंवेदेइ', 'मे जहा-
नामए—असिपत्ते इ वा जाव' एत्तो अमणामतरागं चेव अंगफासं पच्चणुवभव-
माणे विहरइ ॥
८२. तए णं से दमगपुरिसे सुमालियाए दारियाए अंगफासं असहमाणे अवसवसे
मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ ॥
८३. तए णं से दमगपुरिसे सुमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सुमालियाए दारि-
याए पासाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवा-
गच्छित्ता सयणिज्जसि निवज्जइ ॥
८४. तए णं सा सुमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समानी पइव्वया
पइमणुरत्ता पइं पासे अपस्समाणी तलिमाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव से सयणिज्जे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दमगपुरिसस्स पासे णुवज्जइ ॥
८५. तए णं से दमगपुरिसे सुमालियाए दारियाए दोच्चंपि इमं एयारुवं अंगफासं
पडिसंवेदेइ जाव' 'अकामए अवसवसे मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ ॥
८६. तए णं से दमगपुरिसे सुमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता° सयणिज्जाओ
'अवमुट्ठेइ, अवमुट्ठेत्ता' वासघराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता खंडमल्लगं खंड-
घडगं च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव दिसि' पाउठभूए तामेव दिसि
पडिगए ॥

सुमालियाए पुणोचित्ता-पदं

८७. तए णं सा सुमालिया' 'दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पतिव्वया पइमणु-

१. ना० १।१।७७ ।

२. दलामि (क) ।

३. भवेज्जाहि (ग) ।

४. सं० पा०—सेसं जहा सागरस्स जाव सय-
णिज्जाओ ।

५. ना० १।१६।५२ ।

६. ना० १।१६।५२, ५३ ।

७. पवमुट्ठेइ २ (क, ग) ।

८. दिसं (क, ख) ।

९. सं० पा०—सुमालिया जाव गए ।

तुमं णं पुत्ता ! मम महानरांसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं *उवक्खडा-
वेहि, उवक्खडावेत्ता बहूणं समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगाणं देयमाणी
य दवावेमाणी य० परिभाएमाणी विहराहि ॥

६३. तए णं सा सूमालिया दारिया एयमद्वं पडिमुणेंद, पडिमुणेंता [कल्लाकल्लि ?]
महानरांसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं *उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता
बहूणं समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य०
परिभाएमाणी' विहरइ ॥

अज्जा-संघाडगस्स भिक्खायरियागमण-पदं

६४. तेणं कालेणं तेणं समएणं गोवालियाओ अज्जाओ' बहुस्सुयाओ *बहुपरिवाराओ
पुव्वाणुपुव्वि चरमाणीओ जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता
अहापडिरूवं ओगहं ओगिण्हंति, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावे-
माणीओ विहरंति ।

६५. तए णं तासि गोवालियाणं अज्जाणं एगे संघाडए' जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता गोवालियाओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता
नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामो णं तुवभेहि अब्भणुण्णाए चंपाए नयरीए
उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरस्समुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्ताए ।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि ॥

६६. तए णं ताओ अज्जाओ गोवालियाहि अज्जाहि अब्भणुण्णाया समाणीओ'
भिक्खायरियं अडमाणीओ सागरदत्तस्स गिहं अणुप्पविट्ठाओ ।

सूमालियाए सागरपसायोवाय-पुच्छा-पदं

६७. तए णं सूमालिया ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्ठुट्ठा
आसणाओ अब्भुट्ठेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता विपुलेणं असण-पाण-
खाइम-साइमेणं पडिलाभेइ०, पडिलाभेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अज्जाओ !
अहं सागरस्स अणिट्ठा *अकंता अप्पिया अमणुण्णा० अमणामा ! नेच्छइ णं
सागरए दारए मम नाम *गोयमवि सबणयाए, किं पुणं दंसणं वा० परिभोगं
वा ?

१. सं० पा०—जहा पीट्टिला जाव परिभाए-
माणी ।

२. सं० पा०—साइमं जाव परिभाएमाणी ।

३. दलयमाणी (क, ग); दलमाणी (ख, घ) ।

४. पू०—ना० ११४।४० ।

५. सं० पा०—एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ

तहेव समोसंढाओ तहेव संघाडओ जाव
अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया ।

६. पू०—ना० ११४।४१ ।

७. पू०—ना० ११४।४२ ।

८. सं० पा०—अणिट्ठा जाव अमणामा ।

९. सं० पा०—नामं वा जाव परिभोगं ।

१०३. तए णं सा सूमालिया समणोवासिया जाया जाव' रामणे निग्गंथे फासुएणं एसणिज्जेणं असण-पाण-खादम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंवल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फल-सज्जा-संधारएणं पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

सूमालियाए पव्वज्जा-पदं

१०४. तए णं तोसे सूमालियाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुवजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्या—एवं खलु अहं सागरस्स पुव्वि इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा आसि, इयाणि अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा । नेच्छइ णं सागरए मम नामगोयमवि सवणयाए, किं पुण दंसणं वा परिभोगं वा ? जस्स-जस्स वि य णं देज्जामि तस्स-तस्स वि य णं अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा भवामि । तं सेयं खलु ममं गोवालियाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइत्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठुं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए गोवालियाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए । तं इच्छामि णं तुव्भेहि अवभणुण्णाया पव्वइत्तए जाव' गोवालियाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइया ॥

१०५. तए णं सा सूमालिया अज्जा जाया—इरियासमिया जाव' गुत्तवंभयारिणी वूहहि चउत्थ-छट्ठुम'-दसम दुवालसेहि मासद्धमासखमणेहि अप्पाणं भावेमाणी० विहरइ ॥

सूमालियाए आतावणा-पदं

१०६. तए णं सा सूमालिया अज्जा अण्णया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ ! तुव्भेहि अवभणुण्णाया समाणी चंपाए नयरीए वाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिकित्तेणं तवोकम्मेणं सूराभिमुही आयावेमाणी विहरित्तए ॥

१०७. तए णं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं एवं वयासी—अम्हे णं

१. ना० १।५।७७ ।

२. ना० १।१।२४ ।

३. ना० १।१४।२३, ५४ ।

४. ना० १।१४।४० ।

५. सं० पा०—छट्ठुम जाव विहरइ ।

पुब्भवमाणी० विहरइ । तं जइ णं केइ इमस्स गुत्तरियस्स तव-नियम-
वभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्तिविसेसे अत्थि, तौ णं अहमवि आगमिस्सेणं
भवग्गहणेणं इमेयारूवाइं उरालाइं' •माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी०
विहरिज्जामि त्ति कट्ठु नियानं करेइ, करेत्ता आयावणभूमोओ' पच्चोरुभइ ॥

सूमालियाए वाउसियत्त-पदं

११४. तए णं सा सूमालिया अज्जा सरीरवाउसिया' जाया यावि होत्था—अभिकखणं-
अभिकखणं हत्थे धोवेइ, पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराइं धोवेइ,
कक्खंतराइं धोवेइ, गुज्झंतराइं धोवेइ, जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा
चेएइ, तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खेत्ता तओ पच्छा ठाणं वा सेज्जं
वा निसीहियं वा चेएइ ॥
११५. तए णं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं एवं वयासी—एवं खलु
अज्जे ! अम्हे समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ जाव' वंभचेरधारिणीओ ।
नो खलु कप्पइ अम्हं सरीरवाउसियाए' होत्तए । तुमं च णं अज्जे !
सरीरवाउसिया' अभिकखणं-अभिकखणं हत्थे धोवेसि', •पाए धोवेसि, सीसं
धोवेसि, मुहं धोवेसि, थणंतराइं धोवेसि, कक्खंतराइं धोवेसि, गुज्झंतराइं धोवेसि,
जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएसि, तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं
अब्भुक्खेत्ता तओ पच्छा ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा० चेएसि । तं तुमं णं
देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि' •निदाहि गरिहाहि पडिक्कमाहि
विउट्ठाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठेहि, अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं०
पडिवज्जाहि ॥
११६. तए णं सा सूमालिया गोवालियाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ,
'अणाढायमाणी अपरियाणमाणी' विहरइ ॥
११७. तए णं ताओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं अभिकखणं-अभिकखणं हीलेंति' •निदेंति
खिंसेंति गरिहंति० परिभवन्ति, अभिकखणं-अभिकखणं एयमट्ठं निवारेंति ॥

१. सं० पा०—उरालाइं जाव विहरिज्जामि ।

२. ०भूमोए (ख, ग, घ) ।

३. ०वाउसा (क); ०पाउसा (ख, ग);
पाउसिया (घ) ।

४. ना० ११४।४० ।

५. ०पाउसिया (ख, ग, घ) ।

६. पाउसिया (ख, घ) ।

७. सं० पा०—धोवेसि जाव चेएसि ।

८. सं० पा०—आलोएहि जाव पडिवज्जाहि ।

९. अणाढाइमाणा अपरियाणमाणा (क, घ);
अणाढायमाणा अपरियाणमाणा (ख);
अपरियाणमाणा (ग) ।

१०. सं० पा०—हीलेंति जाव परिभवन्ति ।

१२१. तत्थ णं दुवए नामं राया होत्था—वण्णओ^१ ॥
१२२. तस्स णं चुलणी देवी । धट्टज्जुणे कुमारे जुवराया ॥
१२३. तए णं सा सूमालिया देवी ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं^२ •ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं^३ चइत्ता इहेव जंनुदीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स^४ रण्णो चुलणीए देवीए कुच्चिसि दारियत्ताए पच्चायाया^५ ॥
१२४. तए णं सा चुलणी देवी नवण्हं मासाणं^६ •बहुपट्टिपुण्णाणं अट्टमाणं य राइं-दियाणं वीइक्कंताणं सुकुमाल-पाणिपायं जाव^७ •दारियं पयाया ॥
१२५. तए णं तीसे दारियाए निव्वत्तवारसाहियाए इमं एयाख्वं नामं—जम्हा णं एसा दारिया दुपयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया, तं होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जे^८ दोवई ॥
१२६. तए णं तीसे अम्मापियरो इमं एयाख्वं गोण्णं गुणनिष्फन्नं नामधेज्जं करेति—दोवई-दोवई ॥
१२७. तए णं सा दोवई दारिया पंचधाईपरिग्गहिया जाव^९ गिरिकंदरमल्लीणा इव चंपगलया निवायं^{१०} निव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवट्ठइ ॥
१२८. तए णं सा दोवई रायवरकण्णा उम्मुक्कवालभावा^{११} •विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुपत्ता ख्वेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा^{१२} उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ॥
१२९. तए णं तं दोवइं रायवरकण्णं अण्णया कयाइ अंतेउरियाओ ण्हायं जाव^{१३} सव्वालंकारविभूसियं करेति, करेत्ता दुवयस्स रण्णो पायवंदियं पेसेंति ॥
१३०. तए णं सा दोवई रायवरकण्णा जेणेव दुवए राया तेणेव उवांगच्छइ, उवागच्छित्ता दुवयस्स रण्णो पायग्गहणं करेइ ॥

दोवईए सयंवर-संकप्प-पदं

१३१. तए णं से दुवए राया दोवइं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसेत्ता दोवईए रायवरकण्णाए ख्वे य जोव्वणे य लावण्णे य जायविम्हए दोवइं रायवरकण्णं एवं वयासी—जस्स णं अहं तुमं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए

१. ओ० सू० १४ ।

२. सं० पा०—आउक्खएणं जाव चइत्ता ।

३. दुपयस्स (ख, ग) ।

४. पयाया (क) ।

५. सं० पा०—मासाणं जाव दारियं ।

६. ना० १।१।२० ।

७. नामधेज्जं (ख, घ) ।

८. ना० १।१६।३६ ।

९. निव्वाय (क) ।

१०. सं० पा०—उम्मुक्कवालभावा जाव उक्किट्ठसरीरा ।

११. ना० १।१।४७ ।

दुरुहइ, दुरुहिता वहुहिं पुरिसेहिं—सण्णद्ध'-●वद्ध-वम्मिय-कवएहिं उप्पीलिय-
सरासण-पट्टिएहिं पिणद्ध-गेविज्जेहिं आविद्ध-विमल-वरचिध-पट्टिएहिं ° गहियाउह-
पहरणेहिं—सद्धि संपरिवुडे कंमिल्लपुरं नयरे मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, पंचाल-
जणवयस्स मज्झमज्झेणं जेणेव देसप्पते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता
सुरट्ठाजणवयस्स' मज्झमज्झेणं जेणेव वारवई नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवा-
गच्छिता वारवई नयरी मज्झमज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसत्ता जेणेव
कण्हस्स वासुदेवस्स वाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता
चाउग्घटं आसरहं ठावेइ, ठावेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता मणुस्स-
वग्गुरापपरिक्खत्ते पायचारविहारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छिता कण्हं वासुदेवं, समुद्विजयपामोक्खे य दस दसारे जाव' 'छप्पन्तं
वलवगसाहस्सीओ' करयल'●परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि
कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयइ—एवं खलु देवाणुप्पिया !
कंमिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो घयाए, चुलणीए अत्तयाए, वट्टज्जुणकुमारस्स
भइणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयंवेरे अत्थि । तं णं तुव्भे दुवयं रायं
अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंमिल्लपुरे नयरे ° समोसरह ॥

१३५. तए णं से कण्हे वासुदेवे तस्स द्वयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठ-
●चित्तमाणंदिए पीडमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण °-हियए
तं द्वयं सवकारेइ सम्माणेइ, सवकारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

कण्हस्स पत्थाण-पदं

१३६. तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—
गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइयं भेरि तालेहि ॥
१३७. तए णं से कोडुंवियपुरिसे करयल'●परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए
अंजलि ° कट्टु कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव
सभाए सुहम्माए सामुदाइया' भेरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता सामुदाइयं
भेरि महया-महया सहेणं तालेइ ॥
१३८. तए णं ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समुद्विजयपामोक्खा दस

१. सं० पा०—सण्णद्ध जाव गहिया ° ।

२. सुरट्ठ ° (क, घ) ।

३. ना० ११६।१३२ ।

४. १३२ सूत्रानुसारेणाञ्च 'सत्थवाहप्पभिइओ'
इति पाठः संगच्छते ।

५. सं० पा०—करयल तं चेव जाव समोसरह ।

६. सं० पा०—हट्ठुट्ठ जाव हियए ।

७. सं० पा०—करयल ° ।

८. सामुदाण्या (ख, घ) ।

जुहिट्टिलं' भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं, दुज्जोहणं भाइसय'-समग्गं, गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणि कीवं आसत्थामं करयलं'•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेहि, वद्धावेत्ता एवं वयाहि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंप्पिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए, चुलणीए अत्तयाए धट्टज्जुणकुमारस्स भइणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरं भविस्सइ । तं णं तुव्भं दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंप्पिल्लपुरे नयरे ° समोसरह ॥

१४३. तए णं से दूए' •जेणेव हत्थिणाउरे नयरे जेणेव पंडुराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंडुरायं सपुत्तयं—जुहिट्टिलं भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं, दुज्जोहणं भाइसय-समग्गं, गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणि कीवं आसत्थामं' एवं वयइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंप्पिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए, चुलणीए अत्तयाए, धट्टज्जुणकुमारस्स भइणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरं अत्थि । तं णं तुव्भं दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंप्पिल्लपुरे नयरे समोसरह ॥

१४४. तए णं से पंडुराया जहा वासुदेवे नवरं—भेरी नत्थि जाव' ° जेणेव कंप्पिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

द्वयपेसण-पदं

१४५. एएणेव कमेणं—

तच्चं द्वयं' •एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! चंपं नयरि । तत्थ णं

१. जुहिट्टिलं (घ) ।

२. भायसय ° (ख, घ) ।

३. सं० पा०—करयल जाव कट्टु तहेव जाव समोसरह ।

४. सं० पा०—तए णं से दूए एवं वयासी जहा वासुदेवे नवरं भेरी नत्थि जाव जेणेव;

पू०—ना० १।१६।१३३, १३४ ।

५. पू०—ना० १।१६।१३४ ।

६. ना० १।१६। १३५-१४१ ।

७. सं० पा०—तच्चं द्वयं चंपं नयरि । तत्थ णं तुमं कण्णं अंगरायं सल्लं नंदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह । चउत्थं द्वयं सोत्तिमइं नयरि । तत्थ णं तुमं सिमुपालं दमघोसमुयं पंचभाइसयसंपरिवुडं करयल तहेव जाव

समोसरह । पंचम द्वयं हत्थिसीसं नयरि । तत्थ णं तुमं दमदंतं रायं करयल जाव समोसरह । छट्ठं द्वयं महरं नयरि । तत्थ णं तुमं धरं रायं करयल जाव समोसरह । सत्तमं द्वयं रायगिहं नयरं । तत्थ णं तुमं सहदेवं जरासंधमुयं करयल जाव समोसरह । अट्ठमं द्वयं कोडिणं नयरं । तत्थ णं तुमं रुप्पि भेसगमुयं करयल तहेव जाव समोसरह । नवमं द्वयं विराटं नयरि । तत्थ णं तुमं कीयगं भाउसयसमग्गं करयल जाव समोसरह । दसमं द्वयं अवसेसेसु गामागर-नगरेसु अणेगाइं रायसहस्साइं जाव समोसरह । तए णं से दूए तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर तहेव जाव समोसरह ।

कवया' हत्थिखंधवरगया' हय-गय-रह'-●पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडा महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विदपरिविखत्ता० साएहि-साएहि नगरेहिं तो अभिनिग्गच्छति, अभिनिग्गच्छत्ता जेणेव पंचावे जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

दुधयस्स आतित्थ-पद

१४७. तए णं से दुवए राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेड, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे बहिया गंगाए महानईए अदूरसामंते एगं महं सयंवरमंडवं करेह—अणेगखंभ-रायसन्निविट्ठं लीलट्टिय-सालिभंजियाणं जाव पासाईयं दरिसणिज्जं अभिस्सवं पडिस्सवं—करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ॥
१४८. तए णं से दुवए राया [दोच्चं पि ?] कोडुवियपुरिसे सद्दावेड, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वासुदेवपामोकखाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह, करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ॥
१४९. तए णं से दुवए राया वासुदेवपामोकखाणं बहूणं रायसहस्साणं आगमणं जाणेत्ता पत्तेयं-पत्तेयं हत्थिखंध'●वरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्ज-माणेणं सेयवरचामराहि वीडज्जमाणे हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विदपरि-विखत्ते० अग्घं च पज्जं च गहाय सव्विड्डीए कंपिल्लपुराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छत्ता जेणेव ते वासुदेवपामोकखा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता ताई वासुदेवपामोकखाइ अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तेसि वासुदेवपामोकखाणं पत्तेयं-पत्तेयं आवासे वियरइ ॥
१५०. तए णं ते वासुदेवपामोकखा जेणेव सया-सया आवासा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छत्ता हत्थिखंधेहिं तो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहत्ता पत्तेयं-पत्तेयं खंधावर-निवेसं करंति, करेत्ता सएसु-सएसु आवासेसु अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता सएसु-सएसु आवासेसु आसणेसु य सयणेसु य सन्निसण्णा य संतुयट्ठा य बहूहि गंधव्वेहि य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य उवनच्चिज्जमाणा य विहरंति ॥
१५१. तए णं से दुवए राया कंपिल्लपुरं नयरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता विपुलं

वासुदेवस्य प्रस्थानविषयकं सूत्रं पूर्वं साक्षात्
उल्लिखितमस्ति, तथैव पाण्डुराजस्यापि,
तेनासी पाठः पाठान्तररूपेण स्वीकृतः ।

१. पू०—ना० ११६।१३४ ।

२. पू०—ना० १।५।५७; १।१६।१५३ ।

३. सं० पा०—रह महया ।

४. ना० १।१ ८६ ।

५. × (ग, घ) ।

६. सं० पा०—हत्थिखंध जाव परिवुडे ।

७. आवासेसु य (क, ख, ग, घ) ।

मल्लिय-चंपय जाव' सत्तच्छयाईहि' गंधद्वणिं मुयंतं परमगुहफासं दरिसणिज्जं—
गेण्हइ ॥

१६३. तए णं सा किहुविद्या सुरूवा' •साभावियघंसं बोद्धहजणस्स उस्सुयकरं विचित्त-
मणि-रयण-वद्धच्छरुहं° वामहत्थेणं चित्तलंगं दप्पणं गहेऊण सललियं दप्पण-
संकंतविद्वं-संदंसिए' य से दाहिणेणं हत्थेणं दरिसाए' पवररायसीहे । फुडविसय-
विमुद्ध-रिभिय-गंभीर-महुरभणिया सा तेसि सव्वेसि' पत्थिवाणं अम्मापिउ-
वंस-सत्त-सामत्थ-गोत्त-विवकंति-कंति'-बहुविहआगम-माहप्प-रुव - कुलसीलजा-
णिया कित्तणं करेइ । पढमं ताव वणिहपुंगवाणं दसारवरं-वीरपुरिस-तेलोवक-
वलवगाणं", सत्तु"-सयसहस्स-माणावमद्दगाणं"१ "भवसिद्धिय-वरपुंडरीयाणं"
चित्तलगाणं वल-वीरिय-रुव-जोवण्ण-गुण-लावण्णकित्तिया कित्तणं करेइ ।
तओ पुणो उग्गसेणमाईणं" जायवाणं भणइ—सोहरगरुवकलिए वरेहि
वरपुरिसगंधहत्थीणं जो हु ते होइ हियय-दइओ ॥

दोवईए पंडव-वरण-पदं

१६४. तए णं सा दोवई रायावरकण्णगा बहूणं रायवरसहस्साणं मज्झमंज्झेणं
समइच्छमाणी-समइच्छमाणी" पुव्वकयनियानेणं चोइज्जमाणी-चोइज्जमाणी
जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते पंच पंडवे तेणं दसद्व-
वण्णेणं कुसुमदामेणं आवेडियपरिवेडिए करेइ, करेत्ता एवं वयासी—एए णं मए
पंच पंडवा वरिया ॥

१६५. तए णं ताई वासुदेवपामोक्खाइं बहूणि रायसहस्साणि महया-महया सद्देणं
उग्घोसेमाणाइं-उग्घोसेमाणाइं एवं वयंति—सुवरियं खलु भो ! दोवईए
रायवरकण्णाए त्ति कट्ठु सयंवरमंडवाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता
जेणेव सया-सया आवासा तेणेव उवागच्छंति ॥

१६६. तए णं धट्ठज्जुणे कुमारे पंच पंडवे दोवई च" रायवरकण्णं चाउग्घटं आसरहं

१. ना० १।५।३० ।

२. १।५।३० सूत्रे 'सत्तच्छयाईहि' इति पाठो
नोपलभ्यते तथा येषां पदानामपि क्रमभेदो
वर्तते ।

३. सं० पा०—सुरूवा जाव वामपत्थेणं ।

४. °विद्वं (ख, ग) ।

५. दंसिए (घ) ।

६. दरिसीएइ (ख); दरसिए (घ) ।

७. सव्व (क, ख, ग) ।

८. कित्ति (वृपा) ।

९. दसदसार (ग) । पूर्णपाठः अस्याध्ययनस्य

१३२ सूत्रे द्रष्टव्यः ।

१०. तिल्लोक० (क) ।

११. सक्क (घ) ।

१२. माणीवमद्दगाणं (ख, घ) ।

१३. भवसिद्धिपवर० (क्व) ।

१४. °माइयाणं (क) ।

१५. समतिच्छमाणी (ख, ग, घ) ।

१६. × (ग) ।

पंडुरायस्स आतित्थ-पदं

१७२. तए णं से पंडू राया कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुव्भे देवाणुप्पिया । हत्थिणाउरे नयरं पंचण्हं पंडवाणं पंच पासायवडिसए कारेह—अवभुगयमूसिय जाव' पडिख्वे ॥
१७३. तए णं ते कोडुंवियपुरिसा पडिसुणेंति जाव कारवेंति ॥
१७४. तए णं से पंडू राया पंचहिं पंडवेहिं दोवईए देवीए सद्धि हय-गय'-रह-पवर-जोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे महयाभडचडगर-रह-पहकर-विदपरिक्खत्ते ° कंपिल्लपुराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमिता जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए ॥
१७५. तए णं से पंडू राया तेसि वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं जाणित्ता कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुव्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरस्स नयरस्स वहिया वासुदेवपामोक्खाणं वहूणं रायसहस्साणं आवासे—अणेगखंभ-सयसण्णिविट्ठे' कारेह, कारेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तेवि तहेव पच्चप्पिणंति ॥
१७६. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा वहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए ॥
१७७. तए णं से पंडू राया ते वासुदेवपामोक्खे' •वहवे रायसहस्से ° उवागए' जाणित्ता हट्ठुट्ठे ण्हाए कयवलिकम्मे जहा दुवए जाव' जहारिहं आवासे दलयइ ॥
१७८. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा वहवे रायसहस्सा जेणेव सया-सया आवासा तेणेव उवागच्छंति तहेव जाव' विहरंति ॥
१७९. तए णं से पंडू राया हत्थिणाउरं नयरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता कोडुंविय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुव्भे णं देवाणुप्पिया ! विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं' आवासेसु उवणेह । तेवि तहेव उवणेंति ॥
१८०. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा वहवे रायसहस्सा ण्हाया कयवलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसाएमाणा तहेव जाव' विहरंति ॥

कल्लाणकार-पदं

१८१. तए णं से पंडू राया ते पंच पंडवे दोवइं च देवि पट्टयं 'दुरुहावेइ, दुरुहावेत्ता'—सेया-

१. वण्णओ जाव(क, ख, ग, घ); ना० १११।८६ । ७. ना० ११६।१५० ।
 २. सं० पा०—हयगय संपरिवुडे । ८. पू०—ना० ११६।१५१ ।
 ३. पू०—ना० १११।८६ । ९. ना० ११६।१५२ ।
 ४. सं० पा०—वासुदेवपामोक्खे जाव उवागए । १०. दुरुहेइ २(क, ख, ग, घ)। द्रष्टव्यम्—१६६
 ५. आगए (ग) । सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
 . ना० ११६।१४६ ।

ओलोइंते रम्मं हत्थिणाउरं उवागए पंडुरायभवणंसि" "भक्ति-वेगेण" समो-
वइए ॥

१८६. तए णं से पंडू राया कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता पंचहिं पंडवेहिं
कुंतीए य देवीए सद्धि आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता कच्छुल्लनारयं सत्तट्ठ-
पयाइं पच्चुग्गच्छइ, पच्चुग्गच्छित्ता तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता
वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता महिरिहेण 'अग्घेणं पज्जेणं' आराणेण य उवनि-
मंतेइ ॥

१८७. तए णं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए
निसीयइ, निसीइत्ता पंडुरायं रज्जे यं •रुट्ठे य कोसे य कोट्टागारे य वले य
वाहणे य पुरे यं अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ ॥

१८८. तए णं से पंडू राया कौंती देवी पंच य पंडवा कच्छुल्लनारयं आढंति' •परिया-
णंति अब्भुट्ठेति' • पज्जुवासंति ।

१८९. तए णं सा दोवई देवी कच्छुल्लनारयं 'अस्संजयं अविरयं अप्पडिहयपच्चखाय-
पावकम्मंति' कट्ठु नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ नो पज्जुवासइ ॥

१९०. तए णं तस्स कच्छुल्लनारयस्स इमेयारूवे अज्जभत्थिए चित्तिं एत्थिए मणोगए
संकप्पे समुप्पज्जित्था--अहो णं दोवई देवी रूवेण यं •जोव्वणेण यं लावणणेण
य पंचहिं पंडवेहिं अवत्थद्धा' समाणी ममं नो आढाइ' •नो परियाणइ नो
अब्भुट्ठेइ' नो पज्जुवासइ । तं सेयं खलु मम दोवईए देवीए विप्पियं करेत्तए
त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता पंडुरायं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता उप्पयणिं"
विज्जं आवाहेइ, आवाहेत्ता ताए उक्किट्ठाए" •तुरियाए चवलाए चंडाए सिग्घाए
उद्धुयाए जइणाए छेयाए • विज्जाहरगईए लवणसमुदं मज्झमज्झेणं पुरत्थाभि-
मुहे वीईवइउं पयत्ते यावि होत्था ।

नारदस्स अवरकंका-गमण-पदं

१९१. तेणं कालेणं तेणं समएणं धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्ध-दाहिणड्ढु-भरहवासे अवर-
कंका नामं रायहाणी होत्था ॥

- | | |
|---|---|
| १. कच्छुल्लनारए जाव पंडुस्स रण्णो भवणंसि
(क) अस्य संक्षिप्तपाठस्य परम्पराया
उल्लेखो वृत्तावपि लभ्यते, यथा—इह
क्वचिद् यावत् करणादिदं दृश्यम् (वृ) । | ६. अस्संजय-अविरय-अप्पडिहयअपच्चखायपाव-
कम्मंति (क, ग) । |
| २. अइवेगेणं (ख, ग, घ) । | ७. सं० पा०—रूवेण य जाव लावणणेण । |
| ३. × (ग, घ) । | ८. अट्ठुद्धा (ख) । |
| ४. सं० पा०—रज्जे य जाव अंतेउरे । | ९. सं० पा०—आढाइ जाव नो पज्जुवासइ । |
| ५. सं० पा०—आढंति जाव पज्जुवासंति । | १०. उप्पणिं (ख, ग) । |
| | ११. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगईए । |

•पवरवीर-घाइय-धियडियचिध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिमोदिसि°
पडिसेहिए ॥

पउमनाभस्स पलायण-पदं

२६०. तए णं से पउमनाभे राया तिभागवलावमेसे अत्थामे' अवने अवोरिए, अपुरि-
सवकारपरवकमे अवधारणिज्जमिति कट्टु सिग्घं तुरियं चवलं चंडं जइण वेइयं
जेणेव अवरकंका' तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अवरकंकां रायहाणि अणु-
पविसइ, अणुपविसित्ता दाराइं' पिहेइ, पिहेत्ता रोहासज्जं चिट्ठइ ॥

कण्हस्स नरसिंहरूप-पदं

२६१. तए णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव अवरकंका तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता रहं
ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता वेउच्चियसमुग्घाएणं समोहणइ'
एगं मह नरसीह रूपं विउज्जवइ, विउज्जित्ता मह्या-मह्या सट्ठेणं पायददरियं
करेइ ॥

२६२. तए णं कण्हेणं वासुदेवेणं मह्या-मह्या सट्ठेणं पायददरएणं कएणं समाणेणं
अवरकंका रायहाणी संभग्ग-पागार'-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थिय-
पवरभवण-सिरिघरा सरसरस्स धरणियले सण्णिवइया ॥

पउमनाभस्स सरण-पदं

२६३. तए णं से पउमनाभे राया अवरकंकां रायहाणि संभग्ग'-•पागार-गोउराट्टालय-
चरिय-तोरण-पल्हत्थियपवरभवण-सिरिघरं सरसरस्स धरणियले सण्णिवइयं°
पासित्ता भीए दोवईं देवि सरणं उवेइ ॥

२६४. तए णं सा दोवईं देवी पउमनाभं रायं एवं वयासी—किण्णं तुमं देवाणुप्पिया !
न' जाणसि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पियं करेमाणे ? 'ममं इहं
हव्वमाणेमाणे' तं 'एवमवि गए' गच्छ' णं तुमं देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपड-
साडए ओचूलगवत्थनियत्थे अंतेउर-परियालसंपरिवुडे' अग्गाइं वराइं रयणाइं
गहाय ममं पुरओकाउं कण्हं वासुदेवं करयल'•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं
मत्थए अंजलि कट्टु° पायवडिए सरणं उवेहि । पणिवइय-वच्छला णं देवाणु-
प्पिया ! उत्तमपुरिसा ॥

१. अथामे (ग, घ) ।

२. अवरकंका (क) ।

३. दाराइं (ख) ।

४. समोहणइ (क, ख, घ) ।

५. पायार (क, घ); पगार (ख) ।

६. सं° पा°—संभग्गं जाव पासित्ता ।

७. × (क, ख, ग) ।

८. × (ख, ग, घ) ।

९. द्रष्टव्यम्—६८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

१०. गच्छह (ग, घ) ।

११. परियालं° (क) ।

१२. सं° पा°—करयल° ।

पउमनाभं निव्विसयं आणवेइ, पउमनाभस्स पुत्तं अवरकंकाए रायहाणीए
महया-महया रायाभिसेणणं अभिसिचइ', *अभिसिचित्ता जामेव दिसि पाउब्भूए
तामेव दिसि ० पडिगए ॥

अपरिक्खणीयपरिक्खा-पदं

२८१. तए णं से कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्दं मज्झमज्झेणं 'वीईवयमाणे-वीईवयमाणे
गंगं उवागए' [उवागम्म ?] ते पंच पंडवे एवं वयासी- गच्छह णं तुब्भे
देवाणुप्पिया ! गंगं महानइं उत्तरह जाव ताव अहं मुट्ठियं लवणाहिवइं
पासामि ॥
२८२. तए णं ते पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा जेणेव गंगा महानदी
तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए' मग्गण-गवेसणं करंति, करेत्ता
एगट्ठियाए गंगं महानइं उत्तरंति, उत्तरित्ता अण्णमण्णं एवं वयंति—पहू णं
देवाणुप्पिया ! कण्हे वासुदेवे गंगं महानइं वाहाहिं उत्तरित्ताए, उदाहू नो
पहू उत्तरित्ताए ? त्ति कट्ठु एगट्ठियं 'णूमेति, णूमेत्ता' कण्हं वासुदेवं पडिवाले-
माणा-पडिवालेमाणा चिट्ठंति ॥
२८३. तए णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं पासइ, पासित्ता जेणेव गंगा महानई
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं
करेइ, करेत्ता एगट्ठियं अपासमाणे एगाए वाहाए रहं सतुरगं ससारहिं गेण्हइ,
एगाए वाहाए गंगं महानइं वासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च वित्थिण्णं उत्तरिउं
पयत्ते यावि होत्था ॥
२८४. तए णं से कण्हे वासुदेवे गंगाए महानईए बहुमज्झदेसभाए संपत्ते समाणे संते
तंते परितंते वद्धसेए जांए यावि होत्था ॥
२८५. तए णं तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए' *चित्तिए पत्थिए
मणीगए संकप्पे ० समुप्पज्जित्था—अहो णं पंच पंडवा महावलवगा जेहिं गंगा
महानई वासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च वित्थिण्णा वाहाहि उत्तिण्णा ।

१. सं० पा०—अभिसिचइ जाव पडिगए ।

२. वीईवयइ २ (क, ख, ग); वीईवयइ गंग ०
(घ) ।

३. एगट्ठियाए नावाए (क, ख, ग, घ) । वृत्तौ
'एगट्ठियंति नोः' इति व्याख्यातमस्ति ।
अस्यानुसारेण 'एगट्ठिया' पदं नो वाचकमस्ति ।
प्रतिपु 'नावाए' इति पदस्यापि उल्लेखो

लभ्यते । स च बहुपु स्थानेषु सारल्यार्थं
परिवर्तितपदवद् विद्यते ।

४. एगट्ठियाओ (ग) ।

५. ण मुयंति (क); ण मुवंति (ख); मुस्संति २
(घ) ।

६. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

७. वावट्ठि (क, ग) ।

इच्छामो णं तुब्भेहिं अग्गणुण्णाया समाणा अरहं अरिट्ठेनेमिं' •वंदणाए० गमित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया !

३२१. तए ण ते जुहिट्ठिलपामोक्खा पंच अणगारा थेरेहिं अग्गणुण्णाया समाणा थेरे भगवन्ते वंदति नमंसंति, वंदित्ता नमसित्ता थेराण अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता मासंमाणेणं अणिव्वित्तेणं तवोकम्मेण गामाणुगामं दूइज्जमाणा' •सुहंसुहेणं विहरमाणा० जेणेव हत्थकप्पे' नयरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता हत्थकप्पस्स बहिया सहस्सववणे उज्जाणे' •संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा० विहरंति ॥

३२२. तए णं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा मासान्णमणपारणए पढमाए पोरिसीए सज्जायं करेंति, वीयाए भाणं भायंति एवं जहा गोयमसामो', नवरं—जुहिट्ठिलं आपुच्छंति जाव' अडमाणा बहुजणसद्द निसामेंति—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठेनेमी उज्जंतसेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए' •सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्ख० प्पहोणे ॥

पंडवाणं निव्वाण-पदं

३२३. तए णं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हत्थकप्पाओ नयराओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सहस्संववणे उज्जाणे जेणेव जुहिट्ठिले अणगारे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पच्चुवेक्खंति', पच्चुवेक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमंति, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएंति, आलोएत्ता भत्तपाणं पडिदंसंति, पडिदंसंत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! •अरहा अरिट्ठेनेमी उज्जंतसेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं० कालगए । तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! इमं पुव्वगहियं भत्तपाणं परिट्ठवेत्ता सेत्तुज्जं पव्वयं सणियं-सणियं दुह्हित्तए, संलेहणा-भूसणा-भोसियाणं कालं अणवेक्खमाणाणं' विहरित्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तं पुव्वगहियं भत्तपाणं एगंते परिट्ठवेंति, परिट्ठवेत्ता जेणेव सेत्तुज्जे' पव्वए तेणेव

१. सं० पा०—अरिट्ठेनेमिं जाव गमित्तए ।

२. सं० पा०—दूइज्जमाणा जाव जेणेव ।

३. हत्थीकप्पे (क) ।

४. सं० पा०—उज्जाणे जाव विहरंति ।

५. भ० २।१०७ ।

६. भ० २।१०८, १०९ ।

७. सं० पा०—कालगए जाव प्पहीणे ।

८. पच्चुवेक्खइंति (ख); पच्चक्खंति (घ) ।

९. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव कालगए ।

१०. अणवक्खमाणाणं (घ) ।

११. सेत्तुजे (व) ।

१३. तए ण स निज्जामए ते बह्वे कुच्छिधारा य कण्णधारा य मग्गभेल्लगा य मंजन्ता-
नायावाणियगा य एयं न्यामी—एयं मन्तु सत्ते देवाण्णियगा ! लद्धमईए
‘लद्धसुईए लद्धसण्णे’ अमूढदिगाभाए जाए । अमूढे ण देवाण्णियगा ! कालिय-
दीवंतेणं संच्छेदा’ । एस णं कालियदीवे आत्तोपकट’ ॥

कालियदीवे आस-पेच्छण-पवं

१४. तए णं ते कुच्छिधारा य कण्णधारा य मग्गभेल्लगा य मंजन्ता-नायावाणियगा य
तस्स निज्जामगरस्स अंतिए एयमट्ठं गोञ्जा लद्धुद्धा पयविमणान्णकुत्तेणं वाएणं
जेणेव कालियदीवे तेणेव उयागच्छति, उयागच्छिता पोयवण्णं लवेति, लवेत्ता
एगट्ठियाहि कालियदीवं उत्तरति । तस्य णं बह्वे हिरण्णागरे य मुवण्णागरे य
रयणागरे य वइरागरे य, बह्वे तस्य आसं पासंति, किं ते ?—

हरिरेणु-सोणिमुत्तग-^{१०}सकविल-मज्जार-पायकुत्तकुट-त्रोउसमुग्गयसामवण्णा ।

गोहूमगोरंग-गोरपाडल-गोरा, पवालवण्णा य धूमवण्णा य केइ ॥१॥

तलपत्त - रिट्ठवण्णा य, सालिवण्णा य भासवण्णा य केइ ।

जंपिय-तिल-कीडगा य, सोलोय-रिट्ठगा य पुंड-पड्या य कण्ण पिट्ठा य केइ ॥२॥

चक्कागपिट्ठवण्णा, सारसवण्णा य हंसवण्णा य केइ ।

केइत्थ अट्ठभवण्णा, पक्कतल - मेववण्णा य बाहुवण्णा^१ केइ ॥३॥

संभाणुरागसरिसा, सुयमुह - गुंजद्वराग- सरिसत्थ केइ ।

एलापाडल - गोरा, सामलया - गवलसामला पुणो केइ ॥४॥

बह्वे अण्णे अणिहेसा, सामा कासीसरत्तपीया, अच्चंतविमुद्धा वि य णं आइण्णग-

जाइ-कुल-विणीय-गयमच्छरा ।

हयवरा जहोवएस-कम्मवाहिणो वि य णं ।

सिक्खा विणीयविणया,

लंघण-वग्गण-धावण-धोरण-तिवई जईण-सिक्खिय-गई ।

किं ते ? मणसा वि उव्विहंताइं अण्णेगाइं आससयाइं पासंति ० ॥

१५. तए णं ते आसा^१ वाणियए पासंति, तेसि गंधं आघायंति^२, आघाइत्ता भीया

१. सं० पा०—लद्धमईए जाव अमूढदिसायाए ।

२. संवूढा (ख); संवूढा (ग) ।

३. ओलोकिज्जइ (घ) ।

४. सं० पा०—आइण्णवेढो । विस्तृतः पाठो
वृत्त्यनुसारेण स्वीकृतः । मूलपाठे अस्य सूचना
‘आइण्णवेढो’ इति पदेन प्रदत्तास्ति । वृत्ति-

कारेणापि सूचितमिदम् यथा—वेढो ति
वर्णनार्था वाक्यपद्धतिः (वृ) ।

५. पविरल (वृषा) ।

६. वहु ० (वृषा) ।

७. आसा ते(क, घ); आसाए(ग); आसाओ(वव)।

८. अघायंति (ख, ग) ।

१८. तए णं ते संजत्ता-नावावाणियगा कणगकेउं एवं वयासी—एवं खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! इहेव हत्थिसीसे नयरे परिवसामो तं चेव जाव' कालियदीवतेणं संछूढा । तत्थ णं वहवे हिरण्णागरे य' •गुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य °, वहवे तत्थ' आसे पासामो' ।

किं ते ? हरिरेणु जाव' अम्हं गंधं आघायंति, आघाइत्ता भीया तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा तओ अणेगाइं जोयणाइं उदभमंति । तए णं सामी ! अम्हेहि कालियदीवे 'ते आसा' अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ॥

१९. तए णं से कणगकेऊ तेसि संजत्ता-नावावाणियगाणं अतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म ते संजत्ता-नावावाणियए एवं वयासी—गच्छह णं तुव्वे देवाणुप्पिया ! मम कोडुंवियपुरिसेहिं सद्धि कालियदीवाओ ते आसे आणेह ॥

२०. तए णं ते संजत्ता-नावावाणियगा' एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति ॥

२१. तए णं से कणगकेऊ कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुव्वे देवाणुप्पिया ! संजत्ता-नावावाणियएहिं सद्धि कालियदीवाओ मम आसे आणेह । तेवि पडिसुणेंति ॥

२२. तए णं ते कोडुंवियपुरिसा सगडी-सागडं सज्जेति, सज्जेत्ता तत्थ णं वहूणं वीणाण य वत्तकीण य भामरीण य कच्छभीण य भंभाण य छद्भामरीण य चित्तवीणाण य अण्णेसि च वहूण सोइंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं भरेति । वहूणं किण्हाण य' •नीलाण य लोहियाण य हालिद्दाण य ° सुक्कि-लाण य कट्ठकम्माण य चित्तकम्माण य पोत्थकम्माण य लेप्पकम्माण य गंथि-माण य वेढिमाण य पूरिमाण य संघाइमाण य अण्णेसि च वहूणं चक्खिदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं भरेति । वहूण कोट्ठपुडाण य' •पत्तपुडाण य चोयपुडाण य तगरपुडाण य एलापुडाण य हिरिवेरपुडाण य उसीरपुडाण य चंपगपुडाण य मरुयगपुडाण य दमगपुडाण य जातिपुडाण य जुहियापुडाण य मल्लियापुडाण य वासंतिपापुडाण य केयइपुडाण य कप्पूरपुडाण य पाडल-पुडाण य ° अण्णेसि च वहूणं घाणिदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं

१. ना० १।१७।४-१३ ।

२. सं० पा०—हिरण्णागरे य जाव वहवे;
हिरण्णागरा ° (ख, ग) ।

३. यत्थ (ख); अत्थि (घ) ।

४. एतत् क्रियापदं १४ सूत्रानुसारेण स्वीकृतम् ।

५. ना० १।१७।१४, १५ ।

६. नावावाणियगा कणगकेउं एवं वयासी (क,

ख, ग, घ) । यद्यपि सर्वेष्वपि आदर्शेषु असौ पाठो विद्यते, तथापि अर्थमीमांसया नासौ सगच्छते । एतादृशप्रसंगे तथा अदर्शनात् ।
द्रष्टव्यम्—१।८।१०४ सूत्रम् । तेनासौ पाठः
पाठान्तरत्वेन स्वीकृतः ।

७. सं० पा०—किण्हाण य जाव सुक्किलाण ।

८. सं० पा०—कोट्ठपुडाण य जाव अण्णेसि ।

च बहूणं घाणिदिय-पाउग्माणं दव्वाणं पुंजे य नियरे य करंति, करेत्ता तेसि परिपेरंतेणं' •पासए ठवेति, ठवेत्ता निच्चला निष्फंदा तुसिणीया° चिट्ठंति । जत्थ-जत्थ ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्ठंति वा तत्थ-तत्थ णं ते कोडुं वियपुरिसा गुलस्सा जाव पुप्फुत्तर-पउमुत्तराए अण्णेसि च बहूणं जिड्ढिदिय-पाउग्माणं दव्वाणं पुंजे य नियरे य करंति, करेत्ता वियए खणंति, खणित्ता गुलपाणगस्स 'खंडपाणगस्स वोरपाणगस्स' अण्णेसि च बहूणं पाणमाणं वियए भरंति, भरेत्ता तेसि पग्गिपेरंतेणं पासए ठवेति, •ठवेत्ता निच्चला निष्फंदा तुसिणीया° चिट्ठंति ।

जहिं-जहिं च णं ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्ठंति वा तहिं-तहिं च णं ते कोडुं वियपुरिसा बह्वे 'कोयवया जाव सिलावट्टया' अण्णाणि य फासिदिय-पाउग्माइं अत्थुय-पच्चत्थुयाइं ठवेति, ठवेत्ता तेसि परिपेरंतेणं' •पासए ठवेति, ठवेत्ता निच्चला निष्फंदा तुसिणीया° चिट्ठंति ॥

२३. तए णं ते आसा जेणेव ते उक्किट्ठा सद्-फरिस-रस-रुव-गंधा तेणेव उवागच्छंति ॥
अमुच्छिय-आसाणं सायत्त-विहार-पदं

२४. तत्थ णं अत्थेगइया आसा अपुव्वा णं इमे सद्-फरिस-रस-रुव-गंधंति' कट्ठु तेसु उक्किट्ठेसु सद्-फरिस-रस-रुव-गंधेसु अमुच्छिया अगडिया अगिद्धा अणज्भोववण्णा तेसि उक्किट्ठाणं सद्'-•फरिस-रस-रुव°-गंधाणं दूरंदूरेणं अवक्कमंति । ते णं तत्थ पउर-गोयरा पउर-तणपाणिया निवभया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं विहरंति ॥

निगमण-पदं

२५. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निगंथो वा' •निगंथो वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे° सद्-फरिस-रस-रुव-गंधेसु नो सज्जइ नो रज्जइ नो गिज्झइ नो मुज्झइ नो अज्झोववज्झइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं य अच्चणिज्जे जाव' चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ ॥

१. सं० पा०—परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति ।

संक्षेपीकरणेऽस्य विपर्ययो जातः ।

२. खंडपाणगस्स पोरपाणगस्स (क); वोरपाण-गस्स य खंडपाणगस्स य (ख); खंडपाणगस्स (ग) ।

५. सं० पा०—परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति ।

६. गंधाति (ख, घ) ।

३. सं० पा०—ठवेति जाव चिट्ठंति ।

७. सं० पा०—सद् जाव गंधाणं ।

८. सं० पा०—निगंथो वा° ।

४. अस्य सूत्रस्य पूर्वपाठापेक्षया 'कोयवया जाव हंसगन्धा' एवं पाठो युज्यते । संभवतः

९. ना० १।२।७६ ।

३५. तए णं ते आसा वहूहिं मुह्वंधेहि य जाव' छिवणहारेहि य वहूणि सारीर-
माणसाइं दुवखाइं पावेति ॥

निगमण-पदं

३६. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निगंथो वा' •निगंथो वा आयरिय-उवज्झायाणं
अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं ° पव्वइए समाणे इट्ठेसु सद्-फरिस-
रस-रूव-गंधेसु सज्जइ रज्जइ गिज्झइ मुज्झइ अज्झोवज्झइ, से णं इहलोए
चेव वहूणं समणाणं' •वहूणं समणीणं वहूणं सावगाणं वहूणं ° सावियाण य
हीलणिज्जे जाव' चाउरंतं संसारकंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्ठिस्सइ ।

गाहा —

कल-रिभिय-महुर-तंती-तल-ताल-वंस-कउहाभिरामेसु' ।
सद्देसु रज्जमाणा', रमंति सोइंदिय - वसट्ठा ॥१॥
सोइंदिय-दुद्धंतत्तणस्स अह 'एत्तिओ हवइ' दोसो ।
दीविग-रुयमसहंतो, वह्वंधं तित्तिरो पत्तो ॥२॥
थण-जहण-वयण-कर-चरण-नयण-गव्विय-विलासियगईसु' ।
रूवेसु रज्जमाणा, रमंति चक्खिदिय-वसट्ठा ॥३॥
चक्खिदिय-दुद्धंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
जं' जलणंमि जलंते, पडइ पयंगो अबुद्धीओ ॥४॥
अगरुवर-पवरधूवण - उउयमल्लाणुलेवणविहीसु ।
गंधेसु रज्जमाणा, रमंति घाणिदिय-वसट्ठा ॥५॥
घाणिदिय-दुद्धंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
जं ओसहिगंधेणं, विलाओ निद्धावई उरगो ॥६॥
तित्त-कडुयं' कसायं, महुरं' बहुखज्ज-पेज्ज-लेज्झेसु ।
आसायंमि' उ गिद्धा, रमंति जिंभिदिय-वसट्ठा ॥७॥
जिंभिदिय-दुद्धंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
जं गललगुक्खित्तो, फुरइ थलविरेल्लिओ' मच्छो ॥८॥

१. ना० १।१७।३३ ।

२. सं० पा० — निगंथो वा पव्वइए ।

३. सं० पा० — समणाणं जाव सावियाण ।

४. ना० १।३।२४ ।

५. कडुहा० (क); ककुहा० (ख); ककुदा०
(घ, वृ) ।

६. रुयमाणा (ख) ।

७. तत्तियो हवति (क, ग); हवइ एत्तिओ (ख) ।

८. भयमसहंतो (ग); खमसहंतो (घ, वृ) ।

९. °मईसु (क) ।

१०. सं (क) ।

११. कटुय (घ) ।

१२. अंघिलमहुरं (घ) ।

१३. आसायंति (ख) ।

१४. °विरिल्लिओ (क, ख, ग); °विरिल्लिओ (घ) ।

३७. एवं खलु जंतू ! समणेणं भगवया मग्गधीरेणं जाव' संपत्तेणं सत्तस्समस्स
नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह सो कालियदीवो, अणुवमसोवखो तहेव जइ-धम्मो ।
जह आसा तह साहू, वणियव्व अणुकूलकारिजणा ॥१॥
जह सदाइ-अगिद्धा, पत्ता नो पासवंधणं आसा ।
तह विसएमु अगिद्धा, वज्झंति न कम्मणा साहू ॥२॥
जह सच्छंदविहारो, आसाणं तह इहं वरमुणीणं ।
जर-मरणाइ-विवज्जिय, सायत्तार्णदनिव्वारणं ॥३॥
जह सदाइसु गिद्धा, वद्धा आसा तहेव विसयरया ।
पावेंति कम्मबंधं, परमासुह-कारणं घोरं ॥४॥
जह ते कालियदीवा, णीया अण्णत्थ दुहगणं पत्ता ।
तह धम्म-परिव्वट्ठा, अधम्मपत्ता इहं जीवा ॥५॥
पावेंति कम्म-नरवइ-वसया संसारवाहियालीए' ।
आसप्पमहएहि व, नेरइयार्इहि दुक्खाइ ॥६॥

- दुष्पय-चउष्पय-मिय-पगु-पवित्त-सरिसिवाणं घायाण वहाण उच्छायणयाए°
 अहम्मकेऊ समुट्ठिए बहुनगर-निग्गय-जसे मूरे दहणहारी साहसिए सहवेही ॥
२०. से णं तत्थ सीहुगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसायाणं आहेवच्चं° पोरेवच्चं
 सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे°
 विहरइ ॥
२१. तए णं से विजए 'तक्कर-सेणावड' बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेय-
 गाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणघारगाण य
 वालघायगाण य वीसंभघायगाण य जूयकाराण य खंडरवग्गाण य अण्णेसि च
 बहूणं छिण्ण-भिण्ण-वाहिराहयाणं कुडंगे यावि होत्था ॥
२२. तए णं से विजए चोरसेणावड' रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमं जणवयं बहूहि
 गामघाएहि य नगरघाएहि य गोगहणेहि य वंदिग्गहणेहि° य पंथकुट्टणेहि° य
 खत्तखणणेहि य उवीलेमाणे-उवीलेमाणे विट्ठंसेमाणे-विट्ठंसेमाणे नित्थाणं°
 निट्ठणं करेमाणे विहरइ ॥

चिलायस्स चोरपल्ली-गमण-पदं

२३. तए णं से चिलाए दासचेडए रायगिहे बहूहि अत्थाभिसंकीहि य चोज्जाभि-
 संकीहि° य दाराभिसंकीहि य धणिएहि° य जूयकरेहि° य परवभवमाणे-परवभव-
 माणे रायगिहाओ नगराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सीहुगुहा चोरपल्ली
 तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता विजयं चोरसेणावडं उवसंपज्जित्ता णं
 विहरइ ॥
२४. तए णं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणावडस्स अग्ग-असिलट्ठिग्गाहे
 जाए यावि होत्था । जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावडं गामघायं वा°
 •नगरघायं वा गोगहणं वा वंदिग्गहणं वा° पंथकोट्टि वा काउं वच्चइ° ताहे
 वि य णं से चिलाए दासचेडे सुवहुंपि कूवियवलं हय-महिय°-•पवर वीर-
 घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागं किच्छोवगयपाणं दिसोदिसि° पडिसेहेइ, पडि-
 सेहेत्ता पुणरवि लद्धेइ कयकज्जे अणहसमग्गे सीहुगुहं चोरपल्लि हव्वमागच्छइ ॥

१. सं० पा०—आहेवच्चं जाव विहरइ ।

२. तक्करे चोरसेणावड (घ) ।

३. तक्करसेणावड (क) ।

४. × (ग) ।

५. कोट्टणेहि (क) ।

६. निट्ठणं (क) ।

७. चोरा° (घ) ।

८. धणिएहि (ख) ।

९. जुइ° (ख, ग) ।

१०. सं० पा०—गामघायं वा जाव पंथकोट्टि ।

११. वयइ (घ) ।

१२. सं० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहेइ ।

णं देवाणुप्पिया ! सुंगुमाए दारियाए कूवं गमित्तए । तुब्भं णं देवाणुप्पिया !
से विपुले धण-कणगे, मगं सुंगुमा दारिया ॥

४०. तए णं ते नगरगुत्तिया धणस्स एयमद्वं पडिगुणेंति, पडिगुणेंता सण्णद्ध-वद्ध-
वम्मिय-कवया जाव' गहियाउहपहरणा महया-महया उक्किट्ट'-•सीहनाय-बोल-
कलकलखेण पक्खुभिय-महा°समुद्ध-खभूयं पिव करेमाणा रायगिहाओ
निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव चिलाए चोरसेणावडं तेणेव उवागच्छंति,
उवागच्छित्ता चिलाएणं चोरसेणावडणा सद्धि संपलग्गा यावि होत्वा ॥
४१. तए णं ते नगरगुत्तिया चिलायं चोरसेणावडं हय-महिय'-•पवरवीर-घाइय-
विवडियचिध-धय-पडागं किच्छोवगयपाणं दिसोदिसि° पडिसेहेति ॥
४२. तए णं ते पंच चोरसया नगरगुत्तिएहि हय-महिय'-•पवरवीर-घाइय-विवडिय-
चिध-धय-पडागा किच्छोवगयपाणा दिसोदिसि° पडिसेहिया समाणा तं विपुलं
धण-कणगं विच्छड्डुमाणा य विप्पकिरमाणा य सव्वओ समंता विप्पलाइत्वा ॥
४३. तए णं ते नगरगुत्तिया तं विपुलं धण-कणगं गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव रायगिहे
नगरे तेणेव उवागच्छंति ॥

चिलायस्स चोरपल्लीतो पलायण-पदं

४४. तए णं से चिलाए तं चोरसेन्नं तेहि नगरगुत्तिएहि हय-महिय-पवर'-•वीर-
घाइय-विवडियचिध-धय-पडागं किच्छोवगयपाणं दिसोदिसि पडिसेहियं
[पासित्ता ?] ° भोए तत्थे' सुंसुमं दारियं गहाय एगं महं अगामियं' दोहमद्वं
अडवि अणुप्पविट्ठे ॥
४५. तए णं से धणे सत्थवाहे सुंसुमं दारियं चिलाएणं अडवीमुहि' अवहीरमाणं
पासित्ता णं पंचहि पुत्तेहि सद्धि अप्पच्छट्ठे सण्णद्ध-वद्ध-वम्मिय-कवए' चिलायस्स
पयमग्गविहि' अणुगच्छमाणे अभिगज्जंते' ° हक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे अभितज्जे-
माणे अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छइ ॥
४६. तए णं से चिलाए तं धणं सत्थवाहं पंचहि पुत्तेहि सद्धि अप्पच्छट्ठं सण्णद्ध-वद्ध-
वम्मिय-कवयं' समणुगच्छमाणं पासइ, पासित्ता अत्थामे अवले अवोरिए
अपुरिसक्कारपरक्कमे जाहे नो संचाएइ सुंसुमं दारियं निव्वाहित्तए ताहे संते

१. ता० १।१८।३५ ।

२. सं० पा०—उक्किट्ट जाव समुद्धखभूयं ।

३. सं० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहेति ।

४. सं० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहिया ।

५. सं० पा०—पवर जाव भीए ।

६. द्रष्टव्यम्—अस्याध्ययनस्य ३७ सूत्रम् ।

७. आगामियं (ख, ग, घ) ।

८. अडवीमुहं (घ) ।

९. द्रष्टव्यम्—अस्याध्ययनस्य ३५ सूत्रम् ।

१०. अभिगच्छंते अणुगिज्जमाणे (ख, ग) ।

११. द्रष्टव्यम्—अस्याध्ययनस्य ३५ सूत्रम् ।

धणेणं अडवि-लंघणट्ठं सुया-मंससोणियाहार-पदं

५१. तए णं से धणे सत्यवाहे पंचहिं पुत्तेहिं [सद्धि ?] अप्पच्छट्ठे चिलायं तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समंता परिधाडेमाणे' तण्हाए छुहाए य परव्वाहाते' समाणे तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समंता उदगस्स मग्गण-गवेसणं करेमाणे' संते तंते परित्तंते निव्विण्णे तीसे अगामियाए अडवीए' उदगं अणासाएमाणे जेणेव सुंसुमा जीवियाओ ववरोविएल्लिया' तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जेट्ठं पुत्तं धणं' सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! सुंसुमाए दारियाए अट्टाए चिलायं तवकरं सव्वओ समंता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे अगामियाए अडवीए उदगस्स मग्गण-गवेसणं करेमाणा नो चेव णं उदगं आसादेमो । तए णं उदगं अणासा-एमाणा नो संचाएमो रायगिहं संपावित्तए । तण्णं तुव्भे ममं देवानुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह, मम मंसं च सोणियं च आहारेह, तेणं आहारेणं अवयद्धा' समाणा तओ पच्छा इमं अगामियं अडवि नित्थरिहिह', रायगिहं च संपावेहिह', मित्त-नाइ'-•नियग-सयण-संवंधि-परियणं ° अभिसमागच्छिहिह'', अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह ॥

५२. तए णं से जेट्ठे पुत्ते धणेणं सत्यवाहेणं एवं वुत्ते समाणे धणं सत्यवाहं एवं वयासी—तुव्भे णं ताओ ! अम्हं पिया गुरुजणया देवयभूया ठवका पइट्ठवका संखवगा संगोवगा । तं कहण्णं अमहे ताओ ! तुव्भे जीवियाओ ववरोवेमो, तुव्भं णं मंसं च सोणियं च आहारेमो ? तं तुव्भे णं ताओ ! 'ममं जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणियं च आहारेह, अगामियं' अडवि नित्थरिहिह', •रायगिहं च संपावेहिह', मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-परियणं अभिसमा-गच्छिहिह' °, अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह ॥

१. परिधावेमाणे (घ) ।

दोषात् 'धणे' इति जातमिति संभाव्यते ।

२. परिव्वमते (क); परव्वमते (ख, घ); परव्वमए

७. अववद्धा (ख) ।

(घ) । द्रष्टव्यम्—१।१।१८४ ।

८. नित्थरिहिह (क); नित्थरेहिह (ग) ।

३. करेइ (क, ख, ग, घ) !

९. संपावेहह (क) ।

४. × (क, ख, ग); अडवीए उदगस्स मग्गण-

१०. सं० पा०—नाइ° ।

गवेसणं करेमाणे नो चेव णं उदगं आसाएइ तए णं (घ) ।

११. अभिसमागच्छिहह (क, ख, घ) ।

५. ववरोविया (घ) ।

१२. चिन्हाङ्कितपाठः ५१ सूत्रात् किञ्चित् संक्षिप्तोऽस्ति ।

६. धणे (क, ख, ग, घ); यद्यपि सर्वासु प्रतिपु 'धणे' इति पाठः उपलभ्यते, परं ज्येष्ठपुत्रस्य विशेषणत्वेन 'धणं' इत्येव उपयुज्यते । लिपि-

१३. नित्थरेह (क); नित्थरह (ख, ग) ।

सं० पा०—तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स ।

बलहेउं वा नो विसयहेउं वा सुंमुमाए दाशियाए मंससोणिए आहारिए, नन्नत्य^१ एगाए रायगिहं^२ संपावणट्टयाए ॥

६१. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा^३ *आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे^० इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स [खिलागवस्स ?] सुवकासवस्स सोणियासवस्स* •दुग्ग-उस्सास-निस्सासस्स दुग्ग-मुत्त-पुरीस-पूय-वहुपडिपुण्णस्स उच्चार-पासवण-खेल-सिघाणग-वंत-पित्त-मुक्क-सोणियसंभवस्स अधुवस्स^४ अणित्तियस्स असासयस्स सडण-पडण-विद्धंसणधम्मस्स पच्छा पुरं च णं^० अवस्सविप्पजहियव्वस्स नो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा आहारं आहारेइ, नन्नत्य एगाए सिद्धिगमण-संपावणट्टयाए, से णं इहभवे चेव वहुणं समणाणं वहुणं समणीणं वहुणं सावयाणं वहुणं सावियाण य अच्चणिज्जे जाव^५ चाउरंतं संसारकंतरं वीईवइस्सइ—जहा व से सपुत्ते घणे सत्थवाहे ॥

६२. एवं खलु जंवू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव^५ संपत्तेणं अट्टारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह सो चिलाइपुत्तो सुंसुमगिद्धो अकज्ज-पडिवद्धो ।
 धण-पारद्धो पत्तो, महाडविं वसण-सयकलियं ॥१॥
 तह जीवो विसय-मुहे, लुद्धो काऊण पावकिरियाओ ।
 कम्मवसेणं पावइ, भवाडवोए महादुक्खं ॥२॥
 धणसेट्ठी विव गुरुणो, पुत्ता इव साहवो भवो अडवी ।
 सुयमंसमिवाहारो, रायगिहं इह सिवं नेयं ॥३॥
 जह अडवि-नियर-नित्थरण-पावणत्थं तएहिं सुयमंसं ।
 भुत्तं तहेह साहू, गुरुण आणाइ आहारं ॥४॥
 भव-लंघण-सिव-साहणहेउं भुंजंति ण गेहीए ।
 वण्ण-बल-रूव-हेउं, च भावियप्पा महासत्ता ॥५॥

१. अण्णत्य (ख, ग) ।

२. रायगिहं (वव) ।

३. सं० पा०—निग्गंथी वा ।

४. सं० पा०—सोणियासवस्स जाव अवस्स^० ।

५. ना० १।२।७६ ।

६. ना० १।१।७ ।

पुंडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वइए । पुंडरीए राया जाए, कंडरीए जुवराया । महा-
पउमे अणगारे चौद्दसपुव्वइयं अहिज्जइ ॥

६. तए णं थेरा बहिया जणवयविहारं विहरंति ॥

१०. तए णं से महापउमे बहूणि वाराणि सामण्यपरियागं पाउणित्ता जाव' सिद्धे ॥

११. तए णं थेरा अणया कयाइ पुणरवि पुंडरीगिणीए' रायहाणीए नलिण [णि ?]
वणे उज्जाणे समोसद्धा । पुंडरीए राया निग्गए । कंडरीए महाजणसदं सोच्चा
जहा महावलो जाव' पज्जुवासइ । थेरा धम्मं परिकहेति । पुंडरीए समणोवासए
जाए जाव' पडिगए ॥

१२. तए णं कंडरीए' •थेराणं अतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ,
उट्ठेत्ता थेरे तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता
नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गयं पावयणं जाव'० से जहेयं
तुव्वे वयह । जं नवरं—पुंडरीयं रायं आपुच्छामि' । •तओ पच्छा मुंडे भवित्ता णं
अगाराओ अणगारियं० पव्वयामि ।
अहासुहं देवाणुप्पिया !

१३. तए णं से कंडरीए' थेरे वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतियाओ
पडिनिक्खमइ, तमेव चाउग्घटं आसरहं दुरुहइ' •महयाभड-चडगर-पहकरेण
पुंडरीगिणीए नयरीए मज्झमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता चाउग्घटाओ आसरहाओ० पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव
पुंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल'० परिग्गहियं दसणहं
सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु० एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए
थेराणं अंतिए धम्मे निसंते, से'० वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ।
तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुव्वेहि अरुभणुण्णाए समाणे थेराणं अंतिए
मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं० पव्वइत्तए ॥

१४. तए णं से पुंडरीए राया कंडरीयं एवं वयासी—मा णं तुमं भाउया ! इयानि

१. ना० १।५।८४ ।

२. पुंडरीगिणीए (ग) ।

३. भग० ११।१६४-१६६ ।

४. उवा० १।५२ ।

५. सं० पा०—कंडरीए उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठेत्ता
जाव से जहेयं ।

६. ना० १।१।१०१ ।

७. सं० पा०—आपुच्छामि तए णं जाव पव्व-
यामि ।

८. कंडरीए जाव [क, ख, ग, घ] ।

९. सं० पा०—दुरुहइ जाव पच्चोरुहइ ।

१०. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

११. सं० पा०—से धम्मे अभिरुइए । तए णं
देवा जाव पव्वइत्तए ।

उवागच्छिता कंडरीयं वंदइ नमंसइ, वंदिता नमंसिता कंडरीयस्स अणगारस्स
सरीयं सव्वावाहं सरोमं पासइ, पासिता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छिता थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ, वंदिता नमंसिता एवं वयासी—अहणं
भंते ! कंडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहिं ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेहिं
तेगिच्छं आउंटामि । तं तुभे णं भंते ! मम जाणसालामु समोसरह ॥

२३. तए णं थेरा भगवंतो पुंडरीयस्स [एयमट्टं ?] पडिमुणेंति, *पडिमुणेंता जेणेव
पुंडरीयस्स रण्णो जाणसाला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता फामु-एसणिज्जं
पीढ-फलग-सेज्जा-संधारणं ° उवसंपज्जिता णं विहरंति ॥
२४. तए णं पुंडरीए राया *तेगिच्छिणं सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—तुभेणं
देवाणुप्पिया ! कंडरीयस्स फामु-एसणिज्जेणं ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेणं
तेगिच्छं आउट्टेह ॥
२५. तए णं ते तेगिच्छिया पुंडरीएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्टुट्टा कंडरीयस्स
अहापवत्तेहिं ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेहिं तेगिच्छं आउट्टेंति, मज्जपाणणं च से
उवदिसंति ॥
२६. तए णं तस्स कंडरीयस्स अहापवत्तेहिं ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेहिं मज्जपाणएण
य से रोगायंके उवसंते यावि होत्या—हट्टे वलियसरीरे जाए ववगयरोगायंके ° ॥

कंडरीयस्स पमत्तविहार-पदं

२७. तए णं थेरा भगवंतो 'पुंडरीयं रायं आपुच्छंति, आपुच्छिता' वहिया जणवय-
विहारं विहरंति ॥
२८. तए णं से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुणंसि असण-
पाण-खाइम-साइमंसि मुच्छिणं गिद्धे गद्धिणं अज्झोववण्णे नो संचाएइ पुंडरीयं
आपुच्छिता वहिया अवभुज्जएणं ° जणवयविहारेणं ° विहरित्तए तत्येव ओसन्ते
जाए ॥

पुंडरीएण पडिबोह-पदं

२९. तए णं से पुंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे ण्हाए अंतेउर-परियाल'-
संपरिवुडे जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवाच्छइ, उवागच्छिता

१. अहापत्तेहिं (ख); अहावत्तेहिं (ग); अहा-
पवित्तेहिं (घ) ।
२. सं० पा०—भेसज्जेहिं जाव तेगिच्छं ।
३. सं० पा०—पडिमुणेंति जाव उवसंपज्जिता ।
४. सं० पा०—जहा मंडुए सेलगस्स जाव
वलियसरीरे जाए ।
५. १।५।११६ सूत्रे 'गल्लसरीरे' इति पाठोस्ति ।
६. पुंडरीयं पुच्छंति २ (ख, ग) ।
७. सं० पा०—अवभुज्जएणं जाव विह-
रित्तए ।
८. परियालं सद्धिं (क, घ) ।

तेणेव उवागच्छड, उवागच्छिता पंडरीय रायं एवं वयासी—एवं खनु देवाणुप्पिया ! तव पियभाउणं कंडरीय अणगारे असोमवणियाण असोमवर-पायवस्स अहे पण्डविसिलापट्टे ओह्यमणसंकाणे जाव भियायइ ॥

३४. तए णं से पंडरीय अम्मथाईए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म तहेव संभंते समाने उट्ठाण उट्ठेइ, उट्ठेत्ता अंतेउर-परियावमंपरिवुत्ते जेणेव असोमवणिया 'तेणेव उवागच्छड, उवागच्छिता' कंडरीय अणगारं तिक्खुत्ता' 'आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता' एवं वयासी—धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! 'कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे गुलट्ठे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्म-जीवियफले जाव' अगाराओ अणगारियं पव्वइए, अहं णं अधन्ने अकयत्थे अकयपुण्णे अकयलक्खणे जाव' नो संचाएमि' पव्वइत्तए । तं धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव' गुलट्ठे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्म-जीवियफले ॥

३५. तए णं कंडरीय पंडरीएणं एवं वुत्ते समाने तुसिणीए संचिट्ठइ । दोच्चंपि 'पंडरीएणं एव वुत्ते समाने तुसिणीए' संचिट्ठइ ॥

३६. तए णं पंडरीय कंडरीयं एवं वयासी—अट्ठो भते' ! ओगंहि ? हंता ! अट्ठो ॥

३७. तए णं से पंडरीय राया कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कंडरीयस्स महत्थं' 'महग्वं महरिहं विउलं' रायाभिसेयं उवट्ठवेह जाव' रायाभिसेएणं अभिसिचति ॥

पुंडरीयस्स पव्वज्जा-पदं

३८. तए णं से पंडरीय सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, सयमेव चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कंडरीयस्स संतियं आयारभंडगं गेण्हइ, गेण्हित्ता इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिणिहइ—कप्पइ मे थेरे वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतिए चाउज्जामं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं तओ पच्छा आहारं आहारित्तए ति कट्ठइ इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिणिहित्ता णं पंडरीगिणीए' पडिणिवक्खमइ, पडि-णिवक्खमित्ता पुव्वानुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव थेरा भग-वंतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

१. पिउभाउए (ख, ग); भाउए (घ) ।

२. सं० पा०—असोमवणिया जाव कंडरीयं ।

३. सं० पा०—तिक्खुत्तो जाव एवं ।

४. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव पव्वत्तिए ।

५, ६. ना० ११६।२६ ।

७. द्रष्टव्यम्—२६ सूत्रम् ।

८. ना० ११६।२६ ।

९. सं० पा०—तच्चं पि जाव संचिट्ठइ ।

१०. हंते (ग) ।

११. सं० पा०—महत्थं जाव रायाभिसेयं ।

१२. ना० १११।१७, ११८ ।

१३. पोंडरिगिणीए (क, ख) ।

विलमिव पण्णमभूणं अण्णणेणं' तं कामु-पराणिज्जं अमण-पाण-खाडम-साइमं
सरीरकोट्टुगंसि पक्खिवइ ॥

४४. तए णं तस्स पुंडरीयस्स अण्णगारस्स तं कालाडयकंतं अरसं विरसं सीयलुक्खं
पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालशमयंसि धम्मजागरियं
जागरमाणस्स से आहारे नो सम्मं परिणमइ ॥

४५. तए णं तस्स पुंडरीयस्स अण्णगारस्स सरीरगंसि वेयणा पाउव्वभूया -उज्जला'
•विउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा° दुग्गियासा । पित्तज्जर-परिगय-सरीरे
दाहवक्कंतीए विहरइ ॥

४६. तए णं से पुंडरीए अण्णगारे अत्थामे अवले अवोरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे
करयल'•परिग्गहियं दसणहं शिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु° एवं वयासी—
नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव' सिद्धिगइणामवेज्जं ठाणं संपत्ताणं ।
नमोत्थु णं थेराणं भगवंताणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसयाणं । पुव्वि पि
य णं मए थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव' वहिद्धादाणे'
पच्चक्खाए', •इयारिणं पि णं अहं तेसिं चेव अंतिए सव्वं पाणाइवायं
पच्चक्खामि जाव वहिद्धादाणं पच्चक्खामि । सव्वं असण-पाण-खाडम-साइमं
पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए । जंपि य इमं
सरीरं इट्ठं कंतं तं पि य णं चरिमेहि उस्सास-नीसालेहि वोसिरामि ति
कट्ठु° आलोइय-पडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे उववण्णे ।
तओ अणंतं उव्वट्ठित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहइ' •वुज्झिहइ मुच्चिहइ
परिनिव्वाहिइ° सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निगमण-पदं

४७. एवामेव समणाउसो' ! •जो अम्हं निगंथो वा निगंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं
अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अण्णगरियं° पव्वइए समाणे माणुस्सएहि

१. अत्तणेणं (ख) ।

२. सं० पा०—उज्जला जाव दुग्गियासा ।

३. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

४. ओ० सू० २१ ।

५. ना० १।५।५६ ।

६. मिच्छादंसणसल्ले (क, ख, ग, घ) अस्या-

ध्ययनस्य ३८, ४३ सूत्रे 'चाउज्जामं धम्मं

पडिज्जइ' इति पाठोस्ति । उपलब्धपाठश्च

अस्य विसंवादी वसंतंते । मेघकुमाराधिकाराव

पूरितोसो पाठः तेनात्रापि विसंवादो जातः ।

द्रष्टव्यम्—१।५।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

७. सं० पा०—पच्चक्खाए जाव आलोइय० ।

चिह्नांकितः पाठः १।१।२०६ सूत्रेण पूरितः ।

८. पू०—ना० १।१।२०६ ।

९. सं० पा०—सिज्झिहइ जाव सव्वदुक्खाण ।

१०. सं० पा०—समणाउसो जाव पव्वइए ।

कालीदेवी-पदं

१०. तेणं कालेणं तेणं समणं कालो देवो नमस्संवाणं रायहाणोणं कालिवडेंसगभवणं कालंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहुरसोहिं चउहिं महयरियाहिं सपरिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं सत्ताहिं अणिएहिं सत्ताहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरखणदेवसाहुरसोहिं अण्णेहिं य वहुहिं कालिवडिगयं'-भवणवासीहिं असुरकुमारहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडा महयाहय'-●नट्टु-गोय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-वण-मुडंग-पडुण्णवादियरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी ° विहरइ । इमं च णं केवलकणं जंबुद्वीवं दीवं विउत्तेणं ओहिणा 'आभोएमाणी-आभोगमाणी' पातइ ॥

कालीए भगवओ वंदण-पदं

११. एत्थं समणं भगवं महावीरं जंबुद्वीवे दीवे भारहे वामे रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए अहापडिखुवं ओगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ, पासित्ता हट्टुत्तु-चित्तमाणंदिया पीइमणा' ●परमसोमणस्सिया हरिस-वस-विसप्पमाण °-हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता तित्थगराभिमुहो सत्तट्टु पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचेत्ता दाहिणं जाणुं धरणियलंसि निहट्टु तिवखुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि निवेसेइ, ईसि पच्चुन्नमइ, पच्चुन्नमित्ता कडग-तुडिय-थंभियाओ भुयाओ साहरइ, साहरित्ता करयल' ●परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि ° कट्टु एवं वयासी-नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव' सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव' सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपाविडकामस्स । वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगया, पासउ मे समणे भगवं महावीरे तत्थगए इहगयं ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्था-भिमुहा निसण्णा ॥

१२. तए णं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे" ●अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए म्णोगए संकप्पे ° समुप्पज्जित्था—सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्तए"

१. मयहरियाहिं (क, ख, ग, घ); महरियाहिं (वव) । ८. सं० पा०—करयल जाव कट्टु ।

द्रष्टव्यम्—१।१६।१५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् । ९. १०. ओ० सू० २१ ।

२. °वडेंसय (ख, ग) ।

११. सं० पा०—इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।

३. सं० पा०—महयाहय जाव विहरइ ।

१२. वंदित्ता (क, ख, ग, घ); सं० पा०—वंदि-

४. आभोएमाणी (क, ख, ग, घ) ।

त्तए जाव पज्जुवासित्तए । असौ पाठः 'राय-

५. जत्थ (क, घ); यत्थ (ग) ।

पसेणइय' सूत्रस्य वृत्त्यनुसारेण पूरितः ।

६. सं० पा० पीइमणा जाव हियया ।

द्रष्टव्यम्—'रायपसेणइय' वृत्ति पृ० ५१, ५२ ।

७. निमेइ (क, ग) ।

दारिया होत्था—बहु वहुकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्थणी'
निव्विण्णवरा वरगपरिवज्जिया' वि होत्था ॥

कालीए पव्वज्जा-पदं

१६. तेणं कालेणं तेणं समणं पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे' *तित्थगरे
सहसंबुद्धे पुरिसोत्तमे पुरिससोत्ते पुरिसवरपंडरीए पुरिसवरसंवहत्थी
अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए जीवदए दीवो ताणं सरणं गई पड्डा
धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्ठी अप्पट्ठिय-वरनाणदंसणवरे वियट्ठच्छमे अरहा
जिणे केवली जिणे जाणए तिण्णे ताराए मुत्ते मोयए बुद्धे वोहए सव्वण्णू सव्व-
दरिसी नवहत्थुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसहनारायसंघयणे जल्ल-
मल्लकलंकसेयरहियसरीरे सिवमयलमक्यमणंतमवखयमव्वावाहमपुणरावत्तणं
सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपाविउकामे' सोलसहिं समणसाहस्सीहिं अट्ठत्तीसाए
अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुट्ठि चरमाणे गामाणुगामं
दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे आमलकप्पाए नयरीए बहिया ° अंवसालवणे
समोसढे । परिसा निग्गया जाव' पज्जुवासइ ॥

२०. तए णं सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ' *तुट्ठ-चित्तमाणंदिया
पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण ° हियया जेणेव अम्मापियरो
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल' *परिगहियं दसणहं सिरसावत्तं
मत्थए अंजलि कट्ठु ° एवं वयासी—एवं खलु अम्मयाओ ! पासे अरहा
पुरिसादाणीए आइगरे' *तित्थगरे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इह चेव
आमलकप्पाए नयरीए अंवसालवणे अहापडिरुवं ओगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं
तवसा अप्पाणं भावेमाणे ° विहरइ । तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुव्भेहिं
अव्वभणुण्णाया समाणी पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया
गमित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिवंधं करेहि ॥

२१. तए णं सा काली दारिया अम्मापिईहिं अव्वभणुण्णाया समाणी हट्ठ' *तुट्ठ-चित्त-
माणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण ° हियया ण्हाया
कयवलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुट्ठप्पावेसाइं मंगल्लाईं वत्थाइं

१. °पुत्तथणी (ग) ।

२. वरपरिवज्जिया (घ); वरवज्जिया (वृ) ।

३. सं० पा०—जहा वद्धमाणसामी नवरं नव-
हत्थुस्सेहे ° (क, ख, ग, घ) ।

४. पु०—ओ० सू० १६ ।

५. ओ० सू० ५२ ।

६. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया ।

७. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

८. सं० पा०—आइगरे जाव विहरइ ।

९. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया ।

अवभणुण्याया समानी पासस्य अरुह्यां यत्तिण, मुंडा भविता अगाराओ अणगा-
रियं पव्वइत्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिवंधं करेहि ॥

२६. तए णं रो काले गाहावई धिउलं असण-पाण-साइम-साइमं उववखडावेइ,
उववखडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-परियणं आमतेइ, आमतेत्ता
तओ पच्छा ण्हाए जाव' विपुलेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ
सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणत्ता तरसेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-
परियणस्स पुरओ कालिं दारियं सेयापीएहि कलगेहि ण्हावेइ, ण्हावेत्ता सव्वा-
लंकार-विभूसियं करेइ, करेत्ता पुरिससहरसवाहिणि सीयं दुह्हेइ, दुह्हेत्ता
मित्तनाइ-नियग-सयण-संवंधि-परियणेणं सान्नि संपरिवुडे सव्विट्ठाए जाव' दुदुहि-
निग्घोस-नाइयरवेणं आमलकणं नयारि मज्झमज्जेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छत्ता
जेणेव अंवसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता छत्ताईए तित्थगराइ-
सए पासइ, पासित्ता सीयं ठवेइ, ठवेत्ता कालि दारियं सीयाओ पच्चोरुहेइ' ॥

२७. तए णं तं कालि दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसा-
दाणीए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमं-
सित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! काली दारिया अहं घूया
इट्ठा कंता जाव' उवरपुप्फं पिव दुल्लहा सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ?
एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा
भवित्ता' •णं अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए । तं एयं णं देवाणुप्पियाणं
सिस्सिणिभिव्वं दलयामो । पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिव्वं ।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि ॥

२८. तए णं सा काली कुमारी पासं अरहं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तर-
पुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं
ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव लीयं करेइ, करेत्ता जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासं अरहं तिव्वुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ,
करेत्ता वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं भंते ! लोए'

१. ना० १।७।६ ।

२. ना० १।१।३३ ।

३. पच्चोरुहेइ (क, ख, ग, घ) ।

४. ना० १।१।४५ ।

५. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइत्तए ।

६. 'लोए' अतोये "एवं जहा देवाणंदा जाव"

समर्पणवाक्यमस्ति, किन्तु भगवतीसूत्रे
(६।१५२) देवाणंदा-प्रकरणे समर्पितः पाठः
संक्षिप्तोति, तेन एतद्वाक्यं पाठान्तररूपेण
स्वीकृतमस्माभिः । अस्य प्रुतिस्थलनिर्देशः
प्रस्तुतसूत्रादेव कृतः ।

३६. तए णं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठं नो आढाइ' *नो परियाणाइ' तुसिणीया संचिट्ठइ ॥

३७. तए णं ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालि अज्जं अभिक्खणं-अभिवक्खणं हीलेंति निदंति खिसंति गरहंति अवमन्नेति अभिक्खणं-अभिवक्खणं एयमट्ठं निवारंति ॥

कालीए पुढोविहार-पदं

३८. तए णं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं निग्गंथीहिं अभिक्खणं-अभिवक्खणं हीलिज्जमाणीए जाव' निवारिज्जमाणीए इमेयस्सुवे अज्जत्थिए' *चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे' समुप्पज्जित्था—जया णं अहं अगारमज्जे' वसित्था तया णं अहं सयंवसा, जप्पभिइं च णं अहं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया तप्पभिइं च णं अहं परवसा' जाया । तं सयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए' उट्ठियम्मि सूरं सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते पाडिक्कयं' उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए' उट्ठियम्मि सूरं सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते पाडिक्कं उवस्सयं गेण्हइ । तत्थ णं अणिवारिया अणोहट्ठिया सच्छंदमइं अभिवक्खणं - अभिवक्खणं हत्थे धोवेइ', *पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराणि धोवेइ, कक्खंतराणि धोवेइ, गुज्जंतराणि धोवेइ, जत्थ-जत्थ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, तं पुत्रामेव अम्भुक्खित्ता तओ पच्छा' आसयइ वा सयइ वा ॥

कालीए मच्चु-पदं

३९. तए णं सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसन्ना' ओसन्नविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहाछंदा अहाछंदविहारी संसत्ता संसत्तविहारी वृहणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं भूसेइ, भूसेत्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, छेएत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता' कालमासे कालं किच्चा चमरच्चंचाए रायहाणीए कालि-वडिसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिया अंगुलस्स 'असंखेज्जाए भागमेत्ताए' ओगाहणाए कालीदेवित्ताए उववण्णा ॥

१. सं० पा०—आढाइ जाव तुसिणीया ।

एक्कयं (घ) ।

२. ना० २।१।३७ ।

८. पू०—ना० १।१।२४ ।

३. सं० पा०—अज्जत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

९. सं० पा०—धोवेइ जाव आसयइ ।

४. अगारवास' (ख, ग, घ) ।

१०. अपडिक्कंता (ख) ।

५. परवसा (क, ख, घ) ।

११. असंखेज्जए० (ख); असंखेज्जए भागमेत्ताए

६. पू०—ना० १।१।२४ ।

(ग); असंखेज्जइ० (घ) ।

७. पाडिक्कं (क); पडिक्कयं (ख, ग); पाडि-

वीअं अज्झयणं

राई

४६. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, विइयस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
४७. एवं खलु जंदू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए । सामी समोसढे । परिसा निग्गया जाव' पज्जुवासइ ॥
४८. तेणं कालेणं तेणं समएणं राई देवी चमरचंचाए रायहाणीए एवं जहा काली तहेव' आगया, नट्टविहि उवदंसित्ता पडिगया ॥
४९. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पुव्वभवपुच्छा' ॥
५०. *गोयमाति ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी०— एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं आमलकप्पा नयरी अंवसालवणे चेइए । जियसत्तू राया । राई गाहावई । राइसिरी भारिया । राई दारिया । पासस्स समोसरणं । राई दारिया जहेव काली तहेव' निक्खंता ॥
५१. *तए णं सा राई अज्जा जाया' ॥
५२. तए णं सा राई अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ' ॥

१,२. ना० १।१।७ ।

३. ओ० सू० ५२ ।

४. ना० २।१।१०-१२ ।

५. सं० पा०—पुव्वभवपुच्छा एवं । पू०—ना० २।१।१३, १४ ।

६. ना० २।१।१८-३१ ।

७. सं० पा०—तहेव सरीरवाउसिया तं वेव सव्वं जाव अंतं ।

८. पू०—ना० २।१।३२ ।

९. पू०—ना० २।१।३३ ।

पंचमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

कमला

१. "जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं चउत्तस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंवू ! समणेणं भगवया महावीरेणं पंचमस्स वग्गस्स० वत्तीसं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—
 १. कमला २. कमलप्पभा चेव, ३. उप्पला य ४. सुदंसणा ।
 ५. रुववई ६. वहुरुवा, ७. सुरुवा ८. सुभगावि य ॥१॥
 ९. पुण्णा १०. बहुपुत्तिया' चेव, ११. उत्तमा १२. तारयावि' य ।
 १३. पउमा १४. वमुमई चेव, १५. कणगा १६. कणगप्पभा' ॥२॥
 १७. वडेंसा १८. केउमई चेव, १९. 'वइरसेणा २०. रइप्पिया' ।
 २१. रोहिणी २२. नवमिया चेव, २३. हिरी २४. पुप्फवईवि य ॥३॥
 २५. 'भुयगा २६. भुयगावई' चेव, २७. महाकच्छा २८. फुडा इय ।
 २९. सुघोसा ३०. विमला चेव, ३१. सुस्सरा य ३२. सरस्सई ॥४॥
३. "जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं पंचमस्स वग्गस्स वत्तीसं अज्झयणा पण्णत्ता, पंचमस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ०
४. एवं खलु जंवू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव' परिसा पज्जुवासइ ॥

-
- | | |
|--|--|
| १. सं० पा०—पंचम वग्गस्स उक्खेवओ । एवं खलु जंवू ! जाव वत्तीसं । | ५. रतिसेणा रतिप्पभा (ठाणं ४।१६७); रतिसेणा रइप्पिया (भ० १०; ८६) । |
| २. वहुपुण्णिया (क, ख, घ) । | ६. सुभगा सुभगावती (ख) । |
| ३. भारियावि (क, घ) । | ७. सं० पा०—उक्खेवेओ पढमज्झयणस्स । |
| ४. रत्तणप्पभा (ठाणं ४।१६५) । | ८. ओ० सू० ५२ । |

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव' परिसा पज्जुवासइ ॥
५. तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरप्पभा देवी सूरंसि' विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहा-
सणंसि । सेसं जहा कालीए' तहा', नवरं—पुव्वभवो ग्रस्सखुरीए नयरीए
सूरप्पभस्स गाहावड्ढस्स सूरसिरीए भारियाणं सूरप्पभा दारिया । सूरस्स
अग्गमहिंसी । ठिई अद्धपल्लिओवमं पंचहि वासगणहि अद्भहियं । सेसं जहा
कालीए ॥

२-४ अज्झयणाणि

६. एवं—●आयवा, अच्चिमाली, पभंकरा ° । सव्वाओ अरवखुरीए नयरीए ॥

अट्ठमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

चंदप्पभा

१. ●जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं सत्तमस्स वग्गस्स
अयमट्ठे पणत्ते, अट्ठमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के
अट्ठे पणत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स वग्गस्स ° चत्तारि
अज्झयणा पणत्ता, तं जहा—चंदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभंकरा ॥
३. ●जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं अट्ठमस्स वग्गस्स
चत्तारि अज्झयणा पणत्ता, अट्ठमस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के
अट्ठे पणत्ते ? °
४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव' परिसा
पज्जुवासइ ॥
५. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंदप्पभा देवी चंदप्पभंसि विमाणंसि चंदप्पभंसि
सीहासणंसि । सेसं जहा कालीए', नवरं—पुव्वभवो महुँराए नयरीए भंडिवड्ढेसए

१. ओ० सू० ५२ ।

२. २।८।५ सूत्रपद्धत्या अत्रापि 'सूरप्पभंसि'
इति पाठो युज्यते ।

३. ना० २।१।१०-४४ ।

४. सं० पा०—एवं सेसाओवि ।

५. सं० पा०—अट्ठमस्स उक्खेवओ । एवं खलु
जंबू जाव चत्तारि ।

६. सं० पा०—पढमज्झयणस्स उक्खेवओ ।

७. ओ० सू० ५२ ।

८. ना० २।१।१०-४४ ।

६. एवं अट्ट वि अज्झयणा काली-गमएण नायव्वा, नवरं—सावत्थीए दोजणीओ । हत्थिणाउरे दोजणीओ । कं पिण्णपुरं दोजणीओ । साएण दोजणीओ । पउमं पियरो विजया मायराओ । सव्वाओ वि पासरस अंतियं पव्वइयाओ । राक्कस्स अग्गमहिरीओ । ठिई सत्तं पत्तिओवमाइ । महारविदेहं चासे अंतं कार्हति ॥

दसमो वग्गो

१-८ अज्झयणाणि

१. 'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं नवमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पणत्ते, दसमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पणत्ते ?
२. एवं खलु जंजू ! समणेणं भगवया महावीरेणं दसमस्स वग्गस्स ° अट्ठ अज्झयणा पणत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१. कण्हा य २. कण्हराई, ३. रामा तह ४. रामरक्खिया ।

५. वसू या ६. वसुगुत्ता ७. वसुमिक्ता ८. वसुंधरा चैव ईसाणे ॥१॥

३. 'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं दसमस्स वग्गस्स अट्ठ अज्झयणा पणत्ता, दसमस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पणत्ते ? °
४. एवं खलु जंजू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव' परिसा पज्जुवासइ ॥
५. तेणं कालेणं तेणं समएणं कण्हा देवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हंसि सीहासणंसि, सेसं जहा कालीए ॥
६. एवं अट्ट वि अज्झयणा काली-गमएणं नायव्वा, नवरं—पुव्वभवो वाणारसीए नयरीए दोजणीओ । रायगिहे नयरे दोजणीओ । सावत्थीए नयरीए दोजणीओ । कोसंबीए नयरीए दोजणीओ । रामे पिया धम्मा माया । सव्वाओ वि पासस्स अरहओ अंतिए पव्वइयाओ । पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए । ईसाणस्स

१. सं० पा०—दसमस्स उक्खेवओ । एवं खलु २. सं० पा०—पढमस्स उक्खेवओ ।

जंजू जाव अट्ठ ।

३. ओ० सू० ५२ ।

१४. तस्स णं आणंदस्स गाहावडस्स सिवणंदा' नामं भारिया होत्था—अहीणं-
 •पडिपुण्ण-पंचविद्यसरीरा नवसण-वज्जण-गुणोव्वेया माणुस्माण-पमाण-
 पडिपुण्ण-गुजाय-राज्वंग-गुंदरंगी रासि-सोमाकार-कंत-पिय-दंसणा° सुख्वा,
 आणंदस्स गाहावडस्स उट्ठा, आणंदेणं गाहावडणा राद्धि अणुरत्ता अविरत्ता,
 इट्ठे' •सह-करिस्स-रस्स-रुव-गंधे° पंचविट्ठे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी
 विहरइ ॥
१५. तस्स णं वाणियगामस्स नयरस्स वहिया उत्तरगुस्सिथमे दिसोभाए, एत्थ णं
 कोल्लाए' नामं सण्णिवेसे होत्था—रिद्धात्थमिए जाव' पासादिए दरिसणिज्जे
 अभिरुवे पडिरुवे ॥
१६. तत्थ णं कोल्लाए सण्णिवेसे आणंदस्स गाहावडस्स बहुवे' मित्त-नाइ-नियग-
 सयण-संवंधि-परिजणे परिवसइ—अइट्ठे जाव' बहुजणस्स अपरिभूए ॥

महावीर-समवसरण-पदं

१७. तेणं कात्तेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे' जाव' •जेणेव वाणियगामे
 नयरे जेणेव दूइपलासए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरुव
 ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ° ॥
१८. परिसा निग्गया ॥
१९. कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव" पज्जुवासइ ॥
२०. तए णं से आणंदे गाहावई इमोसे कहाए लद्धट्ठे समणे—"एवं खलु समणे"
 •भगवं महावीरे" पुक्खाणुपुक्खि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए
 इह संपत्ते इह समोसठे इहेव वाणियगामस्स नयरस्स वहिया दूइपलासए चेइए
 अहापडिरुव ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।"
 तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं
 णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-
 पज्जुवासणयाए ? एगस्सवि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग
 पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं

१. सिवानंदा (ख,घ) ।

२. सं० पा०—अहीण जाव सुख्वा ।

३. सं० पा०—इट्ठे जाव पंचविट्ठे ।

४. कोलाते (क,ग) ।

५. रिद्धित्थमिए (ख) ।

६. ओ० सू० १ ।

७. बहुवे (ग) ।

८. उवा० १।११ ।

९. सं० पा०—महावीरे जाव समोसरिए ।

१०. ओ० सू० १६, २२ ।

११. ओ० सू० ५३-६६ ।

१२. सं० पा०—समणे जाव विहरइ तं महा-

फलं गच्छामि णं जाव पज्जुवासामि ।

१३. पू०—ओ० सू० ५२ ।

'उदगरस घडेहि', अवसेसं सव्वं मज्जणविहिं पच्चवत्ताइ ।

- (७) तयाणंतरे च णं वत्थविहिपरिमाणं करेइ—'नन्तत्थ एगेण' 'भोमजुयलेण', अवसेसं सव्वं वत्थविहिं पच्चवत्ताइ ।
- (८) तयाणंतरे च णं विलेवणविहिपरिमाणं करेइ—'नन्तत्थ अगरे' 'कुंकुम-चंदणमादिहि', अवसेसं सव्वं विलेवणविहिं पच्चवत्ताइ ।
- (९) तयाणंतरे च णं पुष्कविहिपरिमाणं करेइ—'नन्तत्थ एगेणं सुद्धपडमेणं मालइकुमुमदामेणं वा, अवसेसं सव्वं पुष्कविहिं पच्चवत्ताइ ।
- (१०) तयाणंतरे च णं आभरणविहिपरिमाणं करेइ—'नन्तत्थ मदकण्णेज्जाहि नाममुद्दाए य, अवसेसं सव्वं आभरणविहिं पच्चवत्ताइ ।
- (११) तयाणंतरे च णं धूवणविहिपरिमाणं करेइ—'नन्तत्थ अगरे' 'तुरुक्क-धूवमादिहि, अवसेसं सव्वं धूवणविहिं पच्चवत्ताइ ।
- (१२) तयाणंतरे च णं भोयणविहिपरिमाणं करेमाणे—
- (क) पेज्ज-विहिपरिमाणं करेइ—'नन्तत्थ एगाए कट्टोज्जाए, अवसेसं सव्वं पेज्जविहिं पच्चवत्ताइ ।
- (ख) तयाणंतरे च णं भक्खविहिपरिमाणं करेइ—'नन्तत्थ एगेहि घयपुण्णेहि खंडखज्जाहि वा, अवसेसं सव्वं भक्खविहिं पच्चवत्ताइ ।
- (ग) तयाणंतरे च णं ओदणविहिपरिमाणं करेइ—'नन्तत्थ कलमसालि-ओदणेणं, अवसेसं सव्वं ओदणविहिं पच्चवत्ताइ ।
- (घ) तयाणंतरे च सूवविहिपरिमाणं करेइ—'नन्तत्थ कलायसूवेण' वा 'मुग्गसूवेण वा माससूवेण' वा अवसेसं सव्वं सूवविहिं पच्चवत्ताइ ।
- (ङ) तयाणंतरे च णं घयविहिपरिमाणं करेइ—'नन्तत्थ सारदिणं गोघय-मंडेणं, अवसेसं सव्वं घयविहिं पच्चवत्ताइ ।
- (च) तयाणंतरे च णं सागविहिपरिमाणं करेइ—'नन्तत्थ वत्थुसाएण' वा तुंवसाएण वा सुत्थियसाएण' वा मंडुक्कियसाएण वा, अवसेसं सव्वं सागविहिं पच्चवत्ताइ ॥

१. उदगघडेहि (क) ।

२. नन्तत्थेक्केणं (क, ग) ।

३. अगुरु (क, घ) ।

४. °मातितेहि (क); माइतेहि (घ) ।

५. मालई ° (घ) ।

६. अगुरु (क, घ) ।

७. भक्खण ° (ख) ।

८. भक्खण ° (क, ख) ।

९. सूय ° (क, ग, घ) ।

१०. कालाय ° (क) ।

११. मुग्गमाससूवेण (क) ।

१२. वुसातेण (क); वत्थुसातेण (ग); चुच्चुसाएण (घ) ।

१३. सुत्थियया ° (ग); सूवत्थियया ° (घ) ।

पेयाला" जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा — १. धंवे २. वहे ३. छविच्छेदे' ४. अतिभारे' ५. भत्तपाणयोच्छेदे' ॥

३३. 'तयाणंतरं च ण थूलयस्स मुसावायवेरमणस्स' समणोवासएणं 'पंच अतियारा' जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा — १. सहसामवखाणे' २. रहस्सववखाणे' ३. 'सदारमंतभेए ४. मोसोवण्णे' ५. कूडलेहकरणे ॥"
३४. तयाणंतरं च ण थूलयस्स अदिण्णादाणवेरमणस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा — १. तेणाहूटे २. तक्करप्पओगे" ३. विरुद्धरज्जातिक्कमे ४. कूडतुल" - कूडमाणे ५. तप्पडिस्सवगववहारे ॥
३५. तयाणंतरं च णं सदारसंतोसोए समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा — १. इत्तरियपरिग्गहियागमणे" २. अपरिग्गहियागमणे ३. अणंगकिड्डा" ४. परवीवाहकरणे" ५. 'कामभोगे तिब्वाभिलासे'" ॥
३६. तयाणंतरं च णं इच्छापरिमाणस्स समणोवासएणं पंच" अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा — १. खेत्तवत्तुपमाणातिक्कमे २. हिरण्णसुवण्ण-पमाणातिक्कमे ३. धणधणपमाणातिक्कमे ४. दुपयचउप्पयपमाणातिक्कमे ५. कुवियपमाणातिक्कमे ॥

१. पंचतियारेपेयाला (क), पंचतियारा पेयाला ११. वाचनान्तरे तु - कन्नालीयं, गवालीयं, भूमा-
(घ) । लियं, नासावहारं, कूडसक्खेज्जं संधिकरणे ति
२. °च्छेए (क, ख, घ) । पठ्यते । "आवश्यकादौ पुनरिमे स्थूलमृपा-
३. अयि° (क), अइ° (ख, घ) । वादभेदा उक्ताः" ततोयमर्थः संभाव्यते—
४. °वोच्छेए (क, ख); °वोच्छेए (घ) । एत एव प्रमादसहसाकाराज्जाभोगैरभिधीय-
५. थूलगमुसावाय° (क, ग, घ) । माना मृपावादविरतेरतिचाराः भवन्त्याकुट्या
६. पंचतियारा (क, ग, घ) । अस्मिन् सूत्रे तथा च भंगा इति (वृ) ।
उत्तरवर्तिअतिचारसूत्रेषु 'पेयाला' शब्दः १२ तक्करप्पओगे (क, घ) ।
साक्षात् लिखितो नास्ति । १३. कूडतुल्ल (घ) ।
७. थूलगमुसावायस्स पंचविहे पणत्ते, तंजहा — १४. इत्तरिय° (क, ग) ।
कण्णालियं, गोवालियं, भोमालियं, णासा- १५. °कीडा (ख, घ) ।
वहारो, कूडसक्खेज्जं संधिकरणे । थूलगमुसा- १६. परविवाह° (क्व) ।
वायस्स पंच अतियारा जाणियव्वा (ख) । १७. कामभोगे तिब्वाभिनिवेसे (क); कामभोएसु
८. सहसववखाणे (क) तिब्वाभिनिवेसे (ख) ।
९. रहसववखाणे (क); रहसाववखाणे (ख, घ) । १८. इमे पंच (क) ।
१०. मोसोवण्णे सदारमंतभेए (क) ।

●चित्तमाणंदिया पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिगहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं सामि ! त्ति आणंदस्स समणोवासगस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ ॥

४७. तए णं से आणंदे समणोवासए कोडुंवियपुरिसे सद्दवेइ, सद्दवेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवानुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइयं समखुरवालिहाण-सम-लिहियसिगएहि जंवूणयामयकलावजुत्त-पडविसिद्धएहि रययामयघंट-मुत्तरज्जुग-वरकचणखचियन्तत्थपग्गहोग्गहियएहि नीलुप्पलकयामेलएहि पवरगोणजुवाणएहि नाणामणिकणग-घटियाजालपरिगयं सुजायजुगजुत्त-उज्जुग-पसत्थसुविरइय-निम्मियं पवरलक्खणोववेयं जुत्तामेव धम्मियं जाणप्पवरं उवट्टवेह, उवट्टवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

४८. तए णं ते कोडुंवियपुरिसा आणंदेणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिगहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेत्ति, पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त-जोइयं जाव' धम्मियं जाणप्पवरं उवट्टवेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणत्ति ॥

४९. तए णं सा सिवणंदा भारिया ण्हाया कयवलिकम्मा कय-कोउय-मंगलपायच्छित्ता सुट्ठप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया अप्पमहग्गघाभरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहत्ता वाणियगामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव दूइपलासए चेइ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहत्ता चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहे विणएणं पंजलियडा° पज्जुवासइ ॥

५०. 'तए णं' समणे भगवं महावीरे सिवणंदाए तीसे य' महइमहालियाए' परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ' ॥

सिवणंदाए गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

५१. तए णं सा सिवणंदा भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ°-●चित्तमाणंदिया पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-

१. उवा० १।४७ ।

५. ओ० सू० ७१-७७ ।

२. ततो (क, ख) ।

६. कहेइ (क, ख, ग, घ) ।

३. × (क) ।

७. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव गिहिधम्मं ।

४. महति° (क) ।

पलिओवमाइं ठिई पणत्ता' । तत्थ णं आणंदस्स वि समणोवासगस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पणत्ता' [भविस्सई ?] ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

५४. तए णं समणे भगवं महावीरे 'अण्णदा कदाइ' •वाणियगामाओ नयराओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिवलमइ, पडिणिवलमिक्का वहिया जणवयविहारं० विहरइ ॥

आणंदस्स समणोवासग-चरिया-पदं

५५. तए णं से आणंदे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे •उवलद्वपुण्णपावे आसव-संवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंधमोक्खकुसले असहेज्जे, देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहि देव-गणेहि निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए निव्वित्तिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे अभिगयट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिमिजपेमाणुरागरत्ते, अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउर-परधरदार-प्पवेसे चाउदुसदुमुद्धि-पुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपानेत्ता समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंवल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संधारएणं० पडिलाभे-माणे विहरइ ॥

सिवणंदाए समणोवासिय-चरिया-पदं

५६. तए णं सा सिवणंदा भारिया समणोवासिया जाया—•अभिगयजीवाजीवा उवलद्वपुण्णपावा आसव-संवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंधमोक्खकुसला असहेज्जा, देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहि देवगणेहि निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिया णिक्कंखिया निव्वित्तिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिजपेमाणुरागरत्ता, अयमाउसो ! निग्गंथे

१. अतोप्रवर्ती 'पणत्ता' पर्यन्तः पाठः अत्र अनावश्यकः प्रतीयते, असौ चतुरशीतितमे सूत्रे प्रासंगिकोऽस्ति । किन्तु सर्वासु प्रतिपु कथमपि समागतोऽसौ लभ्यते ।

२. पूर्ववाक्ये 'उववज्जिहति' इति भविष्यत्कालीनं क्रियापदं युज्यते ।

३. सं० पा०—अण्णदा कदाइ वहिया जाव विहरइ । ०कयायि (क); अन्नया कयाइ (ख); अन्नया कयाइं (घ) ।

४. सं० पा०—अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे ।

५. सं० पा०—जाया जाव पडिलाभेमाणी ।

‘कोल्लाए सण्णिवेसे’ नायकुलंसि’ पोसहसालं पडिलेहिता, समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जिता णं विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं’ •पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते ° विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्ख-डावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं आमंतेइ, आमंतेत्ता ततो पच्छा ण्हाए’ •कयवलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवर परिहिए ° अप्पमहग्घाभरणालं कियसरीरे भोयणवेलाए भोयण-मंडवंसि सुहासणवरगए, तेणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं सद्धि तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसादेमाणे विसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ । जिमियभुत्तुत्तरागए णं आर्यंते चोक्खे परमसुद्धभूए, तं मित्त-’-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंधमल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स ° पुरओ जेट्ठपुत्तं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! अहं वाणियगामे नयरे वहूणं’ •जाव’ आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुवस्स मेढी जाव’ सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्म-पण्णत्ति उवसंपज्जिता णं ° विहरित्तए । तं सेयं खलु मम इदाणिं तुमं सयस्स कुडुवस्स मेढि पमाणं आहारं आलंवणं चक्खुं ठावेत्ता’, •तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं तुमं च आपुच्छित्ता कोल्लाए सण्णिवेसे नायकुलंसि पोसहसालं पडिलेहिता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जिता णं ° विहरित्तए ॥

५. तए णं [से ?] जेट्ठपुत्ते आणंदस्स समणोवासगस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेत्ति ॥

५. तए णं से आणंदे समणोवासए तस्सेव मित्त-’-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स ° पुरओ जेट्ठपुत्तं कुडुवे” ठावेत्ति, ठावेत्ता एवं वयासी—मा णं

१. कोल्लागसण्णि ° (ग) ।

पुरओ ।

२. नातकुलंसि (ग) ।

६. सं० पा०—बहूणं राईसर जहा चितियं जाव

३. सं० पा०—कल्लं विउलं असणं । कल्लं विउलं तहेव जिमियभुत्तुत्तरागए (क, ख) ।

विहरित्तए ।

७. उवा० १।१३ ।

४. सं० पा०—ण्हाए जाव अप्पमहग्घा ° ।

८. सं० पा०—ठावेत्ता जाव विहरित्तए ।

५. सं० पा०—तं मित्त जाव विउलेणं पुप्फ ५

१०. सं० पा०—मित्त जाव पुरओ ।

सक्कारेइ सम्माणेइ, २त्ता तस्सेव मित्त जाव

११. कुडुवे (ग); कुडुवे (घ) ।

समयसि० धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिणं चित्तिणं पत्थिणं मणोगणं संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं' •एयाद्धेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिणं तवोकम्मेणं सुवके नुगमे निम्मगे अट्ठिच्चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूणं किमे० धम्मणिसंतए जाण। तं अत्थि ता' मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव 'य मे' धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे' सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा-जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतिय'•संलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए० कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

आणंदस्स ओहिनाणुप्पत्ति-पदं

६६. तए णं तस्स आणंदस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ सुभेणं अज्झवसाणेणं, सुभेणं परिणामेणं, लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं, तदावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ओहिणाणे समुप्पण्णे—पुरत्थिमे णं लवणसमुद्धे पंचजोयणसयाइ' खेत्तं जाणइ पासइ । "•दक्खिणे णं लवणसमुद्धे पंचजोयणसयाइ' खेत्तं जाणइ पासइ । पच्चत्थिमे णं लवणसमुद्धे पंचजोयणसयाइ' खेत्तं जाणइ पासइ० । उत्तरे णं जाव चुल्लहिमवंतं वासघरपव्वयं जाणइ पासइ । उड्ढं जाव सोहम्मं कप्पं जाणइ पासइ । अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुत्तं" नरयं चउरासीतिवाससहस्सट्ठितियं जाणइ पासइ ॥

गोयमस्स आगमण-पदं

६७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए ॥
६८. परिसा निग्गया जाव" पडिगया ॥

१. सं० पा०—इमेणं जाव धम्मणिसंतए ।

२. जा (ग) ।

३. सयमेव (क) ।

४. णो (क) ।

५. उवा० १।५७ ।

६. सं० पा०—मारणंतिय जाव कालं ।

७. सुहेणं (क); सोभणेणं (ग) ।

८. ०समुद्धे ण (क) ।

९. ०सतियं (क, ख); ०सइयं (ग) ।

१०. सं० पा०—एवं दक्खिणे णं पच्चत्थिमे णं च ।

११. लोलुयं अच्चुत्तं (ख) ।

१२. ओ० सू० ५२, ७८-८० ।

एवं वयासी—एवं खलु भंते ! अहं तुभेहि अम्भणुणाए^१ *समाणे वाणियगामे नयरे भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्तपाणं पडिग्गाहेमि, पडिग्गाहेत्ता वाणियगामाओ नयराओ पडिणिग्गच्छामि, पडिणिग्गच्छित्ता कोट्ठायस्स सण्णिवेरास्स अद्ररसामंतेणं वोईवयमाणे बहुजणसद्दं निसामेमि । बहुजणो अण्णमणस्स एवमाइक्खइ, एवं भागइ, एवं पण्णवेइ, एवं पस्सवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवओ महारखीस्स अंतेवासी आणदे नामं समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिममारणंतियसंनेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ।

तए णं मम बहुजणस्स अंतिए एयमद्वं सोच्चा निसम्म अयमेयान्दवे अजभत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—तं गच्छामि णं आणदं समणोवासयं पासामि—एवं संपेहेमि, संपेहेत्ता जेणेव कोट्ठालाए सण्णिवेसे, जेणेव पोसहसाला, जेणेव आणदे समणोवासए तेणेव उवागच्छामि ।

तए णं से आणदे समणोवासए ममं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए ममं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी --एवं खलु भंते ! अहं इमेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पगहिणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावण्णे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए, णो संचाएमि देवाणुप्पियस्स अंतियं पाउवभित्ता णं तिवखुत्तो मुद्धाणेणं पादे [सु ?] अभिवंदित्तए । तुभे णं भंते ! इच्छक्कारेणं अणभिओगेणं इओ चेव एह, जेणं देवाणुप्पियाणं तिवखुत्तो मुद्धाणेणं पादेसु वंदामि णमंसामि ।

तए णं अहं जेणेव आणदे समणोवासए, तेणेव उवागच्छामि । तए णं से आणदे समणोवासए ममं तिवखुत्तो मुद्धाणेणं पादेसु वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ ?

हंता अत्थि ।

जइ णं भंते ! गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ, एवं खलु भंते ! मम वि गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पण्णे—पुरत्थिमे णं लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइं खेत्तं जाणामि पासामि । दक्खिणे णं लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइं खेत्तं जाणामि पासामि । पच्चत्थिमे णं लवणसमुद्दे पंचजोयण-सयाइं खेत्तं जाणामि पासामि । उत्तरे णं जाव चुल्लहिमवतं वासधरपव्वयं जाणामि पासामि । उड्डं जाव सोहम्मं कप्पं जाणामि पासामि । अहे जाव

१. सं० पा०—अम्भणुणाए तं चेव सर्व्वं कहेइ जाव ।

विउट्टइ विसोहइ अकरणयाए अबुट्टइ अहारिहं पायच्छितं तवोकम्मं०
पडिवज्जइ, आणंदं च समणोवासरं एयमट्ठं तामेइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

८३. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ वहिया जणवयविहारं' विहरइ ॥

आणंदस्स समाहिमरण-पदं

८४. तए णं से आणंदे समणोवासेए वूहहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-
पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता,
एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए
अत्ताणं' भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ' अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिवकंते,
समाहिपत्ते, कालमासे कालं किच्चा, सोहम्मं कप्पे सोहम्मवडेंसगस्स' महा-
विमाणस्स उत्तरपुरत्थिमे णं 'अरुणाभे विमाणे' देवत्ताए उववण्णे । तत्थ णं
अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । तत्थ णं आणंदस्स
वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

८५. आणंदे' णं भंते ! देवे ताओ' देवलोगाओ' आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं
अणंतरं चयं चइत्ता कहि गच्छिहिइ ? कहि उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ वुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सच्चदुक्खाणमंतं
काहिइ ॥

निकखेव-पदं

८६. 'एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं पढमस्स
अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ० ॥

१. जणवतं विहारं (घ) ।

२. अप्पाणं (ग) ।

३. भत्ताति (क, ग) ।

४. ० वडिसगस्स (घ) ।

५. अरुणे विमाणे (क); अरुणेहि विमाणेहि (ख) ।

६. तत्थ णं आणंदे (क) ।

७. ततो (ख) ।

८. देवलोगलोगाओ (क) ।

९. सं० पा—निकखेवो पढमस्स ।

६. तस्स णं कामदेवस्स गाहावइस्स भद्दा नामं भारिगा होत्था--अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा जाव' माणुस्साए कामभोग्ग पच्चणुभवमाणी विहरइ^० ॥

महावीर-समवसरण-पदं

७. 'तेणं कालेणं तेणं समणं समणे भगवं महावीरे जाव' जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभदे चेइए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अहापडिख्वं ओगहं ओगिण्हत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

८. परिसा निगगया ॥

९. कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निगगच्छइ जाव' पज्जुवासइ ॥

१०. तए णं से कामदेवे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे--"एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुब्बाणुपुच्चि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसठे इहेव चंपाए नयरीए वहिया पुण्णभदे चेइए अहापडिख्वं ओगहं ओगिण्हत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।"

तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि--एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणा-लंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिकखमइ, पडिणिकखमित्ता सकोरेंटमल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहारचारेणं चंपं नयरिं मज्झमज्झेणं निगगच्छइ, निगगच्छित्ता जेणामेव पुण्णभदे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ॥

११. तए णं समणे भगवं महावीरे कामदेवस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ ॥

१२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

१. उवा० १।१४।

३. ओ० सू० १६,२२।

२. सं० पा०--समोसरणं जहा आणवो तहा निगगओ। तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ। सा चैव वत्तव्वया जाव जेडुपुत्तं।

४. ओ० सू० ५३-६६।

५. ओ० सू० ७१-७७।

कंवल-पायपुच्छणेण ओसह-भेराज्जेण पाडिहारिण य पोढ-फलग-सेज्जा-संथार-
एण पडिलाभेगाणी विहरइ ॥

कामदेवस्स धम्मजागरिया-पदं

१८. तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासगस्स उच्चावगहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-
पच्चवखाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोदम संवच्छराइं वीइक्कं-
ताइं । पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्ता-
वरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयाह्वे अज्झत्थिए चितिए
पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं चंपाए नयरीए वट्ठणं
जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुवस्स मेढी जाव'
सव्वकज्जवट्ठावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ
महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए' ॥

१९. तए णं से कामदेवे समणोवासए° जेट्टपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-
परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता° सयाओ गिहाओ पडिणिकखमइ,
पडिणिकखमित्ता चंपं नयारि मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव
पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता
उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दव्वभसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता
दव्वभसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए वंभयारी उम्मुक्कमणि-
सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दव्वभसंथारो-
वगए° समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं
विहरइ ॥

कामदेवस्स पिसायरूव-कय-उवसग्ग-पदं

२०. तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे
मायी मिच्छदिट्ठी° अंतियं पाउव्वभूए ॥

२१. तए णं से देवे एगं महं पिसायरूवं विउव्वइ । तस्स णं दिव्वस्स° पिसायरूवस्स
इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते—सोसं से गोकिलंज-संठाण-संठियं°, सालि-

१,२. उवा० १।१३ ।

३. पू०—उवा० १।५७-५९ ।

४. सं० पा०—आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला
तेणेव उवागच्छइ, २ ता जहा आणंदो जाव
समणस्स ।

५. मिच्छा० (क,घ) ।

६. देवस्स (ख,घ) ।

७. पुस्तकान्तरे विशेषणांतरमुपलभ्यते—
'विगयकप्पयनिभं', 'ववचित्तु, 'वियडकोप्पर-
निभं' (वृ) ।

संठाण-संठिया दो वि तरस ऊह, 'अज्जुण-गुट्टं' व तरस जाणुइ कुडिल-कुडि-
लाइं विगय-त्रीभत्स-दंसणाइं, जंघाओ नवसडीओ लोमेहि उवचियाओ, अहरी-
संठाण-संठिया दो वि तरस पाया, अहरी-लोढ-संठाण-संठियाओ पाएसु अंगु-
लीओ, सिप्पि-पुडसंठिया से नखा' ॥

२२. लडह-मडह-जाणुए', विगय-भग्ग-भुग्ग-भुमए', अवदालिय-वयण-विवर-
निल्लालियग्गजाहे', सरड-कयमालियाग 'उंदुरमाला-परिणद्ध-सुकयचिंधे,
नउल-कयकण्णपूरे, सप्प-कयवेगच्छे', अप्पोडंते, अभिगज्जंते, भीम-मुक्कट्ट-
हासे', 'नाणाविह-पंचवण्णेहि लोमेहि उवचिए' एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-
अयसिकुसुमप्पगासं खुरधार असिं गहाय जेणव पोसहसाला, जेणव कामदेवे
समणोवासए, तेणव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आसुरत्ते' रुट्टे कुविए चंडिकिए
मिसिमिसीयमाणे कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—हभा ! कामदेवा !
समणोवासया ! अप्पत्थियपत्थिया ! दुरंतं—पंत-लवखणा ! हीणपुण्णचाउद्-
सिया ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया !
सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया !
मोक्खकंखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया !
मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइं वयाइं वेरम-
णाइं पच्चवखाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा
भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं"
•वयाइं वेरमणाइ पच्चवखाणाइं० पोसहोववासाइं न छड्डेसि" न भंजेसि",
'तो ते'" अहं अज्ज इमेणं नीलुप्पल"—गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण
खुरधारेण० असिणा खंडाखंडिं करेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया" ! अट्ट-दुहट्ट-

- | | |
|--|---------------------------------------|
| १. अज्जुणागुट्टं (क) । | ८. भीममुक्कअट्टट्टहासे (ख, घ) । |
| २. नखा (ग, घ) । | ९. × (क) । |
| ३. जण्णुए (क) । | १०. आसुरत्ते (क) । |
| ४. इह अन्यदपि विशेषणचतुष्टयं वाचनान्तरे तु
अभिधीयते—मसिमूसगमहिसकालए भरिय-
मेहवन्ने लंवोट्टे निययदंते (वृ) । | ११. °पत्थया (क) । |
| ५. निद्दालिय अग्गजीहे (ख) । | १२. दुरंतं ४ जाव परिवज्जिया (क, ग) । |
| ६. णेउल (क) । | १३. जं सीलाइं (वव) । |
| ७. पाठान्तरेण—सप्पकयवेगच्छे मूसगकयभूभ-
लए विच्छुयकयवेयच्छे सप्पकयजण्णोवईए
अभिन्नमुहनयणनखवरवरघचित्तकत्तिनियंसणे
(वृ) । | १४. सं० पा०—सीलाइं जाव पोसहोववासाइं । |
| | १५. छड्डेसि (ख); छंडेसि (घ) । |
| | १६. भंजेसि (क) । |
| | १७. तो ते (क, ग, घ); तो (ख) । |
| | १८. सं० पा०—नीलुप्पल जाव असिणा । |
| | १९. × (क, ख) । |

राणियं पच्चोरावकइ, पच्चोराविकत्ता पोसहसालाओ पडिणिव्वमइ, पडिणिव्व-
मित्ता दिव्वं पिसायरुवं विप्पजहइ, विप्पजहत्ता एगं महं दिव्वं हत्थिरुवं
विउव्वइ—सत्तंगपइट्ठियं सम्मं रांठियं गुजातं पुरतो' उदग्गं पिट्ठतो वराहं'
अयाकुच्छि अलंवकुच्छि' पलंव-लंवोदराधरकरं अट्ठभुगय-मउल-मल्लिया-
विमल-धवलदंतं कंचणकोसी-पविट्ठदंतं आणामिय'-चाव-ललिय-संवेल्लियग-
सोडं कुम्म-पडिपुण्णचलणं वीसत्तिनखं' अल्लीण-पमाणजुत्तपुच्छं मत्तं मेहमिव
गुलुगुलेंतं' मण-पवण-जइणवेगं—दिव्वं हत्थिरुवं विउव्वित्ता जेणव पोसह-
साला, जेणव कामदेवे समणोवासए, तेणव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता काम-
देवं समणोवासयं एवं वयासी -हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया !
•अपत्थियपत्थिया ! दुरंत-पंत-लवखणा ! हीणपुण्णचाउट्ठसिया ! सिरि-हिरि-
धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया !
मोवखकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया ! मोवखकं-
खिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया ! मोवखपिवा-
सिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चवखाणाइं
पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झि-
त्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं
पच्चवखाणाइं पोसहोववासाइं न छुडुसि ° न भंजेसि, तो' तं 'अहं अज्ज'
सोडाए गेण्हामि, गेण्हित्ता पोसहसालाओ नीणेमि, नीणेत्ता उड्डं वेहासं उव्वि-
हामि, उव्विहित्ता तिव्वेहि दंतमुसलेहि पडिच्छामि, पडिच्छित्ता अहे धरणि-
तलंसि तिव्वुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ठ-डुहट्ठ-वसट्ठे
अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२६. तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं हत्थिरुवेणं एवं वुत्ते समणे
अभीए" •अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणो-
वगए ° विहरइ ॥

३०. तए णं से दिव्वे हत्थिरुवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं" •अतत्थं अणुव्विग्गे

- | | |
|--|--|
| १. विप्पहयंति (क) सर्वत्र; विप्पयहती (ग) सर्वत्र । | ७. गुलुगुलेंतं (घ) |
| २. पुरओ (क) । | ८. सं० पा०—समणोवासया तहेव भणइ जाव न भंजेसि । |
| ३. वसहं (ग) । | ९. × (क, ख, ग, घ) । |
| ४. × (क, ग); अइया (अजिया) कुच्छी (ना० १।१।१५६) । | १०. अज्ज अहं (क, ख, ग, घ) । |
| ५. अणोमिय (क) । | ११. सं० पा०—अभीए जाव विहरइ । |
| ६. °नखं (ग) । | १२. सं० पा०—अभीयं जाव विहरमाणं । |

फडाडोवकरणदच्छं लोहागर-धम्ममाण-धमधमेतधोमं अणामवियदिव्वपनंढरीसं-
दिव्वं सप्परूवं विउच्चित्ता जेणेव पोसहसात्ता, जेणेव कामदेवे समणोवासए,
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो !
कामदेवा ! समणोवासया ! अप्पत्थियपत्थिया ! दुरंत-पंत-नक्खणा !
हीणपुण्णचाउद्दसिया । सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया !
पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकंसिया ! पुण्णकंसिया !
सग्गकंसिया ! मोक्खकंसिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया !
सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! नो खनु कप्पइ तव देवाणुप्पिया !
सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोमित्तए
वा खडित्तए वा भजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुम
अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छुड्ढेसिं न
भंजेसिं, तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि, दुरुहिता पच्छिमेणं
भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहिं विसपरिगताहिं दाढाहिं उरंसि
चेव निकुट्ठेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव
जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३५. तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं सप्परूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए^१
•अतत्थे अणुच्चिग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए^२
विहरइ ॥

३६. “तए णं से दिव्वे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुच्चिग्गं
अखुभिंयं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ,
पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा । समणोवासया !
जाव^३ जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं
न छुड्ढेसिं न भंजेसिं, तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि, दुरुहिता
पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहिं विसपरिगताहिं
दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्ठेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे
अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३७. तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं सप्परूवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं
वुत्ते समाणे अभीए जाव^४ विहरइ ॥

१. सं० पा० — समणोवासया जाव न भंजेसि ।

२. भंजेसि (क, ग) ।

३. विसमपरिगताइं (क) ।

४. सं० पा०—अभीए जाव विहरइ ।

५. सं० पा०—सो वि दोच्चं पि तच्चं पि
भणइ, कामदेवो वि जाव विहरइ ।

६. उवा० २।२२ ।

७. उवा० २।२३ ।

एवं सत्तु देवानुप्पिया ! सक्के देविदे वेवराया' •वज्जजानीं पुरंदरे सयक्क
 सहस्सवमे मधवं पागमासणे दाहिणद्धुमोमाहिचडे वत्तीस-विमाण-नयसहसा
 हिचडे एरावणवाहणे सुत्तिरे अर्यंवर-नर्यभरे श्रान्दय-मालमउडे नव-हेम-नाम
 चित्त-चंचल-कुंडल-गिनिहिज्जमाणमडे भागुर्यंसी पनंघवणमाने सोहम्म
 कण्णे सोहम्मवउंसाए विमाणे सभाए सोहम्मए० सक्कंसि सोहम्मसणि
 चउरासीईण, सामाणियमाहसीण', •वायसीसाए तावत्तीसगणं, चउण
 लोगपालाणं, अट्टण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिमाणं, सत्तण
 अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिचडेणं, चउण्हं चउरासीणं आयस्सव-देवसाहसीणं०
 अण्णेसि च बहूणं देवाण य देवीण य मज्झमाए एवमाइक्कइ, एवं भासइ, ए
 पण्णवेइ, एवं परुवेइ—एवं सत्तु देवा ! जंबुद्वीपे दीपे भारहे वासे चंपा
 नयरीए कामदेवे समणोवासए पांसहसालाए पांसहिण्ण वंभचारी' •उम्मुक्क
 मणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणं निविस्सत्तसत्थमुसले एमे अवी
 दव्वसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति
 उवसंपज्जित्ता णं विहरइ । नो खनु से सक्के' केणइ देवेण वा 'दाणवेण वा'
 जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्तरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण
 वा निगंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा ।
 तए णं अहं सक्कस्स देविदस्स देवरण्णे एयमट्ठं असट्ठहमाणे अपत्तिवमाणे
 अरोएमाणे इहं हव्वमाणे । तं अहो णं देवानुप्पियाणं इड्डी जुई जसो वलं
 वीरियं पुरिसक्कार-परक्कमे 'लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ।' तं दिट्ठा णं
 देवानुप्पियाणं इड्डी' •जुई जसो वलं वीरियं पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते
 अभिसमण्णागए । तं खामेमि णं देवानुप्पिया ! खमंतु णं देवानुप्पिया !
 खंतुमरिहंति' णं देवानुप्पिया ! नाइं भुज्जो करणयाए त्ति कट्ठु पायवडिए
 पंजलिउडे' एयमट्ठं भुज्जो-भुज्जो खामेइ, खामेत्ता जामेव दिसं पाउव्भूए
 तामेव दिसं पडिगए ॥

कामदेवस्स पडिमा-पारण-पदं

४१. तए णं से कामदेवे समणोवासए निरुवसग्गमिति कट्ठु पडिमं पारेइ ॥

१. देवराया सतक्कतु जाव सक्कंसि (क); देव-
 राया सतक्कत्तं जाव सक्कंसि (ग);
 सं० पा०—देवराया जाव सक्कंसि ।
२. सं० पा०—साहस्सीणं जाव अण्णेसि ।
३. सं० पा०—वंभचारी जाव दव्वसंथारोवगए ।
४. सक्का (क, ख, ग, घ) ।

५. दाणवेण वा जा गंधव्वेण वा (क); दाणवेण
 वा गंधव्वेण वा (ग) ।
६. लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया (व) ।
७. सं० पा०—इड्डी जाव अभिसमण्णागए ।
८. •मरुहंती (क) ।
९. पंजलियडे (क) ।

४४. तए णं समणे भगवं महावीरे कामदेवस्स समणोवासयस्स तीसे य' •महइमहा-
लियाए परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ° ॥

भगवया कामदेवस्स उवसग्ग-वागरण-पदं

४५. कामदेवाइ ! समणे भगवं महावीरे कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—से
नूणं कामदेवा ! तुभं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अतियं पाउवभूए ।
तए णं से देवे एगं महं दिव्वं पिसायरूवं' विउव्वइ, विउव्वित्ता आसुरत्ते रुढे
कुविए चंडिविकए मिसिमिसीयमाणे एगं महं नीलुप्पल'-•गवलगुलिय-अयसि-
कुसुमप्पगासं खुरधारं° असि गहाय तुमं एवं वयासी हंभो ! कामदेवा' !
•समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खा-
णाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो तं अज्ज अहं इमेणं नीलुप्पल-
गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा खंडाखंडि करेमि, जहा
णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव° जीवियाओ ववरो-
विज्जसि ।

तुमं तेणं दिव्वेणं पिसायरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरसि ।

•तए णं से दिव्वे पिसायरूवे तुमं अभीयं जाव' पासइ. पासित्ता दोच्चं पि
तच्चं पि तुमं एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं
तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि
न भंजेसि, तो तं अहं अज्ज इमेणं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण
खुरधारेण असिणा खंडाखंडि करेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-
वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं तुमे तेणं दिव्वेणं पिसायरूवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे
अभीए जाव' विहरसि ।

तए ण से दिव्वे पिसायरूवे तुमं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुढे
कुविए चंडिविकए मिसिमिसीयमाणे तिवलियं भिउडि निडाले साहट्टु तुमं

१. सं० पा०—तीसे य जाव धम्म कहा सम्मत्ता । ८. सं० पा०—एवं वण्णगरहिया तिणि वि

२. ओ० सू० ७१-७७ ।

उवसग्गा तहेव पडिउच्चारयव्वा जाव देवो
पडिगओ ।

३. पिसातरूवं (ग) ।

४. सं० पा०—नीलुप्पल जाव असि ।

६. उवा० २।२४ ।

५. सं० पा०—कामदेवा जाव जीवियाओ ।

१०. उवा० २।२२ ।

६. उवा० २।२२ ।

११. उवा० २।२३ ।

७. उवा० २।२३ ।

१२. उवा० २।२४ ।

तए णं तुमे तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहसि खमसि तितिवससि अहियासेसि ।
 तए णं से दिव्वे हत्थिस्सुवे तुमं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएति
 निग्गंथाओ पावयणाओ नालित्तए वा सोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे
 संते तंते परित्तंते सणियं-सणियं पच्चोसकइ, पच्चोसविकत्ता पोसहसालाओ
 पडिणिवखमइ, पडिणिवगमित्ता दिव्वं हत्थिस्सुवं विप्पजहइ, विप्पजहिता एणं
 महं दिव्वं सप्परूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला, जेणेव तुमं, तेणेव
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुमं एवं वयासी--हंभो ! कामदेवा ! समणोवा-
 सया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं
 पोसहोववासाइं न छट्ठेसि न भंजेसि, तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि,
 दुरुहिता पच्छिमेणं भाएणं तिवखुत्तो गीवं वेढेमि, वेढित्ता तिवखाहिं विसपरि-
 गताहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्ठेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-
 वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं तुमे तेणं दिव्वेणं सप्परूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरसि ।
 तए णं से दिव्वे सप्परूवे तुमं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि
 तुमं एवं वयासी--हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं
 अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छट्ठेसि न
 भंजेसि, तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि, दुरुहिता पच्छिमेणं
 भाएणं तिवखुत्तो गीवं वेढेमि, वेढित्ता तिवखाहिं विसपरिगताहिं दाढाहिं
 उरंसि चेव निकुट्ठेमि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ
 ववरोविज्जसि ।

तए णं तुमे तेणं दिव्वेणं सप्परूपेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए
 जाव' विहरसि ।

तए णं से दिव्वे सप्परूवे तुमं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते छे
 कुविए चंडिकिए मिसिमिसीयमाणे तुव्वं सरसरस्स कायं दुरुहइ, दुरुहिता
 पच्छिमेणं भाएणं तिवखुत्तो गीवं वेढेइ, वेढित्ता तिवखाहिं विसपरिगताहिं
 दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्ठेइ ।

तए णं तुमे तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहसि खमसि तितिवससि अहियासेसि ।

तए णं से दिव्वे सप्परूवे तुमं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएइ

१. उवा० २।२७ ।

२. उवा० २।२४ ।

३. उवा० २।२२ ।

४. उवा० २।२३ ।

५. उवा० २।२४ ।

६. उवा० २।२२ ।

७. उवा० २।२३ ।

८. उवा० २।२४ ।

९. उवा० २।२७ ।

१०. उवा० २।२४ ।

अहियासेति, सबका पुणाइं अज्जो ! समणेहि निग्गंथेहि दुवालसंगं गणिपिडं
अहिज्जमाणेहि दिव्व-माणुस-तिरिक्खजोणिए उवसग्गे सम्मं सहित्तए^१ *खमि-
त्तए तितिक्खित्तए^० अहियासित्तए ॥

४७. ततो ते बह्वे समणा निग्गंथा य निग्गंथीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स
तह त्ति एयमद्वं विणएणं पडिसुणेंति ॥

कामदेवस्स पडिगमण-पदं

४८. तए णं से कामदेवे समणोवासए हट्ठतुट्ठ^१-*चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमण-
स्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए^० समणं भगवं महावीरं पसिणाइं पुच्छइ,
अट्ठमादियइ, समणं भगं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ,
करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जामेव दिसं पाउव्भूए, तामेव दिसं
पडिगए ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

४९. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ चंपाओ नयरीओ पडिणिक्खमइ,
पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

कामदेवस्स उवासगपडिमा-पडिवत्ति-पदं

५०. तए^१ णं से कामदेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं
विहरइ^२ ॥

५१. *तए णं से कामदेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं
अहामगं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

५२. तए णं से कामदेवे समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं,
पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एककारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं
अहाकप्पं अहामगं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ
आराहेइ ॥

५३. तए णं से कामदेवे समणोवासए इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं
पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए
किसे धमणिसंतए जाए ॥

कामदेवस्स अणसण-पदं

५४. तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासयस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-

१. सं० पा०—सहित्तए जाव अहियासित्तए ।

३. तओ (क, ग, घ) ।

२. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव समण ।

४. सं० पा०—विहरइ तएणं ।

अहियासेंति, रावका पुणाई अज्जो ! समणेहिं निग्गंथेहिं दुवालसंगं गणिपिडं
अहिज्जमाणेहिं दिव्व-माणुस-तिरिक्खजोणिए उवसग्गे सम्मं सहित्तए' •समि-
त्तए तित्तिक्खत्तए • अहियासित्तए ॥

४७. ततो ते बहवे समणा निग्गंथा य निग्गंथीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स
तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ॥

कामदेवस्स पडिगमण-पदं

४८. तए णं से कामदेवे समणोवासए हट्ठतुट्ठ'-•चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमण-
स्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए • समणं भगवं महावीरं पसिणाई पुच्छइ,
अट्ठमादियइ, समणं भगं महावीरं तिव्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ,
करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जामेव दिसं पाउट्ठभूए, तामेव दिसं
पडिगए ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

४९. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ चंपाओ नयरीओ पडिणिक्खमइ,
पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

कामदेवस्स उवासगपडिमा-पडिवत्ति-पदं

५०. तए' णं से कामदेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं
विहरइ' ॥

५१. •तए णं से कामदेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहामुत्तं अहाकप्पं
अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

५२. तए णं से कामदेवे समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं,
पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहामुत्तं
अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ
आराहेइ ॥

५३. तए णं से कामदेवे समणोवासए इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं
पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए
किसे धमणिसंतए जाए ॥

कामदेवस्स अणसण-पदं

५४. तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासयस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-

१. सं० पा०—सहित्तए जाव अहियासित्तए ।

३. तओ (क, ग, घ) ।

२. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव समण ।

४. सं० पा०—विहरइ तएणं ।

तइयं अज्भयण

चुलणीपिता

उक्खेव-पदं

१. '०जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं दोच्चस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स णं भंते ! अज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ०

चुलणीपियगाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंतू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी । कोट्टए चेइए । जियसत्तू राया ॥
३. '०तत्थ णं वाणारसीए नयरीए चुलणीपिता' नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे जाव' बहुजणस्स अपरिभूए ॥
४. तस्स णं चुलणीपियस्स गाहावइस्स अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ अट्ठ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥
५. से णं चुलणीपिता गाहावई वट्ठणं जाव' आपुच्छणिज्जे, पडिपुच्छणिज्जे सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

१. सं० पा०—उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. क्वचित् कोष्ठकं चैत्यमधीतं क्वचिन्महा-
कामधनमिति (वृ) ।

४. सं० पा०—तत्थ णं वाणारसीए चुलणीपिया
नामं गाहावई परिवसई अड्ढे सामा भारिया
अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ अट्ठ

वड्ढिय ० अट्ठ पवित्थरप ० । अट्ठ वया दसगो-
साहस्सिएणं वएणं जहा आणदो ईसर जाव
सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ।

५. चुलणिपिता (ग, घ) ।

६. उवा० १।११ ।

७, ८. उवा० १।१३ ।

११. तए णं समणे भगवं महावीरे चुलणीपियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहा-
लियाए परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ ॥
१२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

चुलणीपियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१३. तए ण से चुलणीपिता गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए वम्मं
सोच्चा निसम्म हट्ठुत्तु-चित्तमाणंदिए पोइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-
विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिववुत्तो आया-
हिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—
सद्दहामि णं भंते ! निग्गथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गथं पावयणं,
रोएमि णं भंते ! निग्गथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गथं पावयणं ।
एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असदिद्धमेयं भंते ! इच्छिय-
मेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं
तुवभे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए वहवे राईसर-त्तलवर-मार्डविय-
कोडुविय-इवभ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ
अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तथा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ
अणगारियं पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खा-
वइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि ।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि ॥

१४. तए णं से चुलणीपिता गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए^१ सावय-
धम्मं पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ वाणारसीए नयरीए कोट्टयाओ
चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

चुलणीपियस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव' समणे
निग्गथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंवल-
पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संधारएणं
पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

१. ओ० सू० ७१-७७ ।

३. उवा० १।५५ ।

२. पू०—उवा० १।२४-५३ ।

सोणिण्ण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३०. तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाने अभीए जाव' विहरइ ॥

३१. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आमुस्ते रुट्ठे कुविए चंडिविए मिसिमिसीयमाणे चुलणीपियस्स समणोवासयस्स मज्झिमं पुत्त गिहाओ नीणेइ, नाणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुलणीपियस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचइ ॥

३२. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिकखइ अहियासेइ ॥

० कणीयसपुत्त

३३. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छट्ठेसि न भंजसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३४. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाने अभीए जाव' विहरइ ॥

३५. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छट्ठेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण

१. उवा० २।२३ ।

२. उवा० २।२४ ।

३. उवा० २।२७ ।

४. उवा० २।२४ ।

५. उवा० २।२२ ।

६. उवा० २।२३ ।

७. उवा० २।२४ ।

८. उवा० २।२२ ।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आगुरत्ते रुद्धे कुविए चंडिविए मिसिमिसीयमाणे ममं जेट्टपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अगगओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरिवंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य० आइंचइ ।

तए णं अहं तं उज्जलं' •जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तित्तिक्खामि० अहियासेमि ।

“एवं मज्झिमं पुत्तं जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तित्तिक्खामि अहियासेमि ।

एवं कणीयसं पुत्तं जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तित्तिक्खामि० अहियासेमि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता ममं चउत्तं पि एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया ! जाव" •जइ णं तुमं अज्ज सोलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छुहेसि० न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जा इमा माया देवतं गुरु"•जणणी दुक्कर-दुक्करकारिया, तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अगगओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरिवंसि कडाहयंसि अद्देमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्ट अकाले चेव जोवियाओ० ववरोविज्जसि ।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव" विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव" पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया ! जाव" जइ णं तुमं अज्ज" •सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छुहेसि न

१. उवा० २।२३ ।

२. उवा० २।२४ ।

३. सं० पा०—उज्जलं जाव अहियासेमि ।

४. उवा० २।२७ ।

५. सं० पा०—एवं तहेव उच्चारयेव्वं सव्वं जाव कणीयसं जाव आइंचइ । अहं तं उज्जलं जाव अहियासेमि ।

६. उवा० ३।२७-३२ ।

७. उवा० ३।३३-३८ ।

८. उवा० २।२४ ।

९. सं० पा०—समणोवासया अप्पत्थियपत्थिया जाव न भंजेसि ।

१०. उवा० २।२२ ।

११. सं० पा०—गुरु जाव ववरोविज्जसि ।

१२. उवा० २।२३ ।

१३. उवा० २।२४ ।

१४. उवा० २।२२ ।

१५. सं० पा०—अज्ज जाव ववरोविज्जसि ।

निदइ गरिहइ विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अबुट्टेइ अहारिहं पायच्छितं
तवोकम्मं ° पडिवज्जइ ॥

चुलणीपियस्स उवासगपडिमा-पदं

४७. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवासपज्जिता णं
विहरइ ॥
४८. °तए णं से चुलणीपिता समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहामुत्तं अहाकप्पं
अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
४९. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं,
पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं एक्कारसमं उवासगपडिमं अहामुत्तं
अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ
आराहेइ ° ॥
५०. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं 'ओरालेणं' °विउलेणं पयत्तेणं
पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए
किसे धमणिसंतए जाए ॥

चुलणीपियस्स अणसण-पदं

५१. तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-
समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए
संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं
पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडि-
किडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए
पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले
वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायए
धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं
पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा
जलंते अपर्च्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइविख-
यस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं
पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा

१. सं० पा०—पढमं उवासगपडिमं अहामुत्तं ४
जहा आणंदो जाव एक्कारस वि ।

२. अस्य स्थाने १।६४ सूत्रे 'इमेणं एयारूवेणं'
पाठो विद्यते ।

३. सं० पा०—ओरालेणं जहा कामदेवे जाव
सोहम्मे ।

४. उवा० १।५७ ।

चउत्थं अज्झयणं

सुरादेवे

उक्खेव-पदं

१. '●जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं तच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ० ?

सुरादेवगाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी । कोट्टए^१ चेइए । जियसत्तू राया ॥
३. '●तत्थ णं वाणारसीए नयरीए सुरादेवे नामं गाहावइ परिवसइ-- अइहे जाव' बहुजणस्स अपरिभूए ॥
४. तस्स णं सुरादेवस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्डिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥
५. से णं सुरादेवे गाहावई वहूणं जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुवस्स मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

१. सं० पा०—उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. कामधनम् (वृषा) ।

४. सं० पा०—सुरादेवे गाहावइ अइहे । छ हिरण्णकोडीओ जाव छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं तस्स धन्ना भारिया सामी समो-

सडे । जहा आणंदो तहेव पडिवज्जइ गिहि-

धम्मं । जहा कामदेवो जाव समणस्स ।

५. उवा० १।११ ।

६. उवा० १।१३ ।

७. उवा० १।१३ ।

सुरादेवस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१३. तए णं से सुरादेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठुत्तु-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणरिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिगखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुव्भे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए वहवे राईसर-तलवर-माडंविअ-कोडुंविअ-इवभ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि ॥

१४. तए णं से सुरादेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए^१ सावयधम्मं पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ वाणारसीए नयरीए कोट्टयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

सुरादेवस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. तए णं से सुरादेवे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव^२ समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंवल-पायपुंछणेणं ओसहं-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फल-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

धन्नाए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७. तए णं सा धन्ना भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव^३ समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-

१. पू०—उवा० १।२४-५३ ।

२. उवा० १।५५ ।

३. उवा० १।५६ ।

सिरि-हिरि-धिट्-कित्ति-परिवज्जया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सम्म-
कामया ! मोक्खकामया ! धम्मकम्मिया ! पुण्णकम्मिया ! सम्मकम्मिया !
मोक्खकम्मिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सम्मपिवासिया !
मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवानुप्पिया ! सीलाइं वयाइं वेरम-
णाइं पच्चवखाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा
भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं'
•वयाइं वेरमणाइं पच्चवखाणाइं पोसहोववासाइं न छुहेसि ° न भंजेसि, तो
ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि,
घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देहि,
अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण य आइंचामि, जहा णं तुमं 'अट्ट-दुहट्ट-
वसट्टे'^१ अकाले चैव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२२. 'तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाने अभीए अतत्थे
अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥

२३. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अच-
लियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं
पि तच्चं पि सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणो-
वासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चवखाणाइं
पोसहोववासाइं न छुहेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ
नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता
आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देहि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण
य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चैव जीवियाओ ववरो-
विज्जसि ॥

२४. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाने
अभीए जाव' विहरइ ॥

२५. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते
रुट्ठे कुविए चंडिकिए भिसिमिसीयमाणे सुरादेवस्स समणोवासयस्स जेट्ठपुत्तं
गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता
आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता सुरादेवस्स समणोवासयस्स गायं
मंसेण य सोणिण य आइंचइ ॥

१. सं० पा०—सीलाइं जाव न भंजेसि ।

२. × (क, ख, ग, घ) ।

३. सं० पा०—एवं मज्झिमयं, कणीयसं, एक्के-
क्के पंच सोल्लया । तहेव करेइ, जहा

चुलणीपियस्स, नवरं एक्केक्के पंच सोल्लया ।

४. उवा० २।२२ ।

५. उवा० २।२३ ।

६. उवा० २।२४ ।

० कणीयसपुत्त

३३. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पासहोववासाइं न छुट्ठेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अगओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
३४. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाने अभीए जाव' विहरइ ॥
३५. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पासहोववासाइं न छुट्ठेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अगओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
३६. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाने अभीए जाव' विहरइ ॥
३७. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसोयमाणे सुरादेवस्स समणोवासयस्स कणीयसं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अगओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सुरादेवस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ।
३८. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहइ खमइ तित्तिक्खइ० अहियासेइ ॥

१. उवा० २।२४ ।

२. उवा० २।२२ ।

३. उवा० २।२३ ।

४. उवा० २।२४ ।

५. उवा० २।२२ ।

६. उवा० २।२३ ।

७. उवा० २।२४ ।

८. उवा० २।२७ ।

भरियंसि कडाहयंसि अद्देह, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचइ, जे णं ममं मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देह, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचइ, जे णं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देह, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिण्ण य० आइंचइ, जे वि य इमे सोलस रोगायंका, ते वि य इच्छइ मम सरीरंसि' पक्खवित्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए त्ति कट्ठ उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, तेण य खभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ॥

घन्नाए पसिण-पदं

४३. तए णं सा घन्ना भारिया कोलाहलसइ' सोच्चा निसम्म जेणेव सुरादेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी—किण्ण' देवाणुप्पिया ! तुभे णं महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ?

सुरादेवस्स उत्तर-पदं

४४. तए णं से सुरादेवे समणोवासए घन्नं भारियं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! न याणामि के वि पुरिसे' •आसुरस्ते रुद्धे कुविए चंडिकए मिसिमिसीयमाणे एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुमुमप्पगासं खुरधारं असि गहाय ममं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देहमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ठ-डुहट्ठ-वसट्ठे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि । तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरामि । तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव' पासइ, पासिता ममं दोच्चं पि तच्चं पि

१. सरीरंसि (क) ।

२. कोलाहलं (क, ख, ग, घ); ३।४३ सूत्रे 'कोलाहलसइ' इति पाठो विद्यते । अत्रापि तथैव युज्यते । आदर्शेषु संक्षिप्तलेखने 'कोलाहलं' पाठो जातः इति प्रतीयते ।

३. किण्णं तुमं (ग) ।

४. सं० पा०—पुरिसे तद्देव कहेइ जहा चुलणी-पिया घन्ना वि पडिभणइ जाव कणीयसं ।

५. उवा० २।२२ ।

६. उवा० २।२३ ।

७. उवा० २।२४ ।

अत्ताणं भूसित्ता, राट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते
समाहिपत्ते कालमासे कानं किञ्चा° सोहम्मे कप्पे अरुणकत्ते विमाणे
उववण्णे । चत्तारि पल्लिओवमाइ टिई । महाविदेहे यासे मिज्झिहिइ बुज्झिहिइ
मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

५३. •'एवं खलु जंवू ! समणेणं भगवया महावीरेणं उवाचगदगाणं चउत्थस्स
अज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते° ॥

पडिपुण-पंचिदियसरीरा जाव' माणुसाए कामभोए पच्चणुभवमाणो
विहरइ ० ॥

महावीर-समवसरण-पदं

७. 'तेणं कालेणं तेणं समाणं समणे भगवं महावीरे जाव' जेणेव आलभिया
नयरी जेणेव संखवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अहापडिरुवं
ओगगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
८. परिसा निग्गया ॥
९. कुणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव' पज्जुवासइ ॥
१०. तए णं से चुल्लसयाए गाहावई इभीगे कहाए लद्धट्टे समाणे— "एवं खलु समणे
भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमाए इह
संपत्ते इह समोसढे इहेव आलभियाए नयरीए वहिया संखवणे उज्जाणे
अहापडिरुवं ओगगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।"
तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहास्व्वाणं अरहंताणं भगवंताणं णम-
गोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-
पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए,
किमग पुण विजलस्स अट्टस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया !
समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं
देवयं चेइयं पज्जुवासामि—एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-
कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाई वत्थाइं पवर परिहिए अप्प-
महग्घाभरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिवखमइ, पडिणिवखमिता
सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहार-
चारेणं आलभियं नयारि मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छिता जेणामेव संखवणे
उज्जाणे, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता समणं
भगवं महावीरं तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ,
वंदिता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सुसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं
पंजलिउडे पज्जुवासइ ॥
११. तए णं समणे भगवं महावीरे चुल्लसययस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालि-
याए परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ ॥
१२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

१. उवा० २।२४ ।

२. सं० पा०—सामी समोसढे जहा आणंदो तहा
गिहिधम्मं पडिवज्जइ । सेसं जहा कामदेवो
जाव धम्मपण्णत्ति ।

३. ओ० सू० १६, २२ ।

४. ओ० सू० ५३-६६ ।

५. ओ० सू० ७१-७७ ।

कंचल-पायपुच्छणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाटिहारिणं य पीढ-फलग-रोज्जा-संयार-
एणं पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

चुल्लसयय-धम्मजागरिया-पदं

१८. तए णं तस्स चुल्लसययस्स समणोवासगस्स उच्चावण्हि सील-व्वय-गुण-वेरमण-
पच्चवखाण-पोसहोववासेहि अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दं संवच्छराइं वीइक्कं-
ताइं । पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अप्पदा कदाइ पुव्वरत्ता-
वरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयास्सुवे अज्झत्थिए चित्तिए
पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं तलु अहं आलभियाए नयरीए
वहूणं जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुं वस्स मेढी
जाव' सव्वकज्जवट्ठावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ
महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्ताए' ॥

१९. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए जेट्टपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवधि-
परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्ख-
मित्ता आलभियं नयरि मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसह-
साला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता
उच्चार-पासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दवभसंधारयं संथरेइ, संथरेत्ता
दवभसंधारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए वंभयारी उम्मुक्कमणि-
सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दवभसंधा-
रोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं ० धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं
विहरइ ॥

चुल्लसयगस्स देव-कय-उवसग-पदं

२०. तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे
देवे अंतियं ० पाउवभूए ॥

० जेपुट्ट

२१. तए णं से देवे एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरवारं ०
असि गहाय एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! ० अप्पत्थिय-
पत्थिया ! दुरंत-पंत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दिसिया ! सिरि-हिरि-धिइ-
कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्ख-

१. उवा० १।१३ ।

२. उवा० १।१३ ।

३. पु०—उवा० १।५७-५९ ।

४. सं० पा०—अंतियं जाव असि ।

५. सं० पा०—समणोवासया जाव न भंजेति ।

० मज्झिमपुत्त

२७. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता चुल्ल-
सयगं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव'
जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न
छुहेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि,
नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता मत्त मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाण-
भरियंसि कडाहयंसि अद्देहमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइं-
चामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चैव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
२८. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव'
विहरइ ॥
२९. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि
तच्चं पि चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी - हंभो ! चुल्लसयया ! समणो-
वासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं
पोसहोववासाइं न छुहेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ
गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेमि,
करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देहमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणि-
एण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चैव जीवियाओ ववरो-
विज्जसि ॥
३०. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते
समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥
३१. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते
रुद्धे कुविए चडिविकए मिसिमिसीयमाणे चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स
मज्झिमं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले
करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता चुल्लसयगस्स
समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ॥
३२. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तं उज्जलं जाव' वेयेणं सम्मं सहइ खमइ
तित्तिक्खइ अहियासेइ ॥

१. उवा० २।२४।

२. उवा० २।२२।

३. उवा० २।२३।

४. उवा० २।२४।

५. उवा० २।२२।

६. उवा० २।२३।

७. उवा० २।२४।

८. उवा० २।२७।

विउट्टेद विसोहेद अकरणगाए अणुट्टेद अहारिहं पागच्छितं तवोकम्मं पटिवज्जइ ॥

चुल्लसयगस्स उवासगपडिमा-पदं

४७. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥
४८. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहामुत्तं अहाकणं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
४९. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्तं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एककारसमं उवासगपडिमं अहामुत्तं अहाकणं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
५०. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ॥

चुल्लसयगस्स अणसण-पदं

५१. तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसवकार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसवकार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहृथी विहरइ, तावता मे तेयं कल्ला पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसं जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खि-यस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

१२. परिता पडिगया, रागा य गण ॥

कुंडकोलियरस गिहियम्म-पडिवत्ति-पदं

१३. तए णं कुंडकोलिए गाहावई समणस्स भगवओ महावीररस अंतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्टुत्तु-नित्तमाणंदिए पीडमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसण्ण-माणहियाए उट्टाए उट्टेड, उट्टेत्ता समणं भगवं महावीरं तिव्वुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेड, करेत्ता वंदइ णमंसड, वंदित्ता णमसित्ता एवं वगासी—सट्ठहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तिगामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अट्ठभुट्टेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं, भंते ! अविहमेयं भंते ! असंदिदमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए वहवे राईसर-तलवर-माडंवि-कोडुंवि-इत्थ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहणभइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावग-धम्मं पडिवज्जिस्सामि ।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि ॥

१४. तए णं से कुंडकोलिए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए' सावय-धम्मं पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ कंपिल्लपुराओ नयराओ सहस्संव-वणाओ उज्जाणाओ पडिणक्खमइ, पडिणक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

कुंडकोलियस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव' समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिगह-कंवल-पायपुंछणेणं ओसहमेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीड-फलग-सेज्जा-संधारएण पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

पूसाए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७. तए णं सा पूसा भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा

सच्चभावा, तुमे णं देवानुप्पिया ! इमा एयाख्वा दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवानुभावे णिण्णा' लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? किं उट्ठाणेणं' •कम्मणेणं वलेणं वीरिएणं •अपुरिसक्कार-परक्कमेणं ? उदाहु अणुट्ठाणेणं' •अकम्मणेणं अवलेणं अवीरिएणं •अपुरिसक्कार-परक्कमेणं ?

देवेण नियतिवाद-समत्थण-पद

२२. तए णं से देवे कुंडकोलियं समणोवासए एवं वयासी — एवं खलु देवानुप्पिया ! मए इमा एयाख्वा' दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवानुभावे अणुट्ठाणेणं अकम्मणेणं अवलेणं अवीरिएणं अपुरिसक्कार-परक्कमेणं 'लद्धे पत्ते अभिसम-ण्णागए' ॥

कुंडकोलिएण नियतिवाद-निरसण-पदं

२३. तए णं से कुंडकोलिएण समणोवासए तं देवं एवं वयासी — जइ णं देवानुप्पिया ! तुमे 'इमा एयाख्वा' दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवानुभावे अणुट्ठा-णेणं' •अकम्मणेणं अवलेणं अवीरिएणं •अपुरिसक्कार-परक्कमेणं 'लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए', जेसि णं जीवाणं नत्थि उट्ठाणे इ वा" •कम्मे इ वा वले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार •-परक्कमे इ वा, ते किं न देवा" ? 'अहं तुव्वे' ॥ इमा एयाख्वा दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवानुभावे उट्ठाणेणं" •कम्मणेणं वलेणं वीरिएणं पुरिसक्कार •-परक्कमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तो जं वदसि सुंदरी णं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णती-नत्थि उट्ठाणे इ वा" •कम्मे इ वा वले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा • णियता सच्चभावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्म-

१. किणा (क) ।

२. सं० पा०—उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कार-परक्कमेणं ।

३. सं० पा०—अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कार-परक्कमेणं ।

४. इमेयाख्वा (क, ख, ग, घ) ।

५. सं० पा०—अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कार-परक्कमेणं ।

६. लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया (क्व) ।

७. इमेयाख्वा (क, घ); इमे एयाख्वा (ग) ।

८. सं० पा०—अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कार-

परक्कमेणं ।

९. लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया (क, ख, ग, घ) ।

१०. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे ।

११. 'क' प्रती अस्यानन्तरं—'अहं ते एवं भवति, तो जं वदसि' एवं पाठो विद्यते । 'ग' प्रती 'अहं तुव्वे इमा एयाख्वा दिव्वा देविद्धी इ उट्ठाणेणं जाव परक्कमेणं लद्धा ३ । तं ते एवं न भवति, तो जं वदसि' ० ।

१२. अहं णं देवानुप्पिया तुमे (ख, घ) ।

१३. सं० पा०—उट्ठाणेणं जाव परक्कमेणं ।

१४. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव णियता ।

से नृणं कृत्तकोनिय्या ! कम्मं' मुचमं पञ्चानयण्णालसमममि' अमीगवणियाए
एमे देवे अत्थियं पाउअनिय्या ।

तए णं मे देवे नाममुद्दमं च' •उत्तरियत्तमं च पुहचिरित्तापट्टयाओ मेण्हइ
मेण्हित्ता अन्नलियसपट्टियण्णे सत्तिगिणिगाइं पन्नवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए
तुमं एवं वयासी - हंभो ! कृत्तकोनिय्या ! ममणीवागया ! सुंदरी णं
देवाणुप्पिया ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती - नत्थि उट्टाणे इ वा
कम्मं इ वा वत्थे इ वा वीरिए इ वा पुरिसवकार-परवकमे इ वा नियता सव्व-
भावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती—अत्थि उट्टाणे
इ वा कम्मं इ वा वत्थे इ वा वीरिए इ वा पुरिसवकार-परवकमे इ वा अनियता
सव्वभावा ।

तए णं तुमं तं देवं एवं वयासी - जइ णं देवाणुप्पिया ! सुंदरी णं गोसालस्स
मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती—नत्थि उट्टाणे इ वा जाव पुरिसवकार-परकमे
इ वा नियता सव्वभावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्म-
पण्णत्ती—अत्थि उट्टाणे इ वा जाव पुरिसवकार-परवकमे इ वा अनियता
सव्वभावा, तुमे णं देवाणुप्पिया ! इमा एयाख्वा दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुई
दिव्वे देवाणुभावे किण्णा लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ?
किं उट्टाणेणं जाव पुरिसवकार-परवकमेणं ? उदाहु अणुट्टाणेणं जाव अपुरिसवकार-
परकमेणं ?

तए णं से देवे तुमं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए इमा एयाख्वा
दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्टाणेणं जाव अपुरिसवकार-
परवकमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ।

तए णं तुमं तं देवं एवं वयासी जइ णं देवाणुप्पिया ! तुमे इमा एयाख्वा
दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्टाणेणं जाव अपुरिसवकार-
परवकमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, जेसि णं जीवाणं नत्थि उट्टाणे इ वा
जाव परवकमे इ वा, ते किं न देवा ?

अह तुव्भे इमा एयाख्वा दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे
उट्टाणेणं जाव परवकमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तो जं वदसि सुंदरी णं
गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती—नत्थि उट्टाणे इ वा जाव नियता
सव्वभावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती—अत्थि
उट्टाणे इ वा जाव अनियता सव्वभावा, तं ते मिच्छा । तए णं से देवे तुमं
एवं वुत्ते समाणे संकिए कखिए वित्तिगिच्छासमावण्णे कलुससमावण्णे नो

१. × (ख) ।

२. पुव्वावरण्ह° (ख, घ) ।

३. सं० पा०—नामुद्दमं च तहेव जाव पट्टिए ।

2022-2023-2024 * 10 - 23.1.2024

2017-2018

2017-2018

2017-2018

अग्निमित्राए चंदणट्ट-गमण-पदं

३३. तए णं मे सद्दालपुत्ते रामणोवासए कोडुंविमपुरिसं सद्दवेइ, सद्दवेत्ता एवं वयासी —सिप्पामेव भो ! देवाण्णिमा ! लहुकरणजुत्त-जोइयं' ममखुस्वालि-
हाण-रामलिहियंसिगएहिं जंयूणयामयकलायजुत्त-पइविनिट्टएहिं रययामयवंट-
सुत्तरज्जुग-वरकंचणवचियं-नत्थयग्गहोमगहियएहिं' नीनुप्पलकयामेलएहिं
पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिकणम-धंठियाजालपरिसयं मुजायजुगजुत्त-
उज्जुग-पसत्थमुविरएयनिम्मियं पवरलवणोववेयं जुत्तामेव धम्मियं जाणप्प-
वरं उवट्टवेह, उवट्टवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥
३४. तए णं ते कोडुंविमपुरिसां' *सद्दालपुत्तेणं रामणोवासएणं एवं वृत्ता समाणा
हट्टवट्ट-चित्तमाणंदिया पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विमप्पमाणहियया
करयलपरिमहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं सामि ! ति आणाए
विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणंता सिप्पामेव लहुकरणजुत्त-जोइयं जाव'
धम्मियं जाणप्पवरं उवट्टवेत्ता तमाणत्तियं ° पच्चप्पिणंति ॥
३५. तए णं सा अग्निमित्रा भारिया ण्हाया' *कयवलिकम्मा कय-कोउय-मंगल°
पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं' *मंगल्लाई वत्थाई पवर परिहिया° अप्पमहग्घा-
भरणालंकिंयसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा धम्मियं जाणप्पवरं दुस्सहं,
दुस्सहिता पोलासपुरं नयरं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव
सहस्संववणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणप्प-
वराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा जेणेव समणे
भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिव्खुतो° आयाहिण-
पयाहिणं करेइ, करेत्ता ° वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे"
*सुस्ससमाणा णमंसमाणा अभिमुहे विणएणं° पंजलियडा" ठिइया चेव
पज्जुवासइ ॥
३६. तए णं समणे भगवं महावीरे अग्निमित्राए तीसे य महइमहालियाए परिसाए
जाव" धम्मं परिकहेइ ॥

१. पुस्तकान्तरे यानवर्णको ह्यते (वृ) ।

२. °खइय (ख) ।

३. नत्थापग्गहो° (ख, ग) ।

४. °कयामंलएहिं (ख); °कयमंलएहिं (ग) ।

५. सं० पा०—कोडुंविमपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति । ११. पंजलिउडा (ख, घ) ।

६. उवां १।४७ ।

७. सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता ।

८. सं० पा०—सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्प-

महग्घा° ।

९. सं० पा०—तिव्खुतो जाव वंदइ ।

१०. सं० पा०—णाइदूरे जाव पंजलियडा ।

११. पंजलिउडा (ख, घ) ।

१२. ओ० सू० ७१-७७ ।

निगंथे फागु-एसणिज्जेणं असण-पाण-साइम-साइमेणं वत्थ-पडिगह-कंवल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिणं य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

अग्गिमित्ताए-समणोवासिय-चरिया-पदं

४१. तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया समणोवासिया जाया-अभिगयजीवाजीवा जाव' समणे निगंथे फागु-एसणिज्जेणं असण-पाण-साइम-साइमेणं वत्थ-पडिगह-कंवल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिणं य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणी० विहरइ ॥

गोसालस्स आगमण-पदं

४२. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते इमीसे कहाए लद्धे समाणे—एवं खलु सद्दालपुत्ते आजीवियसमयं वमित्ता समणाणं निगंथाणं दिट्ठि पवण्णे', तं गच्छामि णं सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं समणाणं निगंथाणं दिट्ठि वामेत्ता पुणरवि आजीवियदिट्ठि गेण्हावित्तए त्ति कट्ठु—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता आजीवियसंघ-परिवुडे जेणेव पोलासपुरे नयरे, जेणेव आजीवियसभा, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भंडगनिकखेवं करेइ, करेत्ता कतिवएहि' आजीविएहि सद्धि जेणेव सद्दालपुत्ते समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ ॥

४३. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मंखलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाति' नो परिजाणति', अणाढामाणे' अपरिजाणमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

गोसालेण महावीरस्स गुणकित्तण-पदं

४४. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्दालपुत्तेणं समणोवासएणं अणाडिज्जमाणे अपरिजाणिज्जमाणे पीढ-फलग-सेज्जा-संथारद्वयाए समणस्स भगवओ महा-वीरस्स गुणकित्तणं करेइ"—आगए णं देवाणुप्पिया ! इहं महामाहणे ?

४५. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—के णं देवाणुप्पिया ! महामाहणे ?

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—समणे भगवं महावीरे महामाहणे ।

१. उवा० १।५६ ।

२. पडिक्खणे (क, घ) ।

३. कतिवतेहि (क); कइवएहि (ख, घ) ।

४. अढाति (क, ग) ।

५. परिजाणाति (घ) ।

६. अणाढामीणे (क); अणाढायमाणे (ख, घ) ।

७. करेमाणे सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी (क्व) ।

के' णं देवाणुप्पिया ! महाधम्मकही ?

समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही ।

से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही ?
एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे महद्महालयंति संसारंति बहवे
जीवे नस्समाणे विणरसमाणे राज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे
विलुप्पमाणे उम्मग्गपडिवण्णे सण्हविण्णट्ठे मिच्छसवलाभिभूए अट्ठविहकम्म-
तमपडल^१-पडोच्छण्णे बह्वहि अट्ठेहि य^२ हेऊहि य पसिणेहि य कारणेहि य
वागरणेहि य निप्पट्ठ-पसिण^३ वागरणेहि य चाउरंताओ संसारकंताराओ
साहत्यि नित्थारेइ । से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं
महावीरे महाधम्मकही ॥

४६. आगए णं देवाणुप्पिया ! इहं महानिज्जामए ?

के' णं देवाणुप्पिया ! महानिज्जामए ?

समणे भगवं महावीरे महानिज्जामए ।

से केणट्ठेणं^४ देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महानिज्जा-
मए ?^५

एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे संसारमहासमुद्वे बहवे जीवे
नस्समाणे विणस्समाणे^६ •खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे^७
विलुप्पमाणे वुड्डमाणे निवुड्डमाणे उप्पियमाणे^८ धम्ममईए^९ नावाए निव्वाण-
तीराभिमुहे साहत्यि संपावेइ । से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे
भगवं महावीरे महानिज्जामए ॥

विवाद-पट्टवणा-पसिण-पदं

५०. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—तुव्भे^{१०} णं
देवाणुप्पिया ! इयच्छेया^{११} इयदच्छा इयपट्ठा^{१२} इयनिउणा इयनयवादी इयउव-
एसलद्धा^{१३} इयविण्णाणपत्ता । पभू णं^{१४} तुव्भे मम धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं
समणेणं भगवया महावीरेणं सद्धि विवादं करेतए ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।

१. से के (क, ख, ग, घ) ।

२. पडल (क) ।

३. सं० पा०—अट्ठेहि य जाव वागरणेहि ।

४. से के (क, ख, घ) ।

५. सं० पा०—केणट्ठेणं एवं ।

६. सं० पा०—विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे ।

७. उप्पियमाणे (क) ।

८. धम्ममतीते (क, ग) ।

९. तुव्भं (ग) ।

१०. इयच्छेयाओ (ख) ।

११. इयपत्तट्ठा (वृपा) ।

१२. अस्यानन्तरं वृत्तौ 'इयमेधाविणो' अस्य

पाठान्तरस्य उल्लेखोक्ति ।

१३. णं भंते ! (क, ग) ।

पडिगुणैता गुंभारावणं गुं पाडिगुणं पीड'-●कलम-गेज्जा-मंथारयं० ओगि-
ण्हित्ता णं विहरइ ॥

५३. तए णं से भोसाणे मंथलिगुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवासयं जहि नो संचाएइ बहूहि
आपवणाहि य पणवणाहि य सणवणाहि य विणवणाहि य निगंथाओ
पावयणाओ तालित्तए वा रोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा, ताहे संते तंते
परितंते पोलासपुराओ नयराओ पडिणिवत्तमइ, पडिणिवत्तमिता बहिया
जणवयविहारं विहरइ ॥

सद्दालपुत्तस्स धम्मजागरिया-पदं

५४. तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स बहूहि सील'-●व्वय-गुण-वेरमण-
पच्चवक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाणं० भावेमाणस्स चोइस संवच्छरा वीइ-
वकंता । पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स 'अण्णदा कदाइ'
पुव्वरत्तावरत्तकाल'-●समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयाह्वे अज्झ-
त्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुपपज्जित्था--एवं खलु अहं पोलासपुरे
नयरे बहूणं जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंवस्स
मेढी जाव' सव्वकज्जवट्ठावए, तं एतेणं ववखेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स
भगवओ महावीरस्स अतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ॥

५५. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए जेट्टपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-परिजणं
च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिवत्तमइ, पडिणिवत्तमिता
पोलासपुरं नयरं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवण-
भूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ,
दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए वंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमाला-
वण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दब्भसंथारोवगए० समणस्स
भगवओ महावीरस्स अतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

१. सं० पा०—पीड जाव ओगिण्हित्ता ।

२. विपरिणामित्तए (ग) ।

३. सं० पा०—सील जाव भावेमाणस्स ।

४. × (क, ख, ग, घ) ।

५. सं० पा०—पुव्वरत्तावरत्तकाले जाव पोसह-
सालाए समणस्स । संक्षेपीकरणपद्धती प्रायो
नैकरूपता लभ्यते । क्वचित् 'जाव' शब्दा-
नन्तरं संक्षिप्तपाठस्य अन्तिमशब्दो निविद्यते

क्वचित्च पूर्ववर्तिशब्दः । अत्रापि इत्यमेव
विद्यते । तेन द्वितीयाव्ययनस्याधारेणात्र
'दब्भसंथारोवगए' इति पर्यन्तं पाठः पूरितः ।

६. उवा० १।१३ ।

७. उवा० १।१३ ।

८. पू०—उवा० १।५७-५८ ।

९. धम्मं (क) ।

५०६

६०. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥
६१. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आगुरत्ते रुद्धे कुविए चंडिकिए मिमिमितीयमाणे सद्दालपुत्तरस समणोवासयस्स जेदुपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अगओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स गायं मसेण य सोणिएण य आइंचइ ॥
६२. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तं उज्जलं विउलं कवकसं पगाढं चंडं दुक्खं दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ समइ तितिवसइ अहियासेइ ॥

० मज्झिमपुत्त

६३. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छुडुंसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अगओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडा-हयंसि अद्देमि, अद्देत्ता तव गायं मसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
६४. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥
६५. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खा-णाइं पोसहोववासाइं न छुडुंसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अगओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देमि, अद्देत्ता तव गायं मसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
६६. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥

१. उवा० २।२३ ।

२. उवा० २।२४ ।

३. उवा० २।२४ ।

४. उवा० २।२२ ।

५. उवा० २।२३ ।

६. उवा० २।२४ ।

७. उवा० २।२२ ।

८. उवा० २।२३ ।

७३. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुद्धे कुविणं चंडिक्कणं मिसीमिसीयमाणे सद्दालपुत्तरसं समणोवासयस्स कणीयसं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्देइ, अद्देत्ता सद्दालपुत्तसं समणोवासयस्स गायं मणेण य सोणिणं य ० आइंचइ ॥
७४. 'तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिवखइ अहियासेइ ॥

० अग्गिमित्ताभारिया

७५. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता चउत्तं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासयो ! जाव' •जइ णं तुमं अज्ज सोलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खणाणइं पोसहोववासाइं न छुहेसि ० न भंजेसि, 'तो ते' अहं अज्ज जा इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया, तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्लए करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्देमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिणं य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट'—•वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ० ववरोविज्जसि ॥
७६. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव" विहरइ ॥
७७. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव" पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणो-

१. उवा० २।२४।

२. पूर्ववर्ति क्रमानुसारेण (३।३८) स्वीकृतं सूत्रमत्र युज्यते, किन्तु आदर्शेषु नास्य संकेतः प्राप्तोस्ति । संभवतः संक्षेपीकरणे परित्यक्तमिदमभूत् । अस्य स्थाने आदर्शेषु निम्नप्रकारं सूत्रं लभ्यते—'तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए अभीए जाव विहरइ' । नैतद् अत्र उपयुक्तमस्ति ।

३. उवा० २।२७।

४. उवा० २।२४।

५. सं० पा०—समणोवासिया अप्पत्थियपत्थिया जाव न भंजसि ।

६. उवा० २।२२।

७. तओ (क, ख, ग, घ) ।

८. तं ते (क, ख, ग, घ) ।

९. × (क, ख, ग, घ) ।

१०. सं० पा०—दुहट्ट जाव ववरोविज्जसि ।

११. उवा० २।२३।

१२. उवा० २।२४।

मिसिमिसीयमाणे एमं महं नीनुणन-मवलगुलिय-अयसिनुमुमणगासं खुरधारं
असि गहाय ममं एव वयासी—हंभो ! सहालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव'
जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चवखाणाइं पोसहोववासाइं न
छुहेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्टपुत्तं साओ मिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता
तव अगमओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि
कडाहयंसि अद्देमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण य आइंचामि,
जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि । तए णं
अहं तेणं पुरिसेणं एव वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरामि । तए णं से पुरिसे
ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता ममं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—
हंभो ! सहालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं
वेरमणाइं पच्चवखाणाइं पोसहोववासाइं न छुहेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज
जेट्टपुत्तं साओ मिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अगमओ घाएमि, घाएत्ता नव
मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देमि, अद्देत्ता तव
गायं मंसेण य सोणिण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले
चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव'
विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुद्धे कुविए
चंडिकिए मिसिमिसीयमाणे ममं जेट्टपुत्तं मिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अगमओ
घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि
अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिण य आइंचइ ।

तए णं अहं तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तित्तिक्खामि
अहियासेमि ।

एवं मज्झिमं पुत्तं जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तित्तिक्खामि अहियासेमि ।

एवं कणीयसं पुत्तं जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तित्तिक्खामि अहियासेमि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता ममं चउत्थं पि एवं
वयासी—हंभो ! सहालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज

१. उवा० २।२२ ।

२. उवा० २।२३ ।

३. उवा० २।२४ ।

४. उवा० २।२२ ।

५. उवा० २।२३ ।

६. उवा० २।२४ ।

७. उवा० २।२७ ।

८. उवा० ७।६२-६७ ।

९. उवा० ७।६८-७३ ।

१०. उवा० २।२४ ।

११. उवा० २।२२ ।

विणणं पडिमुणेइ, पडिमुणेत्ता तरस ठाणग्ग आलोएइ पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ विउट्टइ विरोहेइ अकरणयाए अन्धुट्टेइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोक्कमं पडिक्कज्जइ ॥

सद्दालपुत्तस्स उवासगपडिमा-पदं

८३. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासाए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥
८४. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासाए पढमं उवासगपडिमं अहामुत्तं अहाक्कपं अहामग्गं अहातच्च सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
८५. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासाए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहामुत्तं अहाक्कपं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
८६. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासाए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोक्कमेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ॥

सद्दालपुत्तस्स अणसण-पदं

८७. तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स अण्णदा कदाइ, पुव्वरत्तावरत्ताकाल-समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोक्कमेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिम-मारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तापाणपडियाइक्खियस्स, कालं अणव-कंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतिय-संलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तापाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

सद्दालपुत्तस्स समाहिमरण-पदं

८८. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासाए वहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवासगपरियाणं पाइणिता,

अट्ठमं अज्झयणं महासतए

उक्खेव-पदं

१. '●जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं सत्तमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ° -

महासतयगाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंवू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए वेइए । सेणिए राया ॥
३. तत्थ णं रायगिहे नयरे महासतए' नामं गाहावई परिवसइ—अइडे '●जाव' बहुजणस्स अपरिभूए ॥
४. तस्स णं महासतयस्स गाहावइस्स अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ निहाणपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ वड्डिपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ पवित्थरपउत्ताओ, अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥
५. से णं महासतए गाहावई वहुणं जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंवस्स मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ° ॥
६. तस्स णं महासतयस्स गाहावइस्स रेवतीपामोक्खाओ तेरस भारियाओ होत्था—

१. सं० पा०—उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. महासत्ते (क); महासययं (ख) ।

४. सं० पा०—अइडे जहा आणंदो नवरं अट्ठ

हिरण्णकोडीओ सकंसाओ निहाणपउत्ताओ

अट्ठ हि वड्ढि अट्ठ हि सकंसाओ पवि अट्ठवया

दसगोसाहस्सिएणं वएणं ।

५. उवा० १।११ ।

६, ७. उवा० १।१३ ।

८. रेवई० (ख, घ) ।

१२. ताए णं समणे भगवं महावीरे महासमायस्स गाहावडस्स वीसे य महइमहालियाए
परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ ॥

१३. परिसा पडिगया, राया य गाए ॥

महासतयस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पवं

१४. ताए णं महासतए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा
निसम्म हट्ठुट्ठु-चित्तमाणंदिण पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-
हियाए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिकमुत्तो आयाहिण-पयाहिणं
करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी--सद्धमि णं
भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं
भंते ! निग्गंथं पावयणं, अट्ठभुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते !
तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते !
पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुम्हे वदह । जहा
णं देवाणुप्पियाणं अंतिए वट्ठे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इवम-सेट्ठि-
सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो
खलु अहं तथा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्ताए । अहं
णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं
सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवं वं करेहि ॥

१५. ताए णं से महासतए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए^{१०}
सावयधम्मं पडिवज्जइ, नवरं—अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ^१ । अट्ठ वया ।
रेवतीपामोक्खाहि तेरसाहि भारियाहि अवसेसं मेहुणविहि पच्चक्खाइ^१ । इमं
च णं एयारुवं अभिग्गहं अभिगेण्हति—कल्लाकल्लि 'च णं'^१ कप्पइ मे
वेदोणियाए^१ कंसपाईए हिरण्णभरियाए संववहरित्तए ॥

महासतयस्स समणोवासग-चरिया-पवं

१६. ताए णं से महासतए समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे^१ जाव' •समणे
निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंवल-
पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं
पडिलाभेमाणे^१ विहरइ ॥

१. ओ० सू० ७१-७७ ।

२. पू०—उवा० २४-४५ ।

३. सकंसाओ उच्चारिते (क, ख, ग) ।

४. पच्चक्खाइ सेसं सव्वं तहेव (क, ख, ग, घ) ।

५. × (ख) ।

६. पेदोणि० (क) ।

७. सं० पा०—अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ ।

८. उवा० १।५५ ।

मंसं ० अज्भोववण्णा वहुविहेहि मंसंहि' सोल्लेहि य तल्लिएहि य' भज्जिएहि य'
'सुरं च महं च मेरुं च मज्जं च सीधुं च पसणं च' आसाएमाणी विसाएमाणी
परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी विहरइ ॥

अमाघाय-पदं

२१. तए णं रायगिहे नयरं अण्णदा कदाइ अमाघायं बुद्धे माविं होत्था ॥

२२. तए णं सा रेवती गाहावड्ढणी मंसलोलुया मंसमुच्छिप्पा मंसगड्डिया मंसगिद्धा
मंसअज्भोववण्णा कोलघरिए पुरिसं सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी— तुम्हे
देवाणुप्पिया ! ममं कोलहरिएहितां' वएहितां कल्लाकल्लिं दुवे-दुवे गोणपोयए
उद्वेहे, उद्वेत्ता ममं उवणंहे ॥

२३. तए णं ते कोलघरिया पुरिसा रेवतीए गाहावड्ढणीए तह त्ति एयमट्ठं विणएणं
पडिमुणंति, पडिमुणित्ता रेवतीए गाहावड्ढणीए कोलहरिएहितां' वएहितां
कल्लाकल्लिं दुवे-दुवे गोणपोयए' वहेति, वहेत्ता रेवतीए गाहावड्ढणीए
उवणंति ॥

२४. तए णं सा रेवती गाहावड्ढणी तेहि गोणमसेहि' सोल्लेहि य तल्लिएहि य
भज्जिएहि सुरं च महं च मेरुं च मज्जं च सीधुं च पसणं च आसाएमाणी
विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी विहरइ ॥

महासतगस्स धम्मजागरिया-पदं

२५. तए णं तस्स महासतगस्स समणोवासगस्स बहूहि सील-व्वय" १-० गुण-वेरमण-
पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाणं ० भावेमाणस्स चोदस संवच्छरा
वीइक्कंता" १ ० पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्ठमाणस्स अण्णदा कदाइ
पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्भत्थिए
चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं रायगिहे नयरं
वहूणं जाव" आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुवस्स मेढी
जाव" सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ
महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए" ॥

१. मंसेहि य (क, ख, ग, घ) ।

२. × (क, ग, घ) ।

३. × (घ) ।

४. सुरं च पसन्नं च (क) ।

५. वि (क) ।

६. कोलघरिए (क) ।

७. कोल्ल ० (घ) ।

८. गोणपोतलए (क) ।

९. उवहंति (ख); गहिंति (ग, घ) ।

१०. गोमंसेहि (क, ग) ।

११. सं ० पा०—सीलव्वय जाव भावेमाणस्स ।

१२. सं ० पा०—वीइक्कंता एवं तहेव जेडुपुत्तं
ठवेइ जाव पोसहसालाए धम्मपण्णत्ति ।

१३. उवा० १।१३ ।

१४. उवा० १।१३ ।

१५. पू०—उवा० १।५७-५८ ।

३०. तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावडणीए दोच्चं पि तच्चं पि एवं वृत्ते समाणे पयमद्वं ना आहाइ नी परियाणाइ^०, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे विहरइ ॥
३१. तए णं सा रेवती गाहावडणी महासतएणं समणोवासएण अणाढाइज्जमाणी अपरियाणिज्जमाणी जामेव दिसं पाउअभूया तामेव दिसं पडिगया ॥

महासतगस्स उवासगपडिमा-पदं

३२. तए णं से महासतए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जिता णं विहरइ ।
३३. ^{१०}तए णं से महासतए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहामुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
३४. तए णं से महासतए समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउदयं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहामुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ^० ॥
३५. तए णं से महासतए समणोवासए तेणं ओरालेणं^१ •विउलेणं पयत्तेणं पग्गहि-एणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए^० किसे धमणिसंतए जाए ॥

महासतगस्स अणसण-पदं

३६. तए णं तस्स महासतगस्स सगणोवासयगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समु-प्पज्जित्था एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं^१ •विउलेणं पयत्तेणं पग्गहि-एणं तवो-कम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परकम्मे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परकम्मे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव^२ उट्ठियम्मि सूरं सहस्सरस्सिम्मि दिणयरं तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-

१. सं० पा०—पढम अहामुत्त जाव एक्कारस्स वि ।

२. सं० पा०—उरालेणं जाव किसे ।

३. सं० पा०—उरालेण तवोकम्मेण जहा आणंदो तहेव अपच्छिम^० ।

४. उवा० १।५७ ।

परियाणाइ, अणाळागमाणे अपरियाणमाणे तुमिणीं, अम्मज्झाणोवणए विहरइ ॥

४०. तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतयं समणोवासयं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो ! महासतया ! समणोवासया ! किं णं तुमं देवानुप्पिया ! धम्मोण वा पुण्णेण वा समोण वा मोक्खेण वा, जं णं तुमं मए सद्धि ओरालाई माणुस्सयाई भोगभोगाई भुंजमाणे नो विहरसि ? °

महासतयस्स विक्खेव-पदं

४१. तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे आसुरत्ते' रुद्धे कुविए चंडिविकए मिसिमिनीयमाणे ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता रेवति गाहावइणि एवं वयासी—हंभो ! रेवती ! अप्पत्थियपत्थिए ! दुरंत-पंत-लक्खणे ! हीणपुण-चाउइसिए ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिए ! एवं खलु तुमं अंत सत्तरत्तस्स अलसएणं' वाहिणा अभिभूया समाणी अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा असमाहि-पत्ता कालमासे कालं किच्चा अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिसि ॥
४२. तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतएणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणी—रुद्धे णं ममं महासतए समणोवासए ! हीणे णं ममं महासतए समणोवासए ! अवज्झाया णं अहं महासतएणं समणोवासएणं, न नज्जइ णं' अहं केणावि' कु-मारेणं मारिज्जिस्सामि—त्ति कट्टु भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजाय-भया सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्किता जेणेव सए गिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ओहयमणसंकप्पा' °चित्तासोगसागरसंपविट्ठा करयल-पल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठिया ° भियाइ ॥
४३. तए णं सा रेवती गाहावइणी अंतो सत्तरत्तस्स अलसएणं' वाहिणा अभिभूया अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुय-च्चुए नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा ॥

१. पू०—उवा० ८१७ ।

२. आसुरत्त (क, ख, ग, घ) ।

३. आलस्सएणं (क); आलस्सएणं (ख) ।

४. समाणी एवं च (क, ग, घ); समाणी एवं वयासी (ख); किन्तु प्रकरणांनुसारेण तेवं युज्यते ।

५. × (ग, घ) ।

६. केणत्ति (क); केण वि (ख, घ) ।

७. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव भियाइ ।

८. आलस्सएण (क); आलसएणं (ख); अलस्सएणं (ग) ।

विशरणमाणहिमं उट्टामं उट्टेडं, उट्टेता समणं भगवं महावीरं तिममुतो ॥
 हिण-पयाहिणं करेडं, करेता वंदइ पमंसइ, वंदिता पमंगिता एवं ववत्तो
 सहहामि णं भवे ! निगंथं पावयणं, पतिगामि णं भवे ! निगंथं ॥५५॥
 रोएमि णं भवे ! निगंथं पावयणं, अट्ठभुट्टेमि णं भवे ! निगंथं पावयणं
 एवमेयं भवे ! सहमेयं भवे ! अविज्जमेयं भवे ! असद्विज्जमेयं भवे ! उच्छि-
 मेयं भवे ! पट्टिच्छियमेयं भवे ! इच्छिय-पट्टिच्छियमेयं भवे ! से जहेयं पु-
 व्वदहं । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए वव्वे राईसर-तलवर-माडविम-कोडुविद
 इवभ-सेट्ठि-सेणावड-सत्थवाहणमभिद्या मुंडा भविता अगाराओ अणगारिणं
 पव्वइया, नो खनु अहं तहा संचाएमि मुंडे भविता अगाराओ अणगारिणं
 पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं-
 दुवालसविहं सावगधम्मं पट्टिवज्जिस्सामि ।
 अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पट्टिववं करेहि ॥

१४. तए णं से लेतियापिता गाहावट्टे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए^१ सावय-
 धम्मं पट्टिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ सावत्थीए नयरीए कोट्टयाओ
 चेइयाओ पडिणिवक्खमइ, पडिणिवक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

लेतियापियस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. तए णं से लेतियापिता समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव^२ समणे
 निगंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंवल-
 पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संधारएणं
 पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

फग्गुणीए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७. तए णं सा फग्गुणी भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव^३
 समणे निगंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-
 कंवल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संधार-
 एणं पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

लेतियापियस्स धम्मजागरिया-पदं

१८. तए णं तस्स लेतियापियस्स समणोवासगस्स वव्हिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-

१. पू०—उवा० ११२४-५३ ।

३. उवा० ११५६ ।

२. उवा० ११५५ ।

समयोस धम्मजागरिणं जागरमाप्सस्स समं अज्झस्सिणं विस्सिणं पत्थिणं, जाणं
संकप्पे समुप्पज्जित्वा—एवं एवम् एतत्तं उभेणं एवास्सवेणं ओरानेणं विउत्तेणं
पयत्तेणं पयस्सिणं नवोक्कम्मेणं मुक्के मुक्के निम्मेणं अट्ठियम्मिणं पदे किङ्किटि-
याभूणं किम्मे धम्मणिस्तंणं जाणं । नं अस्सि ता मे उट्ठाने कम्मे वत्ते वीरिणं
पुरिसवत्तार-परयकमे सदा-विद-संवेणे, तं जावता मे अस्सि उट्ठाने कम्मे वत्ते
वीरिणं पुरिसवत्तार-परयकमे सदा-विद-संवेणे, जाव य मे धम्मार्थिणं
धम्मोवण्णसणं समणं भगवं महावीरे जिणे सुहृत्तां विहरदं, तावता मे सेयं कल्लं
पाउण्णभायाणं रयणीणं जाव' उट्ठियम्मि सूरं सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा
जलत्ते अपच्छिममारणं तियसंलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाद्विख-
यस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तणं—एवं संपेहेदं, संपेहेत्ता कल्लं
पाउण्णभायाणं रयणीणं उट्ठियम्मि सूरं सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलत्ते
अपच्छिममारणं तियसंलेहणा-भूसणा-भूसिणं भत्तपाण-पडियाद्विखणं कालं
अणवकंखमाणे विहरदं ॥

लेतियापियस्स समाहिमरण-पदं

२५. तए णं से लेतियापिता समणोवासाए वट्ठहि सील-व्वय-मुण-वेरमण-पच्चक्खाण-
पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियायं पाउणित्ता,
एवकारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काण्णं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए
अत्ताणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कत्ते
समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा° सोहम्मे कप्पे अरुणकीले विमाणे
देवत्ताए उववण्णे । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई
पण्णत्ता । लेतियापियस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥
२६. से णं भंते ! लेतियापिता ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भववखएणं
ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहि गमिहिइ ? कहि उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं
काहिइं ॥

निक्खेव-पदं

२७. एवं खलु जंवू ! समणे णं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं दसमस्स
अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

१. उवा० १।५७ ।

२. अध्ययननिगमनानन्तरमादर्शेषु पाठान्तररूपेण
स्वीकृतं संप्रहवाक्यमुपलभ्यते । वृत्त्यनुसारेण
नैतत् संभाव्यते—दसण्हं वि पण्णस्समे

संवच्छरे 'वट्ठमाणे णं' चित्ता । दसण्हं वि
वीसं वासाइं समणोवासगपरियाओ (क,
ख, ग, घ) ।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108	109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120	121	122	123	124	125	126	127	128	129	130	131	132	133	134	135	136	137	138	139	140	141	142	143	144	145	146	147	148	149	150	151	152	153	154	155	156	157	158	159	160	161	162	163	164	165	166	167	168	169	170	171	172	173	174	175	176	177	178	179	180	181	182	183	184	185	186	187	188	189	190	191	192	193	194	195	196	197	198	199	200	201	202	203	204	205	206	207	208	209	210	211	212	213	214	215	216	217	218	219	220	221	222	223	224	225	226	227	228	229	230	231	232	233	234	235	236	237	238	239	240	241	242	243	244	245	246	247	248	249	250	251	252	253	254	255	256	257	258	259	260	261	262	263	264	265	266	267	268	269	270	271	272	273	274	275	276	277	278	279	280	281	282	283	284	285	286	287	288	289	290	291	292	293	294	295	296	297	298	299	300	301	302	303	304	305	306	307	308	309	310	311	312	313	314	315	316	317	318	319	320	321	322	323	324	325	326	327	328	329	330	331	332	333	334	335	336	337	338	339	340	341	342	343	344	345	346	347	348	349	350	351	352	353	354	355	356	357	358	359	360	361	362	363	364	365	366	367	368	369	370	371	372	373	374	375	376	377	378	379	380	381	382	383	384	385	386	387	388	389	390	391	392	393	394	395	396	397	398	399	400	401	402	403	404	405	406	407	408	409	410	411	412	413	414	415	416	417	418	419	420	421	422	423	424	425	426	427	428	429	430	431	432	433	434	435	436	437	438	439	440	441	442	443	444	445	446	447	448	449	450	451	452	453	454	455	456	457	458	459	460	461	462	463	464	465	466	467	468	469	470	471	472	473	474	475	476	477	478	479	480	481	482	483	484	485	486	487	488	489	490	491	492	493	494	495	496	497	498	499	500	501	502	503	504	505	506	507	508	509	510	511	512	513	514	515	516	517	518	519	520	521	522	523	524	525	526	527	528	529	530	531	532	533	534	535	536	537	538	539	540	541	542	543	544	545	546	547	548	549	550	551	552	553	554	555	556	557	558	559	560	561	562	563	564	565	566	567	568	569	570	571	572	573	574	575	576	577	578	579	580	581	582	583	584	585	586	587	588	589	590	591	592	593	594	595	596	597	598	599	600	601	602	603	604	605	606	607	608	609	610	611	612	613	614	615	616	617	618	619	620	621	622	623	624	625	626	627	628	629	630	631	632	633	634	635	636	637	638	639	640	641	642	643	644	645	646	647	648	649	650	651	652	653	654	655	656	657	658	659	660	661	662	663	664	665	666	667	668	669	670	671	672	673	674	675	676	677	678	679	680	681	682	683	684	685	686	687	688	689	690	691	692	693	694	695	696	697	698	699	700	701	702	703	704	705	706	707	708	709	710	711	712	713	714	715	716	717	718	719	720	721	722	723	724	725	726	727	728	729	730	731	732	733	734	735	736	737	738	739	740	741	742	743	744	745	746	747	748	749	750	751	752	753	754	755	756	757	758	759	760	761	762	763	764	765	766	767	768	769	770	771	772	773	774	775	776	777	778	779	780	781	782	783	784	785	786	787	788	789	790	791	792	793	794	795	796	797	798	799	800	801	802	803	804	805	806	807	808	809	810	811	812	813	814	815	816	817	818	819	820	821	822	823	824	825	826	827	828	829	830	831	832	833	834	835	836	837	838	839	840	841	842	843	844	845	846	847	848	849	850	851	852	853	854	855	856	857	858	859	860	861	862	863	864	865	866	867	868	869	870	871	872	873	874	875	876	877	878	879	880	881	882	883	884	885	886	887	888	889	890	891	892	893	894	895	896	897	898	899	900	901	902	903	904	905	906	907	908	909	910	911	912	913	914	915	916	917	918	919	920	921	922	923	924	925	926	927	928	929	930	931	932	933	934	935	936	937	938	939	940	941	942	943	944	945	946	947	948	949	950	951	952	953	954	955	956	957	958	959	960	961	962	963	964	965	966	967	968	969	970	971	972	973	974	975	976	977	978	979	980	981	982	983	984	985	986	987	988	989	990	991	992	993	994	995	996	997	998	999	1000	1001	1002	1003	1004	1005	1006	1007	1008	1009	1010	1011	1012	1013	1014	1015	1016	1017	1018	1019	1020	1021	1022	1023	1024	1025	1026	1027	1028	1029	1030	1031	1032	1033	1034	1035	1036	1037	1038	1039	1040	1041	1042	1043	1044	1045	1046	1047	1048	1049	1050	1051	1052	1053	1054	1055	1056	1057	1058	1059	1060	1061	1062	1063	1064	1065	1066	1067	1068	1069	1070	1071	1072	1073	1074	1075	1076	1077	1078	1079	1080	1081	1082	1083	1084	1085	1086	1087	1088	1089	1090	1091	1092	1093	1094	1095	1096	1097	1098	1099	1100	1101	1102	1103	1104	1105	1106	1107	1108	1109	1110	1111	1112	1113	1114	1115	1116	1117	1118	1119	1120	1121	1122	1123	1124	1125	1126	1127	1128	1129	1130	1131	1132	1133	1134	1135	1136	1137	1138	1139	1140	1141	1142	1143	1144	1145	1146	1147	1148	1149	1150	1151	1152	1153	1154	1155	1156	1157	1158	1159	1160	1161	1162	1163	1164	1165	1166	1167	1168	1169	1170	1171	1172	1173	1174	1175	1176	1177	1178	1179	1180	1181	1182	1183	1184	1185	1186	1187	1188	1189	1190	1191	1192	1193	1194	1195	1196	1197	1198	1199	1200	1201	1202	1203	1204	1205	1206	1207	1208	1209	1210	1211	1212	1213	1214	1215	1216	1217	1218	1219	1220	1221	1222	1223	1224	1225	1226	1227	1228	1229	1230	1231	1232	1233	1234	1235	1236	1237	1238	1239	1240	1241	1242	1243	1244	1245	1246	1247	1248	1249	1250	1251	1252	1253	1254	1255	1256	1257	1258	1259	1260	1261	1262	1263	1264	1265	1266	1267	1268	1269	1270	1271	1272	1273	1274	1275	1276	1277	1278	1279	1280	1281	1282	1283	1284	1285	1286	1287	1288	1289	1290	1291	1292	1293	1294	1295	1296	1297	1298	1299	1300	1301	1302	1303	1304	1305	1306	1307	1308	1309	1310	1311	1312	1313	1314	1315	1316	1317	1318	1319	1320	1321	1322	1323	1324	1325	1326	1327	1328	1329	1330	1331	1332	1333	1334	1335	1336	1337	1338	1339	1340	1341	1342	1343	1344	1345	1346	1347	1348	1349	1350	1351	1352	1353	1354	1355	1356	1357	1358	1359	1360	1361	1362	1363	1364	1365	1366	1367	1368	1369	1370	1371	1372	1373	1374	1375	1376	1377	1378	1379	1380	1381	1382	1383	1384	1385	1386	1387	1388	1389	1390	1391	1392	1393	1394	1395	1396	1397	1398	1399	1400	1401	1402	1403	1404	1405	1406	1407	1408	1409	1410	1411	1412	1413	1414	1415	1416	1417	1418	1419	1420	1421	1422	1423	1424	1425	1426	1427	1428	1429	1430	1431	1432	1433	1434	1435	1436	1437	1438	1439	1440	1441	1442	1443	1444	1445	1446	1447	1448	1449	1450	1451	1452	1453	1454	1455	1456	1457	1458	1459	1460	1461	1462	1463	1464	1465	1466	1467	1468	1469	1470	1471	1472	1473	1474	1475	1476	1477	1478	1479	1480	1481	1482	1483	1484	1485	1486	1487	1488	1489	1490	1491
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------

६. एवं गन्तुं जंत्तु ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पणत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१. गोयम २. समुद् ३. सागर, ४. गंभीरे चैव होइ ५. धिमिए य ।
 ६. अयले ७. कंषिल्ले खलु, ८. अक्खोभ ९. पसेणई १०. विण्हू ॥१॥
 ७. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पणत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्टे पणत्ते ?

गोयम-पदं

८. एवं खलु जंत्तु ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवई नामं नयरी होत्था—दुवालस-जोयणायामा नवजोयणवित्थिण्णा धणवत्ति-मइ'-णिम्मया चामीकर-पागारा नाणामणि-पंचवण्ण-कविसीसगमंडिया सुरम्मा अलकापुरि-संकासा' पमुदिय-पक्कीलिया पच्चक्खं देवलोगभूया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडि-रूवा ॥
 ९. तीसे णं वारवईए' णयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ' णं रेवयए नामं पव्वए होत्था—वण्णओ' ॥
 १०. तत्थ णं रेवयए पव्वए नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था - वण्णओ' ॥
 ११. [तस्स णं उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए ?] सुरप्पिए नामं जक्खायतणे होत्था - [चिराइए पुव्वपुरिस-पणत्ते ?] पोराणे ॥
 १२. से णं एगेणं वणसंडेणं [सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते ?] ॥
 १३. [तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे ?] असोगवरपायवे ॥
 १४. तत्थ णं वारवईए णयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया परिवसइ—महाराय-वण्णओ' ।
 से णं तत्थ समुद्धविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं बलदेवपामोक्खाणं' पंचण्हं महावीराणं', पज्जुण्णपामोक्खाणं अट्ठुट्ठाणं कुमारकोडीणं, संवपामोक्खाणं

१,२. ना० १।१।७ ।

३. × (क) ।

४. समा (क) ।

५. वारवती (क) ।

६. तत्थ (ख) ।

७. ना० १।५।३ ।

८. ना० १।५।४ ।

९. ओ० सू० १४ ।

१०. °पामुक्खाणं (ख) ।

११. नायाधम्मकहाओ १।५।६ सूत्रात् अस्य क्रमो

भिन्नीस्ति ।

तइओ वग्गो

पढमं अज्झयणं

अणीयसे

उक्खेव-पदं

१. जइ^१ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ०
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स तेरस्स अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—१. अणीयसे २. अणंतसेणे अजियसेणे ४. अणिहयरिऊ ५. देवसेणे^३ ६. सत्तुसेणे ७. सारणे ८. गए ९. समुद्धे १०. दुम्मुहे ११. कूवए १२. दाहए १३. अणाहिट्ठी^४ ॥
३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स तेरस्स अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

अणीयसादि-पदं

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं भद्दिलपुरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ^५ ॥
५. तस्स णं भद्दिलपुरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सिरिवणे नामं उज्जाणे होत्था—वण्णओ^५ । जियसत्तू राया ॥

१. स० पा०—जः तच्चस्स उक्खेवओ ।

४. ओ० सू० १ ।

२. देवजसे (क) ।

५. ना० १।५।४ ।

३. अणाहिट्ठे (क) ।

१४. एवं खलु जंवू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

२-६ अज्झयणाणि

१५. एवं जहा अणीयसो । एवं सेसा वि । अज्झयणा एवकममा । वत्तीसओ दाओ । वीसं वासा परियाओ । चोद्दस पुब्बा । सेत्तुंजे सिद्धा ।

सत्तमं अज्झयणं

सारणे

सारण-पदं

१६. तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवईए नयरीए, जहा पढमे, नवरं—वसुदेवे राया । धारिणी देवी । सीहो सुमिणे । सारणे कुमारे । पण्णासओ दाओ । चोद्दस पुब्बा । वीसं वासा परियाओ । सेसं जहा गोयमस्स जाव^१ सेत्तुंजे सिद्धे ।

अट्ठमं अज्झयणं

गए

उक्खेव-पदं

१७. जइ^१ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स तच्चस्स वग्गस्स सत्तमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । अट्ठमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ०

१८. एवं खलु जंवू तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवईए नयरीए, जहा पढमे जाव^१ अरहा अरिद्धनेमी समोसढे ॥

छण्हं अणगाराणं तव-संकप्प-पदं

१९. तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहओ अरिद्धणेमिस्स अंतेवासी छ अणगारा भायरो^४ सहोदरा होत्था—सरिसया सरित्तया सरिव्वया नीलुप्पल-गवल-गुलिय-

१. पुब्बी (ग) ।

२. अं० १।२१-२४ ।

३. सं० पा०—जइ उक्खेवओ अट्ठमस्स ।

४. अं० ३।१२ ।

५. भायरा (क, ख, ग) ।

१४. एवं खलु जंवू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चरस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

२-६ अज्झयणाणि

१५. एवं जहा अणीयसे । एवं सेसा वि । अज्झयणा एवकगमा । वत्तीसओ दाओ । वीसं वासा परियाओ । चौद्दस पुव्वा । सेत्तुंजे सिद्धा ।

सत्तमं अज्झयणं

सारणे

सारण-पदं

१६. तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवईए नयरीए, जहा पढमे, नवरं—वमुदेवे राया । धारिणी देवी । सीहो सुमिणे । सारणे कुमारे । पण्णासओ दाओ । चौद्दस पुव्वा^१ । वीसं वासा परियाओ । सेसं जहा गोयमस्स जाव^२ सेत्तुंजे सिद्धे ।

अट्ठमं अज्झयणं

गए

उक्खेव-पदं

१७. जइ^३ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स तच्चस्स वग्गस्स सत्तमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । अट्टमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ०
१८. एवं खलु जंवू तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवईए नयरीए, जहा पढमे जाव^४ अरहा अरिद्धनेमी समोसडे ॥

छण्हं अणगाराणं तव-संकप्प-पदं

१९. तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहओ अरिद्धणेमिस्स अंतेवासी छ अणगारा भायरो^५ सहोदरा होत्था—सरिसया सरित्तया सरिब्बया नीलुप्पल-गवल-गुलिय-

१. पुव्वी (ग) ।

२. अ० १।२१-२४ ।

३. सं० पा०—जइ उक्खेवओ अट्टमस्स ।

४. अ० ३।१२ ।

५. भायरा (क, ख, ग) ।

घरसमुदाणस्स' भिक्खायरियाए अडमाणे' वसुदेवरस रण्णो देवईए देवीए गेहे' अणुप्पविट्ठे ॥

२५. तए णं सा देवई देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठ'कुट्ट-चित्तमाणंदिया पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण' हियया आसणाओ अवभुट्ठेइ, अवभुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पदाइ अणुगच्छइ, तिकखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव भत्तघरए तेणेव उवागया सीहकेसराणं मोयगाणं थालं भरेइ, ते अणगारे पडिलाभेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जेइ ॥

२६. तयाणंतरं च णं दोच्चे संघाडए वारवईए' •नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसुदेवस्स रण्णो देवईए देवीए गेहे अणुप्पविट्ठे ॥

२७. तए णं सा देवई देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठकुट्टा आसणाओ अवभुट्ठेइ, अवभुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पदाइ अणुगच्छइ, तिकखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव भत्तघरए तेणेव उवागया सीहकेसराणं मोयगाणं थालं भरेइ, ते अणगारे पडिलाभेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता' पडिविसज्जेइ ॥

२८. तयाणंतरं च णं तच्चे संघाडए वारवईए नगरीए उच्च'-•नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसुदेवस्स रण्णो देवईए देवीए गेहे अणुप्पविट्ठे ॥

देवईए पुणरागमणसंका-पदं

२९. तए णं सा देवई देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठकुट्टा आसणाओ अवभुट्ठेइ, अवभुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पदाइ अणुगच्छइ, तिकखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव भत्तघरए तेणेव उवागया सीहकेसराणं मोयगाणं थालं भरेइ, ते अणगारे' पडिलाभेइ, पडिलाभेत्ता एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया ! कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे वारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिण्णाए जाव' पच्चक्खं देवलोगभूयाए समणा निर्गथा उच्च'-•नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए' अडमाणा

१. °समुदाणस्स (ख, ग, घ) ।

२. अडमाणे २ (क) ।

३. गिहं (ख, ग) ।

४. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया ।

५. सं० पा०—वारवईए उच्च जाव पडिवि-सज्जेइ ।

६. सं० पा०—उच्च जाव पडिलाभेइ ।

७. अं० १।५ ।

८. सं० पा०—उच्च जाव अडमाणा ।

पुत्त-बोह-पदं

३१. तए णं तीसे देवईए देवीए अयमेयारुवे अजभत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु अहं पोलासपुरे नयरे अतिमुत्तेणं कुमारसमणेणं वालत्तणे वागरिआ—तुमण्णं देवाणुप्पिए ! अट्ट पुत्ते पयाइस्ससि^१ सरिसए जाव^२ नलकूवर-समाणे, नो चेव णं भरहे^३ वासे अण्णाओ अम्मयाओ तारिसए पुत्ते पयाइस्ससि । तं णं मिच्छा । इमं णं पच्चवखमेव दिस्साइ—भरहे वासे अण्णाओ वि अम्मयाओ खलु^४ एरिसए^५ पुत्ते पयायाओ । तं गच्छामि णं अरहं अरिट्ठणेमि वंदामि, वंदित्ता इमं च णं एयारुवं वागरणं पुच्छिस्सामोत्ति कट्ठ एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कोडुंविद्यपुरिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—^६“खिप्पा-मेव भो देवाणुप्पिया ! धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह । ते वि तहेव^७ उवट्ठवन्ति । जहा देवाणंदा जाव^८ पज्जुवासइ ॥

३२. तए णं अरहा अरिट्ठणेमी देवइं देवि एवं वयासी—से नूणं तव देवई ! इमे छ अणगारे पासित्ता अयमेयारुवे अजभत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु अहं पोलासपुरे नयरे अइमुत्तेणं कुमारसमणेणं वालत्तणे वागरिआ तं चेव जाव^९ निग्गच्छित्ता ममं अंतियं हव्वमागया । से नूणं देवई ! अट्ठे समट्ठे ? हंता अत्थि ॥

३३. एवं खलु देवाणुप्पिए ! तेणं कालेणं तेणं समएणं भदिलपुरे नयरे नागे नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे ॥

३४. तस्स णं नागस्स गाहावइस्स सुलसा नामं भारिया होत्था ॥

३५. तए णं सा सुलसा गाहावइणी वालत्तणे चेव नेमित्तिएणं वागरिया—एस णं दारिया णिदू भविस्सइ ॥

३६. तए णं सा सुलसा वालप्पभिइं चेव^{१०} हरि-णेगमेसिस्स पडिमं करेइ, करेत्ता कल्लाकल्लि ण्हाया^{११} •कयवलिकम्मा कयकोउय-मंगल^{१२}-पायच्छित्ता उल्लपड-साडया महिरिहं पुप्फच्चणं^{१३} करेइ, करेत्ता जण्णुपायपडिया पणामं करेइ, करेत्ता तओ पच्छा आहारेइ वा नीहारेइ वा चरइ^{१४} वा ॥

१. पयाइसिसि (घ) ।

८. अं० ३।३१ ।

२. अं० ३।१६ ।

९. जेणेव मम (क, ख, ग, घ) ।

३. भारहे (ख, ग, घ) ।

१०. चेव हरिणेगमेसी देवभत्ता यावि होत्था (ग, घ) ।

४. X (क) ।

५. एदिसए जाव (क, ख, ग, घ) ।

११. सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता ।

६. सं० पा०—लट्ठकरणजाणपवरं जाव उवट्ठवन्ति ।

१२. पुप्फच्चणियं (क) ।

७. भ० ६।४४, १४६ ।

१३. वरइ (व) ।

वंदिता नमंसित्ता जेणेव अरहा' अरिदुणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिदुणेमि तिकमुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुग्गहं', दुग्गहित्ता जेणेव वारवई नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वारवइं नयरी अणुप्पविसइ, अणुप्प-विसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला तेणेव उवागया, धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोग्गहइ, पच्चोग्गहित्ता जेणेव सए वासघरे' जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागया सयसि सयणिज्जंसि निसीयइ ॥

देवईए पुत्ताभिलासा-पदं

४३. तए णं तीसे देवईए देवीए अयं अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु अहं सरिसए जाव' नलक्कवर-समाणे सत्त पुत्ते पयाया, नो चैव णं मए एगस्स वि बालत्तणए' समणुब्भूए' । एस वि य णं कण्हे वासुदेवे छण्हं-छण्हं मासाणं ममं अंतियं पायवंदए हव्वमागच्छइ । तं धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, पुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयलवखणाओ णं ताओ अम्मयाओ, जासिं मण्णे णियग-कुच्छि-संभूयाइ' थणदुद्ध-लुद्धयाइं महुर-समुल्लावयाइं मम्मण-पर्जपियाइं 'थण-मूला' कक्खदेस-भाग अभिसरमाणाइं' मुद्धयाइं' पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हऊण उच्छगे' णिवेसियाइं देति समुल्लावए सुमहुरे पुणो-पुणो मंजुलप्पभणिए । अहं णं अधण्णा अपुण्णा अकयपुण्णा अकयलवखणा एत्तो एकत्तरमवि ण पत्ता—ओहय" •मणसंकप्पा" करयलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया ० भियायइ ॥

कण्हस्स चित्ताकारणपुच्छा-पदं

४४. इमं च णं कण्हे वासुदेवे ण्हाए" •कयवलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारं विभूसिए देवईए देवीए पायवंदए हव्वमागच्छइ ॥

४५. तए णं से कण्हे वासुदेवे देवइं देवि पासइ, पासित्ता देवईए देवीए पायगहणं करेइ, करेत्ता देवइं देवि एवं वयासी—अण्णया णं अम्मो ! तुव्भे ममं पासेत्ता

१. अरिहा (क) ।

२. द्रुहति (क) ।

३. वासघरए (ख, ग) ।

४. अं० ३।१६ ।

५. बालत्तए (ख) ।

६. समुब्भूए (ख, ग, घ) ।

७. संभूययाइं (ख, ग) ।

८. पर्जपिराइं (क) ।

९. थणमूल (क, ग, घ) ।

१०. अतिसरमाणाइं (क, ख, ग, घ) ।

११. भवन्तीति गम्यते (वृ); मुद्धयाइं थणियं पियंति (ना० १।२।१२); पण्हयं पियंति (उ०४।६०) ।

१२. उच्छंग (ख, ग) ।

१३. सं० पा०—ओहय जाव भियायइ ।

१४. ० संकप्पा भूमिगयदिट्ठिया (वृ) ।

१५. सं० पा०—ण्हाए जाव विभूसिए ।

परिणयमेत्ते जोव्वणगं गणपत्ते अरहस्रो अग्निद्वेगमिस्स अंतियं मुंढे' • भविता
अगाराओ अणगारियं • पव्वइस्सइ—कण्हं वागुदेयं दोच्चं पि तच्चं पि एवं
वदइ, वदित्ता जामेव दिसं पाउव्वभूए तामेव दिसं पडिगए ।

कण्हेण देवईए आसासण-पदं

५१. तए णं से कण्हे वासुदेवे पोसहसालाओ पडिणिवत्तइ, पडिणिवत्तिता जेणेव
देवई' देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवईए देवीए पायग्गहणं करेइ,
करेत्ता एवं वयासी—होहिइ णं अम्मो ! मम सहोदरं कणीयसे भाउए त्ति
कट्ठु देवई देवि ताहिं इट्ठाहिं कंताइं पियाहिं मण्णुणाहिं मणामाहिं वग्गूहिं
आसासेइ, आसासेत्ता जामेव दिसं पाउव्वभूए तामेव दिसं पडिगए ॥

गयसुकुमालस्स जम्म-पदं

५२. तए णं सा देवई देवी अणण्या कयाइं तंसि तारिसगंसि वासघरंसि जाव' सीहं
सुमिणे पासित्ता पडिवुद्धा जाव' गव्वं परिवहइ ॥

५३. तए णं सा देवई देवी नवण्हं मासाणं जासुमण-रत्तवंधुजीवय-लक्खारस्स-
सरस्सपारिजातक-तरुणदिवायर-समप्पभं सव्वणयणकंत-सुकुमालपाणिपायं
जाव' सुरुवं गयतालुसमाणं दारयं पयाया । जम्मणं जहा मेहकुमारे जाव' जम्हा
णं अम्हं इमे दारए गयतालुसमाणे, तं होउ णं अम्हं एयस्स दारगस्स नामधेज्जे
गयसुकुमाले' ॥

५४. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामं कयं—गयसुकुमालो त्ति । सेसं जहा
मेहे जाव' अलंभोगसमत्थे जाए यावि होत्था ॥

सोमिलधूयाए कण्णतेउर-पक्खेव-पदं

५५. तत्थ णं वारवईए नयरीए सोमिले नाम माहणे परिवसइ—अड्ढे । रिउव्वेय
जाव' वंभण्णएसु य सत्थेसु सुपरिणिट्ठिए यावि होत्था ॥

५६. तस्स सोमिल-माहणस्स सोमसिरी नामं माहणी होत्था—सूमालपाणिपाया ॥

५७. तस्स णं सोमिलस्स धूया सोमसिरीए माहणीए अत्तया सोमा नामं दारिया

१. सं० पा०—मुंढे जाव पव्वइस्सइ ।

७. ना० १।१।७४-८१ ।

२. देवती (क, ख) ।

८. गयतालुयं (क) ।

३. जावपाढया (क) । भ० ११।१३३ ।

९. गयसुकुमाले, गयसुकुमाले (क, ख) ।

४. भ० ११।१३३-१४५ ।

१०. ना० १।१।८२-८८ ।

५. सूमालं (वृ) ।

११. ओ० सू० ६७ ।

६. ओ० सू० १४३ ।

गयसुकुमालस्त पव्वज्जासंकप्प-पदं

तए णं से गयसुकुमाले अरहओ अरिदुणेमिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा^१ निसम्मं हट्ठतुट्ठे अरहं अरिदुणेमिं निसग्गुत्तां आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—महत्तामि णं भंते ! निग्गंयं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंयं पावयणं, रोणमि णं भंते ! निग्गंयं पावयणं, अट्ठभुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंयं पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वयह । नवरि देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि । तओ पच्छा मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामि । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिब्रंघं करेहि ॥

गयसुकुमालस्त अम्मापिऊणं निवेदन-पदं

६४. तए णं से गयसुकुमाले अरहं अरिदुणेमि वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणामेव हत्थिरयणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधवरणए महयाभड-चडगर-पहकरेणं वारवईए नयरीए मज्झमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणामेव अम्मापियरो तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं पायवडणं करेइ, करेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अम्मयाओ ! मए अरहओ अरिदुणेमिस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ॥
६५. तए णं तस्स गयसुकुमालस्त अम्मापियरो एवं वयासी—धन्तोसि तुमं जाया ! संपुण्णोसि तुमं जाया ! कयत्थोसि तुमं जाया ! कयलक्खणोसि तुमं जाया ! जणं तुमे अरहओ अरिदुणेमिस्स अंतिए धम्मे निसंते से वि य ते धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ॥
६६. तए णं से गयसुकुमाले अम्मापियरो दोच्चं पि एवं वयासी—एवं खलु अम्मयाओ ! मए अरहओ अरिदुणेमिस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए । तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे अरहओ अरिदुणेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ॥

१. सं० पा०—सोच्चा जं नवरं अम्मापियरो आपुच्छामि जहा मेहो महेलियावज्जं जाव वडिडयकुले ।

कालगएहि परिणमए नहिग-कुलवंसंतु-कज्जमि निरावयवमे अरहओ
अरिदुनेमिस्स अंतिए मुंडे भविता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।"
एवं मल अम्मयाओ ! माणस्साए भवे यवूने अणितिए अगाए वसणसाओव-
हवाभिभूते विज्जुलयाभंनवे अणिके जलवुच्चुगसमाणे कुसग्गजवविदुसन्तिमे
संभवेभरागसरिगे सुविणदंसणोवमे सडण-पडण-विद्धंसण-धम्मे पच्छा पुरं च णं
अवरराविण्णजहणिज्जे । से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के पुंवि गमणाए के
पच्छा गमणाए ? तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुव्वेहि अबभणुण्णाए समाणे
अरहओ अरिदुनेमिस्स अंतिए मुंडे भविता णं अगाराओ अणगारियं पव्व-
इत्तए ॥

७०. तए णं तं गयसुकुमालं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—इमे य ते जाया !
अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुवहु हिरण्णे य सुवण्णे य कंसे य दूसे य मणि-
मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसार-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्त-
माओ कुलवंसाओ पगामं दाउं पगामं भोत्तुं पगामं परिभाएउं । तं अणुहोही
ताव जाया ! विपुलं माणुस्सगं इड्डिसक्कारसमुदयं । तओ पच्छा अणुभूय-
कल्लाणे अरहओ अरिदुनेमिस्स अंतिए मुंडे भविता अगाराओ अणगारियं
पव्वइस्ससि ॥

७१. तए णं से गयसुकुमाले अम्मापियरं एवं वयासी—तहेव णं तं अम्मयाओ ! जं
णं तुव्वे ममं एवं वयह — इमे ते जाया ! अज्जग-पज्जग-पिउपज्जयागए सुवहु
हिरण्णे य सुवण्णे य कंसे य दूसे य मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-
संतसार-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगामं दाउं पगामं
भोत्तुं पगामं परिभाएउं । तं अणुहोही तав जाया ! विपुलं माणुस्सगं इड्डि-
सक्कारसमुदयं । तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे अरहओ अरिदुनेमिस्स अंतिए
मुंडे भविता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।"

एवं खलु अम्मयाओ ! हिरण्णे य जाव सावएज्जे य अग्गिसाहिए चोरसाहिए
रायसाहिए दाइयसाहिए मच्चुसाहिए, अग्गिसामण्णे चोरसामण्णे रायसामण्णे
दाइयसामण्णे मच्चुसामण्णे सडण-पडण-विद्धंसणधम्मे पच्छा पुरं च णं अवस्स-
विण्णजहणिज्जे । से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के पुंवि गमणाए के पच्छा
गमणाए ? तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुव्वेहि अबभणुण्णाए समाणे अरहओ
अरिदुनेमिस्स अंतिए मुंडे भविता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ॥

७२. तए णं तस्स गयसुकुमालस्स अम्मापियरो जाहे तो संचाएति गयसुकुमालं
कुमारं वहुहि विसयाणूलोमाहि आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य
विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा
ताहे विसयपडिकूलाहि संजमभउव्वेयकारियाहि पण्णवणाहि पण्णवेमाणा एवं

महदमहालयग्राओ इदमरासीओ एगमेमं इदमं गहाय बहिया रत्थापद्माओ
अंतोगिहं अणुपविसमाणं' पासइ ॥

६६. तए णं से कण्हे वासुदेवे तस्स पुरिसस्स अणुपविसमाणं हविसंघवरणं चैव
एगं इदमं गेण्हइ, गेण्हत्ता बहिया रत्थापद्माओ अंतोगिहं अणुपवेसेइ ॥

६७. तए णं कण्हेणं वासुदेवेणं एगाम् इदमाम् गहियाम् समानीण् अणेगेहिं
पुरिसाएहिं से महालय इदमस्स रासी बहिया रत्थापद्माओ अंतोघरंसि
अणुपवेसिए ॥

कण्हस्स गयसुकुमाल-दंसणाभिलासा-पदं

६८. तए णं से कण्हे वासुदेवे वारवईए नयरीए मज्झमज्झेणं निगच्छइ, निगच्छित्ता
जेणेव अरहा अरिद्विनेमी तेणेव उवागए, उवागच्छित्ता' 'अरहं अरिद्विनेमि
तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता' वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता
गयसुकुमालं अणगारं अपासमाणे अरहं अरिद्विनेमि वंदइ नमंसइ, वंदित्ता
नमंसित्ता एवं वयासी—कहि णं भंते ! से ममं सहोदरे कणीयसे भाया गय-
सुकुमाले अणगारे 'जं णं' अहं वंदामि नमंसामि ?

गयसुकुमालस्स सिद्धि-सूयणा-पदं

६९. तए णं अरहा अरिद्विनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—साहिए णं कण्हा !
गयसुकुमालेणं अणगारेणं अप्पणो अट्ठे ॥

१००. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिद्विनेमि एवं वयासी—कहण्णं भंते !
गयसूमालेणं अणगारेणं साहिए अप्पणो अट्ठे ?

१०१. तए णं अरहा अरिद्विनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु कण्हा !
गयसुकुमालेणं अणगारेणं ममं कल्लं पच्चावरणहकालसमयंसि' वंदइ नमंसइ,
वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं' 'भंते ! तुव्भेहिं अब्भणुण्णाए
समाणे महाकालंसि सुसाणंसि एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए
जाव' एगराइं महापडिमं' उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।

तए णं तं गयसुकुमालं अणगारं एगे पुरिसे पासइ, पासित्ता आसुरत्ते'
•गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए मट्ठियाए पालिं वंधइ, वधित्ता जलतीओ

१. अणुपविसमाणं (ख, ग) ।

२. अण्णेहिं (क) ।

३. सं० पा०—उवागच्छित्ता जाव वंदइ ।

४. जा णं (क, ख, ग); जेणं (ग) ।

५. कह णं (क, ख, ग) ।

६. पुव्वावरणहं (ग, घ) ।

७. सं० पा०—इच्छामि णं जाव उवसंपज्जित्ता ।

८. अं० ३।८८ ।

९. सं० पा०—आसुरत्ते जाव सिद्धे । पू०—

३।८९ ।

कण्हा ! तुमे तरस पुरिसरस माहिज्जे दिण्णे, एवमेव कण्हा ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालरस अणगाररस अणेगभव-सयसहरस-सानियं कम्म उदीरेमाणेणं बहुगम्मणिज्जरत्थं साहिज्जे दिण्णे ॥

१०५. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिदुणेमि एवं वयासी—ते णं भंते ! पुरिसे मए कण्हं जाणियध्वे ?
१०६. तए ण अरहा अरिदुणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—जे णं कण्हा ! तुमं वारवईए नयरीए अणुप्पविसमाणं पासेत्ता 'ठियण' चेव ठिइभेएणं कालं करिस्सइ, तण्णं तुमं जाणिज्जासि 'एस णं से पुरिसे' ॥
१०७. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिदुणेमि वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव आभिसेयं हत्थिरयणं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थि दुहइ, दुहत्तित्ता जेणेव वारवई नयरी जेणेव राए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

सोमिलस्स अकालमच्च-पदं

१०८. तए णं तस्स सोमिलमाहणस्स कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए^१ उट्ठियम्मि सूरं सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अयमेयारुवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु कण्हे वासुदेवे अरहं अरिदुणेमि पायवंदए निग्गए । तं नायमेयं अरहया, विण्णायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, सिद्धमेयं अरहया भविस्सइ कण्हस्स वासुदेवस्स । तं न नज्जइ णं कण्हे वासुदेवे ममं केणइ^२ कु-मारेणं मारिस्सइ त्ति कट्ठु भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए सयाओ गिहाओ पडिणिवखमइ । कण्हस्स वासुदेवस्स वारवई नयरि अणुप्पविसमाणस्स पुरओ सपक्खि सपडिदिसि^३ हव्वमागए ॥
१०९. तए णं से सोमिले माहणे कण्हं वासुदेवं सहसा पासेत्ता भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए ठियए चेव ठिइभेयं^४ कालं करेइ, घरणितलंसि सव्वगेहि^५ 'धस' त्ति सण्णिवडिए ॥
११०. तए णं से कण्हे वासुदेवे सोमिलं माहणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—एस णं भो ! देवाणुप्पिया ! से सोमिले माहणे अपत्थियपत्थिए जाव^६ सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिए, जेणं ममं सहोयरे कणीयसे भायरे गयसुकुमाले अणगारे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए त्ति कट्ठु सोमिलं माहणं पाणेहि^७ कट्ठुवेइ,

१. ठित्ते (क, घ) ।

२. द्रुहति (क) ।

३. पू०—ना० १।१।२४ ।

४. केणवि (ख, घ) ।

५. ० दिसं (क, घ) ।

६. ६० सूत्रे 'ठिइभेएणं' इति पाठोस्ति । अत्र सम्भवतः कालस्य विशेषणं कृतं स्यात् ।

७. अ० ३।८६ ।

चउत्थो वग्गो

१-१० अज्झयणाणि

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं तच्चस्स वग्गस्स अयमद्वे पण्णत्ते, चउत्थस्स वग्गस्स अंतगठदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अद्वे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१. जालि २. मयालि ३. उवयालो, ४. पुरिससेणे ५. वारिसेणे य ।
६. पज्जुण ७. संघ ८. अणिरुद्ध ९. सच्चणेमि य १०. दढणेमी ॥१॥
३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं अज्झयणस्स के अद्वे पण्णत्ते ?

जालिपभित्ति-पदं

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवई नयरी । तीसे णं वारवईए नयरीए जहा पढमे जाव' कण्हे वासुदेवे आहेवच्चं जाव' कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥
५. तत्थ णं वारवईए नगरीए वसुदेवे राया । धारिणी देवी—वण्णओ' जहा गोयमो', नवरं—जालिकुमारे । पण्णासओ दाओ । वारसंगी । सोलस वासा परियाओ । सेसं जहा गोयमस्स जाव' सेत्तुंजे सिद्धे ॥

१, २, ३. ना० १११७ ।

४. अं० ११६-१४ ।

५. अं० ११४ ।

६. ओ० सू० १५ ।

७. अं० ११७ ।

८. अं० ११७-२४ ।

पंचमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

पउमावई

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१. पउमावई य २. गोरी, ३. गंधारी ४. लवखणा ५. सुसीमा य ।
६. जंववइ ७. सच्चभामा, ८. रुप्पिणी ९. मूलसिरि १०. मूलदत्ता वि ॥१॥
३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

पउमावई-पदं

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवई नगरी । जहा पढमे जाव' कण्हे वासुदेवे आहेवच्चं जाव' कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥
५. तस्स णं कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावई नाम देवी होत्था—वण्णओ' ॥

१, २, ३. ना० १११७ ।
४. अ० ११५-१४ ।

५. अ० ११४ ।
६. ओ० सू० १५ ।

- जातिपाभक्तुमाग जाव' पव्वइसा । अरुणं अभाणे जाव' नो संपा-
अरुणो अरिदुणेमिस्स संपाणं मूढे अविद्या अगारायो सपमाणि पव्वइसा ।
नृणं कण्ठा ! अस्से ममस्से ?
इत्ता अविद्या । ते नो संपा कण्ठा ! एवं भूतं वा भवन् वा अनिस्सद वा जणं
वासुदेवा चइत्ता हिरण्णं जाव' पव्वइस्सन्ति ॥
१३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं चुच्चइ 'न एतं भूतं वा' • भवन् वा अनिस्सद वा जणं
नामुदेवा चइत्ता हिरण्णं जाव' • पव्वइस्सन्ति ?
१४. कण्ठाइ ! अरुहा अरिदुणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु कण्ठा !
सव्वे वि य णं वासुदेवा पुव्वभाणे निदाणकटा । से एतेणट्ठेणं कण्ठा ! एवं
चुच्चइ 'न एतं भूतं' • वा भवन् वा अनिस्सद वा जणं वासुदेवा चइत्ता हिरण्णं
जाव' • पव्वइस्सन्ति ॥
१५. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरुहं अरिदुणेमि एवं वयासी—महं णं भंते ! इतो
कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिस्सामि ? कहिं उववज्जिस्सामि ?
१६. तए णं अरुहा अरिदुणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु कण्ठा ! तुमं
वारखईए नयरीए सुरग्गि^१-दीवायण-कोव-निदइसाए^२ अम्मापिइ-नियग-विप्पहूणे
रामेण वलदेवेण राद्धि दाहिणवेयालि अभिमुहे जुहिट्टिल्लवामोक्खाणं पंचहं
पंडवाणं पंडुरायपुत्ताणं पासं पंडुमहुरं संपत्थिए कोसंववणकाणणे^३ नग्गोहवर-
पायवस्स अहे पुढविसिलापट्टए पीयवत्थ-पच्छाडय-सरीरे जराकुमारेणं तिवत्तेणं
कोदंड-विप्पमुक्केणं^४ उसुणा वामे पादे चिद्धे समाने कालमासे कालं किच्चा
तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उज्जलिए नरए नेरइयत्ताए उववज्जिहिंसि ॥
१७. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरुहो अरिदुणेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म
ओह्य^५ • मणसंकप्पे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए • भियाइ ॥
१८. कण्ठाइ ! अरुहा अरिदुणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणु-
प्पिया ! ओह्यमणसंकप्पे जाव" भियाइ । एवं खलु तुमं देवाणुप्पिया !
तच्चाओ पुढवीओ उज्जलियाओ नरयाओ अणंतरं उव्वट्ठित्ता इहेव जंबुदीवे
दीवे भारहे वासे आगमेसाए उस्सप्पिणीए पंडेसु जणवएसु सयदुवारे नगरे

१. अं० ५।११ ।

२. अं० ५।११ ।

३. ना० १।५।४५ ।

४. सं० पा०—भूतं वा जाव पव्वइस्सन्ति ।

५. सं० पा०—भूतं जाव पव्वइस्सन्ति ।

६. सुरदीवायण (क, ख, ग) ।

७. निदइत्ताते (ख, ग) ।

८. कोसंववणकाणणे (क, ख, ग, घ, वृषा) ।

९. मुक्केणं (क) ।

१०. सं० पा०—ओह्य जाव भियाइ ।

११. अं० ५।१७ ।

३७. तत्त्वं नं सा गोरी जहा पडमावई नहा निगमंता जाव' सिद्धा ॥
 ३८. एवं—गन्धारी, लज्जामा, मुग्धामा, जंघवई, मन्त्रमाणा, कल्पिणी । अट्ट वि पडमावईसरिसायां ॥

६, १० अज्भयणाणि

मूलसिरी-मूलदत्ता-पदं

३९. तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवईणं नयरीणं रेनयणं पट्वाणं नंदणवणे उज्जणं कण्हे वामुदेवे ॥
 ४०. तत्त्वं नं वारवईणं नयरीणं कण्हेस वामुदेवस्स पुत्ते जंघवईणं देवीणं अत्तणं संवे नामं कुमारे होत्था—अहीणपडिपुण्णवचेंदियसरीरे ॥
 ४१. तस्स नं संवस्स कुमारस्स मूलसिरी नामं भारिया होत्था—वण्णओ' ॥
 ४२. अरहा समोसडे । कण्हे निग्गणं । मूलसिरी वि निग्गया, जहा पडमावई । जं नवरं—देवाणुप्पिया ! कण्हं वामुदेवं आपुच्छामि जाव' सिद्धा ।
 ४३. एवं' मूलदत्ता वि ।

छट्ठो वग्गो

१, २ अज्भयणाणि

उक्खेव-पदं

१. जइ' • नं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पंचमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । छट्ठस्स नं भंते ! वग्गस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
 २. एवं खलु जंवू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं छट्ठस्स वग्गस्स° सोलस अज्भयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१. मकाइ २. किकमे चेव, ३. मोगगरपाणी य ४. कासवे ।
 ५. खेमए° ६. धिइहरे चेव, ७. कोलासे ८. हरिचंदणे ॥१॥

१. अं० ५।२१-३२ ।

२. अं० ५।७, २१-३२ ।

३. ओ० सू० १५ ।

४. अं० ५।२१-३२ ।

५. अं० ५।३६-४२ ।

६. सं० पा०—जइ छट्ठस्स उक्खेवओ नवरं सोलस ।

७. खेमे (ग) ।

महं एमे पुष्कारामे होत्था—किण्ठे जाव' महामेहनिउरुवभूए दस ॥
कुसुमकुसुमिण पासाईए दग्गिणिज्जे अभिरम्ये पट्टिस्सि ॥

१४. तरस णं पुष्कारामेसस अदुरमाम्भे, पञ्च णं अज्जुणसरस मालागारस्स अज्जव
पज्जय-पिडपज्जयानाए अणमकुलपुडिस-परंपरागए मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स
जक्खाययणे होत्था गोमणे दिक्खे मज्जे जहा पुण्यभदे' ॥
१५. तत्थ णं मोग्गरपाणिस्स पट्टिमा एमं महं पलसत्तरसणिक्कणं अओमयं मे ॥
गहाय चिट्ठइ ॥

अज्जुणस्स जक्खपज्जुवासणा-पदं

१६. तए णं से अज्जुणए मालागारे मालापभिदं जेव मोग्गरपाणि-जक्खभत्ते' यावि
होत्था । कल्लाकल्लि पच्छियपिडगाइ' गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ नयराओ
पडिणिकखमइ, पडिणिकखमिता जेणेव पुष्कारामे तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता पुप्फुच्चयं करेइ, करेत्ता' अग्गाइं वराइं पुष्पाइं गहाय, जेणेव
मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स महुरिहं पुप्फुच्चयं' करेइ, करेत्ता जणुपायपडिए
पणामं करेइ, तओ पच्छा रायमग्गंसि विस्ति कप्पेमाणे विहरइ ॥

गोट्टीए अणाचार-पदं

१७. तत्थ णं रायगिहे नयरे ललिया नामं गोट्टी परिवसइ—अट्ठा जाव' अपरिभूता जं
कयसुकया यावि होत्था ॥
१८. तए णं रायगिहे नगरे अण्णया कयाइ पमोदे घुट्ठे यावि होत्था ॥
१९. तए णं से अज्जुणए मालागारे कल्लं पभूयतराएहि पुप्फेहि कज्जं इति कट्ठे
पच्चूसकालसमयंसि वंधुमईए भारियाए सद्धि पच्छियपिडयाइं गेण्हइ,
गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिकखमइ, पडिणिकखमिता रायगिहं नगरं
मज्झेमज्झेणं निगच्छइ, निगच्छित्ता जेणेव पुष्कारामे तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता वंधुमईए भारियाए सद्धि पुप्फुच्चयं करेइ ॥
२०. तए णं तीसे ललियाए गोट्टीए छ गोट्टिल्ला पुरिसा जेणेव मोग्गरपाणिस्स
जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागया अभिरममाणे चिट्ठंति ॥
२१. तए णं से अज्जुणए मालागारे वंधुमईए भारियाए सद्धि पुप्फुच्चयं करेइ,

१. ओ० सू० ४ ।

२. ओ० सू० २ ।

३. जक्खस्स भत्ते (घ) ।

४. पत्तिय० (क्व) ।

५. अतोअ १२ सूत्रे 'पत्तियं भरेइ, भरेत्ता' इति
पाठो लभ्यते ।

६. पुप्फुच्चयं (क) ।

७. ना० १।५।७ ।

रायगिहे आतंक-पदं

२८. तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडगं-•निग-नउत्त-नन्वर-नउत्तमुहं-महापहवेहं
वहुजणो अणमणस्स एवमाडगं एवं भामेह एवं पणवेह एवं पणवेह-
एवं सलु देवानुप्पिया ! अज्जुणए मालागारे मोभरणाणिणा अण्णाइ
समाणे रायगिहे नगरे वहिया इत्थिसगमे छ पुरिसे घाएमाणे-घाए
विहरइ ॥
२९. तए णं से शेणिए राया इमीगे कहाए वद्धं समाणे कोटुवियपुरिसे सदावेह
सदावेत्ता एवं चयासी—एवं सलु देवानुप्पिया ! अज्जुणए मालागारे जाव
घाएमाणे-घाएमाणे विहरइ । तं मा णं मुग्गे केइ कट्टस्स वा तणस्स वा
पाणियस्स वा पुष्पकलाणं वा अट्टाए गद्धं निगच्छइ । मा णं तस्स सरीर्यस्स
वावत्ती भविस्सइ ति कट्टु दाज्जं पि तज्जं पि घोसणयं घोसेह, घोसेत्ता
खिप्पामेव ममेयं पच्चप्पिणह ॥
३०. तए णं ते कोटुवियपुरिसा जाव' पच्चप्पिणंति ॥
३१. तत्थ णं रायगिहे नगरे सुदंसणे नामं शेट्ठो पत्थिसइ—अड्ढे ॥
३२. तए णं से सुदंसणे समणोवासए यावि होत्था—अभिगयजीवाजीवे जाव
विहरइ ॥

भगवश्रो समोसरण-पदं

३३. तेणं कालेणं समएणं समणे भगवं •महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणु-
गामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नगरे गुणसिलए
चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरुवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता
संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे • विहरइ ॥
३४. तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु
वहुजणो अणमणस्स एवमाइक्खइ जाव' किमंग पुण विपुलस्स अट्टस्स
गहणयाए ?

सुदंसणस्स वंदणट्ठं गमण-पदं

३५. तए णं तस्से सुदंसणस्स वहुजणस्स अंतिए एयं सोच्चा निसम्म अयं अज्भत्थिए
चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुपज्जित्था—एवं खलु समणे भगवं महावीरे

१. सं० पा०—सिंघाडग जाव महापहपहेसु ।

२. अं० ६।२८ ।

३. अं० ६।२९ ।

४. ना० १।५।४७ ।

५. सं० पा०—भगवं जाव समोसडे विहरइ ।

६. ओ० सू० ५२ ।

वीरिवममाणं पासद, पासिता आयुग्गे कट्टे कुमिणं चंदिवित्तणं मिसिमिसमाणे
तं पलसहस्सणिप्फण्णं अघोमयं भोग्गरं उल्लालेमाणे-उल्लालेमाणे जेणेव सुदंसणे
समणोवासाए तेणेव पहारेत्थं गमणाए ॥

४१. तए णं से सुदंसणे समणोवासाए भोग्गरपाणि जवणं एज्जमाणं पासद, पासिता
अभोए अतत्थे अणुच्चियग्गे अणुभुमिणं अचत्तिणं अशंभंते वत्तंतेणं भूमि पमज्जइ,
पमज्जित्ता करयल' परिग्गहिणं दसणहं सिरगायत्तं मत्थाए अंजलि कट्टु'
एवं वयासी-नमोत्थु णं अरुहंताणं जाव सिद्धिगइनामवेज्जं ठाणं
संपत्ताणं । नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव सिद्धिगइनामवेज्जं
ठाणं संपाविउकामस्स । पुच्चि पि णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए
थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, थूलए मुसावाए [पच्चक्खाए
जावज्जीवाए ?], थूलए अदिग्गदाणे [पच्चक्खाए जावज्जीवाए ?],
सदारसंतोसे कए जावज्जीवाए, इच्छापरिमाणे कए जावज्जीवाए । तं
इदाणि पि णं तस्सेव अंतियं सच्चं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए,
मुसावायं अदत्तादाणं मेहुणं परिग्गहं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सच्चं कोहं
जाव' मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सच्चं असणं पाणं खाइमं
साइमं चउच्चिहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए । जइ णं एत्तो
उवसग्गाओ मुच्चिस्सामि तो मे कप्पइ पारेत्तए । अहण्णं एत्तो उवसग्गाओ
न मुच्चिस्सामि 'तो मे तहा' पच्चक्खाए चेव त्ति कट्टु सागारं पडिमं
पडिवज्जइ ॥

४२. तए णं से भोग्गरपाणी जक्खे तं पलसहस्सणिप्फण्णं अघोमयं भोग्गरं उल्लाले-
माणे-उल्लालेमाणे जेणेव सुदंसणे समणोवासाए तेणेव उवागए । नो चेव णं
संचाएइ सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तए ॥

उवसग्गनिवारण-पदं

४३. तए णं से भोग्गरपाणी जक्खे सुदंसणं समणोवासयं सच्चओ समंता' परिघोले-
माणे-परिघोलेमाणे जाहे नो चेव णं संचाएइ सुदंसणं समणोवासयं तेयसा
समभिपडित्तए, ताहे सुदंसणस्स समणोवासयस्स पुरओ सपक्खि सपडिदिसि
ठिच्चा सुदंसणं समणोवासयं अणिमिसाए दिट्ठीए सुचिरं निरिक्खइ, निरिक्खत्ता
अज्जुणयस्सं मालागारस्स सरीरं विप्पजहइ, विप्पजहिता तं पलसहस्सणिप्फण्णं

१. सं० पा०—करयल ।

२. ओ० सू० २१ ।

३. ओ० सू० ११० ।

४. तओ मे (क) ।

५. अघोमयं (ख) ।

६. सम्मंताओ (क, ख) ।

भते ! निमग्नं पातयन् ०, यत्तुमुद्रिषि न भते ! निमग्नं पातयन् ।
अहामुद्रं देवाण्युपिमा ! मा पतिनाय करेहि ॥

५२. तए ण मे अज्जुणए अणगारे उतर ० •पूरुषिमे दिगीभानं अवनमज्ज, अवन-
मिता ० गममेव पनमुद्रियं लोयं करेइ, करेता जाव' अणगारे जाए', •ते
वासीयंदणकणे समतिणमण-वेदुहंयणे मममुद्रुयणे इत्तोण-परलोण-अ-
डिवस्ते जीविय-मरण-निरवहणे संगारणारणामो कम्मनिग्गायणट्टाए, एवं न णं
विहरइ ॥

अज्जुणअणगारस्त तित्तिशता-पयं

५३. तए णं मे अज्जुणए अणगारे जं भेव दिवसं मुंडे' •भविता अणाराओ अणग-
रियं ० पव्वइए नं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित-
नमसित्ता इमं पयास्सुं अभिगहं ओगेण्हइ -- कणउ मे जावज्जीवाए छट्ठुछट्ठेणं
अणिविखत्तेणं तवोकम्मणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्ठु अयमेवा-
स्सुं अभिगहं, ओगेण्हइ ओगेण्हित्ता जावज्जीवाए' •छट्ठुछट्ठेणं अणिविखत्तेणं
तवोकम्मणं अप्पाणं भावेमाणे ० विहरइ ॥
५४. तए णं से अज्जुणए अणगारे छट्ठुवत्तमणवारणयंसि गडमाए पोरिसीए' सज्जायं
करेइ", •वीयाए पोरिसीए भाणं भियाइ, तइयाए पोरिसीए जहा गोयमसामी
जाव" रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खाय-
रियं ० अडइ ॥
५५. तए ण तं अज्जुणयं अणगारं रायगिहे नवरे उच्च" •नीय-मज्झिमाइं कुलाइं
घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए ० अडमाणं वहवे इत्थीओ य पुरिसा य डहरा
य महल्ला य जुवाणा य एवं वयासी—इमेण मे पिता मारिए । इमेण मे माता
मारिया । इमेण मे भाया भगिणी भज्जा पुत्ते धूया सुण्हा मारिया । इमेण मे
अणयरे सयण-संवधि-परियणे मारिए त्ति कट्ठु अप्पेगइया अक्कोसंति, अप्पे-
गइआ हीलंति निदंति खिसंति गरिहंति तज्जंति तालेंति ॥

१. सं० पा०—उत्तर ० ।

२. ना० १।५।३४, ३५ ।

३. सं० पा०—अणगारे जाए जाव विहरइ ।

पू०—ना० १।५।३५, ३६ ।

४. सं० पा०—मुंडे जाव पव्वइए ।

५. ओगहं (क, ख, ग) ।

६. × (क, ख, ग) ।

७. ओगहं (क, ख, ग) ।

८. 'अभिगहं ओगेण्हइ' इति द्विरुक्तः पाठोस्ति ।

९. सं० पा०—जावज्जीवाए जाव विहरइ ।

१०. × (घ) ।

११. सं० पा०—करेइ जहा गोयमसामी जाव
अडइ ।

१२. भ० २।१०७ १०८ ।

१३. सं० पा०—उच्च जाव अडमाणं ।

संप्रियुदे साधो मित्राओ पारिणितामस, पारिणितामिया जेणेव उरुद्वारे तेणेव उवागए । तेहि वृद्धि दासएहि म संप्रियुदे अभिरममाणे-अभिरममाणे विहरइ ॥

७८. तए णं भगवं गोयमे पोलासपुर्स्स भगवे उच्च'-भगव-मज्झिमाई गुलाई घरसमु-
दाणस्य भित्तानिभित्तान् ० अडमाणे उरुद्वारेस्य अडुसामणेणं श्रीउचयइ ॥

७९. तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं अडुसामणेणं श्रीउचयमाणं पासइ,
पासित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागए, भगवं गोयमं एवं वयासी—कं णं
भंते ! तुव्भे ? किं वा अउइ ?

८०. तए णं भगवं गोयमे अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया !
समणा निमग्धा हरियासमिया जाव' गुलावन्नयासी उच्च'-नीव-मज्झिमाई
गुलाई घरसमुदाणस्य भित्तानिभित्तान् ० अडामो ॥

८१. तए णं अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी—एइ णं भंते ! तुव्भे जा णं
अहं तुव्भं भित्तं दयावेमी त्ति कट्टु भगवं गोयमं अंगुलीए मेण्हइ, मेण्हित्ता
जेणेव साए गिहे तेणेव उवागए ॥

८२. तए णं सा सिरिदेवी भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्टुट्टा आसणाओ
अवभुट्ठेइ, अवभुट्ठेत्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागया । भगवं गोयमं
तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता
विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेइ, पडिलाभेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

८३. तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी—कहि णं भंते ! तुव्भे
परिवसह ?

८४. तए णं से भगवं गोयमे अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया !
मम धम्मायरिए धम्मोवएसए' समणे भगवं महावीरे आइगरे जाव' सिद्धिगइ-
नामधेज्जं ठाणं संपाविउकामे इहेव पोलासपुर्स्स नगरस्स वहिया सिरिवणे
उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिणिहत्ता संजमेणं ० तवसा अप्पाणं ० भावेमाणे
विहरइ । तत्थ णं अम्हे परिवसामो ॥

अइमुत्तकुमारस्स पव्वज्जा-पदं

८५. तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी—गच्छामि णं भंते ! अहं
तुव्भेहिं सद्धि समणं भगवं महावीरं पायवंदए ।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि ॥

१. सं० पा०—उच्च जाव अडमाणे ।

२. ना० ११११६४ ।

३. सं० पा०—उच्च जाव अडामो ।

४. जेणेवहं (ख, घ) ।

५. धम्मोवएसए धम्मनेयरी (क); ० धम्मे
नेतारी (ख, घ) ।

६. ओ० सू० १६ ।

७. सं० पा०—संजमेणं जाव भावेमाणे ।

जाणामि णं अम्मयासो ! जहा माहिं कम्मयायणेहि जीवा नेरइय-^० निरिव
जोणिय-भण्णया-इयेमु^० उववज्जति ।

एवं सलु अहं अम्मयासो ! जं चेव जाणामि नं चेव न जाणामि, जं चेव
जाणामि तं चेव जाणामि । नं इच्छामि णं अम्मयासो ! सुब्भेहि अन्नपुण्या
जाव' पव्वइत्ताण ॥

६५. तए णं तं अइमुत्तं कुमारं अम्मयायियो जाहे नो संचारंति बहूहि आववणाह
•य पणवणाहिं य सणवणाहिं य विणवणाहिं य आववित्तण वा पणवित्तण
वा सणवित्तण वा विणवित्तण वा ताहे अकामकाइं चेव अइमुत्तं कुमारं ए-
वयासो^० — तं उच्छागो ते जाया ! एगदिवसमवि रायसिंरि पासत्ताण ॥

६६. तए णं से अइमुत्ते कुमारे अम्मयापिययणमणुयत्तमाणे तुसिणीए संविट्ठे !
अभिसेओ जहा महव्वलस्स^० निवत्तमणं जाव' सामाइयमाइयाइं एवकास
अंगाइं अहिज्जइ । बहूइं वासाइं सामणपरियागं पाउणइ, गुणरयणं तवोकम्मं
जाव' विपुले सिद्धे ॥

सोलसमं अउभयणं

अलक्के

अलक्क-पदं

६७. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नयरी, काममहावणे चेइए ॥

६८. तत्थ णं वाणारसीए अलक्के नामं राया होत्था ॥

६९. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव' विहरइ । परिसा
निग्गया ॥

१००. तए णं अलक्के राया इमीसे कहाए लद्धे हट्ठुट्ठे जहा कोणिए जाव' पज्जुवा-
सइ । धम्मकहा ॥

१. हं (ख) ।

२. सं० पा०—नेरइय जाव उववज्जति ।

३. अं० ६।६० ।

४. सं० पा०—आववणाहिं^० ।

५. महावलस्स (क, घ) । भ० ११।१६८ ।

६. भ० ११।१६८, १६९ ।

७. × (क, ख, ग) ।

८. अं० १।२३, २४ ।

९. अं० ६।३३ ।

१०. ओ० सू० ५४-६६ ।

सत्तमो वग्गो

१-१३ अज्झयणाणि

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! •समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदः
छट्ठस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स वग्गस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदः
सत्तमस्स वग्गस्स ° तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१. नदा तह २. नंदवई, ३. नंदुत्तर ४. नंदिसेणिया चेव
५. मरुता ६. सुमरुता ७. महमरुता ८. मरुदेवा य अट्टमा ॥१॥
९. भद्दा य १०. सुभद्दा य, ११. सुजाया १२. सुमणाइया
१३. भूयदिण्णा य वोवव्वा, सेणियभज्जाण नामाई ॥२॥
३. जइ णं भंते ! •समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदः
सत्तमस्स वग्गस्स ° तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झय ।
अंतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

नंदादि-पदं

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइ
सेणिए राया—वण्णओ^१ ॥
५. तस्स णं सेणियस्स रण्णो नंदा नाम देवी होत्था—वण्णओ^१ । सामी । तेस
परिसा निग्गया ॥
६. तए णं सा नंदा देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा हट्ठुट्ठा कोडुवियपुरिसे सद्दा
सद्दावेत्ता जाणं दुरुहइ, जहा पउमावई जाव^२ एक्कारस अंगाई अट्ठिज्ज
वीसं वासाई परियाओ जाव^३ सिद्धा ॥
७. एवं तेरम वि देवीओ नंदागमेण^४ तेयव्वाओ ॥

-
- | | |
|--|------------------|
| १. सं० पा० जइ णं भंते ! सत्तमस्स वग्गस्स
उक्खेवओ जाव तेरस । | ५. ओ० सू० १५ । |
| २. नंदमती (क); नंदसती (ख) । | ६. अं० ५।२१-३१ । |
| ३. सं० पा०—जइ णं भंते ! तेरस । | ७. अं० ५।३२ । |
| ४. ओ० सू० १४ । | ८. अं० ७।३-६ । |

सत्तमो वग्गो

१-१३ अज्झयणाणि

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! •समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं छट्ठस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स वग्गस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंतू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं सत्तमस्स वग्गस्स ° तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१. नंदा तह २. नंदवई, ३. नंदुत्तर ४. नंदिसेणिया चेव
५. मरुता ६. सुमरुता ७. महमरुता ८. मरुदेवा य अट्टमा ॥१॥
९. भदा य १०. सुभदा य, ११. सुजाया १२. सुमणाइया
१३. भूयदिण्णा य वोवच्चा, सेणियभज्जाण नामाई ॥२॥
३. जइ णं भंते ! •समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं सत्तमस्स वग्गस्स ° तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

नंदादि-पदं

४. एवं खलु जंतू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया—वण्णओ° ॥
५. तस्स णं सेणियस्स रण्णो नंदा नाम देवी होत्था—वण्णओ° । सामी समोसढे । परिसा निग्गया ॥
६. तए णं सा नंदा देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा हट्ठुट्ठा कोडुंवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता जाणं दुरुहइ, जहा पउमावई जाव° एक्कारस्स अंगाई अहिज्जित्ता वीसं वासाई परियाओ जाव° सिद्धा ॥
७. एवं तेरम वि देवीओ नंदागमेण° नेयव्वाओ ॥

-
- | | |
|---|------------------|
| १. सं० पा० जइ णं भंते ! सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव तेरस । | ५. ओ० सू० १५ । |
| २. नंदमती (क); नंदसती (ख) । | ६. अं० ५।२१-३१ । |
| ३. सं० पा०—जइ णं भंते ! तेरस । | ७. अं० ५।३२ । |
| ४. ओ० सू० १४ । | ८. अं० ७।३-६ । |

काली नाभं देवी होत्या—वण्णओ'। जहा नंदा जाव' सामाइयमाइयाइं
एवकारस अंगाइं अहिज्जइ। वहीहिं चउत्थ'-•छट्टुम-दगम-दुवालसेहिं
मासद्धमासखमणेहिं विविहेहिं तवोकम्मेहिं० अण्पाणं भावेमाणी' विहरइ ॥

७. तए णं सा काली अज्जा अण्णया कयाइ जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवा-
गया, उवागच्छित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ ! तुव्भेहिं अब्भणुण्णया
समाणी रयणावलिं तवं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्ताए ।

अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिवंधं करेहि ॥

८. तए णं सा काली अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुण्णया समाणी रयणावलिं तवं
उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, तं जहा—

चउत्थं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्टु	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्टमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ट छट्ठाइं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउत्थं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्टुं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्टमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दसमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दुवालसमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चौदसमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठारसमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
वीसइमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
वावीसइमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउवीसइमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छव्वीसइमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठावीसइमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
तीसइमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
वत्तीसइमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोत्तीसइमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोत्तीसं छट्ठाइं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।

१. ओ० सू० १५ ।

२. अं० ७।५, ६ ।

३. सं० पा०—चउत्थ जाव अण्पाण

४. भावेमाणा (ग) ।

५. अट्ठारसं (क) ।

१०. तयाणंतरं च णं तच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेइ, करेत्ता अलेवाडं पारेइ ।
सेसं तहेव । नवरं अलेवाडं पारेइ ॥

११. एवं चउत्था परिवाडी । नवरं सव्वपारणए आर्यविलं पारेइ । सेसं तं चेव ॥

संगहणी-गाहा

‘पढमंमि सव्वकामं, पारणयं’ विडयए विगइवज्जं ।

तइयंमि अलेवाडं, आर्यविलमो चउत्थम्मि ॥१॥

१२. तए णं सा काली अज्जा रयणावली-तवोकम्मं पंचहि संवच्छरेहि दोहि य
मासेहि अट्ठावीसाए य दिवसेहि अहासुत्तं जाव’ आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा
अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदइ नमंसइ,
वंदित्ता नमसित्ता वहुहि चउत्थ जाव’ अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ॥

१३. तए णं सा काली अज्जा तेणं ओरालेणं *विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं
कल्लाणेणं सिवेणं धण्णेणं मंगल्लेणं सस्सिरोएण उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं
उदारेणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठिचम्मावणद्धा
किडिकिडियाभूया किंसा० धम्मणिसंतया जाया यावि होत्था ‘जीवंजीवेण
गच्छइ जाव’ सुहुयहुयासणे’ इव भासरासिपलिच्छण्णा तवेणं, तेएणं, तवतेय-
सिरीए अईव-अईव उवसोहेमाणी-उवसोहेमाणी चिट्ठइ ॥

१४. तए ण तीसे कालीए अज्जाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले अयमज्भत्थिए
चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था, जहा खंदयस्स चित्ता जाव’
अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे तावता मे सेयं कल्लं
पाउप्पभायाए रयणीए जाव’ उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा
जलते अज्जचंदणं अज्जं आपुच्छित्ता अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भणुण्णायाए
समाणीए संलेहणा-भूसणा-भूसियाए भत्तपाण-पडियाइविक्खयाए कालं अणव-
कंखमाणीए विहरित्तए त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं जेणेव अज्जचंदणा
अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता
नमसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जो ! तुव्भेहि अब्भणुण्णाया समाणी
संलेहणा’-भूसणा-भूसियाए भत्तपाण-पडियाइविक्खयाए कालं अणवकंख-
माणीए० विहरित्तए ।

अहासुहं ॥

१. पढमंसि सव्वकामपारणयंसि (क); पढमंसि
सव्वगुणिए पारणकं (वृषा) ।

२. अ० ८।८।

३. अ० ८।६ ।

४. सं० पा०—उरालेणं जाव धम्मणिसंतया ।

५. अ० २।६४ ।

६. से जहा इंगाल जाव सुहुयहुयासणे (क, ख,
ग, घ,) ।

७. अ० २।६६ ।

८. ना० १।१।२४ ।

९. सं० पा०—संलेहणा जाव विहरित्तए ।

दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोइसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोइसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्ठं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।

एवकाए कालो अट्ठ मासा पंच य दिवसा । चउण्हं दो वासा अट्ठ मासा वीस य दिवसा । सेसं तहेव जाव' सिद्धा ॥

अट्ठमं अज्झयणं

रामकण्हा

रामकण्हाए भद्दोत्तरपडिमा-पदं

३०. एवं^१—रामकण्हा वि, नवरं—भद्दोत्तरपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, तं जहा—

दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोइसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठारसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
वीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठारसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
वीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोइसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।

[illegible]

३५. तए णं तीसे महासेणकण्हा अज्जा अज्जया कयाड पुञ्जरत्तावरत्ताका
चिता जहा खंदगरस जाव' अज्जचंदणं अज्जं आगुच्छइ' ॥
३६. 'तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा अज्जचंदणा अज्जा अज्जभणुण्णाय
समाणी संलेहणा-भूसणा-भूसिया भत्तपाण-पडियाद्विखा० कालं अणवकंस
माणी विहरइ ॥
३७. तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा अज्जचंदणा अज्जा अंतिणं सामादयमाव्य
एवकारस अंगाइ अहिज्जित्ता, बहुपडिपुण्णाइ सत्तरस वासाइ परिया
पालइत्ता, मासियाणं संलेहणा अणाणं' भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणा
छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नगभावे जाव' तमट्ठं आराहेइ, आराहेत्ता चरिम
उस्सासनिस्सामेहि' सिद्धा ॥

संगहणी-गाहा

अट्ट य वासा आई, एवकोत्तरयाए जाव सत्तरस ।

एसो खलु परियाओ, सेणियभज्जाण नायव्वो ॥१॥

निक्खेव-पदं

३८. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अट्टमस्स अंगस्स
अंतगडदसाणं अयमट्ठे पणत्ते ॥

परिसेसो

अंतगडदसाणं अंगस्स एगो सुयखंधो । अट्ट वग्गा । अट्टसु चेव दिवसेसु'
उद्दिस्सति' । तत्थ पढमविइयवग्गे दस-दस उद्देसगा । तइयवग्गे तेरस उद्देसगा ।
चउत्थपंचमवग्गे दस-दस उद्देसगा । छट्ठवग्गे सोलस उद्देसगा । सत्तमवग्गे
तेरस उद्देसगा । अट्टमवग्गे दस उद्देसगा । सेसं जहा नायाधम्मकहाणं ॥

ग्रन्थ परिमाण

कुल अक्षर—४००५१

अनुष्टुप् श्लोक—१२५१ अ० १६

१. अ० २।६६ ।

२. पू०—अ० ८।१४ ।

३. सं० पा०—जाव संलेहणा कालं ।

४. अत्ताणं (क) ।

५. ओ० सू० १५४ ।

६. चरिमउस्सासेहि (ख, ग) ।

७. ना० १।१।७ ।

८. उद्दिस्सिज्जति (व) ।

संगहणी-गाहा

१. जालि २. मयालि ३. उवयाली, ४. पुरिसमेणे य ५. वारिसेणे ।
 ६. दीहदंते य ७. लट्टदंते य, ८. विहल्ले ९. वेह्मागमे १०. अभाण उय कुमारे ॥
 ५. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं पढमस्स' व' ।
 दस अज्झयणा पणत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अणुत्तरोपपद्यस्य
 समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्टे पणत्ते ?

जालि-पदं

६. एवं खलु जंयू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे—रिद्धिदियमियसमिद्धे
 गुणसिलए चेइए । सेणिए राया । धारिणी देवी । सीहो गुमिणे । जा-
 कुमारे । जहा मेहो । अट्टट्टो दाओ' ॥
 ७. •तए णं से जालाकुमारे उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहि मुट्टगमत्थणहि ॥
 माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे ° विहरइ ॥
 ८. सामी' समोसडे । सेणियो निग्गओ । जहा मेहो तहा जालो वि निग्गओ । तहे
 निक्खंतो जहा मेहो" । एक्कारस अंगाई अहिज्जइ । गुणरयणं तवोकम्मं 'ज-
 खंदयस्स'" । एवं जा चेव खंदगस्स" वत्तव्वया, सा चेव चित्तणा, आपुच्छणा
 थेरेहिं सिद्धि विजलं पव्वयं तहेव दुख्हइ, नवरं—सोलस वासाइं सामण्णा रिया
 पाउणित्ता", कालमासे कालं किच्चा उड्डं चंदिम-सूर-गहगण-नक्खत्त-त रा
 रूवाण" सोहम्मीसाण"-•सणकुमार-माहिद-वभ-लंतण-महासुवक-सह ॥ १२ ॥ य
 पाणय °-आरणच्चुए कप्पे नवयगेवेज्जविमाणपत्थडे उड्डं दूरं वीईवइत्त
 विजयविमाणे देवत्ताए उववण्णे ॥
 ९. तए णं ते थेरा भगवतो जालि अणगारं कालगयं जाणित्ता य राणव्वा । वरि-
 काउस्सगं करेति, करेत्ता पत्त-चीवराइं गेण्हति । तहेव उत्तरंति" जाव" इमे से
 आयारभइए ॥

१. उवयालि (क, ख); ओवयाली (ग) ।

२. विहल्ले विहायसे (ग, घ,) ।

३. अ० ३।७५ ।

४. अणुत्तरोपपद्यस्य पढमस्स (ख, ग, घ) ।

५. रिद्धि ° (ख, ग, घ,) ।

६. पू०—न० १।१।६१-६२ ।

७. सं० पा०—जाव उप्पि पासा विहरइ ।

८. ना० १।१।६३ ।

९. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं

महावीरे जाव (घ) ।

१०. ना० १।१।६६-१५१ ।

११. × (क) । भ० २।६१-६३ ।

१२. खंदय (क, ख, घ,) । भ० २।६४-६६ ।

१३. पाउणिय (ख) ।

१४. पू०—ना० १।१।२११ ।

१५. सं० पा०—सोहम्मीसाण जाव आरणच्चुए ।

१६. ओत्तरंति (ख) ।

१७. भ० २।७० ।

सर्ववृत्तिनिन्दे । 'दीहृते सर्ववृत्तिनिन्दे' उपक्रमेण मेमा । अभयो विजय । मे
पढमे ॥

नियतेव-पदं

१६. एवं खलु जन्तू ! समणेण भगवता महावीरेण जाव' मयसेण अणुसारोव
दसाणं पढमसं वग्गसं अयमट्ठे पण्णसं ॥

१. × (क) ।

२. पढमे । अभयस्स नाणत्त, रायगिहे नयरे
सेणिए राया, नंदा देवी, सेसं तहेव [क, ख,
ग] । असो पाठो वाचनान्तरस्य प्रतीयते ।

अस्मिन् नानात्वस्य संकेतोऽस्ति,
यन्नानात्वं प्रदर्शितं तत् सर्वं पूर्वमायातमेव
३. अ० ३।७५ ।

कलाश्रो, नवरं--दीहृमेषां कुमारो सौम्य यन्त्रायाम् जहा आर्जुनस्य जाय
काहिह ॥

५. एवं तेरस वि राममिह नमरे । सेनिषो निषा । धर्मिणो माया । तेरस
सौलस वासा परिषयायो । साणपुर्वाण विजण दोणि, मेजमले दोणि,
दोणि, अपराजिण दोणि, मेसा महादुमयेणमादी पव सव्वदुमिसे ॥

नियलेव-पदं

६. एवं खलु जंजू ! रामणंणं भगवता महानीरेणं जाय' संगमोणं सव्वनरोयवा
दसाणं दोच्चस वग्गस अयमट्टे पण्णनो ।
मासियाण संलेहणाण दोमु वि वग्गेनु ॥

रिद्धत्विमियसमिद्धा' । सङ्गमं वचने उज्ज्वलं सङ्गमोऽयं-पुण्य-पदा-समिद्धे' ।
जियसत्तु राया ॥

५. तत्थ णं काकंसीए नयसीए भद्दा नामं सत्थवाही पत्थिसड्— सद्दा जाव' जण भूया ॥
६. तीसे णं भद्दाए सत्थवाहीए पुत्तं धण्णं नाम दारए हांथा—अतोणवडिपु पच्चंदियसरीरे जाव' मुह्वे । पचयार्थपरिग्गहाए जहा महुव्वलो जाव' वा च कलाओ अहीए जाव' अलभोगसमंथं जाए यावि होत्था ॥
७. तए णं सा भद्दा सत्थवाही धण्णं दारयं उम्मुक्कवावभावं जाव' अलभोगसम वा वि जाणित्ता वत्तीसं पासायवरगए कारेइ—अलभोगयसूसाए जाव' पडिस्से तेसि मज्जे एगं च णं महं अवणं कारेइ—अणेगं भसगसण्णिवट्ठं ज पडिस्सवं ॥
८. तए णं सा भद्दा सत्थवाही तं धण्णं दारयं वत्तीसाए इडभवक्कण्णमाणं ए पदिव सेणं पाणि गेण्हावेइ । वत्तीसओ दाओ" ॥
९. तए णं से धण्णे दारए उप्पि पासायवरगए पुट्टमाणंहि मुट्ठगमत्थएहि जाव' विजले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥

धण्णस्स पव्वज्जा-पदं

१०. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसहे । परिस्सा निग्गया । राया जहा कोणिओ 'तहा निग्गओ'" ॥
११. तए णं तस्स धण्णस्स दारगस्स तं महया"•जणसहं वा जाव'" जणसन्निवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारुवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणो-

१. पू०—ओ० सू० १ ।
२. पू०—ना० १।५।४ ।
३. ना० १।५।७ ।
४. ओ० सू० १४३ ।
५. भ० ११।१५४-१५६; राय० सू० ८०४-८०७ ।
६. राय० सू० ८०८, ८०९; ओ० सू० १४७,-१४८ ।
७. राय० सू० ८१० ।
८. ना० १।१।८६ ।
९. ना० १।१।८६ ।
१०. पू०—ना० १।१।६०-६२ ।
११. ना० १।१।६३ ।

१२. × (क) । ओ० सू० ५४-६६ ।
१३. सं० पा०—जहा जमाली तहा निग्गओ । नवरं पायचारणं । जाव जं नवरं अम्मयं भद्दं सत्थवाहि आपुच्छामि । तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अत्तिए पव्वयामि जाव जहा जमाली तहा आपुच्छइ । मुच्छिया । वुत्तपडिवुत्तया जहा महव्वले जाव जाहे नो संचाएइ जहा थावच्चापुत्तस्स जियसत्तु आपुच्छइ । छत्तचामराओ । सयमेव जियसत्तु निदखमणं करेति जहा थावच्चापुत्तस्स कण्हो जाव पव्वइए । अणगारे जाए—इरियासमिए जाव गुत्तवंभचारी ।
१४. ओ० सू० ५२ ।

आपुच्छइ—इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! भणमम दारमम निजमममायमम
मउड-नामरायो य विदिन्नायो ॥

१६. तए णं जियसत् राया भदे मत्ववाहि एव भयसो—अच्छामि ण मुमं दे
प्पिया ! मुनिव्वुन-वीसत्वा, अहण्णं मयमेव भणमस दारमस निज
सवकारं करिस्सामि । सयमेव जियसत् निजममम करेइ, जहा थावव्वानु
कण्हो' ॥
२०. तए णं से धण्णे दारए सयमेव पंचमुद्रियं लोयं करेइ जाव' पव्वइए ॥
२१. तए णं से धण्णे दारए अणगारे जाए—उरियासमिणं भासासमिणं पुनण
आयाण-भंड-मत्त-णिकवेवणासमिणं उच्चार-पासवण-सेव-सिवाण-
पारिट्ठावणियासमिणं मणसमिणं वट्ठमिणं कायसमिणं मणमुत्तं वट्ठमुत्तं का
मुत्ते गुत्तिदिए^० गुत्तवंभयारी ॥

धणस्स तवचरिया-पदं

२२. तए णं से धण्णे अणगारे जं चेव दिवसं मुंडे भवित्ता अगारायो अणगां
पव्वइए, तं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदइ नमसइ, वंदित्ता नमसि
एव वयासो—इच्छामि' णं भंते ! तुब्भेहि अट्ठमणुणाए समाणे । वज्जीव
छट्ठंछट्ठेणं अणिविखत्तेणं आयंवलपरिग्गहिणं तवोक्कमेणं अप्पाणं भावेमा
विहरित्तए छट्ठस्स वि य णं पारणयंसि कप्पइ मे' आयंवलं पडिगाहेत्तए',
चेव णं अणायवलं । तं पि य संसट्ठं, नो चेव णं असंसट्ठं । तं पि य ण उज्ज
धम्मियं, नो चेव णं अणुज्झिय-धम्मियं । तं पि य जं अण्णे वव्वे समण । इ'
अतिहि-किवण-वणीमगा नावकंसंति ।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंघं करेहि ॥
२३. तए णं से धण्णे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमणुणाए : ना
हट्ठतुट्ठे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिविखत्तेणं आयंवलपरिग्गहिणं' तव
क्कमेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
२४. तए णं से धण्णे अणगारे पढम-छट्ठखमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए सज्झा
करेइ, जहा गोयमसामी तहेव आपुच्छइ, जाव' जेणेव काकंदी नयरी तेणे
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता काकंदीए नयरीए उच्च'-नीय-मज्झिमाइं कुला-

१. ना० १।५।२२-३३ ।

२. ना० १।५।३४ ।

३. एवं खलु इच्छामि (ख, ग) ।

४. भावेमाणस्स (ख, ग) ।

५. × (क, ख) ।

६. पडिगहित्तए (क) ।

७. × (क, ख, ग) ।

८. भ० २।१०७-१०६ ।

९. सं० पा०—उच्च जाव अडमाणे ।

मे जहानामए चित्तकट्टरे' इ वा मीयणवसे' इ वा साविमंयवसे' इ वा, एव
 •धणस्स अणगारस्स उर-कट्ठाए मुक्का मुक्का निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छि-
 पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए° ॥

४१. धणस्स णं अणगारस्स वाह्माणं अयमेयारुवे तव-रुव-लावण्णे होत्या
 जहानामए समिसंगलिया इ वा वाह्मायासंगलिया' इ वा 'अगलियसंग
 इ वा, 'एवामेव' •धणस्स अणगारस्स वाह्मायो मुक्कायो मुक्कायो निम्मं-
 अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए° ॥

४२. धणस्स णं अणगारस्स हत्थाणं अयमेयारुवे तव-रुव-लावण्णे होत्या
 जहानामए मुक्कळगणिया' इ वा वट्ठपत्ते इ वा पलासपत्ते इ वा, एव
 •धणस्स अणगारस्स हत्था मुक्का मुक्का निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छि-
 पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए° ॥

४३. धणस्स णं अणगारस्स हत्थंगुलियाणं अयमेयारुवे तव-रुव-लावण्णे होत्या
 से जहानामए कलसंगलिया इ वा मुग्गसंगलिया इ वा माससंगलिय
 वा तरुणिया छिण्णा आयवे दिण्णा मुक्का समाणी 'मिलायमाणी चिट्ठं
 एवामेव' •धणस्स अणगारस्स हत्थंगुलियायो मुक्कायो मुक्कायो निम्मं-
 अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए° ॥

४४. धणस्स णं अणगारस्स गीवाए अयमेयारुवे तव-रुव-लावण्णे होत्या
 जहानामए करगगीवा इ वा कुंडियागीवा इ वा उच्चत्थवणए" इ वा, एवां
 •धणस्स अणगारस्स गीवा मुक्का मुक्का निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छि-
 पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए° ॥

४५. धणस्स णं अणगारस्स हणुयाए अयमेयारुवे तव-रुव-लावण्णे होत्या-
 जहानामए लाउफले इ वा हकुवफले" इ वा अंवगट्ठिया" इ वा •आयवे दि
 मुक्का समाणी मिलायमाणी चिट्ठइ, एवामेव धणस्स अणगारस्स हा

१. चित्तपट्टरे (क); चित्तयकट्टरे (ख); ८. सं० पा०—एवामेव° ।

चित्तयकट्टरे (ग) ।

९. × (क, ख, ग); मिलायंति (घ) ।

२. वीइण° (ग); वीयणय° (घ) वियण°
 (वृ) ।

१०. सं० पा०—एवामेव° ।

३. सं० पा०—एवामेव° ।

११. उच्चट्ठवणए (क); काछवणए (ख) ।

४. × (ख); पहाया° (ग) ।

१२. सं० पा०—एवामेव° ।

५. × (क) ।

१३. हेकुव० हंकुव० हेकुच० हकुन० (क्व) ।

६. सं० पा०—एवामेव° ।

१४. अंवगट्ठिया (क, घ) ।

७. मुक्कळगणिया(क); मुक्कळगणिया(ख,ग) ।

१५. सं० पा०—अंवगट्ठिया इ वा° एवामेव

• छिण्णे अणवे दिण्णे सुक्के समाने मिलायमाणे° चिट्ठइ, एवामेव न
अणगारे सौसं सुक्के° सुक्के° निम्मं गं अट्ठि-नम्म-छिरत्ताए, पण्णायड
नेव णं मंस-सोणियत्ताए' ॥

५२. घण्णे णं अणगारे° सुक्केणं भुक्केणं पागजंधोक्का, निगय-नडि-करावेणं न
कडाहेणं, पिट्ठिमस्सिएणं° उदरभायणेणं, जोड्जजमाणेहि° पासुलि°-कडा
'अवखसुत्तमाला तिव°' गणेज्जमाणेहि° पिट्ठिकरंडगसंधीहि°, गंग उरंय°
उरकडगदेसभाएणं, सुक्कसप्पसमाणाहि° वाहाहि°, सिद्धिलकडाली° 'विचलंतेहि°
य अगहत्थेहि°, कंणवाड्यो चिव वेवमाणीए सीमवडीए पम्माणवयणका
उव्वभडघडमुहे उच्छुद्धणयणकोसे° जीवंजीवेणं गच्छइ, जीवंजीवेणं चिट्ठइ,
भासित्ता गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ, भासं भासिस्सामि त्ति गिलाइ
जहानामए इंगालसगडिया इ वा° • कट्टसगडिया इ वा पत्तसगडिया इ
तिलंडासगडिया इ वा एरंडसगडिया इ वा उण्हे दिण्णा सुक्का समानो
गच्छइ, ससहं चिट्ठइ, एवामेव घण्णे अणगारे ससहं गच्छइ, ससहं
उवचिए तवेणं, अवचिए मंससोणिएणं°, हुयासणे इव मंस° ति ति-
तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥

सेणियस्स महाडुक्करकारय-पुच्छा-पदं

५३. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए । सेणिए राया ॥
५४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसडे । परिस्सा नग्गए
सेणिए निग्गए । धम्मकहा । परिस्सा पडिगया ॥
५५. तए णं से सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं से
निसम्मं समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी

१. × (ख, ग) ।

२. 'मंस-सोणियत्ताए' अतोत्रे सर्वासु प्रतिसु
'एवं सव्वत्थ । नवरं, उदरभायणं कण्णा
जीहा उट्ठा एएसि अट्ठी न भणइ, चम्म-
छिरत्ताए पण्णायइ त्ति भणइ इति पाठोस्ति ।
परं अस्माभिस्तु सर्वत्र पूर्णः पाठः लिखितः,
अतोनावश्यकत्वेनासौ पाठान्तररूपेण
स्वीकृतः ।

३. अणगारे णं (क, ख, ग, घ) ।

४. पट्ठी ° (क); पिट्ठमवस्सिएणं (वृ) ।

५. पासुलि (ग, घ) ।

६. अवखमाला तिव (क); मालाविव (ग)
° माला तिव (घ) ।

७. × (क) ।

८. सद्धिल ° (क, ख, ग) ।

९. विचलंतेहि (क); विवचलंतेहि (ख) ।

१०. पव्वात ° (क, ग); पम्माय ° (ख) ।

११. उच्छुद्धु ° (वव) ।

१२. सं° पा०—जहा खंधओ तहा
हुयासणे; स्कन्दकप्रकरणे (भ० २।६४) प्र
'इंगालसगडिया' इति पाठो नास्ति । तेन
पूर्तिः नायाधम्मकहाओ सूत्रात् कृता ।

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिवकुत्तो आयाहिण-
पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउवभूए,
तारेव दिसं पडिगए ॥

धण्णस्स सव्वट्ठसिद्ध-गमण-पदं

५६. तए णं तस्स धण्णस्स अणगारस्स अणया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजाग-
रियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे
समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं^१ तवोकम्मेणं^२ धमणिसंतए जाए ।
जहा खंदओ^३ तहेव चित्ता । आपुच्छणं । थेरेहिं सद्धिं विउलं पव्वयं दुरुहइ ।
मासिया सलेहणा । नव मासा परियाओ जाव^४ कालमासे कालं किच्चा उड्ढं
चंदिमं^५—सूर-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं जाव^६ नवयगेवेज्जविमाणपत्थडे
उड्ढं दूरं वीईवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे । थेरा तहेव ओयरंति
जाव^७ इमे से आयारभंडए ॥
६०. भंतेति ! भगवं गोयमे तहेव आपुच्छति, जहा खंदयस्स भगवं वागरेइ जाव^८
सव्वट्ठसिद्धे विमाणे उववण्णे ॥
६१. धण्णस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पणत्ता ?
गोयमा ! तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पणत्ता ॥
६२. से णं भंते ! ताओ देवलोगाओ कहिं गच्छहिइ ? कहिं उववज्जहिइ ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ वुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ
सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

६३. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव^९ संपत्तेणं पढमस्स अज्झय-
णस्स अयमट्ठे पणत्ते ॥

१, २. पू०—अ० ३।३० ।

३. भ० २।६६-६६ ।

४. अ० १।५ ।

५. सं० पा०—चंदिम जाव नवय० ।

६. अ० १।५ ।

७. भ० २।७० ।

८. भ० २।७१ ।

९. अ० ३।७५ ।

•

•

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिवग्गुत्तो आयाहिण-
पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए,
तामेव दिसं पडिगए ॥

धणस्स सव्वट्टुसिद्ध-गमण-पदं

५६. तए णं तस्स धणस्स अणगारस्स अणया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाने धम्मजाग-
रियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकण्णे
समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं^१ तवोकम्मेणं^२ धमणिसंतए जाए ।
जहा खंदओ^३ तहेव चित्ता । आपुच्छणं । थेरेहिं सद्धि विउलं पव्वयं दुरुहइ ।
मासिया संलेहणा । नव मासा परियाओ जाव^४ कालमासे कालं किच्चा उड्ढं
चंदिमं^५—सूर-गहगण-नवखत्त-तारारूवाणं जाव^६ नवयगेवेज्जविमाणपत्थडे
उड्ढं दूरं वीईवइत्ता सव्वट्टुसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे । थेरा तहेव ओयरंति
जाव^७ इमे से आयारभंडए ॥

६०. भंतेति ! भगवं गोयमे तहेव आपुच्छति, जहा खंदयस्स भगवं वागरेइ जाव^८
सव्वट्टुसिद्धे विमाणे उववण्णे ॥

६१. धणस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पणत्ता ?
गोयमा ! तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पणत्ता ॥

६२. से णं भंते ! ताओ देवलोगाओ कहिं गच्छहिइ ? कहिं उववज्जहिइ ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झहिइ बुज्झहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ
सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

६३. एवं खलु जंवु ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव^९ संपत्तेणं पढमस्स अज्झय-
णस्स अयमट्ठे पणत्ते ॥

१, २. पू०—अ० ३।३० ।

३. भ० २।६६-६६ ।

४. अ० १।८ ।

५. सं० पा०—चंदिम जाव नवय० ।

६. अ० १।८ ।

७. भ० २।७० ।

८. भ० २।७१ ।

९. अ० ३।७५ ।

७१. तए णं से सुणक्खत्ते अणगारं तेणं ओरालेणं' तवोकम्मेणं' जहा खंदयो' अईव-
अईव उवसोभमाणे चिट्ठइ ॥
७२. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चंडए । सेणिए राया ।
सामी समोसडे । परिसा निग्गया । राया निग्गयो । धम्मकहा । राया पडिग्गयो ।
परिसा पडिग्गया ॥
७३. तए णं तस्स सुणक्खत्तस्स अणगारस्स अणया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले
धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए
संकप्पे समुप्पज्जित्था, जहा खंदयस्स । वहु वासा परियाओ । गोयमपुच्छा ।
तहेव कहेइ जाव' सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे । तेत्तीसं सागरोवमाइं
ठिई' । महाविदेहे वासे सिज्झिह्महिइ ॥

३-१० अज्झयणाणि

इसिदासादि-पदं

७४. एवं सुणक्खत्तगमेणं सेसा वि अट्ठ अज्झयणा भाणियव्वा, नवरं—आणुपुव्वीए
दोण्णि रायगिहे, दोण्णि साकेते, दोण्णि वाणियग्गामे, नवमो हत्थिणपुरे, दसमो
रायगिहे । नवण्हं भद्दाओ जणणीओ । नवण्ह वि वत्तीसओ दाओ । नवण्हं
निक्खमणं थावच्चापुत्तस्स सरिसं' । वेहल्लस्स पिया करेइ' । छम्मासा वेहल्लए ।
नव धण्णे । सेसाणं वहु वासा । मासं संलेहणा । सव्वट्ठसिद्धे । सव्वे महाविदेहे
सिज्झिह्मसंति ॥

निक्खेव-पदं

७५. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं सहसंबुद्धेणं
लोगणाहेणं लोगप्पदीवेणं' लोगपज्जोयगरेणं अभयदएणं सरणदएणं चक्खुदएणं
मग्गदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं' धम्मवरचाउरंतचक्कवट्ठिणा अप्पडिहय-
वरणाणदंसणधरेणं जिणेणं जाणएणं बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं मोयएणं तिण्णेणं
तारएणं सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वावाहमपुणरावत्तयं सिद्धिगइनामधेयं
ठाणं संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पणत्ते ॥

१, २. पू० ३।३० ।

३. भ० २।६४ ।

४. भ० २।६६-७१ ।

५. ठिई से णं भते (क, ख, ग, घ) ।

६. पू०—ना० १।५।२२-३३ ;

७. 'निक्खमणं' इति शेषः ।

८. × (ख) ।

९. × (क) ।

पञ्चविहो पण्णत्तो, जिणेहि उह् अण्णत्तो यणादीयो ।

हिंसा - मोसमदत्तं, अव्वंभ - परिगहं चैव ॥२॥

जारिसओ, जंनामा, जह् य कओ जारिमं फलं देति ।

जेवि य करंति पावा, पाणवहं तं निसामेह् ॥३॥

पाणवहस्स सखव-पदं

२. पाणवहो नाम एस निच्चं जिणेहि भणिओ—पावो चंडो रुद्धो सुद्धो साहसिओ^१ अणारिओ निग्घणो निस्संसी मह्वभओ पडभओ अतिभओ श्रीहणओ तासणओ अणज्जो^२ उव्वेयणओ य निरवयवओ निद्धम्मो निप्पिवासो निक्कलुणो निरय-

अहापडिरुवं उगहं उग्गिण्हिता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति । परिंसा निग्गया । घम्मो कहिओ । जामेव दिंशि पाउब्भूया तामेव दिंशि पडिग्गया ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अंतेवासी अज्जजंबू नामं अणगारे कासव गोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव संखित्त-विपुलतेयलेस्से अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अट्टरसामते उड्डंजाणू जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

तए णं से अज्जजंबू जायसड्ढे जायसंसए जायकोउहल्ले, उप्पण्णसड्ढे ३, संजायसड्ढे ३, समुप्पण्णसड्ढे ३, उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव अज्जसुहम्मं थेरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जसुहम्मं थेरं तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, नमंसित्ता नच्चासन्ने ताइदूरे विणएणं पंजलिपुडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं णवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाइय-दसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स णं अंगस्स पण्हावागरणाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठ पण्णत्ते ?

जंबू ! दसमस्स अंगस्स समणेणं जाव संपत्तेणं दो सुयक्खंघा पण्णत्ता अण्हमदारा य संवरदारा य । पढमस्स णं भंते ! सुयक्खं-घस्स समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्जमयणा पण्णत्ता ?

जंबू ! पढमस्स णं सुयक्खंघस्स समणेणं जाव संपत्तेणं पंच अज्जमयणा पण्णत्ता । दोच्चस्स णं भंते ! एवं चैव । एएसि णं भंते ! अण्हय-संवराणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

ततेणं अज्जसुहम्मं थेरे जंबूनामेणं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे जंबूअणगारं एवं वयासी—जंबू ! इणमो इत्यादि ॥ (वृ) ।

३. विणिच्छियं (घ) ।

१. मोसादत्तं (क) ।

२. जण्णामा (क) ।

३. पाणिवहं (ग) ।

४. साहस्सिओ (ग) ।

५. व्याकरणदृष्ट्या 'अणज्जो' इति पदं युक्तं स्यात् ।

१४. आचरकाण य गृह्य-वाय-पत्तयेसरीर-नाम-साधारणे अण्वे ह्णन्ति अविजाणयो य परिजाणयो य जीवे दमेहि विविहेहि कारणेहि, 'किं ते' ? —
करिण-पोखरिणी-वाचि-वणिज-कूय-सर-तलाग-चिति-वेदि-सातिय-आराम-
विहार-शूभ-पागार-दार-गोपुर-अट्टालग-चरित-मेतु-संकम-मासायविकण-
भवन-घर-सरण-लेण-आवण-वेतिय-देवकुल-चित्तसभ-पत्र-आयतण-आवसह-
भूमिघर-मंडवाण य कए, भायण-भंडोवगरणस विविहस य अट्टाए पुढवि
हिसन्ति मंदबुद्धिया ॥
१५. जलं च मज्जणय-पाण-भोयण-वत्थधोवण-सोयमादिएहि ॥
१६. पयण-पयावण-जलावण-विदंसणेहि अगणि ॥
१७. सुप्प-वियण-तालयंट-मेहुण-मुह-करयल-सामपत्त वत्थमादिएहि अणिलं ॥
१८. अगार-परियार-भवख-भोयण-सयण-आसण-फलग-मुसल-उक्खल-तत-वितत-
आतोज्ज-वहण-वाहण-मंडव-विविहभवण-तोरण-विडंग-देवकुल-जालय-अद-
चंद-निज्जूह-चंदसालिय-वेतिय-णिस्सेणि-दोणि-चंगेरि-खील-मेढक-सभ-प्पव-
आवसह-गंध-मल्ल-अणुलेवण-अवर-जुय-नंगल-मइय-कुलिय-संदण-सीया-रह-
सगड-जाण-जोग-अट्टालग-चरित्र-दार-गोपुर-फलह-जंत-सूलिय-लउड-
मुसुंढि-सतग्घि-वहुपहरण-आवरण-उक्खराण कते ॥ अण्णेहि य एवमादिएहि
वहूहि कारणसतेहि हिसन्ति ते" तरुणणे, भणियाभणिए य एवमादी सत्ते
सत्तपरिवज्जिया उवहणंति दढमूढा दारुणमती ॥
१९. कोहा माणा माया लोभा 'हस रती अरती सोय' वेदथ-जीव-धम्म-अत्थ-
कामहेउं,"
सवसा अवसा अट्टा अणट्टाए य तसपाणे थावरे य हिसन्ति मंदबुद्धी ।
सवसा हणंति, अवसा हणंति, सवसा अवसा दुहओ हणंति ।

१. किं तत् तद्यथेति वा (वृ) ।

२. पोखरिणी (क, ग) ।

३. वेति (क, ख) ।

४. गोपुर (क, ग) ।

५. संकमण (ख) ।

६. एतदादिभिः कारणैरिति प्रक्रमः (वृ) ।

७. जलण जलावण (ख, च) ।

८. तालयंट (क, घ); तालवंट (ख); तालवित (च) ।

९. विटंग (ख) ।

१०. निज्जूहग (घ) ।

११. वेदिय (क्व) ।

१२. मलिय (क) ।

१३. चरित (क, ग) ।

१४. सूलय (क, ख, घ, वृषा); मूसलय (ग) ।

१५. मुसडि (क, घ) ।

१६. कए (क, ग, घ) ।

१७. × (क, ग) ।

१८. इह पंचमीलोपो दृश्यः ।

१९. जीयकामत्थधम्महेउं (क, ख, घ, च) ।

खासिय मेहर' मरुद्ध' मुद्धिग आरय चोनिनग कुद्धण केकय हण रोमग
मरुगा' चिलायविगयवागी य पावमविणी,
जलयर-थलयर-'सणहपग-उरग'-गह्वर-संदासतां-जीवोववायजीवी, य
य असणिणी य पज्जता असुभनेरसपरिणामा' ॥

२२. एते अण्णे य एवमादी करेन पाणातिवाय-करणं, पाया पावाभिगमा पाव-
पाणवहकयरती पाणवहस्वाणट्टाणा पाणवहकहागु यभिरमंसा गुट्टा च
करेत्तु होंति य बहुण्णगारं ॥

पाणवहस्स फलविवाग-पदं

२३. 'तस्स य पावस्स फलविवागं अयाणमाणा वड्ढेति--मह्दभयं अविस्साम-वे-
दीहकालवहुदुखसंकडं' नरय-तिरिय-जोणि । इमो आउक्खए पुय
असुभकम्मवहुला उववज्जंति नराणु हुलितं--महालगु, वयरामय-कुडु
निस्संधि - दारविरहियं - निम्मह्वं - भूमितल-खरामस्स"-विसम-नगरयव
चारएसु", महोसिण-सयावतत्त"-दुग्गं-विस-उव्वेयणगेसु" बीभच्छ" रिसा
ज्जेसु, निच्चं हिमपडलसोयलेसु", कालोभासेसु" य, भीम-गंभीर-लोमहरिस्स-
णिरभिरामेसु, निप्पडियार-वाहि-रोग-जरा-पीलिएसु", अतीवानच्चं वका
तिमिसेसु, पतिभाएसु, ववगय-गह-चंद-सूर-णक्खत्त-जोइसेसु, मेयवस मंसपड-
पुच्चड-पूयरुहिरुक्कण-विलीण-चिवकण-रसियावावण्ण-कुहयचिवक्खल्लकद्धे-
कुकूलानल"-पलित्त- जाल - मुम्मुर- असिक्खुरकरवत्तवार-सु नसितविच्छुयडं-

१. मेहर (ख, ग, च) ।

२. मडा (वृपा) ।

३. एतानि च प्रायोलुप्तप्रथमावहुवचनानि ।

४. सणहप्फतोरग (क, ख, ग); सणफतोरग
(घ, च) ।

५. °परिणामे (क, ख, घ) ।

६. पावस्सती (ख, घ, च) ।

७. °दुखवेयणं (क) ।

८. 'तस्स' इति पदादारभ्य 'युया' इति पदान्तः
पाठः वृत्तिकारेण सर्वेषु आदर्शेषु नोपलब्धः,
यथा—तस्सेत्यादि सूत्रं च क्वचिदेव दृश्यते
(वृ) ।

९. पार ° (क, घ); यार ° (ग); वार ° (च) ।

१०. निमह्व (ख, ग, घ, च) ।

११. खरामंस (क, घ); खरामस (ग, च)
खरामरिस (क्व) ।

१२. °नारएसु (ख) ।

१३. सइयतत्त (क) ।

१४. उव्वेयजणगेसु (क्व) ।

१५. विमत्थ (ख, ग) ।

१६. °सीयलेसु य (क, ग, घ, च) ।

१७. काला ° (क) ।

१८. जलपीलिएसु (क); जरपीलिएसु (ग, घ) ।

१९. तिमिएसु (क) ।

२०. कुक्कुला ° (क) ।

ता हंत' ! पिय इमं जसं निमलं सीमलं ति पेशुण म नरयपाला' तानिवं च
रो दंति कलरोण अंजलीमु, ददुण य तं पवैनिगमंगा अंगुपमलं पपुपच्छ
छिण्णा तण्हा' इयम्ह कलुणाणि' जंपमाणा, निप्पेवताता दिसोदिसं, अत्ता
असरणा अणाहा अवंधवा वंधुविण्णहणा विपलागति म गिगा व वेगे
भगुच्चिगा', घत्तुण वला पलायमाणानं निरणुकंता मुहं विहाउत्तु लोहउंठो
कलकल' ण्हं वयणांसि छुभंति केइ जमकाइया हंमंता ॥

२७. तेण य दद्धा संता रसंति य भीमाइं विस्सराइं, रुदंति' म कलुणगाइं पारेवता
व, एवं पलवित-विलाव-कलुणो कंदिय-वधुरुन्न-रुदियसइं परिदेविय'—
वद्धकारव-संकुलो णीसट्ठो "रसिय-भणिय-गुविय-उक्कूइय-नरय'—ताज्जय
गेण्ह, वकम, पहर, छिद, भिद, उप्पाडेहि, उक्कणाहि", कत्ताहि, विकत्ताहि य
भंज", हण, विहण, विच्छुभोच्छुभ", 'आकट्ट, विकट्ट", किं ण जंपसि"? सरा
पावकम्माइं दुक्कयाइं"—एवं वयणमहणगड्ढो पडिगुयासइ-संकुलो तासओ'
सया निरयगोयराण महानगर-उज्जमाणा-सरिसो निग्घोसो मुच्चए" अ. १६
तहियं नेरइयाणं जाइज्जंताणं जायणाहि, किं ते ?—
असिवणदढभवणजंतपत्थरसूइतलखारवाविकलकलेंतवेयरणिक्कलंवालुयाजलिय
गुहनिरंभण-उसिणोसिणकंठइल्लदुग्गमरहजोयणतत्तलोहपहगमणवाहणाणि ॥

२८. इमेहि विविहेहि आयुहेहि", किं ते ?—

मोगगर मुसुंढि" करकच सत्ति हल गय मुसल चक्क कोंत तोमर सूल लउ.
भिडिमाल सव्वल" पट्टिस चम्मेट्ट" दुहण मुट्ठिय असिखेडग खग चाव न राय

- | | |
|--|---|
| १. हंता (क्व) । | च, वृ); अत्र वृत्ते: पाठान्तरं भूलपाठत्वेन |
| २. निरयवाला (क्व) । | स्वीकृतम् । 'भुज्जो' इति पदापेक्षया भंज |
| ३. तण्ह (क, ख, घ, च) । | इति पदं क्रियापदप्रयोगे प्राप्तङ्गिकमस्ति । |
| ४. वचनानीति गम्यते (वृ) । | १३. विच्छुभोच्छुभ (क); विच्छुभज्जुभ (वृ); |
| ५. °दिसिं (क, घ) । | निच्छुभ° (वृपा) । |
| ६. भउच्चिगा (क) - | १४. आकट्ट विकट्ट (ख, ग, घ, च) । |
| ७. कलकल (ग, घ, च); त्रपुकमिति गम्यते । | १५. जानासि (वृपा) । |
| ८. खयंति (क, ग); खवंति (घ); रोवंति (च) । | १६. विहणओ तासणओ पड्ढमओ अड्ढमओ(वृपा) |
| ९. °वयणा (क, ग) । | १७. सुव्वए (ख, ग, घ) । |
| १०. परिवेदिय (क, ख, घ); परिवेविय (वृपा) । | १८. आउहेहि° (क, ग) । |
| ११. उग्घाडेहुक्खणाहि (क); उप्पाडेहुक्खणाहि | १९. मुसुंढि (क) । |
| (ख, ग, घ, च) । | २०. सइल (वृ) । |
| १२. भुज्जो; भुज्जो (क); भुज्जो (ख, ग, घ, | २१. चम्मेड (क, घ) । |

विष्णुयोग - सोयपरिपीलणाणि य, सत्यग्निसाभिधाय' - गलगवलावलण-
मारणाणि य, गलगजालुच्छिपणाणि' पउलण-विकल्पणाणि य, जावज्जीविग-
बंधणाणि पंजर-निरोहणाणि य, सज्जूह'-निद्राहणाणि धमणाणि दोहणाणि
य, कुडंड'-गलबंधणाणि वाट'-परिवारणाणि' य, पंकजलनिमज्जणाणि वारिष्ण-
वेसणाणि य, ओवायणिभंग-विसमणिवडण'-दवग्निजान्न-दहणादिसाई ॥

३१. एवं ते दुक्खसय-संपलित्ता नरगाओ आगया इहं सायसेसकम्मा तिरिक्ख-
पंचेदिएसु पावन्ति पावकारी कम्माणि पमाद-शग-दोस-वहुसंनियाई अतीव-
अस्साय'-कक्कासाई ॥
३२. भमर-मसग-मच्छियाइएसु' य जाई'-कुलकोडिसयसहस्सेहि नवहि चउरिदियाण
तहि-तहि चेव जम्मण'-मरणाणि अणुभवन्ता कालं संखेज्जकं भमन्ति नेरइय-
समाणतिव्वदुक्खा फरिस-रसण-घाण-चक्खुसहिया ॥
३३. तहेव तेइंदिएसु—कुंथु'-पिपीलिका-अवधिकादिकेसु" य जाती-कुलकोडिसय-
सहस्सेहि अट्टहि अणूणएहि तेइंदियाण तहि-तहि चेव जम्मण'-मरणाणि अणुभवन्ता
कालं संखेज्जकं भमन्ति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिस-रसण'-घाण-संपउत्ता ॥
३४. 'तहेव वेइंदिएसु"-गंडूलय'-जलुय'-किमिय-चंदणगमादिएसु य जाती-कुलकोडि-
सयसहस्सेहि सत्तहि अणूणएहि वेइंदियाण तहि-तहि चेव जम्मण'-मरणाणि
अणुभवन्ता कालं संखेज्जकं भमन्ति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिस-रसण-
संपउत्ता ॥
३५. पत्ता एगिदियत्तणं पि य—पुढवि-जल-जलण-मास्य-वणफ्फति-सुहुम-वायरं च
पज्जत्तमपज्जत्तं पत्तेयसरीरणामसाहारणं च । पत्तेयसरीरजीविएसु य, तत्थवि
कालमसंखेज्जगं भमन्ति, अणंतकालं च अणंतकाए फासिदियभाव-संपउत्ता
दुक्खसमुदयं इमं अणिट्ठं पावन्ति" पुणो-पुणो तहि-तहि चेव परभव-तरुणगहणे"

१. ° विसघाय (क) ।

२. ° लुंछिपणाणि (क); ° छुपणाणि (ग);
° छिपणाणि (च) ।

३. सयूह (ग) ।

४. कुडंड (ख, ग, च) ।

५. वाडग (ग, घ, च) ।

६. परियालणाणि (क) ।

७. विसमपडण (क) ।

८. असाय (ग, च) ।

९. मच्छिमाइएसु (ख, घ); मच्छिगाइ ° (ग, च) ।

१०. जाइ (ग, च) ।

११. जणण (क) ।

१२. जंतु (क) ।

१३. अवहिकाइकेसु (ख, घ, च) ।

१४. रस (क) ।

१५. × (क, ख, घ) ।

१६. गंडूल (क, ग, घ, च) ।

१७. जलूय (ग) ।

१८. पावन्ति (ग); पावन्ति (च) ।

१९. तरुणगणे (वृ); तरुणगहणे (वृषा) ।

निष्पिपासो निवक्तुणो निरयवाय-गमण-निधनो' मोह-महामय-पयद्वयो' मरण
वेमणसो' । पढमं अहम्मदार्द समत्तं ।

—ति वेमि ॥

१. निबन्धणो (क) ।

२. पयद्वयो (क, ख); पयद्वयो (ग, घ) ।

३. वेमणस्तो (ख, ग, घ, च); द्वितीयसूत्रवर्तीनि

एतानि विशेषणानि अत्र न सन्ति, वृत्तिकारे-
णापि न व्याख्यातानि—साहसिओ पइभओ
अतिभओ ।

वहुकादं किंसाणाणि य परिगह्णन्ता परिगह्णन्ति नित्यसदस्यमाय देवानि मर्त्या
तित्ति न तुष्टि उवन्तर्भाणि अन्वन्तिपुत्र-सोभाभिभू-मन्ता ।
वासहर-उगुगार-नष्टपद्वय-कल-रगगय-भाण-मु-म-साया-रणि-लवण-सनि-
दहपति-रतिकर-अजणकमेव-दहिमुहसायापुपाय-कवचक-चित-यित-
जमक-वरसिहरि-कूटयागी ॥

मणुस्साणं परिगह-पदं

४. वक्खार-अकम्मयभूमीगु, गुविभत्ताभायदेशागु, कम्मभूमिस्स जेअवि य न
चाउरंतचकवट्ठी वागुदेवा वलदेवा मंजलीया इम्मरा सववरा मेणावती ५०५
सेट्ठी रट्ठिया पुरोहिता कुमारा वड्ठायमा मादियिया सत्थवाहा कोट्ठिय
अमच्चा एए अण्णे य एवमादी परिगह्णन्ति मन्तिपि अण्णं असुरणं दुरंतं अयुव
मणिच्चं असासयं पावकम्मनेम्मं अवाकिरियव्वं विणागमूत्तं बहुवन्परिकलेस
वहुलं अणंतसंकिलेसकरणं ते तं अण-कण-रगण-निचयं पिड्ढा वेव लो
घत्था संसारं अतिवयंति सव्वदुक्ख-सन्निलयणं ॥

परिगहत्थं सिक्खा-पदं

५. परिगहस्सेव य अट्ठाए सिप्पसायं सिक्खाए बहुजणो कल्लाओ य वावत्तिरि सुनि-
पुणाओ लेहाइयाओ सउणरुयावसाणाओ गणियप्पहाणाओ, चउसट्ठि च महिला-
गुणे रतिजणणे, सिप्पसेवं, असि-मसि-किसी-वाणिज्जं, ववहारं, अत्यसत्य-
ईसत्य-च्छरूपगयं, विविहाओ य जोगजुंजणाओ य, अण्णंसु एवमादिणु
वहसु कारणसएसु जावज्जीवं नडिज्जए, संचिणंति मंदवुद्धी ॥

परिगहणीं पवित्ति-पदं

६. परिगहस्सेव य अट्ठाए करंति पाणाण वहकरणं अलिय-नियडि-साइ-संपओगे
परदव्व-अभिज्जा सपरदारगमणसेवणाए आयास-विसूरणं कलह-भंडण-वेराणि
य अवमाण-विमाणणाओ इच्छ-महिच्छ-प्पिवास-सतततिसिया तण्ह-नेहि-लोभ-
घत्था अत्ताण-अणिग्गहिया करंति कोहमाणमायालोभे अकित्तणिज्जे ॥

१. °भूतसत्ता (च) ।

२. इवखुगार (ख, घ, च) ।

३. लवणसमुद् (क) ।

४. दहिमुहवातुप्पाय (क); °उवातुप्पाय (च) ।

५. × (क, ख, ग, घ) ।

६. अकिरियव्वं (क); अवाकिरियव्वं (घ) ।

७. मनंतं परि° (क) ।

८. मनसंकिलेस° (क) ।

९. पिडंता (ख) ।

१०. अविचयंति (ख, घ) ।

११. परिग्रहाय शिक्षत इति प्रतीतम् (वृ) ।

१२. बहुवचनार्थत्वादेकवचनस्य (वृ) ।

१३. × (ख, घ); °अभिगमण° (ग) ।

एणहि पंचनि असंवेहि रसमादिनिमं सणममरं ।
 नउविहमसिपेयं, सणसिग्मद्वि न मेमरं ॥१॥
 सव्वगटं - पव्वगटं, काटंति सणमण सव्वगणुणा ।
 जे य ण गुणंति भम्म, सोऊण य जे पमायंति ॥२॥
 अणुसिद्धं नहुविह, मिच्छदिष्टो जया अनुदीया ।
 वद्धत्तिकाटयकम्मा, गुणंति भम्म न य करेति ॥३॥
 कि सव्वका काउं जे, जं णेच्छं सोमहं मुहा पाउं ।
 जिणवयणं गुणमहुरं, विरेयणं सव्वदुक्कसाणं ॥४॥
 पंचेव' उज्झिळणं, पंचेव य रसिळण भावेण ।
 कम्मरय - विणममुक्का, मिद्धिवरमणुत्तरं जंति ॥५॥

१. °अचिणित्तु (वृ) ।

२. अणुसिद्धं (क, ग, घ); अणुसिद्धा (वृ) ।

३. पंचेव य (च) ।

दीवो ताणं सरणं गवी पड्डु
 निव्वाणं^१ निव्वुडं^२ समाही
 सत्ती किन्ती गंती
 रती य विरगी य गुयंग तिनी
 दया विमुत्ती खंती गमत्तायाहणा
 गहंती वोही वुद्धी धिनी
 समिद्धी रिद्धी विद्धी
 ठिती पुट्ठी नंदा भद्दा
 विसुद्धी लद्धी विसिट्ठिद्धी
 कल्लाणं मंगलं पमाओ विभूती रक्खा
 सिद्धावासो अणासवो
 केवलीणं ठाणं
 सिव-समिई-सील-संजमो त्ति य
 सीलपरिघरो^३ संवरो य गुत्ती ववसाओ
 उस्सओ^४ य जणो, आयतणं जयणमप्पमाओ ।
 आसासो वोसासो, अभओ सवूस्स वि अमाघाओ ।
 चोवखपवित्ता^५ सुती पूया विमल-पभासा य निम्मलत्तर त्ति ।
 एवमादीणि निययगुण-निम्मियाइं पज्जवणामाणि होंति अहिंसाए भगवतीए ॥

अहिंसा-थुइ-पद

४. एसा सा भगवती अहिंसा, जा सा—

भीयाणं पिव सरणं, पक्खीणं पिव गयणं^१ ।
 तिसियाणं पिव सलिलं, खुहियाणं पिव असणं ।
 समुद्मज्जे व पोतवहणं, चउप्पयाणं व आसमपयं ।
 दुहट्ठियाणं^२ व ओसहिवलं, अडवीमज्जे व सत्थगमणं ॥

५. एत्तो विसिट्ठतरिका अहिंसा, जा सा—

पुढवि-जल-अगणि - मारुय - वणप्फइ-वीज-हरित-जलचर-थलचर-खहचर-तसं-
 थावर-सव्वभूय-खेमकरी ॥

१. नेव्वाणं (क) ।

२. नेव्वुडं (क, ख) ।

३. सीलायारो (क); सीलघरो (ख, घ, च) ।

४. उस्सतो (क) ।

५. चोक्खा पवित्ती (क) ।

६. गमणं (क, ग, व) ।

७. दुहट्ठियाणं (च, ग) ।

उच्छग्वेसणा-पदं

७. इमं च पुहवि-उग-अगणि-भाष्य-नामक-पद-भाष्य-महाभूष-संज्ञक-शब्दात् पु
उच्छ ग्वेसियव्वं अकलमकलमिमाणाहममणदिट्ठं, अलीमकलं, नमहिम कोदी
गुपरिमुद्धं, दसहि य कोगेहि विणममुक्कं, उग्गमउग्गमणमणामुद्धं, वयमम-वु
चइय-नसयेहं च, फागुगं च ।
न निमज्जकहापआयणवमामुआवणीयं, न निमिज्ज-मंन-भूल-भेसज्जहेउं,
लक्खणुप्पाय-मुमिण-जोउम-निमित्त-कह-कुहकप्पउत्तं ॥
८. नवि उंभणाए, नवि रक्खणाते, नवि मासणाते, नवि उंभण-रक्खण-सायण
भिकखं ग्वेसियव्वं ॥
९. नवि वंदणाते, नवि माणणाते, नवि पूयणाते, नवि वंदण-माणण-पूयणा
भिकखं ग्वेसियव्वं ॥
१०. नवि हीलणाते, नवि निदणाते, नवि गरहणाते, नवि हीलण-निदण-गरहणा
भिकखं ग्वेसियव्वं ॥
११. नवि भेसणाते, नवि तज्जणाते, नवि तालणाते, नवि भेसण-तज्जण-तालणा
भिकखं ग्वेसियव्वं ॥
१२. नवि गारवेणं, नवि कुहणयाते, नवि वणीमयाते, नवि गारव-कुहण-वणीमय
भिकखं ग्वेसियव्वं ॥
१३. नवि मित्तयाए, नवि पत्थणाए, नवि सेवणाए, नवि मित्तत-पत्थण-सेवणा
भिकखं ग्वेसियव्वं ॥
१४. अण्णाए अगदिए अदुट्ठे अदीणे' अविमणे अकलुणे अविसाती ॥ रत्तंजोम
जयण-घडण-करण-चरिय-विणय-गुण-जोगसंपउत्ते भिक्खू भिक्खेसणाते निरते
१५. इमं च सव्वजगजीव-रक्खणदयट्ठाए पावयणं भगवया सुकहियं अत्ताह
पेच्चाभावियं आगमेसिभद्दं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं स-उक्खय
विआसमणं ॥

अहिंसाए पंचभावणा-पदं

१६. तस्स इमा पंच भावणाओ पढमस्स वयस्स होंति ॥ तातवायवेरम
परिरक्खणदुयाए ॥
१७. पढमं—ठाणगमणगुणजोगजुंजण-जुगंतरनिवातियाए दिट्ठीए इरियव्वं कीड

१. चयिय (क); चाविय (क्व) ।

३. अदीणे (वृ) ।

२. भेसज्जकज्जहेउं (क, ख, ग, घ, च) ।

८. नह्वंयभियोगवैरभोरिति नमुत्तंनि य, यमिसमसमसति मिदति' यणमा
सच्चवादी ॥
९. सादेव्याणि य देवयायो कर्तेन सच्चवादी स्तान् ॥

सच्चस्स धुह-पदं

१०. तं सच्चं' भगवं तित्यगग्मुभासियं यमियं चोदुमपुत्रोति पादुज्जयिदि
'महरिसीण य समयणचिण्ण' येनद-नारिद-भासियणं नेमतिनयसाहिंयं मह
मंतोसहिचिज्जसाहणट्टं चारणमण-समण-सिद्धियज्जं मण्युगणानं न वंदणिज्ज
'अमरगणानं च अच्चणिज्जं अमुरगणानं न पुगणिज्जं,"
अणोगपागंड-परिगहिंयं, जं तं लोकाग्मि मारभूयं ।
गंभीरतरं महासमुद्वाओ, विरतरं मेमपवदाओ ।
सोमतरं चंदमंडलाओ, दित्तरं मूरमंडलाओ ।
विमलतरं सरयनहयलाओ, मुरगितरं गंधमादणाओ ॥

११. जे वि य लोकाग्मि अपरिसेसा मंता जोगा जया य विज्जा य जंभका य अत्याहि
य सत्थाणि य सिक्खाओ य आगमा य सव्वाणि' वि तादं सच्चं पदद्वियाई ॥

सावज्जसच्च-पदं

१२. सच्चंपि य संजमस्स उवरोहकारकं' किंचि न वत्तच्च—हिंसा-सावज्जसं ३२
भेय-विकहकारकं अणत्थवाय-कलहकारकं अणज्जं अववाय-विवायसंपउर
वेलवं ओजधेज्जवहुलं नित्तलज्जं लोयगरहणिज्जं दुद्धिं दुस्सुयं दुम्मुणियं' ॥
१३. अप्पणो थवणा, परेसु निदा—

नसि' मेहावी, न तंसि धण्णो ।
नसि पियधम्मो, न तं कुलीणो ।
नसि दाणपती, न तंसि सूरु ।
नसि पडिरूवो, न तंसि लद्धो ।
न पंडिओ, न बहुस्सुओ, न वि य तं तवस्सी ।

१. नइति (क) ।
२. भगवंतं (क, ख, ग, घ, च) ।
३. ०पइण्णं (वृ); महरिसिसमयपइण्णचिण्णं
(वृपा) ।
४. × (क) ।
५. सच्चवाइं (ख, च) ।
६. अवरोहकारकं (ख) ।
७. अमुणियं (ख, ग, घ, च) ।
८. त्वमिति गम्यते (वृ) ।

एवं अणुं च एवमादियं भणञ्ज भवति भवतिभ्यो, भवति कोऽपि न भवति
एवं मन्तीए' भाविभ्यो भवति भवतिभ्यो, भवतिभ्यो न भवतिभ्यो
सच्चज्जवसंपणो ॥

१६. ततियं—लोभो न सेवियव्वो ।

लुद्धो लोलो भणञ्ज अलियं सेवियं न सेवियं न कोऽपि ।
लुद्धो लोलो भणञ्ज अलियं किस्सिए न कोऽपि न कोऽपि ।
लुद्धो लोलो भणञ्ज अलियं इद्धीए न कोऽपि न कोऽपि ।
लुद्धो लोलो भणञ्ज अलियं भवत्तु न कोऽपि न कोऽपि ।
लुद्धो लोलो भणञ्ज अलियं पीडत्तु न कोऽपि न कोऽपि ।
लुद्धो लोलो भणञ्ज अलियं सेवज्जाए न कोऽपि न कोऽपि ।
लुद्धो लोलो भणञ्ज अलियं वत्तत्तु न कोऽपि न कोऽपि ।
लुद्धो लोलो भणञ्ज अलियं कंचत्तु न कोऽपि न कोऽपि ।
लुद्धो लोलो भणञ्ज अलियं सीसत्तु न कोऽपि न कोऽपि ।
अणुंसे' य एवमादियं बहुमु कारणमतेमु लुद्धो लोलो भणञ्ज अलियं, न
लोभो न सेवियव्वो ।

एवं मुत्तीए' भाविभ्यो भवति अंतरप्पा, संजय-कर-चरण-नयण-वयणो
सच्चज्जवसंपणो ॥

२०. चउत्थं—न भाइयव्वं । भोतं सु भया अइति लुद्धं, भोतो अविज्ज
मणूसो, भोतो भूतेहिं व घेपेज्जा, भोतो अण्णं पि हु भेसेज्जा, भोतो तवन्तं
पि हु मुएज्जा, भोतो य भरं न नित्यरेज्जा, सण्णुरिसनित्सेवियं च मगं नो
न समत्थो अणुचरितं । तम्हा न भाइयव्वं' भयस्स वा वाहिस्स वा रोगस्स
जराए वा मच्चुस्स वा अण्णस्स व एवमादियस्स' ।

एवं घेज्जेण भाविभ्यो भवति अंतरप्पा, संजय-कर-चरण-नयण-वयणो
सच्चज्जवसंपणो ॥

२१. पंचमकं—हासं न सेवियव्वं । अलियाइं असंतकाइं जंपंति हांसइत्ता । २१.
भवकारणं च हासं, परपरिवायप्पियं च हासं, परपीलाकारणं च हासं, भेदा
मुत्तिकारकं च हासं, अण्णोण्णजणियं च होज्ज हासं, अण्णोण्णगमणं च हो
मम्मं, अण्णोण्णगमणं च होज्ज कम्मं, कंदप्पाभिद्योगगमणं च होज्ज हा
आसुरियं किंविस्सत्तं च जणेज्ज हासं, तम्हा हासं न सेवियव्वं ।

१. खंतीयं (ख); खंतीय (ग, घ, च) ।

२. संधारस्स (क) ।

३. लुद्धो लोलो भणञ्ज अलियं अणुंसे (क, ख,
ग, घ, च) ।

४. मुत्तीय (ख, घ) ।

५. भावितव्वं (क); भावितव्वं (ग) ।

६. एगस्स (वृ); एवमादियस्स (वृ) ।

अट्टमं अज्झयणं तदयं संवरदारं

उक्तेय-पदं

१. जंतू ! दत्ताणुण्णायसंवरो' नाम होनि तत्तियं—गुणवयं' महव्वयं गुणवयं तस्य
हरणपडिविरुद्धकरणजुत्तं अपरिमियमणंतनण्णामणुगय-महिच्छ-मणवयणक-
आयाणसुनिग्गहियं सुमंजमियमण-तत्थ-पायनिहं' निग्गयं नेट्टिकं नि-
निरासवं निवभयं विमुत्तं उत्तमनखसभ-पवरखलवग-गुविहियजणसंमत् ५
साहुधम्मचरणं ॥

अदत्तस्स अग्गहण-पदं

२. जत्थ य गामागर-नगर-निगम-खेड-कव्वड'-मडंव-दोणमुह-संवाह ५६णासम'
च किंचि दव्वं मणि-मुत्त-सिल-प्पवाल-कंस-दूस-रयय-वरकणग-रयणम
पडियं पम्हुट्टं विप्पणट्टं न कप्पति कस्सति' कहेउं वा गेण्हिउं वा । आहं
सुवण्णिकेण समलेट्टुकंचणेणं अपरिग्गहसंवुडेणं लोर्गमि विहरियव्वं ॥
३. जं पि य होज्जा हि दव्वजातं 'खलगतं खेत्तगत रण्णमंतरगतं व' किंचि
फल-तय-प्पवाल-कंद-मूल-तण-कट्ट-सक्कराइं अप्पं व वहुं व अणुं व थूलगं वा
कप्पति ओग्गहे अदिण्णमि गिण्हिउं जे ॥

१. दत्तमणुण्णायं० (क); दत्तमणुण्णायं०
(ख, ग, घ, च) ।

२. सुव्वत (क, ख, ग, घ, च); वृत्तिकारेण
'सुव्वय' इति पाठो लब्धः, तेन 'हे सुव्वत'
इति सम्बोधनत्वेन व्याख्यातः । वस्तुतोऽत्र
'सुव्वयं' महव्वयं गुणव्वयं' एतानि त्रीण्यपि

पदानि एकरूपाणि सन्ति । ५ ति
व्यचित्रयुक्तादर्शे 'सुव्वय' इति १०

लब्धः । तेनासौ पाठः स्वीकृतः ।

३. खव्वड (क)

४. कासती (क, घ) ।

५. वाचनान्तरे—जलथलगयं खेत्तमंतरगयं(व)

अवत्तादाणवेरमणस्त पंसभावजा-पसं

८. तस्स दुग्गा पंस भावणा वसिस्सम सपप्प शोकि वप्पवत्तण्णभिरमण-
रसणणद्वयाण ॥
९. पठमं - वेरकल्ल-सभ-सपपा-सायसाह-सवणमुत्त-सायसा-वत्तरा - सायसर-गिरिगुहा
'कम्ममं-उज्जाण'-जाणसाय-कणिमसाय-संजण - मूलपण - मुग्गप-स्येय-साय
अण्णाणि य एवमादिपोंम दमसट्ठिम-वीर-होय-सवणपण-असमसो अस्स
फामुण विविचो पससो उवस्सए होउ विव्हियज्जं ।
आहाकम्मं-वहुणे य जे से आमिसा-संमज्जिअथोमित्त-सोहिय-छायण-दमण-नंन
अणुलिपण-जलण-भंडनालण', अतो महि न अमंजमो जत्थ यट्ठो', संजवा
अट्ठा 'वज्जेयव्वे हु उवस्सए' से नारिस्सए मुग्गपविज्जुं ।
एवं विविचत्तावाससहिस्समित्तजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, निच्चं अहिकरण-
करण-कारावण-पावकम्मविरत्ते दत्ताणुण्णाय-ओग्गहकई" ॥
१०. वितियं - आरागुज्जाण-काणण-वणण-वेरभागे जं किनि दवकटं व कट्ठिणं
जंतुमं व 'परा-मेरा'" - कुच्च - कुस - डवभ - पत्ताल - मूयग - वल्लय"-पुण-फ-
तय-पवाल-कांद-मूल-तण-कट्ट-सवकराई गेण्हद सेज्जोवहिस्स अट्ठा, न कप्प
ओग्गहे अदिण्णांमि गेण्हउं जे । हणिहणि ओग्गहं अणुणविय गेण्हियव्वं ।
एवं ओग्गहसमित्तजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, निच्चं अहिकरण-कर-
कारावण-पावकम्मविरत्ते दत्ताणुण्णाय-ओग्गहकई ॥
११. ततियं - पीढ-फलग-सेज्जा-संधारगद्वयाण एक्खवा न छिदियव्वा, न य छेदणेण
भेयणेण य सेज्जा कारेयव्वा ।
जस्सेव उवस्सए वसेज्ज सेज्जं तत्थेव गवेसेज्जा, न य विसमं समं करेज्जा, -
निवाय"-पवाय-उस्सुकत्तं, न डसमसगेसु खुभियव्वं, अग्गी धूमो य न कायव्वो
एवं संजमवहुले संवरवहुले संवुडवहुले समाहिवहुले वीरे काएण फासयते सयय
अज्भप्पज्भाणजुत्ते समिए एगे चरेज्ज धम्मं ।

१. वसहि (क, ख, घ) ।

२. गिरिगुहा (च) ।

३. कम्मंतुज्जाण (क, ग, घ), कम्मं उज्जाण
(ख, च) ।

४. लयण (ख) ।

५. ०मट्ठिया (ख, घ) ।

६. एतेपां समाहारद्वन्द्वः विभक्तिलोपश्च द्वयः
(वृ) ।

७. वट्टति (च) ।

८. वज्जेयव्वो हु उवस्सओ (ग) ।

९. दत्तमणुण्णाय (क, ख, ग, घ, च); सर्वत्र ।

१०. ०स्ती (क, ग) ।

११. परमेर (क); परमेरा (ख); परमेरा (घ) ।

१२. पव्वय (ख, घ); वत्तवजः तृणविशेषः (वृ) ।

१३. छेदण (ख, ग, घ, च) ।

१४. निवाय (ख) ।

नवमं श्रुतमयगं

चउत्थं संवरदारं

उक्तेव-पदं

१. जंजू ! एतो य वंभेवरं - उताम-तव-नियम-गुण-पहाण-जुत्तं हिमवत-गह्व-सोममं पसत्थ-सोमीर-विमित-म
अज्जवसाहुजणाचरितं मोवसगगं विसुद्ध-सिद्धिगति-निलयं 'सा जयमव्वावाह
पुणवभवं पसत्थं सोमं सुभं सिवमचलमवखयकरं' जतिवर-मारविसयं' शुचि
सुसाहियं नवरि मुणिवरेहि महागुरिस-धोर-सूर-धम्मिय-धितिमंताण य
विसुद्धं भव्वं भव्वजणाणुचिण्णं' निस्संकिण्यं' निव्वयं नित्तुसं निरायासं' नव्वं
निव्वुत्तिघरं नियम-निप्पकंपं तवसंजममूलदलिय-णंम्मं पंचगह्वयमुखाव
समितिगुत्तिगुत्तं भाणवरकवाडसुकयं' अज्जमसत्तलागपालि
दुग्गइपहं' सुगतिपहदेसगं' लोगुत्तमं च वयमिणं पञ्चमसत्तलागपालि
महासगडअरगतुंवभूयं महाविडिमखखवत्तंभूयं महानगरागारकवाडफलिहं
रज्जुपिणद्धो व इंदकेतु विसुद्धणेगगुणसंपिणद्धं ॥

वंभेवरमाहप्प-पदं

२. जमि य भगंमि होइ सहसा सव्वं संभग-मथिय-चुण्णिय-कुसत्ति' ॥९९॥

१. यम (ग, घ) ।

२. सासयमपुणवभवं पसत्थं सोमं सुहं सिवमचल-
यकरं (वृ); सासयमव्वावाहमपुणवभवं पसत्थं
सोमं सुहं सिवमचलमवखयकरं (वृपा) ।

३. संरविसयं (ख) ।

४. सुभासियं (ग) ।

५. वीर (क, ख, घ) ।

६. भव्वजणसमुच्चिण्णं (क, ख) ।

७. नीसकं (ख) ।

८. °सुकयकरवत्तं (च) ।

९. सण्णद्धवद्धोच्छइय ° (च) ।

१०. °देसगं च (क, ख, ग, घ, च) ।

गणेषु जह संदण्डवर्णं पयसं,
 सुमेसु जह जंघं मुखमणा सोममणसा श्रीमे सामेण य धर्मं दीप्ति,
 सुरमगती गमयती रक्षयती नरमयी जह जौमणं वेम मयसा,
 रक्षिणं नेच जहा महारक्षणे ।

एवमणेषा मणा असीणा भवन्ति एकस्मिन् वचनेन ॥

३. जंमि य आराद्धिमि सायाद्धिमं नयमिण मय्यं ।

सीलं तवो य विणमो य, सज्जमो य सती मुनी मुनी ।

तहेव इहलोदय-पारलोदय-असो य किरा य पञ्चमो य ।

तम्हा निहुण वभंचेरं चरियसं सज्जयो विमुद्धं ज्ञानज्जोसाणं ज्ञाय संय
 संजयोत्ति—एवं भणियं वयं भगवता ।

तं च इमं—

पंचमहव्वय-सुव्वयमूलं, समणमणाइलसाहुमुविण्णं ।

वेरविरामण-पज्जवसाणं, सव्वसमुद्ध-मज्झोदधिनिवर्णं ॥१॥

तित्थकरेहि गुदेसियमग्गं, नरयतिरिच्छविवज्जियमग्गं ।

सव्वपवित्त-मुनिम्मियसारं, सिद्धिविमाण-अवंगुवदारं ॥२॥

देवनरिदनमंसियपूयं, सव्वजगुत्तममंगलमग्गं ।

दुद्धरिसं गुणनायगमेवकं, मोक्खपहसं वडिसकभूयं ॥३॥

जेण सुद्धचरिएण भवइ सुवंभणो सुसमणो सुसाहू । स इसी स मुणी स सं
 स एव भिक्खू, जो सुद्धं चरति वंभचेरं ॥

वंभचेरयिरोकरण-पदं

४. इमं च रति-राग-दोस-मोह'-पवहुणकरं किमज्झ-पमायदोसं सत्यसीलकरं
 अवभंगणाणि य तेल्लमज्जणाणि य अभिक्खणं कपलसीः करचरपवदणवेचं
 संवाहण-गायकम्म-परिमहण-अणुलेवण-चुण्णवास-धूवण - सरीरपरिमंडण-व-
 सिक-हसिय-भणिय-नट्टगीयवाइयनडनट्टकजल्लमल्लपेच्छण-वेलंवकं जाणि
 सिंगारागाराणि य अण्णाणि य एवमादियाणि तव-संजम-वंभचेर-व तोव ।
 याइं अणुचरमाणेणं वंभचेरं वज्जेयव्वाइं सव्वकालं । भावेयव्वो भवइ
 अंतरप्पा इमेहिं तव-नियम-सील-जोगेहिं निच्चकालं, किं ते ?—
 अण्हाणक-उदंतधोवण' - सेयमलजल्लधारण - मूणवय-केसलोय-खम-दम-अचेल
 खुप्पिवास - लाघव - सितोसिण-कटुसेज्ज-भूमिनिसेज्ज-परघरपवेस - ६

१. संमोह (क, च) ।

वर्जयितव्या इति योगः (वृ) ।

२. छान्दसत्वाच्च प्रथमावहुवचनलोपो दृश्यः, ३. अदंतधोवण (च) ।

तस्य उत्तरीमवविरतिमितिजोणेन भावितो भवति अंतरणा, आरयमण
विरतगामधम्मे जिईदिण् वंभवेरगुत्ते ॥

१०. चउत्तं पुव्वरय-पुव्वकीलिय-पुव्वसमंयं-संय-संयुता ये ते याताह-विपा-
नोल्लकेसु य निशियं जणंयं उममेसु य मिगाराणार-वाक्येसाति उत्तरी-
हाय-भाय-पन्निय - निशेयं - निजाम भावितोहि यण्हुणेम्मिकाहिं स-
अणभुया नयण-संयसोमा, उदुगुह-यसुसुम-सुभिवरण-मुगंनिय-नाम-पु-
सुहफरिस-वत्थ-भूमणगणोववेगा, समणिआसोअ-मेअ-पउत्त-महक-अ-
मल्ल-गुट्टिक-वेत्थेय-कल्ल-पव-ताम-याउत्त-संय-संय-पु-
तुंववीणिय-तालाय-पकरणाणि य नहणि महुरम-नीव-मुग्गराउं, यण्णा-
य एवमाउयाउं तव-संजम-वंभवेर-तावीवनासियाउं अणवरमाणेण वंभवेर-
ताइं समणेण लवभा दट्ठं न कहेउं नयि मुग्गरिउं जे ।

एवं पुव्वरयपुव्वकीलियविरतिसमितिजोणेन भावितो भवति अंतरणा
आरयमण-विरतगामधम्मे जिईदिण् वंभवेरगुत्ते ॥

११. पंचमगं—आहारपणीथ-निद्रभोयण-विचज्जण संजते मुगाहू वचमयसीर-दहि
सप्पि-नववीय-तेल्ल-गुल-खंड-मच्छंडिक-महु-मज्ज-संग-सज्जक-विगति-परिचत्त
कयाहारे न दप्पणं न बहुसो न नितिकं न सायमुपाहिकं न राद्धं, पढ
भोत्तव्वं जह से जायामाता य भवति, न य भवति विवभमो भंसणा
धम्मस्स ।

एवं पणीयाहारविरतिसमितिजोणेन भावितो भवति अंतरणा, आरयमण
विरतगामधम्मे जिईदिण् वंभवेरगुत्ते ॥

निगमण-पदं

१२. एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ सुप्पणिहितं इमेहि पंचहि वि
कारणेहि मण-वयण-काय-परिरक्खिएहि ॥
१३. णिच्चं आमरणंतं च एसं जोगो णेयव्वो घितिमता मतिमता अणासवो
अकलुसो अच्छिदो अपरिस्सावी असंकिलिटो सुद्धो सव्वजिणमणुणाओ ॥

१. ०संगंय (ख, ग, घ, च) ।

२. X (ख, ग, घ, च); स्त्रीभिरिति गम्यते (वृ) ।

३. विच्छेव (क, ख, घ, च) ।

४. ०पेम्मकाहि (क) ।

५. सुगध ० (क, ख, ग, घ, च) ।

६. णेय (ग) ।

७. आहारं भुंजीतेतिशेषः (वृ) ।

८. एसो (क, ख, ग, घ) ।

९. णायव्वो (ख, घ) ।

१०. अपरिस्सादी (क); अपरिस्सादी (ख, घ, च) ।

सावज्जम-जीव-व-उत्तेजि निपातमतिगुह्यं जित्वासीदति मय भोगो न
विदुः न कल्पते' ओष्णिगमुच्छेदेति, सण यज्जोः समणसील ॥

अराण्हि-पदं

६. जंपि य ओटण-गुण्णाय मय-स-पण-यस-भरित्तम-पण-मय-स-पण-मोदिस-
सरक'-नृणकोसम-पिण-मिद्विणि-पण-मोदिस-मय-स-पण-मोदिस-
मुट'-खंड-मच्छेदिय मय-मय-मय-मय-मय-मय-मय-मय-मय-मय-मय-
परधरे वरणे न कल्पति मयि सण्हिहि काळण' मुनिहिपाणं ॥

अकप्पभोयण-पदं

७. जंपि य उट्टिदु-उविय-गनियम-गज्जवजाण-मकिण-पाउत्तण-मामिज्ज, मी
कीयकड-पाहुं वा, राणट्ट-गुण्णमगड, समण-नणीमगट्टयाण, व कयं, पच्छाव
पुरेकम्मं नितिकं मक्खियं अतिरिणं मोहुरं चैव सयगाहमाहुं' मट्टिप्रोवति
अच्छेज्जं चैव अणीमट्टं, जं तं तिहीनु' जण्णं मु उमवेमु स अतो व्व वहि व हो
समणट्टयाण उवियं, हिमा-सावज्ज-मपडत्तं न कल्पति तपि य पण्णित्तु ॥

कप्पभोयण-पदं

८. अह केरिसयं पुणाइ कप्पति ?

जं तं एक्कारसपिडवायमुद्धं किणण-हणण-पयण-कयकारियाणुभोयण-
कोडीहि सुपरिसुद्धं, दसहि य दोमेहि विण्णमुक्कं, उगम-उप्पायणे. १०
ववगय-चुय-चइय'-चत्तदेहं च फासुयं च ववगयसंजोगमणिगालं, विगय-
छट्ठाण-निमित्तं, छक्कायपरिरक्खणट्ठा हणिहणि' फासुकेण भिक्खेण व ८ ॥

रोगायंकेवि अराण्हि-पदं

९. जंपि य समणस्स सुविहियस्स उ रोगायंके बहुप्पकारंमि समुप्पण्णे, वाता
पित्तसिभाइरित्तकुविय-तहसण्णिवायजाते', उदयपत्ते उज्जल-अल-विउल-तिउ
कक्खड-पगाड-दुक्खे, असुभ-कडुय-फरुस-चंडफलविद्यागे महवभये जीवियंतक
सव्वसरीर-परित्तावणकरे न कप्पति' तारिसे वि तह अप्पणो परस्स वा अ
भेसज्जं भत्त-पाणं च तंपि सण्हिहिकयं ॥

१. कप्पती (क, ग, घ, च) ।

२. विसारकं (क) ।

३. गुल (ग, घ, च) ।

४. काउ (ग) ।

५. सयगाह° (घ, च) ।

६. तिहिमु (क, च) ।

७. चयिय (क); चविय (घ) ।

८. हणि-हणि (क, ग, घ) ।

९. °जाते व्व (क, ग, घ, च) ।

१०. कप्पती (क) ।

चंदो इव सोमभावयाए',
 मूरो व्व विहायेए.
 अन्नमे जह्म मंन्ने गिम्बिरे,
 अन्नगोभे गागरो व्व गिम्बिरे,
 पुढवीव' सव्वपायमहे,
 तवसावि' य भायगगिम्बिरे व्व अन्नमेए,
 जलियहुगासणो विव नेयसा जल्ले,
 गोसीसचंदणं गिव सीयले मुग्गं य.
 हरयो' विव समियभावे,
 उग्घसिय मुनिम्मन्नं व आर्यममंडलत्तं पायगभावेण मुद्धभावे,
 सांडीरे कुंजरे' व्व,
 वसभे व्व जायश्रामे,
 'सीहे वा' जहा मिगाहिवे होति दुप्पभरिसे,
 सारयसलिलं व मुद्धहियए,
 भारंडे चेव अप्पमत्ते,
 खग्गिविसाणं व एगजाते,
 खाणुं चेव उट्टुकाए,
 सुन्नागारे व्व अप्पडिकम्मे,
 सुन्नागारावणस्संतो निवायसरणप्पदीवज्झाणमिव निप्पकंपे,
 जहा खुरो चेव एगधारे,
 जहा अही चेव एगदिट्ठी,
 आगासं चेव निरालंवे,
 विहंगे' विव सव्वओ विप्पमुक्के,
 कय-परनिलये जहा चेव उरए,
 अपडिवद्धे अनिलो व्व,
 जीवो व्व अप्पडिहयगती,

१. सोमताए (वृ); सोमभावयाए (वृषा);
 ओवाइयसुत्ते (सू० २७) 'चंदो इव सोमलेसा'
 तथा कप्पसुत्ते 'चंदो इव सोमलेसे' आयारो
 तह आयारचूला परिशिष्ट ३, पृ० १६
 तथा जंबुदीवपण्णत्तीए 'चंदो इव सोमदंसणे'
 इति पाठो विद्यते, आयारो तह आयारचूला
 परिशिष्ट ३, पृ० १७ ।

२. पुढवी विव (घ, च) ।
 ३. ०इ (ख, ग, घ, च) ।
 ४. हरतो (ख, घ, च) ।
 ५. कुंजरो (ग, च) ।
 ६. सीहे व्व (क); सीहो वा (ख, घ,
 व्व (च) ।
 ७. विहंगे (ख, च) ।

१५. विविचं—यन्मण्डिदिण पासिय स्वादि मणुण्ण-भट्टकाइ, सविता-
मोसकाइ-कट्ट पोणे य निराकमे विणकमे येने य दवकमे य,
यणोहि धणमगंठाण-मडिपाइ, मणिम-वेदिम-मुण्ण-मंवातिमाणि य न
चहुनिहाणि य अहिम नमण-मणमुत्तराइ, यणम-दवने य मामा-यण
य मुहिम-पुनगरणि-नायो-वेदिम-मुण्ण-मंवातिमाणि-मंवातिमाणि-मंवातिमाणि-
सासिय-नदि-सर-सलाग-वाणि-मुण्ण-मंवातिमाणि-मंवातिमाणि-मंवातिमाणि-
सउणमण-मिहुणविनारिण, नरमडन-निविहभण-मोरण-वेदिम-देवकु-
पवावसह-मुकयसायणाण-सीम-रह-सगड-जाण-जुम-संरण-नरमाणिमणे
सोमपडिस्वदरिणाण्डे, थलविवाविभूतिण, पुव-तयव-पभायां-हम-
नट-नट्ट-जल्ल-मल्ल-मुट्टिग-वेलदम-कहक-पवम-नासम-आइसम-न-
तूण-ल्ल-तुंवोणिय-तालावर-पकरणाणि य वट्टणि मुकरणाणि, अ-
एवमादिणसु रुवेसु मणुण्ण-भट्टाणसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं न रज्जि-
गिज्जियव्वं न मुज्जियव्वं न विणिग्घायं आयज्जियव्वं न सुभियव्वं न
न हसियव्वं न सइ" च मइं च तत्थ कुज्जा ।

पुनरवि चक्खिदिण पासिय स्वाइं अमणुण्ण-पावकाइ, किं ते ? —
गंडि-कोटिक-कुणि-उदरि-कच्छल्ल-पट्टल्ल-कुज्ज - पंगुल-वामण-अंघिल्ल-
चक्खुविणिहय-सप्पिसल्लग-वाहिरोगपीलियं, विगयाणि य मयकफलेव
सकिमिणकुहियं च दवरासि, अण्णंसु य एवमादिणसु अमणुण्ण-पावतेसु
समणेण रुसियव्वं ° न होलियव्वं न निदियव्वं न खिसियव्वं न छा-
भिदियव्वं न वहेयव्वं ° न दुगुंछावत्तिया व लव्भा उप्पातेउं ।
एवं चक्खिदियभावणाभावितो भवति अंतरप्पा, ° मणुण्णाजमणु-
दुब्बि-रागदोस-पणिहियप्पा साहू मण-वयण-कायगुत्ते संवुडे िह-
चरेज्ज धम्मं ॥

१६. ततियं—घाणिदिण अग्घाइय गंधाति मणुण्ण-भट्टगाइ, किं ते ? —
जलय-थलय-सरसपुष्पफलपाणभोयण-कोट्ट-तगर-पत्त-चोय-दमणक-मख्य
रस-पिवकमंसि-गोसीस-सरसचंदण-कप्पूर - लवंग-अगरु-कुंकुम - कक्कोल
सेयचंदण-सुगंधसारंगजुत्तिवरधूववासे उडय-पिडिम-णिहारिम-गंधिणसु,

१. खादिय (क, ग) ।

२. पउमसंड (ख, घ) ।

३. रज्जियव्वं जाव न सइं (क, ख, ग, घ) ।

४. मतक° (ख, घ, च) ।

५. सं० पा०—रुसियव्वं जाव न ।

६. सं० पा०—अंतरप्पा जाव चरेज्ज ।

७. कुट्ट (क, ग) ।

८. पक्कमंसि (ख) विक्कमंसि (च) ।

९. उडय (क, घ) ।

4/25

4

1

2

3

सोहेमाणे जेणेन मियायां भगवं गोयमे एव वयासी तव पासिउं हव्वमाण ।
नगर मज्झिमज्झेन जेणेन मियादेवीं मिहे जेणेन एव वयासी ॥

२६. तए णं सा मियादेवी भगवं गोयमे एव वयासी पायड, पायडिणा हट्टु^१ ।
माणदिगा पीडमणा परमसोमणीयणा इति वयासी नमस्समा^२ । श्रिया वासा^३
अवभुट्टे^४, अवभुट्टेता मत्तदुवया^५ सण्णमका^६, सण्णमका^६ मियासी वासा^३
पयाहिणं करेइ, वदइ नमसा^७, वदिता भगसिना एव वयासी—संदि^८
देवाणुप्पिणा ! मियागमणजओमण ?
३०. तए णं से भगवं गोयमे मियं देवि एवं वयासी—सहं णं देवाणुप्पिण ! तव
पासिउं हव्वमाण ॥
३१. तए णं सा मियादेवी मियापुत्तस्स दारगस्स सण्णमज्जायण मत्तारि
सव्वालंकारविभूसाण करेइ, करेता भगवया गोयमस्स पायड पाडेइ, ए
एवं वयासी—एणं णं भंते ! मम पुत्ते पायड ॥
३२. तए णं से भगवं गोयमे मियं देवि एवं वयासी—नो मत्तु देवाणुप्पिण !
तव पुत्ते पासिउं हव्वमाण । तत्थ णं जे से तव जेठु पुत्ते मियापुत्ते दारण
अंधे जायअंधारुवे, जं णं तुमं रहस्सिअं^९ भूमिअं^९ रहस्सिअणं मत्त
पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरसि, तं णं अहं पासिउं हव्वमाण ।
३३. तए णं सा मियादेवी भगवं गोयमे एवं वयासी—से के णं गोयमा ! से
नाणी वा तवस्सी वा, जेणं एसमट्ठे मम ताव रहस्सीकए^{१०} तुवमं हव्वम
जओ णं तुवभे जाणह ?
३४. तए णं भगवं गोयमे मियं देवि एवं वयासी—एवं मत्तु देवाणुप्पिण ! मम
रिए समणे भगवं^{११} *महावीरे तहारुवे नाणी वा तवस्सी वा, जेणं एस
ताव रहस्सीकए मम हव्वमवखाते^{१२}, जओ णं अहं जाणामि । जावं
मियादेवी भगवया गोयमेण सद्धि एयमट्ठं संलवइ, तावं च णं मया
दारगस्स भत्तवेला जाया यावि होत्था ॥
३५. तए णं सा मियादेवी भगवं गोयमे एवं वयासी—तुवभे णं भंते ! 'इहं
चिट्ठह, जा णं अहं तुवमं मियापुत्तं दारगं उवदंसेमि त्ति कट्ठु जेणेव
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता वत्थपरियट्ठयं^{१३} करेइ, करेता क४

१. सं० पा०—हट्टुट्टुहियया ।

२. जेणं तव (क, ख, ग, घ); प्रतिपु एतत् पदं
लिपिदोषात् समुल्लिखितं प्रतिभाति । अग्रे
तुवमं इति पाठदर्शनात् ।

३. रहस्सकडे (क) ।

४. सं० पा०—भगवं जाव जओ णं [ख, ग];

भगवं जओ णं (क); महावीरे जाव
(घ) ।

५. इहच्चेव (क) ।

६. भत्तपाणघरण (घ) ।

७. °परियट्ठं (वृ) ।

८. कट्ठसगडि (ग) ।

ना । पनपणं रातु अणं पुण्ये निरयणविमलिनं विमलं वेरिणिं वि कट्टं
देवि आपुच्छद, आपुच्छिमा भिमाणं वेणीणं मितासो पडिजित्तमड, पडि
मिता मिमग्गामं नयं मज्जमग्गण भिमाण्ड, विमलिन्या वेणैव
भगवं महावीरे वेणैव उयामण्ड, उयामण्डया मणं भगवं महावीरे
आयाहिण-पयाहिणं कण्ड, पयेया मण्ड नममड, नरित्ता नममिण
वयासी—एवं रातु अणं पुण्ये निरयणविमलिनं विमलं वेरिणिं वि कट्टं
मज्जेणं अणपुच्छिमा, वेणैव मितासो वेणीणं मिता वेणैव उयामण । तण
मियादेवी मणं एज्जमाणं पागड, पासिया मट्टा, तं वेण मयं जाव
सोणियं च आहारेड । तण णं मम उमेयास्से अग्गस्सियं नित्तिण कण्णिण
मणोगए संकणं समुणज्जित्ता—अहो णं उमे दासए पुरा' •पोराणाणं
ण्णाणं दुण्डित्तकंताणं अनुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावणं फलवित्ति
पच्चणुभवमाणे ० विहरड ॥

४२. से णं भंते ! पुरिये पुव्वभवे के आसि ? कि नामए वा कि गोते
'कयरंसि गामंसि वा नयरंसि वा' ? कि वा दच्चा कि वा भोच्चा
समायरित्ता, केसि वा पुरा' •पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुण्डित्तकंताणं अ
पावाणं कडाणं कम्माणं पावणं फलवित्तिवित्तेसं पच्चणुभवमाणे ० विहरड

मियापुत्तस्स एक्काइभव-वण्णग-पदं

४३. गोयमाइ ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गो
तेणं कालेणं तेणं समणं इहेव जंघुहीवे दीवे भारहे वासे सयदुवारे नामं
होत्था - रिद्धत्थिमियसमिद्धे वण्णओ" ॥
४४. तत्थ णं सयदुवारे नयरे धणवई नामं राया होत्था—वण्णओ" ॥
४५. तस्स णं सयदुवारस्स नयरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए
वद्धमाणे नामं खेडे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे ॥
४६. तस्स णं विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पंच गामसयाइ आभोए यावि होत्था
४७. तत्थ णं विजयवद्धमाणे खेडे एक्काई" नामं रट्टुकूडे होत्था—अहम्मिए" :

१. वेत्ति (ख); वेयह (घ) ।

२. वि० १।१।२६-४० ।

३. सं० पा०—पुरा जाव विहरड ।

४. गोए (घ) ।

५. कयरं गामं (क); कयरं गामं कि कए (ख) ।

६. सं० पा०—पुरा जाव विहरड ।

७. ओ० सू० १ ।

८. ओ० सू० १४ ।

९. ०वद्धमाणस्स (क, ख, ग) सर्वत्र ।

१०. एकायि (क, ग) ।

११. सं० पा०—अहम्मिए जाव ३. ६५

५३. तए णं ते एकाइ रट्टकूटं गोमयहि गोमयणीः अग्निमुग्गं समाने वोढुविया
सद्धानेइ, सद्धानेसा एव यमासी- म-उत्तं यं वज्जं देवान्णिपिया ! विजयवत्त
गेडे सिमाडग-सिम-वउवक-वत्त-म-म-मुग्ग-सद्धानेइमु, म-या-सद्धाने
उग्गोसोमाणा-उग्गोसोमाणा एव यमा-उत्तं यं वज्जं देवान्णिपिया ! एवहा
रट्टकूटस्स सरीरमागं गोमयं योगायका पावज्जुया, [तं जग्गु-सत्ति
कोट्टे], तं जो णं इच्छं देवान्णिपिया ! वेज्जो वा जाणुपुत्तो वा 'जाणु
जाणुपुत्तो' वा तेगिच्छया वा तेगिच्छियपुत्तो वा एकाइस्स रट्टकूटस्स
सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमागं रोगायकं उवसामित्तए, तस्स य एकाइ र
विउलं अत्थसंगयाणं रत्तमड । सोत्तं वि सत्तं वि उग्गोसो, उग्गोसेना ए
णत्तियं पच्चप्पिणह ॥

५४. तए णं ते कोट्टवियपुरिसा जावो तमाणत्तियं पच्चप्पिण्णि ॥

५५. तए णं विजयवद्धमाणं गेडे इमं एयास्यं उग्गोमणं गोमया निगम्मं बह्वे वे
य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुपुत्ता य तेगिच्छया य तेगिच्छियपु
सत्थकोसहत्थगया 'सएहि-सएहि' गिहेहिता' पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खा
विजयवद्धमाणस्स वेउस्स मज्झमज्झेणं जेणेव एकाइ-रट्टकूटस्स गिहे
उवागच्छंति, उवागच्छिता एकाइ-रट्टकूटस्स सरीरं परामुसंति, परामु
तेसि रोगायंकाणं निदाणं पुच्छति, पुच्छिता एकाइ-रट्टकूटस्स बह्वेहि
गेहि य उव्वट्टणाहि" य सिण्हपाणेहि य वमणेहि य विरेयणाहि य सेयणेहि
अवद्धणाहि" य अवण्णाणेहि य अपुवात्तणाहि य वत्थिकम्महेहि य निरुहेहि
सिरावेहेहि य तच्छणेहि य पच्छणेहि य सिरवत्थीहि" य तप्पणाहि य पुडप
य छल्लीहि य वल्लीहि य" मूलेहि य कंदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फले
वीएहि य सिलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहि य भेसज्जेहि य इच्छंति
सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायकं उवसामित्तए, नो चेव णं संच
उवसामित्तए ॥

१. एकाइयस्स (घ) ।

२. असो कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्याशः प्रतीयते ।

३. जाणओ वा जाणुपुत्तो (ख, ग, घ) ।

४. उवसमित्तए (क) ।

५. वि० १।१।५३ ।

६. सएहितो (क्व) ।

७. गेहेहितो (क) ।

८. एगाती (क) ।

९. रोगाणं (ख, ग, घ) ।

१०. उवट्टणेहि (ख) ।

११. सेयणाहि (क); सेवणेहि (ख) ।

१२. अवद्धणाहि (क, ख, ग); अवद्धणेहि (

१३. निरुहेहि (ग); निरुहेहि (वृ) ।

१४. सिरोवत्थीहि (वृ) ।

१५. X (ख, ग, घ) ।

$\frac{d}{dt} \left(\frac{1}{r^2} \right) = -\frac{2}{r^3} \frac{dr}{dt}$

कालं किञ्चा इमीमे ऋणवभाण पुढवीण उवकोसणं निसिण सागरोवमं •द्विइएमु नेरइएमु नेरइएमु •उववज्जिहिइ ।

से णं तस्यो अणंतरे उववज्जिता मिरांगवमं निसिण सागरोवमं •द्विइएमु नेरइएमु नेरइएमु नेरइएमु उववज्जिहिइ ।

से ण तस्यो अणंतरे उववज्जिता पक्खीमु उववज्जिहिइ । तस्य वि कालं १० तच्चाए पुढवीए सत्त सागरोवमं •द्विइएमु नेरइएमु नेरइएमु उववज्जिहिइ ।

से णं तस्यो सीहेमु, तयाणंतरे चांथीए, उरगो, पंचमोए, छवीओ, छट्ठ मणुओ, अहेसत्तमाए । तस्यो अणंतरे उववज्जिता से जाइ इमाइ जलयरपी दियतिरिक्खजोणियाणं मच्छ - कच्छभ-माङ्ग-भगर-सुंमुमाराईणं अमुते जाइकुलकोडिजोणिपमुहसयसहस्साइ, तस्य णं एगमेगमि जोणिविहाणं अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो ५०० पाइस से णं तस्यो अणंतरे उववज्जिता चउपएमु उरगरिसाप्पेमु भुमपरिसाप्पेमु लहए चउरिदिएमु तेइदिएमु वेइदिएमु वणप्फट-कट्टयक्खोमु कट्टयदुदिएमु वाउ आउ-पुढवीसुं अणेगसयसहस्सखुत्तो •उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ ।

से णं तस्यो अणंतरे उववज्जिता सुपइट्टपुरे नयरे गोणत्ताए पच्चायाइइ ।

से णं तस्य उम्मुक्कवालभावे अणया कयाइ पढमपाउसंसि गंगाए महाण खलीणमट्ठियं खंणमाणे तडीए पेल्लिए समाने कालगए तत्थेव सुपइट्टपुरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाइस्सइ ॥

से णं तस्य उम्मुक्क •वालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते •जोव्व •गु तहाख्खाणं थेराणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म मुंडे भवित्ता अण ग अणगारियं पव्वइस्सइ ।

से णं तस्य अणगारे भविस्सइ—इरियासमिए •भासासमिए •इसण •आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण पारिट्ठावणियासमिए मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिदिए गुत्त •वंभ ।

१. सं० पा०—•द्विइएमु जाव उववज्जिहिइ ।

२. सं० पा०—सागरोवमं ।

३. सं० पा० सागरोवमं ।

४. पुढवी (क, ख, ग, घ) ।

५. सं० पा०—•खुत्तो ।

६. तडीए पडीए (घ) ।

७. पुमत्ताए (ख) ।

८. सं० पा०—उम्मुक्क जाव जोव्वणगं ।

९. रियासमिते (क); सं० पा०—इरिया स जाव वंभयारी ।

नममिच्छा एवं नवासो—उत्तराणि न भवे ! कूर्जेति अत्रभगवन्नाम भगव
छट्टनसमणपारणमीस नाणियगामे भगवे उत्तन-नीय-मज्झिमादे कूमादे वर
समुदाणस्स भिक्खायस्सियाए वडिराए ।

अहामुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिविंथ ॥

१४. तएण भगवं गोयमे समणेण भगवता महावीरेण अवभगवन्नाम समणे समणस
भगवओ महावीरस्स अनियाओ दूउपसागायो पञ्जायासो पडिनिक्खमा
पडिनिक्खमिच्छा अतुरिगमनवत्तममभवे जुगुप्पयत्तमायणाए विट्ठीए पुरओ रि
सोहेमाणे-सोहेमाणे° जेणेव नाणियगामे नयरे तेणेव उवामच्छड, उवामच्छि
वाणियगामे नयरे उत्तन-नीय-मज्झिमादे कूमादे वरसमुदाणस्स भिक्खायस्सिया
अडमाणे जेणेव रायमग्गे तेणेव ओगादे ।

तत्थ णं बहवे हत्थो पासड—सण्णद्ध-वद्धवम्मिय-गुडिए उप्पीलियकक्ये उद्दामि
घटे नाणामणिरयण-विविह-गवेज्जउत्तरकंचुडग्गे पडिकप्पिए भगवडागव
पंचामेल-आरुद्धहत्थारोहे गहियाउहणहरणं ।

अण्णे य तत्थ बहवे आगे पासड—सण्णद्ध-वद्धवम्मिय-गुडिए आविद्धगु
ओसारियपक्खरे उत्तरकंचुडय-ओचूलामुहचंडाघर-नामर-थासग-परिमंडिय
कडीए आरुद्धअस्सारोहे गहियाउहणहरणं ।

अण्णे य तत्थ बहवे पुरिसे पासड-सण्णद्ध-वद्धवम्मियकक्कए उप्पीलियसारासणपट्टी
पिणद्धगेवेज्जे° विमलवरवद्ध-चिघपट्टे गहियाउहणहरणं ।

तेसि च णं पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासड अवओडयवंधणं उक्खत्त
कण्णनासं नेहतुप्पियगतं वज्झं-करकडि-जुयनियच्छं कंटेगुणरत्त-मल्लद
चुण्णगुडियगातं चुण्णयं वज्झपाणपीयं तिलं-तिलं चैव छिज्जमाणं कागणिमंसा
खावियंतं पावं खक्खरसएहि° हम्ममाणं अणेगनर-नारी-संपरिवुडं चच्चरे
चच्चरे खंडपडहएणं उग्घोसिज्जमाणं इमं च णं एयारुद्धं उग्घोसणं सुणेइ°-न
खलु देवाणुप्पिया ! उज्झियगस्स दारगस्स केइ° राया वा रायपुत्तो व
अवरज्झइ, अप्पणो से सयाइं कम्माइं अवरज्झति ॥

१५. तए णं भगवओ गोयमस्स तं पुरिसं पासित्ता अयमेयारुवे अज्झत्थिए चिं
कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्या अहो णं इमे पुरिसे° पुर
पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्मा

१. चूला ° (ख) ।

२. पिणद्ध ° (क, ख, ग) ।

३. उक्खत्त (क, ख, ग); उक्कत्त (घ) ।

४. वद्ध (क, ख) ।

५. कक्खरग ° (क, ग); कक्कर ° (ख, घ) ।

६. पडिसुणेइ (क्व) ।

७. केयी (क, घ) ।

८. सं० पा०—पुरिसे जाव निरयपडिहवियं ।



४४. तए णं से गोरासो कडगगहे दोन्नाए पुड्ढोए, यण्णं उण्णट्ठिता उण्णं वाणि
गाणे नगरे विजयमित्तस्य सत्थवाहो सुभद्धाणं भारिणाणं कुण्डियि पुण
उववण्णे ॥
४५. तए णं सा सुभद्धा सत्थवाहो यण्णया कयाड नयण्णं मासाणं यण्णट्ठि
दारणं पयाया ॥
४६. तए णं सा सुभद्धा सत्थवाहो तं दारणं जायमेत्तए चैव एगंते उण्णट्ठि
उज्झवेद, उज्झवेत्ता दोक्खं वि गिण्णवेद, गिण्णवेत्ता अण्णपुण्णेण सारया
संगोवेमाणो संबद्धेद' ॥
४७. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो ठिइयडियं' च चंदसूरदंसणं' च जा
च महया इट्ठीसवकारसमुदाणं करेति ॥
४८. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एवकारसमे दिवसे निव्वत्ते संपत्ते वा
अयमेयारूवं' गोणं गुणनिष्फण्णं नाममेज्जं करेति—जम्हा णं अम्हं इमे
जायमेत्तए चैव एगंते उण्णट्ठियाए उज्झिण, तम्हा णं होड अम्हं
उज्झिणयए नामेणं ॥
४९. तए णं से उज्झिणयए दारए पंचघाईपरिग्गहिए, [तं जहा—सोरघाईए
घाईए मंडणघाईए कीलावणघाईए अंकघाईए]' जहा दट्ठपइण्णे जाव' नि
निव्वाघाय-गिरिकंदरमल्लीणे व्व चंपगपायवे सुहंमुहेणं विहरइ ॥
५०. तए णं से विजयमित्ते सत्थवाहे अण्णया कयाड गणिमं च धरिमं च मेज्ज
पारिच्छेज्जं च—चउव्विहं भंडं' गहाय लवणसमुदं पोयवहणेण उवागए ॥
५१. तए णं से विजयमित्ते तत्थ लवणसमुदे पोयविवत्तोए निव्वुडुभंडसारे अ
असरणे कालधम्मणा संजुत्ते ॥
५२. तए णं तं विजयमित्तं सत्थवाहं जे जहा वहवे ईसर-तलवर-माडविय-कोडुं
इव्वभ-सेट्ठि-सत्थवाहा लवणसमुदपोयविवत्तियं' निव्वुडुभंडसारं काल
संजुत्तं सुणेति, ते तहा हत्थनिक्खेवं च वाहिरभंडसारं च गहाय
अवक्कमंति ॥
५३. तए णं सा सुभद्धा सत्थवाहो विजयमित्तं सत्थवाहं व' स मुद' याव'
निव्वुडुभंडसारं कालधम्मणा संजुत्तं सुणेइ, सुणेत्ता महया पइसोएणं अ'

१. उक्कुरडियाए (ग) ।

२. संबद्धेमाणोति (क) ।

३. ठियपडिय (क); ठियपडिकम्मं (घ) ।

४. चंदसूरपासणियं (वृ) ।

५. इमेयारूवं (घ) ।

६. असो कोण्डकवर्ती पाठः व्याख्यांशः ।

७. ओ० सू० १४४, वाचनान्तर पृ०
१५२ ।

८. भंडगं (घ) ।

९. लवणसमुदे पोय० (क, ख, ग, घ) ।

कामज्झयाणं गणियाणं मृत्तिकाणं मिद्धं गहियाणं सज्जोपपण्णे सज्जोपपण्णे
च उद्धं च भिद्धं च सज्जोपपण्णे सज्जोपपण्णे सज्जोपपण्णे सज्जोपपण्णे सज्जोपपण्णे
सज्जोपपण्णे सज्जोपपण्णे सज्जोपपण्णे सज्जोपपण्णे सज्जोपपण्णे सज्जोपपण्णे
छिद्दाणि य विवराणि य परिजामरमाणं-गहियमाणं विहरइ ॥

६३. तए णं से उज्झियए दारए अण्णया कपाड 'कामज्झयाणं गणियाणं' खंनइ'
लभेत्ता कामज्झयाणं गणियाणं मिद्धं उद्धसियं सज्जोपपण्णे, सज्जोपपण्णे
ज्झयाणं गणियाणं सद्धि उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणं विहरइ
६४. इमं च णं मिद्धं राया ण्णाए कयवविकम्मं कयवविकम्मं-मगल-मगल-
सव्वालंकारविभूसाणं मणुस्सकगुरापरिमाणं जेणंय कामज्झयाणं मिद्धं
उवागच्छइ, उवागच्छिता तथ णं 'उज्झियगं दारणं' कामज्झयाणं गणि-
सद्धि उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणं पासइ, पासिता अ-
रुद्धे कुविए चंडियिकए, मिर्सासिममाणं निर्याल मिद्धं मिद्धं सा
उज्झियगं दारणं पुरिमेहि गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अट्टि-मुट्टि-जाणु-को-न-ए
संभग-महियगतं करइ, करेत्ता अवओउम-वंगणं करइ, करेत्ता एणं ॥१७॥
वज्जं आणवेइ ॥
६५. एवं खलु गोयमा ! उज्झियए दारए पुरा' •पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुच्चि-
ताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावणं फलवित्तिविमेमं पणुमवम
विहरइ ॥

उज्झिययस्स आगामिभव-वण्णम-पदं

६६. उज्झियए णं भंते ! दारए इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गाच्छाते
कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! उज्झियए दारए पणुवीसं' वासाइ परमाउं पालइत्ता
तिभागावसेसे दिवसे सूलभिण्णे कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इ-
रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ ॥
६७. से णं तओ अणतरं उववट्ठित्ता इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे वेयवुगि रि ॥
वाणरकुलंसि वाणरत्ताए उववज्जिहिइ ॥
६८. से णं तथ उम्मुक्कवालभावे तिरियभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गहिए उज्झ-

१. कामज्झयागणियं (घ) ।

२. अंतराणि (ख) ।

३. उज्झियए दारए (क, ख, ग, घ) ।

४. विहरमाणं (क, ख, ग) ।

५. भग (क) ।

६. सं० पा०—पुरा जाव विहरइ ।

७. पणवीसं (ग) ।

तइयं अज्भयणं

अभगसेणे

उक्खेव-पदं

१. 'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं उक्खेव
दोच्चस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स णं भंते ! अज्भयणस्स
भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंवू-अणगारं एवं वयासी०—एवं खलु जंवू
कालेणं तेणं समएणं पुरिमताले नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे
३. तस्स णं पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं अ
उज्जाणे ॥
४. तत्थ णं अमोहदंसिस्स जक्खस्स आययणे होत्था ॥
५. तत्थ णं पुरिमताले नयरे महव्वले नामं राया होत्था ॥
६. तस्स णं पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए देसप्पंते अडणि
एत्थ णं सालाडवी नामं चोरपल्ली होत्था—विसमगिरिकंदर-कोलंद
वंसीकलंक-पागारपरिक्खित्ता छिण्णसेल-विसमप्पवाय-फरिहोवगूढा अ
पाणीया सुदुल्लभजलपेरंता अणेगखंडी विदियजणदिन्न-निगमप्पवेसा सु
वि कुवियजणस्स दुप्पहंसा यावि होत्था ॥
७. तत्थ णं सालाडवीए चोरपल्लीए विजए नामं चोरसेणावई परिवसइ
•अहम्मिअट्ठे अहम्मक्खाई अघम्माणुए अघम्मपलोइ अघम्मपलज्जणे अ
समुदायारे अघम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणे विहरइ—हण-छिद-भिद-व

१. सं० पा०—तच्चस्स उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. पू०—ओ० सू० १ ।

४. सुवहुयस्स (क) ।

५. सं० पा०—अहम्मिअ जाव लो २५

च जाइं च सीधुं च पसणं च आसाएमाणी बीसाएमाणी परिभाएमाणी परि
माणे विहरइ ॥

२२. तए णं ने निम्मा अन्वर्त्तणियए एयकम्मं एयकमाणां एयकज्जे एयममाणां
पावकम्मं समज्जिज्जिता एयं साममाहरं परमाउ पावइता कालमासे
किच्चा तच्चाए पुख्खीए उवकीमेण' मससागमेवमदिउएमु मरएमु मेरउए
उववणे ॥

अभगसेणस्स वत्तमाणभव-वण्णम-पदं

२३. से णं तओ अणंतरं उव्वट्ठिता उहेय गालाडवीए चोरपल्लीए निजवस्स
सेणावइस्स खंदसिरीए भारियाए कृच्छिसि पुत्तसाए उववणे ॥
२४. तए णं तीसे खंदसिरीए भारियाए अण्णया कयाइ सिण्हं मासाणं बहुपिउ
इमे एयाखवे दोहले पाउवभूए— धण्णाओ णं ताओ अम्ममाओ 'जाओ णं'
मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवधि-परियणमहिलाहि, अण्णाहि म चोरमहि
सद्धि संपरिवुडा ण्हाया' •कयवलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पावचि
सव्वालंकारविभूसिया विउलं असणं पाणं गाइमं साइमं मुरं च महं च मेर
जाइं च सीधुं च पसणं च आसाएमाणी बीसाएमाणी परिभाएमाणी परि
माणी विहरंति । जिमियभुत्तुत्तरागया' पुरिसनेवत्था' सण्णद्ध-वद्ध' •वा क
उप्पीलियसरासणपट्टीया पिणद्धगेवेज्जा विमलवरवद्ध-चिचपट्टा गहियाउह
हरणावरणा भरिएहि, फलएहि निक्कट्टाहि' असीहि. अंसागएहितोणेहि, सज्ज
अंसागएहि धणूहि, समुक्खित्तेहि सरेहि, समुल्लालियाहि' दामाहि", ओस
याहि" ऊरुवंटाहि, छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं" महया उक्किट्ठि"-•सीहणाय-
कलकल-रवेणं पक्खुभियमहा •समुद्धरवभूयं पिव करेमाणीओ
चोरपल्लीए सब्बओ समंता ओलोएमाणीओ-ओलोएमाणीओ आहिंडमाण
आहिंडमाणीओ दोहलं विणेति । तं जइ अहं पि जाव दोहलं वि • ।

१. उक्कोस (क); उक्कोसे (ख, ग, घ) ।

२. पू०—वि० १।२।२४ ।

३. जाणं (क, ख, ग, घ) ।

४. सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता ।

५. •गयाओ (ख, ग, घ) ।

६. •नेवत्थिया (क, ख, ग, घ) ।

७. सं० पा०—सण्णद्धवद्ध जाव प्पहरणा • ।

८. निक्किट्टाहि (ख) ।

९. समुल्लालियाहि (वृ) ।

१०. दामाहि दाहाहि (ख); दाहाहि (वृपा)

११. लंबियाहि (क, ग) ।

१२. वज्जमाणेणं २ (ख, ग, घ) ।

१३. सं० पा०—उक्किट्ठि जाव समुद्ध •; उ
(ग) ।

१४. विणेज्जामि (क); विणीज्जामि (ख, ग,



से णं तस्मिन् अणतरं उद्वट्टिता, एव संसारो जहा पदमे जाव' • नाउ-तेउ-य
पुढवीसु अणंगसयसहससगुत्तो उद्दाइता-उद्दाइता तस्मैव भुज्जो-भुज्जो पच
याइस्सइ । °

तस्मिन् उद्वट्टिता वाणारसीणं नयरीणं सुगरत्ताणं पचनायाहिइ । से णं त
सोयरिण्हि जीवियाओ ववरोविणं समणं तस्मैव वाणारसीणं नयरीणं सेट्टिकु
पुत्तत्ताणं पचनायाहिइ । से णं तस्मिन् उम्मुनकवालभावो, एव जहा पदमे ज
अंतं काहिइ ॥

निषेवेव-पदं

६६. '•एवं खलु जंतू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुहं
तइयस्स अजभयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ।

—त्ति वेमि ।

१. वि० १।१।७०; सं० पा०—जाव पुढवी ।

२. वि० १।१।७० ।

३. सं० पा०—निषेवेवसो ।

४. ना० १।१।७ ।

११. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महत्तीरे ममोसणिं । परिसा राप निग्गए । धम्मो कहिओ । परिसा गया ॥

सगडस्स पुच्चभवपुच्छा-पदं

१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महत्तीरे ममोसणिं जेट्ठे अंतेवासी उ रायमग्गं ओगाढे । तत्थ णं हत्थी, आसे, अण्णे य वल्लवे पुरिसे पासइ । च णं पुरिसाणं मज्झमयं पासइ णं सदत्थियं पुरिसं अवओडयवंधणं उक्खि कण्णनासं जाव' खंडपढहेण उग्घोसिज्जमाणं * इमं न णं एयास्स उग्घो सुणेइ—नो खलु देवाणुप्पिया ! सगडस्स दारगग्गं केइ राया वा रायपुत्तो अवरज्जइ, अप्पणो से सयाइं कम्माइं अवरज्जंति ॥

सगडस्स छन्नियभव-यण्णग-पदं

१३. तए णं भगवओ गोयमस्स^० चित्ता तहेव जाव' भगवं वागरेइ—एवं ए गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे छगल नामं नयरे होत्था ॥

१४. तत्थ णं सीहगिरी नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-महिदसारे ॥

१५. तत्थ णं छगलपुरे नयरे छन्निए नामं छागलिए परिवसइ—अइहे जाव' अपि अहम्मिए जाव' दुप्पडियाणंदे ॥

१६. तस्स णं छन्नियस्स छागलियस्स वहवे [वहूणि ?] अयाण य एलयाण^१ रोज्झाण य 'वसभाण य'^२ ससयाण य सूयराण य 'पसयाण य सिहाण य हरिणाण य मयूराण य महिसाण य सयवद्धाणि सहस्सवद्धाणि य जूहा वाडगंसि संनिरुद्धाइं^३ चिट्ठंति ।

१. समोसरणं (क, ख, घ) ।

२. वि० १।२।१२-१४ ।

३. रायमग्गे (ख, घ) ।

४. पू०—वि० १।२।१४ ।

५. उक्खत्त (ख); उक्कड (ग); उक्खित्त (घ) ।

६. वि० १।२।१४ ।

७. सं० पा०—उग्घोसिज्जमाणं जाव चित्ता ।

८. वि० १।२।१५, १६ ।

९. ओ० सू० १४१ ।

१०. वि० १।१।४७ ।

११. एलाण (क, ख, ग, घ) ।

१२. पसयाण य (क); × (ख, ग) ।

१३. सिहाण य (क); × (ख, ग); पसुयाण (घ) ।

१४. निरुद्धाइं (क); निरुद्धा (ख, ग) ।

जम्हा णं अम्हं इमे दारणं जागमेत्ताणं चैव सगडस्य श्रेष्ठयो ठविए, अम्हा
अम्हं दारणं सगडे नागेणं । सेसं जम्हा उज्झिमाए । सुभं सवणसमुदं का
माया वि कालगया । से वि साओ गिहाओ निच्छुडे ॥

२२. तए णं से सगडे दारणं साओ गिहाओ निच्छुडे समाणे •साहंजणीए न
सिघाडग-तिग-चउवक-चउवर-चउम्मुह-महापहपहेमु जूदमलएमु नेस-
पाणागारेसु य सुहंसुहेणं परिवदुद ॥

२३. तए णं से सगडे दारणं अणोहदुए अणिवारिए सच्छंदमई सडर-
मज्जप्पसंगी चोर-जूय-वेस-दारणसंगी जाए यावि होत्या ॥

२४. तए णं से सगडे अणण्या कयाइ • सुदरिसणाए गणियाए सद्धि संपलगे
होत्या ॥

२५. तए णं से सुसेणे अमच्चे तं सगडं दारणं अणण्या कयाइ सुदरिसणाए ग
गिहाओ निच्छुभावेइ, निच्छुभावेत्ता सुदरिसणं गणियं अद्धिमतारियं ८
ठवेत्ता सुदरिसणाए गणियाए सद्धि उरालाई माणुस्सगाई भोगमे
भुंजमाणे विहरइ ॥

२६. तए णं से सगडे दारणं सुदरिसणाए गणियाए गिहाओ निच्छुमे
•सुदरिसणाए गणियाए मुच्छिए गिद्धे गद्धिए अज्झोववण्णे अण्णत्य कत्थइ
च रइं च धिइं च अलभमाणे तच्चित्ते तम्मणे तल्लेस्से तदज्झवसाणे त
वउत्ते तयप्पियकरणे तवभावणाभाविए सुदरिसणाए गणियाए वहुणि अंत-
य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणे-पडिजागरमाणे विहरइ ॥

२७. तए णं से सगडे दारणं अणण्या कयाइ सुदरिसणाए गणियाए अंतरं ल
लभेत्ता सुदरिसणाए गणियाए गिहं रहसियं • अणुप्पविसइ, अणुप्पवे-
सुदरिसणाए सद्धि उरालाई माणुस्सगाई भोगभोगाई भुंजमाणे विहरइ ॥

२८. इमं च णं सुसेणे अमच्चे ण्हाए जाव" विभूसिए मणुस्सवगुरापरिकित्ते" जे
सुदरिसणाए गणियाए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडं द
सुदरिसणाए गणियाए सद्धि उरालाई भोगभोगाई भुंजमाणं पासइ, न-
आसुरुत्ते जाव" मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहदुद स
दारयं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अद्धि •मुद्धि-जाणु-कोप्पर : ह रसंम

१. वि० १।२।४६-५६ ।

२. सं० पा०—समाणे सिघाडग तहेव जाव
सुदरिसणाए ।

३. ठावेइ (क) ।

४. सं० पा०—निच्छुभेमाणे अण्णत्य कत्थइ
सुइं वा अलभ अणण्या कयाइ रहस्सियं

सुदरिसणाए गिहं ।

५. वि० १।२।६४ ।

६. मणुस्सवगुराए (ख, ग, घ) ।

७. वि० १।२।६४ ।

८. सं० पा०—अद्धि जाव महियगत्तं ।

३७. तए णं से सगळे दारए मुदरिसणाए एवेण म जीवणेण म मावण्णेण म गित्ते गतिए अज्झाववण्णे मुदरिसणाए भउणीए' यदि उरान्नादे माणु भोगभोगादं भुंजमाणे विहरिस्सइ ॥
३८. तए णं से सगळे दारए अण्णया कयाइ सगमेव कूडग्गाहसं उवसंपज्जि विहरिस्सइ ॥
३९. तए णं से सगळे दारए कूडग्गाहे भविस्सइ—अट्ठम्मिण जाव' दुप्पट्ठि एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुवहुं पावकम्मं समज्जि कालमासे कालं किच्चा इमोरो रयणणभाण पुडवीए नेरइणमु नेरइ उववज्जिहिइ', संसारो तदेव जाव' •वाउ-तेउ-याउ-पुडवीमु अण्णसयस खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ' ।
से णं तथो अणंतरे उव्वट्ठित्ता वाणारसीए नयरीए मच्छत्ताए उववज्जिहिइ
से णं तत्थ मच्छवंधिएहि वहिण तत्थेव वाणारसीए नयरीए सेट्ठिकु पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ । वोहिं, पव्वज्जा, सोहम्मे कप्पे, महाविदेहे सिज्जिभहिइ ॥

निक्खेव-पदं

४०. 'एवं खलु जंवू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुहं चउत्थस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि'

१. भारियाए (क, ख); × (ग) ।

२. वि० १।१।४७ ।

३. उववन्ने (क, ख, ग, घ); अशुद्धं प्रतिभाति ।

४. वि० १।१।७०; सं० पा०—जाव पुडवी ।

५. सं० पा०—निक्खेवो ।

६. ना० १।१।७ ।

गोयमेण वहस्सइदत्तस्स महेसरदत्तभय-वण्णग-पदं

१०. तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं गोयमे नयेय जाव' रायममममोगाहे नये-
हत्थी, आरो, पुरिसमज्जे' पुरिसं । भित्ता । तहे' पुच्छ' पुच्छभवं
वागरेइ—

वहस्सइदत्तस्स महेसरदत्तभय-वण्णग-पदं

११. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं दग्धेव जंतुदीवे दीवे मा
सव्वओभदे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे' ॥
१२. तत्थ णं सव्वओभदे नयरे जियसत्तू नामं राया होत्था ॥
१३. तस्स णं जियसत्तुस्स रण्णो महेसरदत्ते' नामं पुरोहिए होत्था—रि७
यज्जुव्वेय-सामवेय-अथव्वणवेयकुराले यावि होत्था ॥
१४. तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए जियसत्तुस्स रण्णो रज्जवलविबट्ठणट्ठयाणं
कल्लि' एगमेगं माहणदारयं, एगमेगं खत्तियदारयं, एगमेगं वइस्सदारयं, ए
सुद्धदारयं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता तेसि जीवंतगाणं चैव हिययउंडए गिण्.
गिण्हावेत्ता जियसत्तुस्स रण्णो संतिहोमं करेइ ॥
१५. तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठमीचाउदसीसु दुवे-दुवे माहण-खत्तिय-व
सुद्धे, चउण्हं मासाणं चत्तारि-चत्तारि, छण्हं मासाणं अट्ठ-अट्ठ, संवत्त
सोलस-सोलस ।
जाहे-जाहे वि य णं जियसत्तू राया परवलेणं अभिजुज्जइ', ताहे-ताहे वि य
महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठसयं माहणदारगाणं, अट्ठसयं खत्तियदारगाणं, अ
वइस्सदारगाणं, अट्ठसयं सुद्धदारगाणं पुरिसेहि गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता
जीवंतगाणं' चैव हिययउंडियाओ गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता जियसत्तुस्स र
संतिहोमं करेइ । तए णं से परवले खिप्पामेव विद्धसेइ" वा पडिसेहिज्जइ वा
१६. तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे स
पावकम्मं समज्जिणिता तीसं वाससयाइ परमाउं पालइत्ता कालमासे
किच्चा पंचमाए" पुढवीए उक्कोसेणं सत्तरससागरोवमट्ठिए नरगे उव्वण्णे

१. वि० १।२।१२-१४ ।

२. × (घ) ।

३. पू०—वि० १।२।१४-१६ ।

४. पू०—ओ० सू० १ ।

५. महिस्सरं (क) ।

६. रिद्धेद (क) ।

७. कल्लंकल्लं (क); कल्लाकल्लं (ग) ।

८. अभिजुज्जइ (ख, ग) ।

९. जीवंतगाणं (क); जीवंताणं (ख) ।

१०. विद्धंसइ (ख, ग); विद्धंसिज्जइ (क्व) ।

११. पंचमीए (ग) ।

अट्टि-मुट्टि-जाणु-कोप्परपहार-संभग-महियगतं करेइ, करेत्ता अवओडगवंधणं करेइ, करेत्ता ° एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ ॥

२८. एवं खलु गोयमा ! वहस्सइदत्ते पुरोहिए पुरा पोराणाणं^१ •दुच्चिण्णाणं दुप्प-
डिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणु-
भवमाणे ° विहरइ ॥

वहस्सइदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

२९. वहस्सइदत्ते णं भंते ! पुरोहिए^२ इओ कालगए समाणे कहिं गच्छिहिइ ? कहिं
उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! वहस्सइदत्ते णं पुरोहिए चोसट्ठि वासाइं परमाउं पालइत्ता अज्जेव
तिभागावसेसे दिवसे सूलभिण्णे^३ कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे
रयणप्पभाए पुढवीए^४ •उवकोससागरोवमट्ठिइएमु नेरइएमु नेरइत्ताए
उववज्जिहिइ ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्ठित्ता, एवं संसारो जहा पढमे जाव^५ वाउ-तेउ-आउ-
पुढवीसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो
पच्चायाइस्सइ ° ।

तओ हत्थिणाउरे नयरे मियत्ताए पच्चायाइस्सइ । से णं तत्थ वाउरिएहिं वहिए
समाणे तत्थेव हत्थिणाउरे नयरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए^६ पच्चायाहिइ । वोहिं,
सोहम्मे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

निक्खेव-पदं

३०. •एवं खलु जंवू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव^७ संपत्तणं दुहविवांगाणं
पंचमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ° ॥

१. सं० पा०—पोराणाणं जाव विहरइ ।

२. दारए (क, ख, ग, घ) ।

३. सूलभिण्णे (घ) ।

४. सं० पा०—पुढवीए संसारो तहेव पुढवी ।

५. वि० १।१।७० ।

६. पुमत्ताए (क) ।

७. सं० पा०—निक्खेवो ।

८. ना० १।१।७ ।

६. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे । परिसा निग्गया, राया निग्गमो जाव^१ परिसा पडिगया ॥

गोयमेण नंदिवद्धणस्स पुच्चभवपुच्छा-पदं

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव^१ रायमग्गमोगाढे । तहेव हत्थो, आसे, पुरिसे पासइ । तेसिं च णं पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासइ जाव^१ नर-नारीसंपरिवुडं ॥
८. तए णं तं पुरिसं रायपुरिसा चच्चरंसि तत्तंसि अयोमयंसि समजोइभूयंसि सीहासणंसि निवेसावेत्ति ।
- तयाणंतरं च णं पुरिसाणं मज्झगयं वह्हिं अयकलसेहिं तत्तेहिं समजोइभूएहिं, अप्पेगइया तंवभरिएहिं, अप्पेगइया तउयभरिएहिं, अप्पेगइया सीसगभरिएहिं, अप्पेगइया कलकलभरिएहिं, अप्पेगइया खारतेल्लभरिएहिं महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति ।
- तयाणंतरं च तत्तं अयोमयं समजोइभूयं अयोमयं संडासगं गहाय हारं पिणद्धंति । तयाणंतरं च णं अद्धहारं •पिणद्धंति तिसरियं पिणद्धंति पालवं पिणद्धंति कडिसुत्तयं पिणद्धंति पट्टं पिणद्धंति मउडं पिणद्धंति ° । चित्ता तहेव जाव^१ वागरेइ—

नंदिवद्धणस्स दुज्जोहणभव-वण्णग-पदं

९. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे सीहपुरे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे^१ ॥
१०. तत्थ णं सीहपुरे नयरे सीहरहे नामं राया होत्था ॥
११. तस्स णं सीहरहस्स रण्णो दुज्जोहणे नामं चारगपाले^१ होत्था—अहम्मिए जाव^१ दुप्पडियाणंदे ॥
१२. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स इमेयारूवे चारगभंडे होत्था—
१३. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहवे अयकुंडीओ—अप्पेगइयाओ तंवभरियाओ, अप्पेगइयाओ तउयभरियाओ, अप्पेगइयाओ सीसगभरियाओ, अप्पेगइयाओ कलकलभरियाओ, अप्पेगइयाओ खारतेल्लभरियाओ—अगणिकायंसि अइहियाओ चिट्ठंति ॥

१. वि० १।२।११ ।

२. वि० १।२।१२-१४ ।

३. वि० १।२।१४ ।

४. सं० पा०—अद्धहारं जाव पट्टं मउडं ।

५. वि० १।२।१५, १६ ।

६. पू०—ओ० सू० १ ।

७. चारगपाले (घ) ।

८. वि० १।१।४७ ।

य संडपट्टे' य पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता उत्ताणए पाडेइ, लोहदंडेणं मुहं विहाडेइ, विहाडेत्ता अप्पेगइए तत्ततं पज्जेइ, अप्पेगइए तउयं पज्जेइ, अप्पेगइए सीसगं पज्जेइ, अप्पेगइए कलकलं पज्जेइ, अप्पेगइए खारतेल्लं पज्जेइ, अप्पेगइयाणं तेणं चैव अभिसेगं करेइ ।

अप्पेगइए उत्ताणए पाडेइ, पाडेत्ता आसमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए हत्थिमुत्तं पज्जेइ, *अप्पेगइए उट्टमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए गोमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए महिसमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए अयमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए ° एलमुत्तं पज्जेइ ।

अप्पेगइए हेट्ठामुहए पाडेइ छडछडस्स' वम्मावेइ, वम्मावेत्ता अप्पेगइए तेणं चैव ओवीलं दलयइ । अप्पेगइए हत्थंडुयाइ' वंधावेइ, अप्पेगइए पायंडुए वंधावेइ, अप्पेगइए हडिवंधणं करेइ, अप्पेगइए नियलवंधणं करेइ, अप्पेगइए संकोडिय-मोडियए' करेइ, अप्पेगइए संकलवंधणं करेइ, अप्पेगइए हत्थच्छिण्णए करेइ, *अप्पेगइए पायच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए नक्कच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए उट्टच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए जिह्वच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए सीसच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए ° सत्थोवाडियए करेइ ।

अप्पेगइए वेणुलयाहि य', *अप्पेगइए वेत्तलयाहि य, अप्पेगइए चिच्चालयाहि य, अप्पेगइए छियाहि य, अप्पेगइए कसाहि य, अप्पेगइए ° वायरासीहि य हणावेइ ।

अप्पेगइए उत्ताणए कारवेइ, कारवेत्ता उरे सिलं' दलावेइ, दलावेत्ता तओ लउडं' छुहावेइ, छुहावेत्ता पुरिसेहिं उक्कंपावेइ" ।

अप्पेगइए तंतीहि य", *अप्पेगइए वरत्ताहि य, अप्पेगइए वागरज्जूहि य, अप्पेगइए वालय ° सुत्तरज्जूहि य हत्थेसु य पाएसु य वंधावेइ, अगडंसि 'ओचूलं वोलगं'" पज्जेइ" ।

अप्पेगइए असिपत्तेहि य", *अप्पेगइए करपत्तेहि य, अप्पेगइए खुरपत्तेहि य अप्पेगइए ° कलंवचीरपत्तेहि य पच्छावेइ, पच्छावेत्ता खारतेल्लेणं अण्भंगावेइ ।

१. खंडपट्टे (क, ख, ग, घ) ।

२. सं० पा०—पज्जेइ जाव एलमुत्तं ।

३. थलथलस्स (क, घ) ।

४. हत्थंडु° (ख); हत्थंड° (ख); हत्थियं (घ) ।

५. मोडिए (वृ) ।

६. सं० पा०—करेइ जाव सत्थोवाडियए ।

७. सं० पा०—वेणुलयाहि य जाव वायरासीहि ।

८. सिर (क) ।

९. लउलं (क, घ); नउलं (ख) ।

१०. ओकंपावेइ (क) ।

११. सं० पा०—तंतीहि य जाव सुत्तरज्जूहि ।

१२. ओलंवालगं (क); उचूलंपालगं (ख); उचूलंवालगं (ग) उचूलंपाणग (घ); ओचूल-वालगं (ह० वृ) ।

१३. पाययति खादयतीत्यादि लौकिकीभाषा कारयतीति तु भावार्थः (वृ) ।

१४. सं० पा०—असिपत्तेहि य जाव कलंवचीर-पत्तेहि ।

२८. तए णं से नंदिवद्धणे' कुमारे पंचघाईपरिवुडे जाव' परिवड्ढइ ॥
२९. तए णं से नंदिवद्धणे' कुमारे उम्मुकवालभावे' •विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वण-गमणुप्पत्ते° विहरइ जाव जुवराया जाए यावि होत्था ॥
३०. तए णं से नंदिवद्धणे' कुमारे रज्जे य जाव' अंतेउरे य मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे इच्छइ सिरिदामं रायं जीवियाओ ववरोवेत्ता सयमेव रज्जसिरि कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए ॥
३१. तए णं से नंदिवद्धणे' कुमारे सिरिदामस्स रण्णो बहूणि अंतराणि य छिद्दाणि य विरहाणि य पडिजागरमाणे विहरइ ॥
३२. तए णं से नंदिवद्धणे' कुमारे सिरिदामस्स रण्णो अंतरं अलभमाणे अण्णया कयाइ चित्तं अलंकारियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं देवानुप्पिया ! सिरिदामस्स रण्णो सव्वट्ठाणेसु य सव्वभूमियासु य अंतेउरे य दिण्णवियारे सिरिदामस्स रण्णो अभिक्खणं-अभिक्खणं अलंकारियं कम्मं करेमाणे विहरसि, तं णं तुमं देवानुप्पिया ! सिरिदामस्स रण्णो अलंकारियं कम्मं करेमाणे गीवाए खुरं निवेसेहि । तो' णं अहं तुमं अद्धरज्जियं करिस्सामि । तुमं अम्हेहिं सद्धि उरालाई भोगभोगाई भुंजमाणे विहरिस्ससि ॥
३३. तए णं से चित्ते अलंकारिए नंदिवद्धणस्स'कुमारस्स वयणं एयमट्ठं पडिसुणेइ ॥
३४. तए णं तस्स चित्तस्स अलंकारियस्स इमेयारूवे" •अज्झत्थिए चित्तिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था जइ णं मम सिरिदामे राया एयमट्ठं आगमेइ, तए णं मम न नज्जइ केणइ असुभेणं कु-मारेणं मारिस्सइ त्ति कट्ठु भीए तत्थे तसिए उव्विगे संजायभए जेणेव सिरिदामे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरिदामं-रायं रहस्सियगं करयल"•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु° एवं वयासी—एवं खलु सामी ! नंदिवद्धणे" कुमारे रज्जे य जाव" अंतेउरे मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे इच्छइ तुब्भे जीवियाओ ववरोवेत्ता सयमेव रज्जसिरि कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए ॥
३५. तए णं से सिरिदामे राया चित्तस्स अलंकारियस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म

१. नंदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।

२. वि० १।२।४६ ।

३. नंदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।

४. सं० पा०—उम्मुकवालभावे जाव विहरइ ।

५. नंदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।

६. वि० १।१।५७ ।

७,८. नंदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।

६. ता (ख, घ); तं (ग) ।

१०. नंदिसेणस्स (क, ख, ग घ) ।

११. सं० पा०—इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।

१२. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

१३. नंदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।

१४. वि० १।१।५७ ।

सत्तमं अज्भयणं

उंवरदत्ते

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते' ! °समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुहविवागाणं छट्ठस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स णं भंते ! अज्भयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंवू-अणगारं एवं वयासी °—एवं खलु जंवू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं पाडलिसंडे नयरे । 'वणसंडे उज्जाणे' । 'उंवरदत्ते जक्खे' ॥
३. तत्थ णं पाडलिसंडे नयरे सिद्धत्थे राया ॥
४. तत्थ णं पाडलिसंडे नयरे सागरदत्ते सत्थवाहे होत्था—अड्ढे । गंगदत्ता भारिया ॥
५. तस्स णं सागरदत्तस्स पुत्ते गंगदत्ताए भारियाए अत्तए उंवरदत्ते नामं दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरे' ॥
६. तेणं कालेणं तेणं समएणं समोसरणं जाव' परिसा पडिगया ॥

गोयमेण उंवरदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं गोयमे तहेव' जेणेव पाडलिसंडे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता पाडलिसंडं नयरं पुरत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुप्प-

१. सं० पा०—सत्तमस्स उक्खेवओ ।

२. ना० १।१।७ ।

३. वणसंडं उज्जाणं (क, ख, ग) ।

४. उंवरदत्तो जक्खो (क) ।

५. पू०—ओ० सू० १४३ ।

६. वि०—१।२।११ ।

७. पू०—वि० १।२।१२-१४ ।

११. तए णं भगवओ गोयमस्स तं पुरिसं पासित्ता ० इमेयास्सुवे अज्झत्थिए चितिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—अहो णं इमे पुरिसे पुरा पोराणाणं •दुच्चिण्णाणं दुप्पडिवकंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्ति-विसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ । न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया वा । पच्चक्खं खलु अयं पुरिसे निरयपडिरुवियं वेयणं वेएइ त्ति कट्ठु जाव' समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ० एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते ! छट्ठक्खमणपारणगंसि जाव' रियंते जेणेव पाडलिसंडे नयरे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता पाडलिसंडं नयरं पुरत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुपविट्ठे । तत्थ णं एगं पुरिसं पासामि कच्छुल्लं जाव' देहंवलियाए वित्ति कप्पेमाणं । 'तए णं' अहं दोच्चछट्ठक्खमणपारणगंसि दाहिणिल्लेणं दुवारेणं तहेव । तच्चछट्ठक्खमणपारणगंसि पच्चत्थिमिल्लेणं दुवारेणं तहेव । तए णं अहं चोत्थि-छट्ठक्खमणपारणगंसि उत्तरदुवारेणं अणुप्पविसामि, तं चेव पुरिसं पासामि कच्छुल्लं जाव' देहंवलियाए वित्ति कप्पेमाण' । चित्ता ममं ॥

१२. •से णं भंते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसि ? किं नामए वा किं गोत्ते वा ? कयरंसि गामसि वा नयरंसि वा ? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, केसि वा पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिवकंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ ?

उंबरदत्तस्स धण्णंतरीभव-वण्णग-पदं

१३. गोयमाइ ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी ०—एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विजयपुरे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे ॥

१४. तत्थ णं विजयपुरे नयरे कणगरहे नामं राया होत्था ॥

१५. तस्स णं कणगरहस्स रण्णो धण्णंतरी नामं वेज्जे होत्था—अट्ठंगाउव्वेयपाडए [तं जहा—१. कुमारभिच्चं २. सालागे ३. सल्लहत्ते ४. कायतिगिच्छा ५. जंगोले ६. भूयविज्जे ७. रसायणे ८. वाजीकरणे]६ सिवहत्थे सुहहत्थे लहुहत्थे ॥

१६. तए णं से धण्णंतरी वेज्जे विजयपुरे नयरे कणगरहस्स रण्णो अंतउरे य, अण्णेसि च वहुणं राईसर-तलवर-माडंविय-कोडुंविय-इव्व-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहाणं, अण्णेसि च वहुणं दुव्वलाण य गिलाणाण य वाहियाण य रोगियाण य सणाहाण

१. सं० पा०—पोराणाणं जाव एवं ।

२. वि० १।२।१५ ।

३. वि० १।२।१३, १४ ।

४. वि० १।७।७ ।

५. तं (क, घ) ।

६. कप्पेमाणे विहरइ (क, ख, ग, घ) ।

७. सं० पा०—पुव्वभवपुच्छा वागरेइ ।

८. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।

मच्छकंटयं गलाओ नीहरित्तए, तस्स णं सोरियदत्ते विट्ठं अत्थसंपगामं दलयइ ॥

२२. तए णं ते कोटुंविद्यपुत्ता जाव' उग्घोसंति ॥

२३. तए णं ते बह्वे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य इमं एयास्स उग्घोसणं' निरामेत्ता, निरामेत्ता जेणेव सोरिय-
दत्तस्स गेहे जेणेव सोरियदत्ते मच्छंधे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छत्ता बहूहि
उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पारिणामियाहि य बुद्धीहि परि-
णामेमाणा-परिणामेमाणा वमणेहि य छट्ठणेहि य ओवीलणेहि य कवलग्गाहेहि य
सल्लुद्धरणेहि य विसल्लकरणेहि य इच्छंति सोरियदत्तरस मच्छंधस्स मच्छकंटयं
गलाओ नीहरित्तए, नो संचाएंति नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा ॥

२४. तए णं ते बह्वे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य
तेगिच्छियपुत्ता य जाहे नो संचाएंति सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स मच्छकंटयं गलाओ
नीहरित्तए, ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसं पाउवभूया तामेव दिसं
पडिगया' ।

२५. तए णं से सोरियदत्ते मच्छंधे वेज्जपडियाइक्खिए परियारगपरिचत्ते निव्वि-
ण्णोसहभेसज्जे तेणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे सुक्के भुक्खे जाव' किमियकवले य
वममाणे विहरइ ॥

२६. एवं खलु गोयमा ! सोरियदत्ते पुरा पोरानाणं' दुच्चिण्णाणं दुप्पडिकंताणं
असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावणं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणं
विहरइ ॥

सोरियदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

२७. सोरियदत्ते णं भंते ! मच्छंधे इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ?
कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! सत्तरि वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे
रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ । संसारो तहेव' ।
हत्थिणाउरे नयरे मच्छत्ताए उववज्जिहिइ' । से णं तओ मच्छिहं जीवियाओ

१. वि० १।८।२१ ।

२. उग्घोसणं उग्घोसेज्जतं (ख, घ) ।

३. मच्छंधे (क, ख, ग, घ) ।

४. परिगया (क) ।

५. वि० १।८।८ ।

६. सं० पा०—पोरानाणं जाव विहरइ ।

७. वि० १।१।७० । तहेव जाव पुढवी (क) ।

८. उववण्णे (क, ख, ग, घ) । भाविप्रद-
प्रसंगत्वेन असौ पाठः असंगतः; प्रतिभाति ।

नवमं अज्भयणं

देवदत्ता

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते । 'समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुहविवागाणं अट्टमस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स णं भंते ! अज्भयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंवू-अणगारं एवं वयासी०—एवं खलु जंवू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रोहीडए' नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे । पुढवीवडेंसए उज्जाणे । धरणी जवखो । वेसमणदत्ते' राया । सिरी देवी । पूसनंदी कुमारे जुवराया ॥
३. तत्थ णं रोहीडए नयरे दत्ते नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे । कण्हसिरी भारिया ॥
४. तस्स णं दत्तस्स धूया कण्हसिरीए अत्तया देवदत्ता नामं दारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा' ॥
५. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव' परिसा पडिगया ॥

देवदत्ताए पुव्वभवपुच्छा-पदं

६. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेद्धे अंतेवासी छट्ठ-क्खमणपारणगंसि तहेव जाव' रायमग्गमोगाढे हत्थी आसे पुरिसे पासइ । तेसि
-
- | | |
|---|--------------------------------------|
| १. सं० पा० — उक्खेवओ नवमस्स । | इति पाठोस्ति । वि० १।४।१० तथा |
| २. ना० १।१।७ । | १।४।३६ सूत्रानुसारेण पाठद्वयोमिश्रणं |
| ३. रोहीतके (क, ग) सर्वत्र । | संभाव्यते । अस्माभिरत्र एको गृहीतः । |
| ४. वेसमणदत्तो (ख, घ) । | ६. वि० १।४।११ । |
| ५. सर्वान् प्रतिपु 'अहीण जाव उक्किट्टसरीरा' | ७. वि० १।२।१३, १४ । |

गढिए अज्भोववण्णे अम्हं धूयाओ नो आढाड नो परिजाणइ, अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे विहरइ । तं मेयं खलु अम्हं मामं देवि अगियओगेण वा विसप्पओगेण वा सत्थप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवितए—एवं संपेहेति, संपेहेत्ता सामाए देवोए अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणीओ-पडिजागरमाणीओ विहरंति ॥

१६. तए णं सा सामा देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा सवणयाए—“एवं खलु ममं [एगूणगाणं ?] पंचण्हं सवत्तीसयाणं [एगूणाइं ?] पंचमाइसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं सवणयाए अणमण्णं एवं वयासी—एवं खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए जाव” पडिजागरमाणीओ विहरंति” तं न नज्जइ णं ममं केणइ कु-मारेणं मारिस्संती ति कट्ठु भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया जेणेव कोवघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ओहय”मणसंकप्पा करतलपल्हत्थ-मुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया० भियाइ ॥
१७. तए णं से सीहसेणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव कोवघरे, जेणेव सामा देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामं देवि ओहय”मणसंकप्पं करतलपल्हत्थमुहिं अट्टज्झाणोवगयं भूमिगयदिट्ठीयं भियायमाणि० पासइ, पासित्ता एवं वयासी किं णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहय”मणसंकप्पा करतल-पल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया० भियासि ?
१८. तए णं सा सामा देवी सीहसेणेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा उप्फेणउप्फेणियं सीहसेणं रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! ममं एगूणगाणं पंच सवत्तीसयाणं एगूणाइं पंच माइसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं सवणयाए अणमण्णं सद्वावेत्ता एवं वयासी—“एवं खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्भोववण्णे अम्हं धूयाओ नो आढाड नो परिजाणइ जाव” अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणीओ-पडिजागरमाणीओ विहरंति ।” तं न नज्जइ णं सामी ! ममं केणइ कु-मारेणं मारिस्संती ति कट्ठु भीया जाव” भियामि ॥

१. विरहाणि (क, ग, घ) ।

२. सवणयाए एवं वयासी (क, ग, घ); समाणी एवं वयासी (ख); अत्र श्रवणप्रसङ्गोऽस्ति, न तु कथनस्य । तेन ‘एवं वयासी’ इति पाठः प्रकृतो नास्ति, सम्भवतो लिपिदोषेण जातः ।

३. वि० १।६।१५ ।

४. सं० पा०—ओहय जाव भियाइ ।

५. सं० पा०—ओहय जाव पासइ ।

६. सं० पा०—ओहय जाव भियासि ।

७. उप्फेणाउप्फेणियं (क) ।

८. समाणाइं (ख, ग); समाणाइं सवणयाए (घ) ।

९. सद्वावेत्ति २ (क, ख, ग, घ) ।

१०. वि० १।६।१५ ।

११. वि० १।६।१६ ।

२६. तए णं तासि एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं 'एगूणाइं पंच माइसयाइं' सव्वालंकारविभूसियाइं तं विउल असणं पाणं साइमं साइमं गुरं च महं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसणं च आसाएमाणाइं यासाएमाणाइं परिभाएमाणाइं परिभुजेमाणाइं गंधवेहि य नाइएहि य उवगीयमाणाइं - उवगीयमाणाइं विहरति ॥
२७. तए णं से सीहसेणे राया अद्धरत्तकालसमयसि वहुहि पुरिसेहि सद्धि संपरिवुडे जेणेव कूडागारसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छता कूडागारसालाए दुवाराइं पिहेइ, पिहेत्ता कूडागारसालाए सव्वओ समंता अगणिकायं दलयइ ॥
२८. तए णं तासि एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणगाइं पंच माइसयाइं सीहसेणेणं रण्णा आलीवियाइं समाणाइं रोयमाणाइं कंदमाणाइं विलवमाणाइं अत्ताणाइं असरणाइं कालधम्मणा संजुत्ताइं ॥
२९. तए णं से सीहसेणे राया एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुवहुं *पावं कम्मं कलिकलुसं० समज्जिणित्ता चोत्तीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उवकोसेणं वावीससागरोवमट्ठिइएमु नेरइएमु नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

देवत्ताए वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

३०. से णं तओ अणंतरं उव्वट्ठित्ता इहेव रोहीडए' नयरे दत्तस्स सत्यवाहस्स कण्हसिरीए भारियाए कुच्छिसि दारियत्ताए उववण्णे ॥
३१. तए णं सा कण्हसिरी नवण्हं मासाणं' *बहुपडिपुण्णाणं० दारियं पयाया—सूमालं सुखवं ॥
३२. तए णं तीसे दारियाए अम्मापियरो निव्वत्तवारसाहियाए विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता जाव' मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-परियणस्स पुरओ नामधेज्जं करेति—होउ णं दारिया देवदत्ता नामेणं ॥
३३. तए णं सा देवदत्ता दारिया पंचधाईपरिगहिया जाव' परिवड्डइ ॥
३४. तए णं सा देवदत्ता दारिया उम्मुक्कवालभावा' *विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वण-गमणुप्पत्ता रूवेण जोव्वणेण लावण्णेण य० अईव-अईव उविकट्ठा उविकट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ॥

१. पंच माइसयाइं जाव' (क, ख, ग, घ) ।

२. सं० पा०—सुवहुं जाव समज्जिणित्ता ।

३. रोहीतए (क, ख, ग) ।

४. सं० पा०—मासाणं जाव दारियं ।

५. वि० १।३।३२ ।

६. वि० १।२।४६ ।

७. सं० पा०—उम्मुक्कवालभावा जोव्वणेण रूवेण लावण्णेण य जाव अईव ।

दसमं अज्भयणं

अंजु

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! *समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुहविवागाणं नवमस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पणत्ते, दसमस्स णं भंते ! अज्भयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पणत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंवू-अणगारं एवं वयासी° —एवं खलु जंवू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वड्डमाणपुरे नामं नयरे होत्था । विजयवड्डमाणे उज्जाणे । माणिभद्दे जक्खे । विजयमित्ते राया ॥
३. तत्थ णं धणदेवे नामं सत्थवाहे होत्था—अड्ढे । पियंगू नामं भारिया । अंज दारिया जाव' उक्किट्टसरीरा । समोसरणं परिसा जाव' गया ॥

अंजुए पुव्वभवपुच्छा-पदं

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव' अडमाणे विजयमित्तस्स रण्णे गिहस्स असोगवणियाए अट्ठरसामंतेणं वीईवयमाणे पासइ एगं इत्थियं—सुक्कं भुक्खं निम्मंसं किडिकिडियाभूयं अट्ठिचम्मावणद्धं नीलसाडगनियत्थं^१ कट्ठाइं कलुणाइं वीसराइं^२ कूवमाणिं पासइ, पासित्ता चित्ता तहेव जाव' एवं वयासी—सा णं भंते ! इत्थिया पुव्वभवे का आसि^३ ? वागरणं ॥

१. सं० पा०—दसमस्स उक्खेवओ ।

२. ना० १।१।७ ।

३. वि० १।४।३६ ।

४. वि० १।४।११ ।

५. वि० १।२।१२-१४ ।

६. °नियच्छं (ख) ।

७. विस्सराइं (ख, घ); विसराइं (ग);

८. वि० १।२।१५ ।

९. पू०—वि० १।२।१६ ।

वीओ सुयक्खंधो

पढमं अज्झयणं

सुवाहू

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे, गुणसिए चेइए । सुहम्मे समोसडे । जंवू जाव' पज्जुवासमाणे^१ एवं वयासी—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुहविवागाणं अयमद्वे पणत्ते, सुहविवागाणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं के अद्वे पणत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंवू-अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंवू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पणत्ता, तं जहा—

सुवाहू भद्दंदी य, सुजाए य सुवासवे ।

तहेव जिणदासे य, घणवई य महव्वले ॥

भद्दंदी महच्चंदे, वरदत्ते 'तहेव य' ॥ १॥

३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पणत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स सुहविवागाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं के अद्वे पणत्ते ?

१. वि० १।१।३, ४ ।

२. पज्जुवासइ (क, ख, ग, घ) ।

३. ना० १।१।७ ।

४. ना० १।१।७ ।

५. × (क, ख, ग, घ); मुद्रितप्रत्यनुसार

गृहीतीयं पाठः ।

६. ना० १।१।७ ।

१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसहे । परिमा निग्गया । अदीणसत्तु जहा कूणिए' तथा निग्गए । गुवाह वि जहा जमानी तथा र्हेणं निग्गए जाव' धम्मो कहिओ । रागा परिमा गया ॥
१३. तए णं से सुवाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ जाव' एवं वयासी —सट्ठमि णं भंते ! निग्गयं पावयणं । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए वद्धे राईमर' • तलवर-माडविय-कोडुविय-इव्व-सेट्ठि-मेणावट-सत्थवाहणभियओ मुंटे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयंति ° नो खलु अहं तथा संचाएमि पव्वइत्ताए, अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिट्ठिधम्मं पडिवज्जामि । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेह ॥
१४. तए णं से सुवाहू समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिट्ठिधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता तमेव चाउघंठं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता जामेव दिसं पाउव्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥

सुवाहुस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

१५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई जाव' एवं वयासी—अहो णं भंते ! सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते कंतरूवे पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे सुभगे सुभगरूवे पियदंसणे सुरूवे । बहुजणस्स वि य णं भंते ! सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते कंतरूवे पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे सुभगे सुभगरूवे पियदंसणे सुरूवे । साहुजणस्स वि य णं भंते ! सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे • कंते कंतरूवे पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे सुभगे सुभगरूवे पियदंसणे ° सुरूवे । सुवाहुणा भंते ! कुमारें इमा' एयारूवा उराला माणुसिड्ढी' किण्णा लद्धा ? किण्णा पत्ता ? किण्णा अभिसमण्णागया ? के वा एस आसि पुव्वभवे" ? • किं

१. समोसरणं (क, ख, ग, घ) ।

२. ओ० सू० ५५-६६ ।

३. अ० ६१५८-१६३ ।

४. ना० ११११०१ ।

५. पू०—राय० सू० ६६५ ।

६. सं० पा०—राईसर जाव नो खलु अहं ।

७. वि० १११२४, २५ ।

८. सं० पा०—इट्ठरूवे जाव सुरूवे ।

९. इमे (क, ख) ।

१०. माणुस्सिड्ढी (ख); माणुस्सरिड्ढी (घ) ।

११. सं० पा०—पुव्वभवे जाव अभिसमण्णागया ।

२३. तए णं तस्स सुमुहस्स' गाहावड्ढं मेण पणमुद्वेण 'दायगसुद्वेण दानगमुद्वेण' ति विहेणं तिकरणमुद्वेणं गदसं अणगारं पडिवाभिणं ममानं संसारे परित्तीकणं, मणुस्साउए निवडे, गेहसि ग मे इमाद पन विव्वाड पाउव्वुगाडं, [तं जहा— वसुहारा बुद्धा, दसद्वयणं कुमुमे निवाविने, चेलुवणे कए, आहवाओ देवदुदु-भीओ, अतरा वि य णं आगासास 'अहो यणे अहो यणे' दुद्वे म'] हत्थिणाउरे सिधाडगं-० तिग-चउवक-चउवर-नउम्मुह-महापह-० पहेसु बहुजणो अणमणस्स एवं आइक्खइ एवं भासइ एवं पणवेड एवं पणवेड-० भण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावड्ढं ० पुण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावड्ढं एवं—कयत्थे णं कयलक्खणे ण सुलद्धे णं सुमुहस्स गाहावड्ढस्स जम्मजीवियफले, जस्स णं इमा एयाक्खा उराला माणुस्सिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ० ॥
- तं धण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावड्ढं पुण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावड्ढं एवं—कयत्थे णं कयलक्खणे णं सुलद्धे णं सुमुहस्स गाहावड्ढस्स जम्म-जीवियफले, जस्स णं इमा एयाक्खा उराला माणुस्सिद्धी लद्धा पत्ता अभि-समण्णागया ॥
२४. तए णं से सुमुहे गाहावड्ढं वहुइ वाससयाइ आउयं पालेइ, पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थिसीसे नयरे अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीए देवीए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥
२५. तए णं सा धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी-ओहीरमाणी तहेव सीहं पासइ, सेसं तं चेव जाव' उप्पि पासाए विहरइ । तं एवं खलु गोयमा ! सुवाहुणा इमा एयाक्खा माणुस्सिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ॥
२६. पभू णं भंते ! सुवाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? हंता पभू ॥
२७. तए णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
२८. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ हत्थिसीसाओ नयराओ पुप्फकरंडयउज्जाणाओ कयवणमालपियजक्खाययणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

१. 'तस्स सुमुहस्स' ति विभक्तिपरिणामात्

'तेन सुमुहेने' ति द्रष्टव्यम् (वृ) ।

२. दायगसुद्वेणं पडिगासुद्वेणं (घ) ।

३. परित्तीकणं (घ) ।

४. निवाडिणं (क्व) ।

५. अहोदाणं २ (घ) ।

६. कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।

७. सं० पा०—सिधाडग जाव पहेसु ।

८. सं० पा०—गाहावड्ढं जाव तं धण्णे ।

९. वि० २।१।६-११ ।

अज्भक्तियं जाव' वियाणित्ता पुव्वाणुपुट्ठिं • नरमाणे गामाणुगामं°
दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीरे नयरे जेणेव पुप्फकरंउयउज्जाणे जेणेव कयवण-
मालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरुवं
ओगहं ओगिणित्ता संजमेणं तवरा अण्णाणं भावेमाणे विहरइ । परिसा राया
निग्गए ॥

३३. तए णं तस्स सुवाहुस्स कुमारस्स तं महया° जणसाइं वा जाव' जणसण्णियायं
वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारुवे अज्भक्तियए चितिए कप्पिए
पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं जहा जमाली तहा° निग्गओ ।
धम्मो कहिओ । परिसा राया पडिगया ॥

३४. तए णं से सुवाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा
निसम्म हट्ठुट्ठे जहा मेहो तहा अम्मापियरो आपुच्छइ । निक्खमणाभिसेओ
तहेव जाव' अणगारे जाए ईरियासमिए' जाव' गुत्तवंभयारी ॥

सुवाहुकुमारस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

३५. तए णं से सुवाहू अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारुवाणं थेराणं
अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस्स अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहि चउत्थ-
छट्ठमतवोवहारणेहि अण्णाणं भावेत्ता, बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता,
मासियाए सलेहणाए अण्णाणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेएत्ता
आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए
उववण्णे ॥

३६. से णं तओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता
माणुस्सं विग्गहं लभिहिइ, केवलं वोहि बुज्झिहिइ, तहारुवाणं थेराणं अंतिए
मुंडे भवित्ता° अगाराओ अणगारियं° पव्वइस्सइ ।

से णं तत्थ बहूइं वासाइं सामण्णं पाउणिहिइ । आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते
कालगए सणकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिइ° ।

से णं ताओ माणुस्सं, पव्वज्जा, वंभलोए । माणुस्सं, महासुक्के । माणुस्सं,
आणए । माणुस्सं, आरणे । माणुस्सं सव्वट्ठसिद्धे ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्ठित्ता महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं भवंति अट्ठाइं

१. वि० २।१।३१ ।

२. सं० पा०—पुव्वाणुपुट्ठिं जाव दूइज्जमाणे ।

३. सं० पा०—तं महया जहा पढमं तहा ।

४. भ० ६।१५८ ।

५. ना० १।१।१०-१-१५१ ।

६. रियासमिए (क) ।

७. वि० १।१।७० ।

८. अत्ताणं (ख) ।

९. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइस्सइ ।

१०. उववण्णे (क, ख, ग, घ) ।

वीयं अज्भयणं

भट्टनंदी

१. वितियस्स उक्खेवओ ।

एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं उअभपुरे नयरे । थूभकरंडग उज्जाणं । धणो जवखो । धणावहो राया । सरस्सई देवी ।

सुमिणंदसणं कहणा, जम्मं बालत्तणं कलाधो य ।

जोव्वणं पाणिग्गहणं, दाओ पासाय भोगा य ॥१॥

जहा सुवाहुस्स, नवरं—भट्टनंदी कुमारे । सिरिदेवीपामोक्खा णं पंचसया । सामीसमोसरणं । सावगधम्मं । पुव्वभवपुच्छा । महाविदेहे वासे पुंडरीगिणी^१ नयरी । विजए कुमारे । जुगवाहू तित्थयरे^२ पडिलाभिए । मणुस्साउए निवद्धे । इह उप्पण्णे । सेसं जहा सुवाहुस्स जाव^३ महाविदेहे वासे सिज्झिह्हि^४ वुज्झिह्हि^५ मुच्चिह्हि^६ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ । निकखेवओ ॥

तच्चं अज्भयणं

सुजाए

१. तच्चस्स उक्खेवओ ।

वीरपुरं नयरं । मणोरमं उज्जाणं । वीरकण्हमित्ते^४ राया । सिरि देवी । सुजाए कुमारे । वलसिरिपामोक्खा पंचसया । सामीसमोसरणं । पुव्वभवपुच्छा । उसुयारे नयरे । उअभदत्ते गाहावई । पुप्फदंते अणगारे पडिलाभिए । मणुस्साउए निवद्धे । इहं उप्पण्णे जाव^३ महाविदेहे वासे सिज्झिह्हि^४ वुज्झिह्हि^५ मुच्चिह्हि^६ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ । निकखेवओ ॥

१. पुंडरिगिणी (क); पुंडरिगिणी (घ) ।

२. तित्थंकरे (ख) ।

३. वि० २।१।६-३६ ।

४. वीरकण्ह० (क) ।

५. वि० २।१।६-३६ ।

सत्तमं अज्झयणं

महव्वले

१. सत्तमस्स उक्खेवओ ।

महापुरं नयरं । रत्तासोगं उज्जाणं । रत्तपाओ जक्खो । वले राया । सुभदा देवी । महव्वले कुमारे । रत्तवईपामोक्खा पंचसया । तित्थयरागमणं जाव पुव्वभवो । मणिपुरं नयर । नागदत्ते गाहावई । इंदपुत्ते अणगारे पडिलाभिए जाव' सिद्धे ॥

अट्ठमं अज्झयणं

भद्दं दी

१. अट्ठमस्स उक्खेवओ ।

सुघोसं नयरं । देवरमणं उज्जाणं । वीरसेणो' जक्खो । अज्जुणो राया । तत्तवई देवी । भद्दं दी कुमारे । सिरिदेवीपामोक्खा पंचसया जाव पुव्वभवे । महाघोसे नयरे । धम्मघोसे गाहावई । धम्मसीहे अणगारे पडिलाभिए जाव' सिद्धे ॥

नवमं अज्झयणं

महच्चंदे

१. नवमस्स उक्खेवओ ।

चंपा नयरी । पुण्णभद्दे उज्जाणे । पुण्णभद्दे जक्खे । दत्ते राया । रत्तवती देवी । महच्चंदे कुमारे जुवराया । सिरिकंतापामोक्खा णं पंचसया जाव पुव्वभवो । तिगिछी नयरी । जियसत्तू राया । धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव' सिद्धे ॥

१. वि० २।१।६-३३ ।

२. वेरसेणो (क) ।

३. वि० २।१।६-३६ ।

४. वि० २।१।६-३६ ।



अणंते जाव समुष्णणे	११८२२५	नृति
अणंते णाणे समुष्णणे जाव गिदा	११६१३२४	११५८४
अणगारवण्णओ भाणियव्वो	११११६४	ओ० सू० १६४
अणगारे जाव इहमागए	११५१६८	ओ० सू० ५२
अणगारे जाव पज्जवासमाणे	२११४	१११७
अणिट्ठतराए चेव जाव गंधेणं	११२२१३	१८४२
अणिट्ठा जाव अमणामा	११६१६७	११४६
अणिट्ठा जाव दंसणं	११४१४३	११४३६
अणिट्ठा जाव परिभोगं	११४१५०	११४३६
अणुत्तरे पुणरवि तं चेव जाव तओ		
पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवओ		१११११२
जाव पव्वइस्ससि	१११११३	१८२०५
अण्णं च तं विउलं	१८२०७	१५५३
अणमण्णं जाव समणे	११३१३८	ओ० सू० ६८
अत्यत्थिया जाव ताहि इट्ठाहि जाव अणवरयं	११११४३	११६१२१
अत्थामा जाव अधारणिज्ज०	११६१२५३	११११२२
अपत्थिय जाव परिवज्जिए	१८११२८	उवा० १२१२२
अपत्थियपत्थिए जाव वज्जिए	१५११२२	१५११२२
अपत्थियपत्थिया जाव परिवज्जिया	१८१७४	११६१८
अपुण्णाए जाव निबोलियाए	११६१२५	११११०४
अवभणुण्णाए जाव पव्वइत्तए	११२१३६	१५११२४
अवभुज्जएणं जाव विहरित्तए	१५१११८; ११६१२८	१५१६६
अवभुट्ठेसि जाव वंदसि	१५१६७	११११६१
अभिसिचइ जाव पडिगए	११६१२८०	१११११७-११६
अभिसिचइ जाव राया जाए विहरइ	१५१६३-६५	११२१७
अमच्चे जाव तुसिणीए	११२११५	११११०७
अम्मयाओ जाव पव्वइत्तए	११११०६	१११३३
अम्मयाओ जाव सुलद्धे	११११२	११४८
अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१५१६५	१८१६४
अरहण्णग जाव वाणियगाणं	१८१६७	१८१६६
अरहण्णग संज्जत्तगा	१८१८४	११६१३३४
अरिट्ठेनेमि जाव गमित्तए	११६१३२०	११११०६
अरिट्ठेनेमिस्स जाव पव्वइत्तए	१५१२०	११६१६१
अवंगुणेइ जाव पडिगए	११६१६५	

आएहि य जाव परिणामेमाणा	११८१०४	११८१६८
आउकखएणं जाव चइत्ता	११६११२३	१११२१२
आढंति जाव पज्जुवासंति	११६११८८	११६११८६
आढाइ जाव तुसिणीए	१११२१७;१११६१५	११८१७०
आढाइ जाव तुसिणीया	२११३६	११८१७०
आढाइ जाव नो पज्जुवासइ	११६११६०	११६११८६
आढाइ जाव भोगं	११४१६१	११४१६०
आढाइ जाव संचिट्ठइ	१११६३०	११८१७०
आढायंति °	११११५५	११११५४
आढायंति जाव संलवेंति	११११५४	११११५४
आपुच्छइ जाव पडिगए	११६१२००	११११६१
आपुच्छणिज्जं जाव वड्ढावियं	११७४२	११७१६
आपुच्छामि जाव पन्वयामि	१११२३८	११११०१
आपुच्छामि तएणं जाव पन्वयामि	१११६१२	११११०१
आरोगतुट्ठी जाव दिट्ठे	१११२६	१११२०
आलंवे वा जाव भविस्सइ	११६१३१२	११८१८६
आलिघरएसु य जाव कुसुमघरएसु	१३११६	वृत्ति
आलोएहि जाव पडिबज्जाहि	११६१११५	वृत्ति
आसयंति वा जाव तुयट्ठंति	११७१२२	११७१२२
आसाएइ जाव अणुपरियट्ठिस्सइ	११६१४२	११६४४
आसाएमाणीओ जाव परिभुंजेमाणीओ	१२११७	१११८१
आसाएमाणी जाव विहरइ	१२११४	१११८१
आसाएमाणे जाव विहरइ	११२१२२	१११८१
आसायणिज्जं जाव सव्विदिय०	११२१२०	११२१४
आसायणिज्जे जाव सव्विदिय०	११२११६	११२१४
आसिय जाव गंधवट्ठिभूयं	११५१६७	११३३३
आसिय जाव परिगीयं	१११७६	वृत्ति
आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा	११६१२८	११११६१
आसुरुत्ते जाव तिवलियं	५१८१५६	११८१०६
आसुरुत्ते जाव तिवलियं एवं	११६१२८६	११८१०६
आसुरुत्ते जाव पउमनाभं	११६१२८०	११८१०६
आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे	११५१२२	११११६१
आहारे वा जाव पन्वयामो	११८१३३	११५१६०
आहेवच्चं जाव अभिरमेत्था	११११६७	११११५७
आहेवच्चं जाव पालेमाणे	११५१६	१११११८

उम्मुक्कवालभावे जाव जोव्वणग०	११४१२२	१११२०
उरालस्स क सि घ मं जाव गुमिणस्स	११११६	११११६
उरालाई जाव भुंजमाणा	११२१४०	११६११३
उरालाई जाव विहरइ	११४१२०	११२१४०
उरालाई जाव विहरिज्जामि	११६११३	११६११३
उरालाई जाव विहरिस्सइ	११६१२०४	११६११३
उराले जाव तेयलेस्से	११६११२	१११६
उरालेणं तहेव जाव भासं	१११२०४	१११२०२
उववेए जाव फासेणं	११२१४	११२१३
उव्वत्तिज्जमाणे जाव टिट्ठियावेज्जमाणे	११३१२२	११३१२१
उव्वत्तेइ जाव टिट्ठियावेइ	११३१२६	११३१२१
उव्वत्तेति जाव दंतेहि निक्खुडेति जाव करेत्तए	११४११६	११४१११
उव्वत्तेति जाव नो चेव णं संचाएत्ति करेत्तए	११४११२	११४१११
एगदिसि जाव वाणियगा	११८१६७	११८१६२
एगयओ जहा अरहन्तए जाव लवणसमुद्धं	११७१५	११८१६६
एज्जमाणि जाव निवेसेह	११८१७१	१११४८; ११६११३१
एवं अत्थेणं दारेणं दासेहि पेसेहि परियणेणं	११४१७७	११४१७७
एवं कुलत्था वि भाणियव्वा । नवरं इमं		
नाणत्तं—इत्थि कुलत्था य धन्त कुलत्था य ।		
इत्थि कुलत्था तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—		
कुलवहुयाइ य कुलमाउयाइ य कुलघ्णयाइ या		
धन्त कुलत्था तहेव	११५१७४	११५१७३
एवं जहा मल्लिणाए	११६१२००	११८१५४
एवं जहा विजओ तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स	११८१३१, ३२	११८१२०, २२
एवं जहा सूरियाभस्स जाव एवं	२१११५	राय० सू० ६६८
एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव		
समोसदाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे		
तहेव जाव सूमालिया	११६१६४-६७	११४१४०-४३
एवं जहेव राई तहेव रयणी वि	२११५७-६०	२११४७-५०
एवं जाव घोसस्स	२१३१११	ठाणं २१३५६-३६२
एवं जाव सागरदत्तस्स	११६१८८-६१	११६१६३-६६
एवं पत्तिायमि णं रोएमि णं	११११०१	११११०१
एवं पाएहि सीसे पोट्टे कायंसि	११११५३	११११५३
एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्टए वि		
कण्णसक्कुलीओ वि नासापुडाइ	११४१२१	११४१२१

कणग जाव दलयइ	११६।१६८	१११६१
कणग जाव पडिमाए	११८।१८०	११८।४१
कणग जाव सायएज्जं	१११८।३८	१११६१
कणग जाव सिलप्पवाले	१११८।३३	१११६१
कयकोउय जाव सब्वालंकारविभूसिया	१११।८१	११२।२६
कयत्थे जाव जम्म०	१११३।२५	१११३।२५
कयवलिकम्मं जाव सब्वालंकारविभूसियं	१११६।७३	१११।८१
कयवलिकम्मा जाव पायच्छित्ता	१११।२७	१११।३३
कयवलिकम्मा जाव विपुलाइं जाव विहरइ	१११।३२	११२।६६
कयवलिकम्मे जाव रायसिहं	११२।५८	१११।८१
कयवलिकम्मे जाव सरीरे	१११।६६	१११।२७
कयवलिकम्मे जाव सब्वालंकार०	१११।४७	१११।८१
करयल०	११५।६८, १२३; ११८।७३, ८१, ८८, १५८, १६०; ११६।३१; ११४।३१, ५०	१११।१६
करयल०	११८।२०३, २०४; ११६।१३७, १६१, २१६, २६४; ११७।११	१११।२६
करयल०	१११६।२४६	१११।३६
करयल अंजलि	१११।५८, ६०	१११।१६
करयल जाव एवं	१११।३०; १११६।१७०, २६२; १११६।१३, ४६; २।१।२०	१११।२६
करयल जाव एवं	११६।१७; ११४।२७, २८; १११६।४३	१११।२१
करयल जाव कट्टु	१११।११८; १११६।१३३; २।१।११	१११।२६
करयल जाव कट्टु तहेव जाव समोसरहं	१११६।१४२	१११६।१३२
करयल जाव कण्हं	१११६।१३८	१११६।१३७
करयल जाव पच्चप्पिणंति	११८।१६६	११८।१६५
करयल जाव पडिसुणेइ	११८।१६५	१११।२६
करयल जाव वद्धावेइ	१११।५१८	१११।४८
करयल जाव वद्धावेति	१११६।२३६	१११।४८
करयल जाव वद्धावेति	११७।२६	१११।३६
करयल जाव वद्धावेत्ता	११८।१३१; १११६।२४४	१११।४८
करयल जाव वद्धावेहि	११८।१०७	१११।४८
करयल तं चेव जाव समासोरहं	१११६।१३४	१११६।१३२
करयल तहत्ति जेणव	१११४।१३	११५।१३
करयलपरिगहियं जाव अंजलि	१११।२१	१११।१६

खंतीए जाव बंगेचरवासोणं
 खिज्जणाहि य जाव एममट्टं
 खीरधाईए जाव गिरिकंदरमल्लीणा
 गंध जाव उम्मुक्कं
 गंध जाव पडिविसज्जेइ
 गंध जाव सक्कारेत्ता
 गंधवेहि य जाव विहरंति
 गज्जियं जाव थणियसट्ठे
 गणनायग जाव आमत्तेति
 गणिमस्स जाव चउव्विहभंडगस्स
 गन्धस्स जाव विणेति
 गय०
 गवलगुलिय जाव खुरधारेणं
 गवल जाव एडेमि
 गहाय जाव पडिगए
 गामघां वा जाव पंथकोट्टि
 गामागर जाव अणुपविससि
 गामागर जाव आहिडह
 गिण्हामि जाव मग्गणगवेसणं
 गुणे० किं चालेइ जाव नो परिच्चयइ
 घडएसु जाव संवसावेइ
 चउत्थ जाव भावेमाणे
 चउत्थ जाव विहरइ
 चउत्थ जाव विहरंति
 चउत्थस्स उक्खेवओ
 चंपगपायवे०
 चच्चर जाव महापहपहेसु
 चरगा वा जाव पच्चप्पिणंति
 चरमाणा जाव जेणेव
 चरमाणे जाव जेणेव
 चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव
 विहरइ
 चवलं० नहेहि
 चारगसोहणं जाव ठिइपडियं

१११०१५
 १११०१४
 १११६१३६
 १११०५४
 १११६१६६
 ११०१६
 १११६१५२
 ११६१६
 १११०११
 ११०१६६
 ११२११७
 ११०१६३
 ११६११६
 ११६१३७
 १११०१३६
 १११०१२४
 १११६१२२६
 १११४१४३; १११७११७
 ११२१२६
 ११०१७६
 १११२११६
 ११०११६
 ११५११०१; १११३३
 ११०११७, २५
 २१४११
 १११०१४६
 ११११६७
 १११५१७
 ११२१६६
 ११५११०
 ११५११०८
 ११४११७
 ११४१३३, ३४

१११०१३
 १११०१०
 आपागवृत्ता १५११४
 १११३०
 ११०१६०
 १११३०
 १११६१५०
 ११०१७१
 १११२४
 ११०१६६
 ११२११७
 १११६७
 उवा० २१२२
 ११६११६
 १११०१३८
 १११०१२२
 ११०१५८
 ११०१५८
 ११२१२७, २६
 ११०१७४
 ११२११६
 १११११६५
 १११११६५
 १११११६५
 २१२११
 १११११०५
 १११३३
 १११५१६
 ११११४
 ११११४
 ११११४
 ११४११४
 १११७६-७६

जिमिय जाय सूदभूया	११२१४	१११८१
जिमियभुत्तुत्तरागयं जाय सुहासण०	१११६१२१६	११२१४
जोव्वणेण य जाव नो रासु	११८१४४	११८६०
भोडा जाव मिलायमाणा	११११४	११११२
ठवेंति जाव चिट्ठति	१११७१२२	१११७१२२
डिभएहि य जाव कुमारियाहि	११२१२७	११२१४
ण्हाए जाव पायच्छित्ते	११४१६४	१११२७
ण्हाए जाव सरणं उवेइ २ करयल एवं व	१११६१२६५	१११६१२६५
ण्हाए जाव सुद्धप्पावेसाइं	११२१७१	११११२४
ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहिणीयं	११४१५३	११४११८
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	११२१६६; ११८११७६	१११२७
ण्हाया जाव वहुहि	११८१६८	११८१७६
ण्हाया जाव सरीरा	११३१११	१११२७
ण्हायाणं जाव सुहासण०	१११६१८	११७१६
तइयज्जयणस्स उक्खेवओ	२११५६	२११४६
तइयवग्गस्स निक्खेवओ	२१३११२	२११६३
तएणं से दूए एवं वयासी जहा वासुदेवे		
नवरं भेरी नत्थि जाव जेणेव	१११६१४३, १४४	१११६१३४-१४१
तं इक्खामि णं जाव पव्वइत्तए	११११११	११११०४
तं चेव जाव निरावयक्खे समणस्स		
जाव पव्वइत्तसि	११११०७	११११०६
तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स	१११८१५२	१११८१५१
तं रयाणि च णं चोइस महासुमिणा		
वण्णओ	११८१२६	कल्पसूत्र ४
तक्करे जाव गिद्धे विव आमिसभक्खी	११२१३३	११२१११
तच्चं दूयं चंपं नयरि । तत्थ णं तुम		
कण्णं अंगरायं सल्लं नंदिरायं करयल		
तहेव जावं समोसरह । चउत्थं दूयं		
सोत्तिमइं नयरि । तत्थ णं तुमं सिमु-		
पालं दमघोससुयं पंचभाइसय-संपरिवुडं		
करयल तहेव जावं समोसरह । पंचमं		
दूयं हत्थिसीसं नयरि । तत्थ णं तुमं		
दमदंतंरायं करयल जावं समोसरह ।		
छट्ठं दूयं महरं नयरि । तत्थ णं तुमं		

तुल्यक जाव गंधवट्टिभूयं	११६।१५५	१११२२
तेसि जाव वहूणि	११७।६	११।७१
थलय०	११।४६	११।३०
थलय जाव दसद्धवणं	११।३१	११।३०
थलय जाव मल्लेणं	११।३२	११।३०
थावच्चापुत्ते जाव मुंडे	११।५।०	११।३४
थेरागमणं इंदकुंभे उज्जाणे समोसढा	११।५।	११।१२
थेरा जाव आलित्ते	११६।३१५	१११।४६
दंडणाणि जाव अणुपरियट्टइ	११।१५	सूय० २।२।७५
दंडणाणि य जाव अणुपरियट्टइ	११।२४	११।२४
दसमस्स उक्खेवओ एवं खलु जंवू जाव अट्ट	२।१०।१,२	२।२।१,२
दाणधम्मं च जाव विहरइ	११।१४१ १५२	११।१४०
दारियं जाव भियायमाणि	११६।६४	११६।६२
दासचेडियाहि जाव गरहिज्जमाणी	११।१४७	११।१४६
दाहिणद्धभरहस्स जाव दिसं	११६।२६६	११६।२६७
दिट्ठे जाव आरोग्ग	११।२०	११।२०
दित्ते जाव विउलभत्तपाणे	११।२।७	वृत्ति
दीहमद्धं जाव वीईवइस्सइ	११।७६	११।६७
दुपयस्स वा जाव निव्वत्तेइ	११।१२६	११।११६
दुरुहइ जाव पच्चोरुहइ	११७।१३	११।१०२
दुरुहंति जाव कालं	११६।३२३	११६।३२३
दुरुढा जाव पाउव्ववंति	११।१४	११।६१
दुइज्जमाणा जाव जेणेव	११६।३२१	११।१४
दुइज्जमाणे जाव विहरइ	११६।३२०	११।४; ११६।३१६
देवकन्ना	११।१५४	११।५६
देवकन्ना वा जाव जारिसिया	११।५६, १११	वृत्ति
देवयभूयाए जाव निव्वत्तिए	११।१२५	११।१२६
देवलोगाओ जाव महाविदेहे	११६।२४	११।२१२
देवाणुप्पिया जाव कालगए	११६।३२३	११६।३२२
देवाणुप्पिया जाव जीवियफले	११।७६	उवा० २।४०
देवाणुप्पिया जाव नाइ	११६।२६५	११।१२३
देवाणुप्पिया जाव पव्वत्तिए	११६।३४	११।६२६
देवाणुप्पिया जाव साहराहि	११६।२४२	११६।२४०
देवाणुप्पिया जाव सुलद्धे	११६।२६	११६।२६
देवी जाव पंडुस्स	११६।३०१	११६।२६२

नाइ चउण्ह य कुल जाव विहराहि	११७२५	११७१६
नाइ जाव आमंतेइ	११४१५३	११७१६
नाइ जाव नगरमहिलाओ	११२११६	११२११२
नाइ जाव परियणं	११४११६	११११५१
नाइ जाव परियणेण	११६१४८	११११५१
नाइ जाव परिबुडे	११६१५०	११५१२०
नाइ जाव संपरिबुडे	११३११५; ११४१५३	११५१२०
नामं वा जाव परिभोगं	११६१६७	११४१३६
नाम जाव परिभोगं	११४१३७	११४१३६
नासांनीसासवायवोज्झं जाव		
हंसलकखणं	११११२८	आयारचूला १५१२८
निक्खेवओ	२१४१६	२११४५
निक्खेवओ अज्झयणस्स	२१२१८	२११४५
निक्खेवओ चउत्थवग्गस्स	२१४१६	२११६३
निक्खेवओ दसमवग्गस्स	२११०१७	२११६३
निक्खेवओ पढमज्झयणस्स	२१३१८	२११४५
निक्खेवओ विइयवग्गस्स	२१२११०	२११६३
निग्गंथा जाव पडिसुणेंति	११६१२३	१११२६
निग्गंथाणं जाव विहरित्तए	११५११२४	११५११४
निग्गंथी वा	११२८६१	११२१६८
निग्गंथी वा जाव पव्वइए	११७१२७; ११०१३; ११११३, ५	११२१६८
निग्गंथे वा जाव पव्वइए	११२१७६	११२१६८
निग्गंथो वा	११७१२५, ३६	११२१६८
निग्गंथी वा जाव पंचसु	१११५११४	११३१२४
निग्गंथो वा २ जाव विहरिस्सइ	११५११२६	११२१७६
निट्ठियं जाव विज्झायं	११११८४	११११८३
निप्पाणे जाव जीवविप्पजडे	११२८५४	११२१३२
नियगं	११७१६	१११८१
निव्वत्तियनामधेज्जे जाव चाउदंते	११११६७	११११५६
निव्वाघायंसि जाव परिवव्वइ	११६१३६	रायं सू० ८०४
निसंते जाव अब्भणुणाया	११४१५०	११११०४
निसम्म जं नवरं महव्वलं कुमारं		
रज्जे ठावेमि	११८१८	११५१८७
निसीयइ जाव कुसलोदंतं	११६११६८	११६११८७

पतिवया जाव अपासमाणी	१११६१६२	१११६१५६
पत्तिए जाव सल्लइयपत्तइए	११७११५	११७११४
पत्तिया जाव चिट्ठंति	१११११२	१११११२
पत्तेयं जाव पहारेत्थ	१११६११७१	१११६११४६
पमाएयव्वं जाव जामेव	११५१३३	१११११४८
परलोए नो आगच्छइ जाव वीईवइस्सइ	१११५११४	१११७६
परिग्गहिए जाव परिवसित्तए	११८११३१	११८११०७
परिणमंति तं चेव	१११२११७	१११२१६
परिणममाणा जाव ववरोवेति	१११५११५	१११५१११
परिणामेणं जाव जाईसरणे	१११३१३५	१११६०
परिणामेणं जाव तयावरणिज्जाणं	१११४१८३	१११११६०
परितंता जाव पडिगया	१११३१३१	११४११६
परिपेरत्तेणं जाव चिट्ठंति	१११७१२२	१११७१२२
परियागए जाव पासित्ता	११३११६	११३१५
परियाणह जाव मत्थयंसि	११११४८	११११४८
पल्लंसि जाव विहरंति	११७१२०	११७११६
पवर जाव पडिसेहिया	१११६१२५६	११८११६५
पवर जाव भीए	१११८१४४	१११८१४२
पवरविवडिय जाव पडिसेहिया	१११६१२५३	११८११६५
पव्वए जाव सिद्धे	११५११०४, १०५	११५१८३, ८४
पव्वावेइ जाव उवसंपज्जित्ता	२१११३०, ३१	१११११५०, १५१
पव्वावेइ जाव जायामायाउत्तियं	१११११६२	१११११५०
पसन्थदोहला जाव विहरइ	११८१३३	१११६८, ६९
पाणाइवाएणं जाव मिच्छदंसणसल्लेणं	११६१४	११११२०६
पाणाणुकंपयाए जाव अंतरा	१११११८६	१११११८१
पाणाणुकंपयाए जाव सत्ताणुकंपयाए	१११११८२	१११११८१
°पामोक्खा जाव वाणियगा	११८१८१	११८१६६
°पामोक्खे जाव वाणियगे	११८१८३	११८१६६
पायसंघट्टाणाणि य जाव रयरेणुमुंडणाणि	१११११८६	१११११५३
पावयणं जाव पव्वइए	११२१७३	१११११०१; भ० ६११५०, १५१
पावयणं जाव से जहेयं	१११२१३५	१११११०१
पासाईए जाव पडिरूवे	११११८६	११११८६
पासित्ता जाव नो वंदसि	११५१६७	११५१६६
पियं जाव विविहा	११११२०६	भ० २१५२

भगवओ जाव पव्वइत्तए	१११११३	११११०४
भड०	११५१८४	११५१७३
भवणवइ० तित्थयर०	११५१३६	कल्पमूत्र महावीरजन्म प्रकरण
भवित्ता जाव वोदसपुव्वाइं	१११४१८२	११५१५०
भवित्ता जाव पव्वइत्तए	११५१२०४; १११२७	११११०४
भवित्ता जाव पव्वइस्सामो	१११२१४०	११११०१
भवित्ता जाव पव्वयामो	११५१८६; १११६१३१०	११११०१
भाणियव्वाओ जाव महाघोसस्स	२१४१८	टाणं० २:३५५-३६२
भारहाओ जाव हत्थिणाउरं	१११६१२४०	११६१२५४
भाव जाव चित्तेउं	११५११८	११५११७
भासासमिए जाव विहरइ	११५१३५-३७	वृत्ति
भीए जाव इच्छामि	१११२१३६	११५१२१
भीए जाव संजायभए	१११४१६६	११११६०
भीया जाव संजायभया	११६१२५, २७	११११६०
भीया वा	११५१७६	११५१७३
भीया संजायभया	११५१७२	११११६०
भुंजावेति जाव आपुच्छंति	११५१६६	११५१६६
० भुत्तुत्तरागए जाव सुइभूए	१११२१४	११२११४
भेसज्जेहि जाव तेगिच्छं	१११६१२२	११५११०
भोगभोगाइं जाव विहरइ	११११६६	११११७
भोगभोगाइं जाव विहरति	११६११८३	१११३२
भोगभोगाइं जाव विहराहि	११६१२०८	१११३२
मइविकप्पणाहि जाव उवणेति	११६१२४७	ओ० सू० ५७
मज्झमज्जेणं जाव सयं	११६११६६	११६१२१८
मट्ठियाए जाव अविरुधेणं	११५११४३	११५१६०
मट्ठियालेवे जाव उप्पत्तित्ता	११६१४	११६१४
मणुणे तं चेव जाव पल्हायणिज्जे	१११२१८	१११२१४
मत्थयच्छिहुए जाव पडिमाए	११५१४१, ४२	११५१४१
मयूरपोयगं जाव नदुल्लगं	११३१२८	११३१२७
महत्थं०	११५१८१	११५१८१
महत्थं जाव उवणेति	११५१८४	११५१८१
महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं	११५१२०५	१११११६
महत्थं जाव निक्खमणाभिसेय	११५१६८	१११११६
महत्थं जाव पडिच्छइ	११७११७	११५१८२

रहमहया	११६।१४७	१।५।५७
राईसर जाव गिहाइं	११४।४३	१।५।५८
राईसर जाव विहरइ	१।५।१४६	१।५।१४०
रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा	११४।५६	११४।५६
रिउव्वेय जाव परिणिट्टिया	१।५।१३६	ओ० सू० ६७
रुट्टा जाव मिसिमिसेमाणी	१।२।५७	१।१।१६१
रूवेण य जाव उक्किट्टसरीरा	११६।२००	१।५।६०
रूवेण य जाव लावण्णेण	११६।१६०	१।५।३८
रूवेण य जाव सरीरा	११४।११	१।५।६०
रोयमाणा य जाव अम्मापिऊण	१।१८।१३	१।१।५।६
रोयमार्णि जाव नावयक्खसि	१।६।४०	१।६।४०
रोयमाणे जाव विलवमाणे	१।२।३४	१।२।२६
रोयमाणे जाव विलवमाणे	१।६।४७	१।६।४०
लद्धमईए जाव अमूढदिसाभाए	१।१७।१३	१।१७।१२
लवण जाव ओगाहित्तए	१।६।६	१।६।४
लवण जाव ओगाहेह	१।६।५	१।६।४
लवणसमुद्धे जाव एडेमि	१।६।२०	१।६।१६
लोइयाइं जाव विगयसोए	१।१८।५७	१।६।४८
वंदामो जाव पज्जुवासामो	१।१३।३८	ओ० सू० ५२
वंदित्तए जाव पज्जवासित्तए	२।१।१२	राय० सू० ६ वृत्ति
वण्णहेडं वा जाव आहारेइ	१।१८।४८	१।१८।६१
वण्णेणं जाव अहिए	१।१०।४	१।१०।२
वण्णेणं जाव फासेणं	१।१२।३	१।१२।१२
वत्थ जाव पडिविसज्जेइ	१।१४।१६	१।५।१६०
वत्थ जाव सम्माणेत्ता	१।१६।५४	१।७।६
वत्थस्स जाव सुद्धेणं	१।५।६१	१।५।६१
वत्थे जाव तिसंभं	१।७।३३	१।७।६
वयासी जाव के अन्ने आहारे जाव पव्वयामि	१।१२।४५	१।५।६०
वयासी जाव तुत्तिणीए	१।१६।१६, १७	१।१६।१४, १५
वरतरुणी जाव सुरूवा	१।१।१३७	१।१।१३४
ववरोवेह जाव आभागी	१।१८।५३	१।१८।५२
वाइय जाव रवेणं	१।५।२०२	१।१।११८
वाणियमाणं जाव परियणा	१।५।६७	१।५।६६
वावाहं वा जाव छविच्छेयं	१।४।२०	१।४।११

सकोरेंट ह्यगय	११६।१५७	१।८।५७
सक्का जाव नन्नत्थ	११५।२५	११५।२४
सखिखिण्याइं जाव वत्थाइं	१।८।२०३	१।८।७६
सगज्जिया जाव पाउससिरी	१११।६४	१११।५६
सज्जइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ	११५।१६	११३।२४
सण्णद्ध०	११६।२४८	११३।३२
सण्णद्ध जाव गहिया	११६।१३४; ११८।३५	११३।३२
सण्णद्ध जाव पहरणा	११६।२५१	११३।३२
सण्णद्धवद्ध जाव गहियाउह०	११६।२३६	११३।३२
सत्तट्ठ जाव उप्पयइ	१।६।३७	१।६।३६
सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्तगं	१।८।७७	१।८।७३
सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ एवं खलु		
जंबू जाव चत्तारि	२।७।१,२	२।२।१,२
सत्तुस्सेहे जाव अज्जसुहम्मस्स	१११।६	ओ० सू० ८२
सत्थवज्झा जाव कालमासे	११६।३१	११६।३१
सद् जाव गंधाणं	४१।१७।२	११७।२२
सद्फरिसरसरूवगंधे जाव भुंजमाणे	११५।६	ओ० सू० १५
सद्दहंति जाव रोएति	११५।१३	१११।१०१
सद्दावेइ जाव जेणेव	१।८।६६, १००	१।८।६२, ६३
सद्दावेइ जाव तं	१।७।१०	१।७।६, ७, ६
सद्दावेइ जाव तहेव पहारेत्थ	१।८।११२, ११३	१।८।६६, १००
सद्दावेइ जाव पहारेत्थ	१।८।१५५, १५६	१।८।६६, १००
सद्दावेह जाव सद्दावेति	१११।१३६	१११।१३८
सद्देणं जाव अम्हे	११३।१६	११३।१८
समणस्स जाव पव्वइत्तए	१११।१०७	१११।१०४
समणस्स जाव पव्वइस्ससि	१११।१०८, ११२	१११।१०६
समणाउसो जाव पंच	१।७।३५, ४३	१।७।२७
समणाउसो जाव पव्वइए	१११०।५; ११८।४८; ११६।४२, ४७	११३।२४
समणाउसो जाव माणुस्सए	१।६।५३	१।६।४४
समणाणं जाव पमत्ताणं	११५।११८	११५।११७
समणाणं जाव वीईवइस्सइ	११३।३४	११२।७६
समणाणं जाव सावियाण	११७।३६	११२।७६
समणाण य जाव परिवेसिज्जइ	१।८।२००	१।८।१६६, १६७
समत्तजालाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरि०	११६।१४०	ओ० सू० ६३

सिञ्जिभहिइ जाव सव्वदुक्कताण०	१११६१४६	१११२१२
सिद्धे जाव प्पहीणे	११५१८४	टाणं ११२४६
सीलव्वय जाव न परिच्चयसि	११८१७४	११८१७४
सीलव्व तहेव जाव धम्मज्झाणोवगाए	११८१७७,७८	११८१७४,७५
सीहनाय जाव रवेणं	११८१६७	ओ०सू० ५२
सीहनाय जाव समुद्दरवभूयं	१११८१३५	११८१६७
सुइं वा०	११६१३७	११२१२६
सुइं वा जाव अलभमाणे	१११६१२१५	१११६१२१२
सुइं वा जाव लभामि	१११६१२२१	१११६१२१२
सुईं वा जाव उवलद्धा	१११६१२२६	१११६१२१२
सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे	११५१८	ओ०सू० १४३
सुभरूवत्ताए	१११५११३	१११५१११
सुमिणपाढगपुच्छा जाव विहरइ	११८१२६	१११३२
सुमिणा जाव भुज्जो २ अणुव्वहति	१११३१	१११२६
सुरं च जाव पसन्नं	१११८१३३	१११६१४६
सुरद्धाजणवए जाव विहरइ	१११६१३१६	१११६१३१८
सुरूवा जाव त्रामहत्थेणं	१११६११६३	वृत्ति
सूमालं निव्वत्तवारसाहस्स इमं एयारूवं	१११६१३०५,३०६	१११६१३३,३४
सूमालिया जाव गए	१११६१८७	१११६१६२
से धम्मे अभिरुइए तए णं देवा पव्वइत्तए	१११६११३	११११०४
सेयवर ह्यगय महया भडचडगरपहकरेणं	१११६१२३७	११८१५७
सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ	१११६१८१-८६	१११६१५६-६१
सोणियासवस्स जाव अवस्स०	१११८१६१	११११०६
सोणियासवस्स जाव विद्धंसणधम्मस्स	१११८१४८	११११०६
हए जाव पडिसेहिए	१११६१२५७	११८११६५
हट्ठ जाव हियया	२११२०,२१,२४,२५	१११११६
हट्ठतुट्ठ जाव पच्चप्पिणंति	१११२३	१११११६,२२
हट्ठतुट्ठ जाव मत्थए	११५११३	१११२६
हट्ठतुट्ठ जाव हियए	१११२०;११६११३५	१११११६
हत्थाओ जाव पडिनिज्जाएज्जासि	११७१६	११७१६
हत्थिखंध जाव परिवुडे	१११६११४६	१११६११४६
हत्थिखंधवरगाए जाव सेयवरत्तामराहि	११८११६३	११८१५७
हत्थिणाजरे जाव सरीरा	१११६१२०३	१११६१२००
हत्थी जाव छुहाए	११११८५	१११११५७

अग्निमिस्ताए वा जाव विहरइ	७।२६	७।२६
अज्ज जाव ववरोविज्जसि	३।४४	२।२२
अज्भवसाणेणं जाव खओवसमेणं	८।३७	१।६६
अट्टेहि य जाव वागरणेहि	७।४८	६।२८
अट्टेहि य जाव निप्पट्ट०	६।२८	६।२८
अड्ढे चत्तारि	६।३,४; १०।३,४	२।३,४
अड्ढे जहा आणंदो नवरं अट्टहिरण्णको- डीओ सकंसाओ निहाणपज्जाओ अट्टहि वड्ढि अट्टहि सकंसाओ पवि अट्टवया		
दस गो साहस्सिएणं वएणं	८।३-५	१।११-१३
अड्ढे जाव अपरिभूए	१।११	ओ० सू० १४१
अणारिए जहा चुलणीपिया तथा चित्तेइ		
जाव कणीयसं जाव आइंच्चइ	५।४२	३।४२
अणारिए जाव समाचरति	३।४४; ४।४२	३।४२
अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं	६।२१, २२, २३; ७।२३, २४	६।२०
अण्णदा कदाइ वहिया जाव विहरइ	१।५४	ना० १।१।१६६
अपच्छिम जाव अणवकंखमाणे	१।७२	१।६५
अपच्छिम जाव भत्तपाण	८।४६	१।६५
अपच्छिम जाव भूसियस्स	८।४६	१।६५
अपच्छिम जाव वागरित्तिए	८।४६	८।४६
अवभणुणाए तं चेव सव्वं कहेइ जाव	१।७६	१।७१-७८
अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे	१।५५	ओ० सू० १६२
अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ	८।१६	ओ० सू० १६२
अभिगयजीवेजी णं जाव अणइक्कमणिज्जेणं	१।३१	ओ० सू० १६२
अभीए जाव विहरइ	२।२६, ३५; ३।२२	२।२३
अभीयं जाव धम्मज्झाणोवगयं	२।२४	२।२३
अभीयं जाव पासइ	२।४०; ३।२३	२।२४
अभीयं जाव विहरमाणं	२।२८, ३०	२।२४
अवहरइ वा जाव परिट्टवेइ	७।२६	७।२५
अस्सिणी भारिया । सामी सामासडे जहा आणंदो तहेव		
गिहिधम्मं पडिवज्जइ । सामी वहिया विहरइ	६।५-१५	२।५-१५
असोगवणिया जाव विहरति	७।१७	७।८
अहीण जाव सुरूवा	१।१४	ओ० सू० १५
अहीण जाव सुरूवाओ	८।६	ओ० सू० १५

उप्पण्णणाणदंसणधरे जाव तच्चकम्मसंपया	७।११, १८	७।१०
उप्पण्णणाणदंसणधरे जाव महियपूइए		
जाव तच्च०	७।४५	७।१०
उरालाई जाव भुंजमाणे	८।२७	८।१६
उरालाई जाव विहरित्तए	८।१८	८।१८
उरालेणं जहा कामदेवे जाव सोहम्मे	३।५०-५२	२।५३-५५
उरालेणं जाव किसे	८।३५	१।६४
उरालेणं तवोकम्ममेणं जहा आणंदो		
तहेव अपच्छिम०	८।३६	१।६५
एक्कारसमं जाव आराहेइ	१।६३	१।६२
एवं एक्कारस उवासगपडिमाओ तहेव जाव		
सोहम्मे कप्पे अरुणज्भए विमाणे जाव		
अंतं काहिइ	६।३५-४१	२।५०-५६
एवं तहेव उच्चारयेव्वं सव्वं जाव कणीयसं		
जाव आइंचइ । अहं तं उज्जलं जाव		
अहियासेमि	३।४४	३।२७-३८
एवं दक्खिणेणं पच्चत्थिमेणं च	१।६६; ८।३७	१।६६
एवं देवो दोच्चं पि तच्चं पि भणइ जाव		
ववरोविज्जसि	४।४१	४।३६
एवं मज्झिमयं, कणीयसं, एक्केक्के पंच		
सोल्लया । तहेव करेइ, जहा चुलणी-		
पियस्स, नवरं एक्केक्के पंच सोल्लया	४।२२-३८	३।२२-३८
एवं वण्णगरहिया तिण्णि वि उवसरगा तहेव		
पडिउच्चारयेव्वा जाव देवो पडिगओ	२।४५	२।२४-४०
ओहयमणसंकप्पा जाव भियाइ	८।४२	२।० सू० ७६५
कज्जेसु य आपुच्छउ	१।५६	१।१३
कदाइ जहा कामदेवो तहा जेडुपुत्तं ठवेत्ता		
तहा पोसहसालाए जाव धम्मपण्णात्ति	६।३३, ३४	२।१८, १९
करएहि य जाव उट्टियाहि	७।७	७।७
करगा य जाव उट्टियाओ	७।२२	७।७
करेइ । सेसं जहा चुलणीपियस्स तहा		
भद्दा भणइ । एवं सेसं जहा चुलणीपियस्स		
निरवसेसं जाव सोहम्मे	४।४५-५२	३।४५-५२
कल्लं जाव जलंते	१।५७; ७।१२	ओ० सू० २२

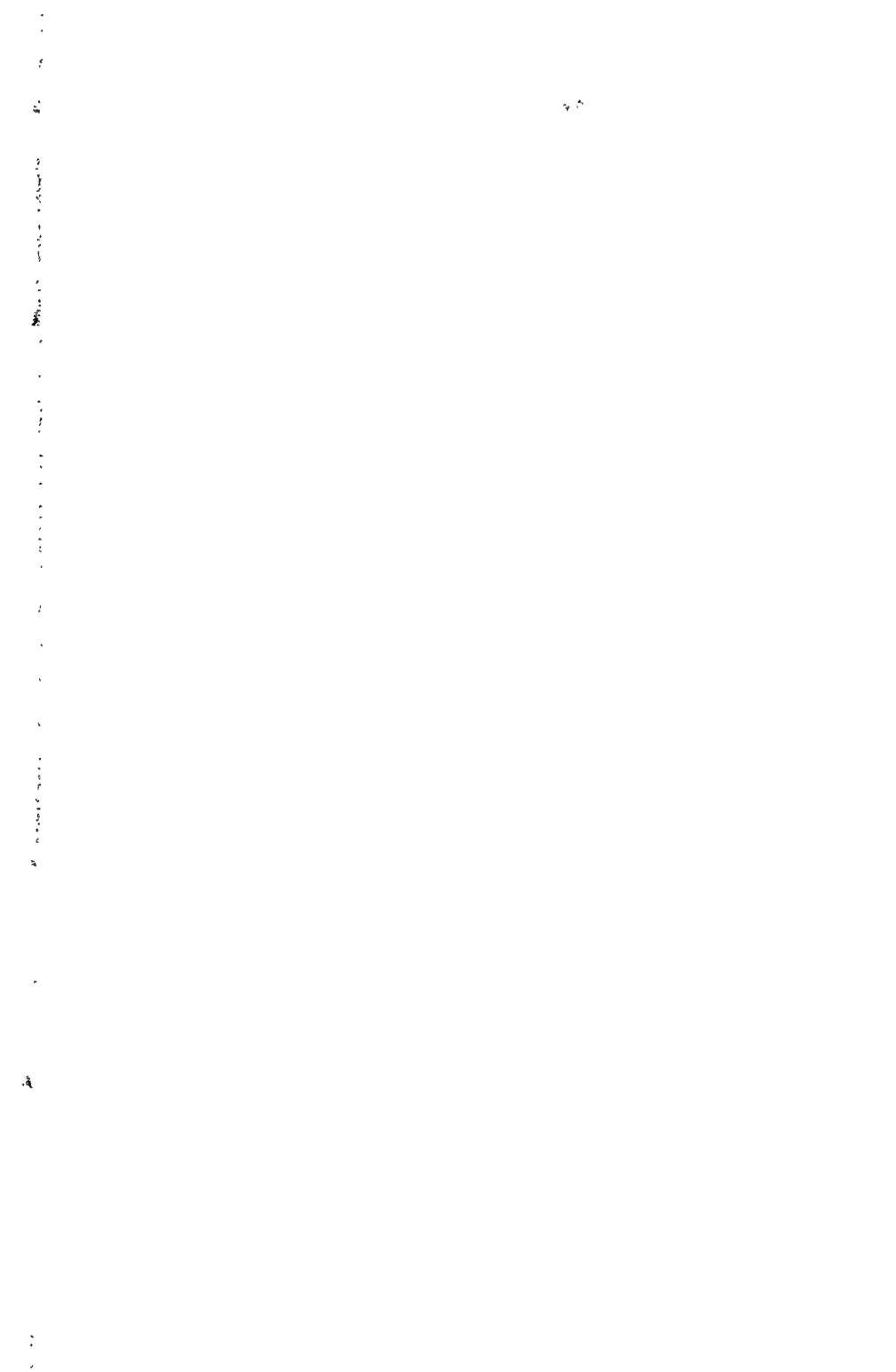
विहरइ । नवरं निरुवसग्गो एक्कारस्स वि		
उवासगपडिमाओ तहेव भाणियेवाओ एवं		
कामदेवगमेणं नेयव्वं जाव सोहम्मे	१०१५-२५	२१५-१६, ५०-५५
फलग जाव ओगिण्हित्ता	७१५१	११४५
फलग जाव संथारयं	७११६	११४५
वंभयारी जाव दब्भसंथारोवगए	२१४०	११६०
वंभयारी समणस्स	३११६	११६०
वह्हि जाव भावेत्ता	२१५५	११८४
वह्णं राईसर जहा चित्तिं जाव विहरित्तए	११५७	११५७
वह्हि जाव भावेमाणस्स	६१३३	२११८
भवित्ता जाव अहं	७१३७	११२३
भारिया जाव सम०	७१७८	७१७५
भोगा जाव पव्वइया	७१३७	ओ० सू० ५२
मंसमुच्छिद्या जाव अज्झोववण्णा	८१२०	वृत्ति
मत्ता जाव उत्तरिज्जयं	८१३८	८१२७
मत्ता जाव विकड्डुमाणी	८१४६	८१२७
महइ जाव धम्मकहा समत्ता	७११६	२१११
महावीरे जाव विहरइ	२१४२	१११७
महावीरे जाव विहरइ	२१४३; ७११५	११२०
महावीरे जाव समोसरिए	१११७; ७११२	ओ० सू० १६-२२
महासतयं तहेव भणइ जाव दोच्चं पि		
तच्चं पि एवं वयासी—हंभो तहेव	८१३८-४०	८१२७-२६
मारणंतिय जाव कालं	११६५	११६५
मित्त जाव जेट्ठपुत्तं	११५७	११५७
मित्त जाव पुरओ	११५६	११५७
मुंडे जाव पव्वइत्तए	११२३, ५३	ओ० सू० ५२
मोहुम्माय जाव एवं वयासी तहेव जाव		
दोच्चं पि	८१४६	८१२७-२६
राईसर जाव सत्यवाहाणं	१११३	११२३
राईसर जाव सयस्स	११५७	१११३
लद्धट्ठे जहा कामदेवो तहा निग्गच्छइ		
जाव पज्जुवासइ । धम्मकहा ।	६१२६, २७	२१४३, ४४
वदणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे	७११०	ओ० सू० २
वंदामि जाव पज्जुवासामि	७११५	ओ० सू० ५२

समणोवासया ! तहेव जाव ववरोविज्जसि	३१४१	३१३६
समणोवासया ! तहेव भणइ जाव न भंजेसि	२१२८	२१२२
समुप्पज्जित्था एवं जहा चुलणीपिया		
तहेव चित्तेइ	७१७८	३१४२
समोसरणं जहा आणंदो तहा निग्गओ ।		
तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ ।		
साचेव वत्तव्वया जाव जेट्ठपुत्तं	२१७-१६	१११७-२३, ५४-६०
सहइ जाव अहियासेइ	२१२७	वृत्ति
सहंति जाव अहियासेंति	२१४६	२१२७
सहित्तए जाव अहियासित्तए	२१४६	२१२७
साइमं जहा पूरणो जाव जेट्ठपुत्तं	११५७	भ० ३११०२
सामी समोसढे । चुलणीपिया वि जहा आणंदो		
तहा निग्गओ । तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ ।		
गोयम पुच्छा । तहेव सेसं जहा कामदेवस्स		
जाव पोसहसालाए	३१७-१६	२१७-१६
सामी समोसढे जहा आणंदो तहा गिहिधम्मं		
पडिवज्जइ । सेसं जहा कामदेवो जाव		
धम्मपण्णत्ति	५१७-१६	२१७-१६
सामी समोसढे जहा कामदेवो तहा		
सावयधम्मं पडिवज्जइ । सा सव्वेव		
वत्तव्वया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ	६१७-१७	२१७-१७
साहस्सीणं जाव अण्णेसि	२१४०	वृत्ति
सिंघाडग जाव पहेसु	५१३६	ओ० सू० ५२
सिंघाडग जाव विप्पइरित्तए	५१४२	५१३६
सीलव्वय-गुणेहि जाव भावेत्ता	८१५३	११८४
सील जाव भावेमाणस्स	७१५४	११५७
सीलव्वय जाव भावेमाणस्स	८१२५	११५७
सीलाइं जाव न भंजेसि	४१२१	२१२२
सीलाइं जाव पोसहोववासाइं	२१२२	२१२२
सीलाइं वयाइं न छड्ढे सि तो जीवियाओ	२१२४	२१२२
सुक्के जाव किसे	११६४	भ० २१६४
मुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घा	७११५, ३५	११४६
सुरादेवे गाहावइ अड्ढे छ हिरण्णकोडीओ		
जाव छ व्वया दस गोसाहस्सिएणं वएणं		

अणुत्तरे जाव केवल०	३१६२	वृत्ति
अतुरियं जाव अडंति	३१२३	भ० २११०८
अपत्तिय जाव परिवज्जिए	३१८६	उवा० २१२२
अपत्तियपत्तिए जाव परिवज्जिए	३११०२	३१८६
अरहओ मुंडे जाव पव्वाहि	३१७४	३१७०
अरिट्टनेमिस्स जाव पव्वइत्तए	५१११	३१७६
अहामुत्तं जाव आराहिया	८१८	ठा० ७११३
आघवणाहि०	६१६५	नाम १११११४
आपुच्छामि देवानुप्पियाणं	१११६	ना० ११५१८७
आमुएत्ते जाव सिद्धे	३११०१	३१८६-६२
आहेवच्चं जाव विहरइ	१११४	ना० ११५१६
इच्छामि णं जाव उवसंपज्जित्ता	३११०१	३१८७, ८८
ईसर जाव सत्थवाहाणं	१११४	ना० ११५१६
उच्च जाव अडइ	६१७६	भ० २११०८
उच्च जाव अडमाणं	६१५५	भ० २११०६
उच्च जाव अडमाणा	३१२६, ३०	३१२४
उच्च जाव अडमाणे	६१७८	२१२४
उच्च जाव अडामो	६१८०	३१२३
उच्च जाव पडिलाभेइ	३१२८, २६	३१२४, २५
उज्जाणे जाव पज्जुवासइ	३१६१	ना० १११६६
उज्जला जाव दुरहियासा	३१६०	ना० ११११६२
उत्तर०	६१५२	५१२६
उम्मुक्क जाव अणुप्पत्ते	३१५०	ना० ११११२०
उरालेणं जाव घमणिसंतया	८११३	भ० २१६४
उवागए जाव पडिदंसेइ	६१८७	६१५७
उवागच्छित्ता जाव वंदइ	३१६८	३१६१
ओहय जाव भियाइ	५११७	३१४३
ओहय जाव भियायइ	३१४३	ना० ११११३४
करयल०	५१२२; ६१३५, ४१	ना० ११११२६
करेइ जहा गोयमसामी जाव अडइ	६१५४	भ० २११०७, १०८
काएणं जाव दो वि पाए	३१८८	वृत्ति
कामा खेलासवा जाव विप्पजहियच्चा	३१७६	ना० ११११०६
कुमारस्स	१११६	राय० सू० ६८८
चउत्त्य जाव अप्पाणं	८१६	५१३१

नेरइय जाव उववज्जंति	६।६४	६।६४
पउमावईए य धम्मकहा	५।८	राय०मू० ६६३
पव्वावेइ जाव संजमियव्वं	५।२८	ना० १।१।१५०
पारेइ जाव आराहिया	८।६	८।८
पावयणं जाव अब्भुट्टेमि	६।५१	ना० १।१।१०१
पुरिसं पाससि जाव अणुपवेसिए	३।१०४	३।६५
पोरिसीए जाव अडमाणा	३।३०	३।२२, २३
बहुयाहिं अणुलोमाहिं जाव आघवित्तए	३।७७	ना० १।१।११४
वारवईए उच्च जाव पडिविसज्जेइ	३।२६, २७	३।२४, २५
भगवं जाव समोसठे विहरइ	६।३३	ना० १।१।६४
भूतं जाव पव्वइस्संति	५।१४	५।१२
भूतं वा जाव पव्वइस्संति	५।१३	५।१२
मालागारे जाव घाएमाणे	६।३६	६।२८
मासियाए संलेहणाए वारस वासाइं		
परियाए जाव सिद्धे	१।२४	ना० १।५।८४
मुंडा जाव पव्वइया	३।३०; ५।११	३।२०
मुंडा जाव पव्वयामि	५।२१, २२	३।२०
मुंडे जाव पव्वइए	६।५३	३।२०
मुंडे जाव पव्वइत्तए	५।१६	३।२०
मुंडे जाव पव्वइस्सइ	३।५०	३।२०
रज्जे य जाव अंतेउरे	५।११	ना० १।१।१६
रूवेणं जाव लावण्णेणं	३।५७	३।६०
लहुकरणजाणपवरं जाव उवट्ठवेंति	३।३१	ना० १।१६।१३३
विण्णवणाहिं जाव परूवेत्तए	६।४५	६।४५
संजमेणं जाव भावेमाणे	६।८४	६।३३
संलेहणा जाव विहरित्तए	८।१४	८।१४
संलेहणाए जाव सिद्धे	३।१३	१।२४
समणेणं जाव छट्ठस्स	६।१०२	४।७
समाणा जाव अहामुहं	३।३०	३।२०
समोसठे सिरिवणे उज्जाणे अहा जाव विहरइ	३।१२	ना० १।५।१०
सरिसया जाव नलकूवरसमाणा	३।३०	३।१६
सरिसियाणं जाव वत्तीसाए	३।१०	ना० १।१।६०
सिघाडग जाव उग्घोसेमाणा	५।१६	ना० १।५।२६

उक्कोस नेरइएमु	११३।६५	१११।७०
उक्खित्त जाव सूले०	११।६	११२।१४
उक्खेवओ नवमस्स	११।११,२	११२।१,२
उक्खेवओ सत्तमस्स	११।७।१,२	११२।१,२
उग्घोसिज्जमाणं जाव चिंता	११।४।१२,१३	११२।१४,१५
उज्जला जाव दुरहियासा	११।१५.६	वृत्ति
उम्मुक्क जाव जोव्वणग०	११।१७०	वृत्ति
उम्मुक्कवालभावा जोव्वणेण रूवेण		
लावण्णेण य जाव अईव	११।१३४	११।१३६
उम्मुक्कवालभावे जाव विहरइ	११।१२६	११।१३५
उराले जाव लेस्से	२।१।२०	ओ० सू० ८२
उवगिज्जमाणे जाव विहरइ	११।१४८	ना० ११।१६३
उत्सुक्कं जाव दसरत्तं	११।३।५२	वृत्ति
एवं पस्समाणे भासमाणे गेण्हमाणे जाणमाणे	११।१५०	११।१५०
ओह्य०	११।२।७	११।२।४
ओह्य जाव भियाइ	११।२।४; ११।१।१६	वृत्ति
ओह्य जाव भियासि	११।२।५; ११।१।१७	११।२।४
ओह्य जाव पासइ	११।२।५; ११।१।१७	११।२।४
करयल०	११।३।४०, ५५, ५६; ११।१।३८	११।१६६
करयल०	११।३।५०	११।३।४०
करयल जाव एवं	११।३।४४; ११।४।२८	११।३।४०
करयल जाव एवं	११।३।५२, ५३; ११।६।३४	११।१६६
करयल जाव पडिसुणेंति	११।३।५३, ६२; ११।६।३४; ११।१।२०, ४०	ओ० सू० ५६
करयल जाव बद्धावेइ	११।१।४५	११।३।५५
करेइ जाव सत्थोवाडिए	११।६।२३	वृत्ति
कुमारे जाव विहरइ	११।६।३६	११।१।६६
०खुत्तो०	११।१।७०	११।१।७०
गंगदत्ता वि	११।७।३३	११।२।५५
गामागर जाव सण्णिवेसा	२।१।३१	ओ० सू० ८६
गाहावई जाव तं धण्णे	२।१।२३	वृत्ति
गिण्हवेइ जाव एएणं	११।५।२७	११।२।६४
घाएँति २	११।३।१४	११।३।१४
चउत्थं छट्ठ उत्तरेणं इमेयारूवे	११।७।१०, ११	११।७।६; ११।२।१५
चउत्थस्स उक्खेवओ	११।४।१, २	११।२।१, २



पम्हल०	१।७।२१	वृत्ति
पावं जाव समज्जिणइ	१।१।७०	१।१।५१
पुढवीए संसारो तहेव पुढवी	१।५।२६	१।३।६५
पुप्फ जाव गहाय	१।७।२३	१।७।२१
पुरा जाव विहरइ	१।१।४१, ४२; १।२।६५	१।१।४१
पुरिसे जाव निरयपडिरुवियं	१।२।१५	१।१।४१
पुव्वभवपुच्छा वागरेइ	१।७।१२, १३	१।१।४२, ४३
पुव्वभवे जाव अभिसमण्णागया	२।१।१५	वृत्ति
पुव्वाणुपुव्वि जाव जेणेव	१।१।२	ना० १।१।४
पुव्वाणुपुव्वि जाव दूइज्जमाणे	२।१।३२	२।१।३१
पोराणाणं जाव एवं	१।७।११	१।२।१५
पोराणाणं जाव पच्चणुभवमाणे	१।१।६६	१।१।४१
पोराणाणं जाव विहरइ	१।३।६४।१।४।६१; १।५।२८; १।७।३७; १।८।८, २६; १।९।५८;	
फलएहि जाव छिप्पतूरेणं	१।१०।१८	१।१।४१
फुट्टमाणेहि जाव विहरइ	१।३।४३	१।३।२४
वहूणं गोरुवाणं ऊहे जाव लावणेहि	२।१।११	ना० १।१।६३
वहूहि चुण्णप्पओगेहि य जाव आभिओगित्ता	१।२।२६	१।२।२४
वहूहि जाव ण्हाया	१।१०।७	१।२।७२
भगवं जाव जओ णं	१।७।२५	१।७।२३
भगवं जाव पज्जुवासामो	१।१।३४	१।१।३३
भविता जाव पव्वइस्सइ	१।१।२१	ओ०सू० ५२
भविता जाव पव्वएज्जा	२।१।३५	२।१।१३
मज्झंमज्झेणं जाव पडिदंसेइ	२।१।३१	२।१।१३
महत्थं जाव पडिच्छइ	१।२।१५	भ० २।१।१०
महत्थं जाव पाहुडं	१।३।५६	१।३।४०
महावीरे जाव समोसरिए	१।३।५५	१।३।४०
महिय जाव पडिसेहेति	१।१।१७	वृत्ति
मासाणं जाव आगितिमेत्ते	१।३।४६	वृत्ति
मासाण जाव दारियं	१।१।६६	१।१।६४
मासाणं जाव पयाया	१।९।३१	१।२।३१
मित्त०	१।७।२६	१।२।३१
मित्त०	१।३।६०; १।८।१७	१।२।३७
मित्त जाव अण्णाहि	१।७।२७	१।७।१६
मित्त जाव परियणं	१।३।२८	१।३।२४
मित्त जाव परियणेण	१।६।४७	१।२।३७
	१।९।५७	१।२।३७

पम्ह
 पावं
 पुढर्व
 पुप्फ
 पुरा
 पुरिसे
 पुव्व
 पुव्व
 पुव्वा
 पुव्वा
 पोरा
 पोरा
 पोरा
 फलए
 फुट्टमा
 वहूणं
 वहूहि
 वहूहि
 भगवं
 भगवं
 भवित्त
 भवित्त
 मज्झं
 महत्थं
 महत्थं
 महावी
 महिय
 मासाए
 मासाए
 मासाए
 मित्त०
 मित्त०
 मित्तः
 मित्तः
 मित्तः

पृ०	पंक्ति
८	२०
५७	१२
६०	२२
१७७	३
२०६	१०
३०६	१६
४२६	१६
४५५	१५
४६१	७
५१६	१६
५५१	७
५७५	१६
५६८	१२
६१६	६
७३०	२०
७३८	७
७३६	१२
१६	पा० ६
४८	पा० ४
५२२	पा० २
२८	२४

शुद्धि-पत्र मूलपाठ

अशुद्ध	शुद्ध
० मणप्पत्ते	० मणप्पत्ते
जहेसु	ज्ञहेसु
हीत्थ	हत्थी
कट्ट	कट्टु
विप्पइर-माण	विप्पइरमाण
संकाणि	संकामणि
वेरमणाइ	वेरमणाइं
पज्जुवासणयाए	पज्जुवासणयाए
देवदेसंस	देवसंदेस
तुम	तुमं
ताइ	ताइं
० समुदएणं	० समुदएण
सत्तिरीएण	सत्तिरीएणं
दसं	दस
खणमाणे	खणमाणे
अप्पेगइयाण	अप्पेगइयाणं
दुप्पडियाणदे	दुप्पडियाणदे
पाठान्तर	
पटटंसि	पटटंसि
पिणद्धति	पिणद्धेंति
आसुरुत्त	आसुरुत्ते
परिशिष्ट	
अभिगयजीवेजी णं	अभिगयजीवाजीवेण

